



कोड : SG- 020

# UP-TET

प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा, 2018

## संस्कृत

# विजयी भव

*The Powerfull Notes*

सर्वज्ञभूषण

शिक्षक पात्रता परीक्षा 2018

**UP TET**

प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा

**संस्कृत**

**विजयी भव**



लेखक  
सर्वज्ञभूषण

प्रकाशक  
**संस्कृतगङ्गा**

59, मोरी, दारागंज, प्रयागराज  
मो. 9839852033, 7800138404

### ● प्रकाशक

#### संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)

59, मोरी, दारागञ्ज, इलाहाबाद  
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे संकटमोचन  
छोटे हनुमान् मन्दिर के पास), Mb. : 9839852033  
email-Sanskritganga@gmail.com

### ● प्रकाशन-सहयोग

#### युनिवर्सल बुक

1519 अल्लापुर, इलाहाबाद  
☎ : 0532-2503638

### ● मुख्यवितरक

#### राजू पुस्तक केन्द्र

अल्लापुर, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)  
मो० 9453460552

### ● पुस्तकें डाक द्वारा भी आर्डर कर सकते हैं-

**Mob. : 7800138404**  
**9839852033**

### ● अक्षर संयोजक- मिथिलेश

### ● पृष्ठ विन्यास- कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, मोरी, दारागंज

### ● © सर्वाधिकार सुरक्षित लेखकाधीन

### ● प्रथम संस्करण — नवम्बर - 2018

### ● मूल्य — ₹ 99/- (निन्यान्वे रुपये मात्र)

### ● विधिक चेतावनी-

- लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक की कोई भी सामग्री किसी भी माध्यम से प्रकाशित या उपयोग करने की अनुमति नहीं होगी,
- इस पुस्तक को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गयी है, फिर भी किसी भी त्रुटि के लिए प्रकाशक व लेखक जिम्मेदार नहीं होंगे।
- किसी भी परिवार के लिए न्यायिक क्षेत्र केवल इलाहाबाद ही होगा।

### पुस्तक प्राप्ति के स्थान

1. राजू पुस्तक भण्डार, अल्लापुर, इलाहाबाद  
सम्पर्क सूत्र : 0532-2503638, 9453460552
2. संस्कृतगङ्गा, दारागञ्ज, इलाहाबाद - 7800138404
3. गौरव बुक एजेन्सी, कैण्ट, वाराणसी
4. विजय मैगजीन सेन्टर, बलरामपुर
5. जायसवाल बुक सेन्टर, हरदोई - 9415414569
6. शिवशंकर बुक स्टाल, जौनपुर
7. न्यू पूर्वांचल बुक स्टाल, जौनपुर - 9235743254
8. कृष्णा बुक डिपो बस्ती - 8182854095
9. मौर्या बुक डिपो, पाण्डेयपुर, वाराणसी- 9454735892
10. मनीष बुक स्टोर, गोरखपुर - 9415848788
11. द्विवेदी ब्रदर्स, गोरखपुर - 0551-344862
12. विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर, गोरखपुर - 9838172713
13. रंजन मिश्रा, गोरखपुर (बस स्टैण्ड)
14. आशीर्वाद बुक डिपो, अमीनाबाद, लखनऊ
15. मालवीय पुस्तक केन्द्र, अमीनाबाद, लखनऊ - 9918681824
16. मॉडर्न मैगजीन बुक शॉप, कपूरशाला, लखनऊ
17. साहू बुक स्टॉल, अलीगंज, लखनऊ - 9838640164
18. भूमि मार्केटिंग, लखनऊ - 9450520503
19. दुर्गा स्टोर, राजा की मण्डी, आगरा - 9927092063
20. महामाया पुस्तक केन्द्र, बिलासपुर - 09907418171
21. डायमण्ड बुक स्टाल, ज्वालापुर, हरिद्वार
22. कम्पटीशन बुक हाउस, सब्जी मण्डी रोड, बरेली - 9897529906
23. अजय गुप्ता बुक स्टोर, लखीमपुर - 809062054
24. शिवशंकर बुक स्टाल, रीवा - 9616355944
25. कृष्णा बुक एजेन्सी, वाराणसी - 9415820103
26. गर्ग बुक डिपो, जयपुर
27. अग्रवाल बुक सेन्टर, मुखर्जी नगर, नयी दिल्ली
28. चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी (सभी बुक स्टालों पर)  
मो. - 9839243286, 9415508311, 0532-2420414
29. विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी - 0542-2413741
30. मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी
31. केशवी बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली - 93
32. महावीर बुक स्टाल, खजूरी बाजार, इन्दौर
33. हिन्दी बुक डिपो, मुरादाबाद - 94566888596
34. माँ बुक स्टेशनर्स, शहडोल छत्तीसगढ़ - 9406754644
35. ज्ञानगंगा, राँची, झारखण्ड - 9234249100

## प्राक्कथन

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय।

- UP-TET (संस्कृत) एवं प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा-2018 को ध्यान में रखकर यह “विजयी भव” नामक पुस्तक सभी संस्कृत प्रेमियों को समर्पित है।
- UP-TET संस्कृत के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर इस पुस्तक को तैयार किया गया है, कोशिश की गयी है कि माध्यमिक शिक्षा परिषद् की कक्षा 6 से 12 तक की पुस्तकों में जो सूत्र उदाहरण आदि दिये गये हैं उन्हीं को आधार बनाकर इसे लिखा जाय; जो आपकी परीक्षा के लिए अत्यन्त उपयोगी हो।
- संस्कृतगङ्गा के सम्पादक मण्डल ने अथक परिश्रम करके इस पाठ्यसामग्री को तैयार किया है इसके लिए सभी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद। विशेषकर **अम्बिकेश, सत्यप्रकाश, सुमन और मिथिलेश** को।
- साथ ही संस्कृतगङ्गा कार्यालयीय कार्यों के हमारे सभी सहयोगियों को भी साधुवाद जो मुद्रण सम्बन्धी सभी कार्यों को यथासमय पूरा करते हैं। विशेष रूप से गोपेश, अविनाश कुमार (शिवम्), जितेन्द्र (मामा बवाली), कृष्णकुमार, रामप्रसाद, सन्तोष कुमार यादव (साहब जी), जितेन्द्र मिश्र, योगेश (मुनि जी), नितिन जी (सपत्नीक), राकेश पाण्डेय, दीक्षा, शिवानी, जूही, प्रीती आदि।
- अन्त में अपने सुहृदवर ब्रह्मानन्द मिश्र को सादर नमन जिन्होंने **कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान** को संस्कृतगङ्गा की नींव के रूप में विकसित किया है और इस सम्पूर्ण पुस्तक की अन्तः चेतना एवं बाह्य शरीर के वही ब्रह्मा (निर्माणकर्ता) हैं।
- मित्रों यह प्रयास किया गया है कि पुस्तक में मुद्रणदोष न हो, इसलिए पाँच बार इसका प्रूफ पढ़ा गया है किन्तु भूलवशात् कुत्रचित् दोष दिखायी पड़े तो हमें नीचे लिखे मोबाइल नम्बरों पर अवश्य सूचित करें ताकि आगामी संस्करण में उसे दूर किया जा सके।

सभी परीक्षार्थियों को परीक्षा की शुभकामनायें।

“विजयी भव”

दिनाङ्क - 01 नवम्बर, 2018

सम्पर्क सूत्र - 8004545096

9839852033

भवदीय

सर्वज्ञभूषण

संस्कृतगङ्गा,

दारागंज, प्रयागराज

## UP-TET संस्कृत पाठ्यक्रम ( प्राथमिक स्तर 1-5 )

1. वर्ण विचार- स्वर, व्यञ्जन
2. माहेश्वर सूत्र
3. प्रत्याहार
4. वर्णों का उच्चारणस्थान
5. वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्यप्रयत्न
6. व्याकरणशास्त्र की प्रसिद्ध संज्ञायें एवं परिभाषायें  
गुण, वृद्धि, ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत, अनुनासिक, लिङ्ग, वचन, पुरुष, विभक्ति, कारक, गण, लकार आदि
7. सन्धि (स्वर, व्यञ्जन एवं विसर्ग)
8. समास (पाँच प्रकार)
9. कारक (प्रमुख सूत्र)
10. प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तव्यत्, अनीयर्, तुमुन्, क्त, क्तवत्, शतृ, शानच्, ल्युट्, आदि।
11. उपसर्ग एवं अव्यय
12. पर्यायवाची शब्द
13. विलोमशब्द
14. वाच्यपरिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य)
15. शरीर के अंगों के नाम, घर, परिवार, परिवेश, पशु, पक्षी, एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं के संस्कृत नाम
16. शब्दरूप-  
(i) अकारान्त पुलिङ्ग - राम, बालक, छात्र आदि  
(ii) इकारान्त पुलिङ्ग - हरि, मुनि, कवि आदि  
(iii) उकारान्त पुलिङ्ग - गुरु, भानु, साधु आदि  
(iv) ऋकारान्त पुलिङ्ग - पितृ, मातृ, जामातृ आदि  
(v) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग - रमा, बालिका, लता आदि  
(vi) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग - नदी, जननी, नगरी आदि  
(vii) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग - मातृ, स्वसृ, दुहितृ आदि  
(viii) अकारान्त नपुंसकलिङ्ग - फल, जल, ज्ञान आदि
17. सर्वनाम रूप- तद्, एतद्, यत्, किम्, सर्व, अस्मद्, युष्मद्, भवत् आदि।
18. धातुरूप ( क्रियायें ) - भू, गम्, पठ्, वस्, अस्, शक्, प्रच्छ्, पा, दृश्, स्था, नी, नश्, आप्, इष्, लिख्, वद्, लभ्, कथ्, दा, ज्ञा, कृ, कृष्, श्रि, हन्।
19. संस्कृतसंख्यायें (1 से 100 तक)
20. कवियों एवं लेखकों की रचनायें
21. संस्कृत सूक्तियाँ
22. अपठित अनुच्छेद

## UP-TET ( संस्कृत )

**संस्कृत-** सम् + कृ + क्त (सुट् का आगम)

‘संस्कृत’ शब्द का अर्थ है- शुद्ध, परिष्कृत, परिमार्जित, परिनिष्ठित।  
अतः संस्कृत भाषा का अर्थ है- शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

**व्याकरण-** वि + आङ् + √कृ + ल्युट्

‘व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते अनेन इति व्याकरणम्’ जिसके माध्यम से शब्दों की व्युत्पत्ति या निष्पत्ति बतायी जाय, वह व्याकरण है।  
व्याकरण ‘शब्दशास्त्र’ या ‘पदशास्त्र’ है।

**त्रिमुनि-** संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि हैं-

1. पाणिनि
2. कात्यायन/वररुचि
3. पतञ्जलि

**अष्टाध्यायी-** व्याकरणशास्त्र का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है- अष्टाध्यायी जो महर्षि पाणिनि की रचना है।

- अष्टाध्यायी में 8 अध्याय, प्रत्येक अध्याय में 4-4 पाद हैं, तो कुल मिलाकर  $8 \times 4 = 32$  पाद हैं, तथा 3978 अर्थात् लगभग 4000 सूत्र हैं। इसीलिए पाणिनि को ‘सूत्रकार’ कहा गया है।
- अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र- ‘वृद्धिरादैच्’ (1.1.1) तथा अन्तिम सूत्र ‘अ अ’ (8.4.67) है।
- महर्षि कात्यायन या वररुचि ने अष्टाध्यायी के सूत्रों पर वार्तिक लिखा, इसीलिए इन्हें ‘वार्तिककार’ कहते हैं।
- महर्षि पतञ्जलि ने अष्टाध्यायी के 4000 सूत्रों पर एक विस्तृत भाष्य लिखा, जिसे ‘महाभाष्य’ कहते हैं। इसीलिए व्याकरण शास्त्र के ‘भाष्यकार’ के रूप में पतञ्जलि प्रसिद्ध हैं।  
महाभाष्य में कुल 84 ‘आह्निक’ हैं।
- भट्टोजिदीक्षित ने सूत्रों पर वृत्ति लिखी इसीलिए इन्हें ‘वृत्तिकार’ के नाम से जानते हैं। ‘सिद्धान्तकौमुदी’ इनकी प्रसिद्ध रचना है।

## वर्ण विचार

- **वर्ण अथवा अक्षर-** हम मुख से जिन ध्वनियों का उच्चारण करते हैं, उन्हें ‘वर्ण’ अथवा ‘अक्षर’ कहते हैं। वैसे तो ‘न क्षरति इति अक्षरः’ ऐसा ‘अक्षर’ शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है। अर्थात् जिनका क्षरण या विनाश न हो वे अक्षर हैं, जैसे- अ, इ, उ, क्, ख्, ग् आदि, परन्तु सामान्यतया ‘वर्ण’ या ‘अक्षर’ समानार्थी समझे जाते हैं। वर्ण दो प्रकार के

होते हैं-

- (i) स्वर और (ii) व्यञ्जन

## स्वर ( अच् )

**स्वर - ‘स्वयं राजन्ते इति स्वराः’ -**

स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण के लिए किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती। जैसे- ‘अ’ के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या व्यञ्जन वर्णों की सहायता नहीं लेनी पड़ती इसीलिए ‘अ’ स्वर है। इसप्रकार अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ- ये सभी स्वर हैं।

**1. स्वरों की संख्या-** संस्कृत व्याकरणशास्त्र में स्वरों की संख्या 09 मानी गयी है।

**जैसे-** अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ। ये सभी स्वर ‘अच्’ प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित हैं इसीलिए स्वरों को ‘अच्’ भी कहा जाता है।

**2. मूल स्वर-** मूल स्वर 05 हैं। अ, इ, उ, ऋ, लृ ये पाँच मूलस्वर कहे जाते हैं।

**3. संयुक्त स्वर-** ए, ओ, ऐ, औ - ये चार संयुक्त या मिश्रित स्वर कहे जाते हैं।

**जैसे-** अ + इ = ए  
अ + उ = ओ  
अ + ए = ऐ  
अ + ओ = औ

**नोट-** ऊकालोऽङ्गस्वदीर्घप्लुतः (1.2.27) सूत्र से एकमात्रिक , द्विमात्रिक तथा त्रिमात्रिक स्वरों की क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत संज्ञा होती है।

**स्वरों के भेद-** स्वरों के मुख्यतया तीन भेद हैं-

**1. ह्रस्व स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं-

**जैसे-** अ, इ, उ, ऋ, लृ ये सभी ह्रस्व स्वर हैं।

**2. दीर्घ स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा का समय लगे, वे दीर्घस्वर कहे जाते हैं-

**जैसे-** आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ।

**3. प्लुत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में दो मात्रा से अधिक अर्थात् तीन मात्रा का समय लगे इन्हें प्लुतस्वर कहते हैं। प्लुतस्वरों



की पहचान के लिए '३' यह चिह्न लगाया जाता है।

जैसे- अ-३, इ-३, उ-३ आदि।

'ओ३म्'- यह स्वर त्रैमात्रिक है, जिसका प्रयोग प्रायः वेदों में होता है। यहाँ 'ओ' प्लुतस्वर है।

## वर्णों का उच्चारण काल

एकमात्रो भवेत् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्॥

अर्थात्- ह्रस्व स्वर की एकमात्रा, दीर्घस्वर की दो मात्रा एवं प्लुत स्वरों को त्रिमात्रिक समझना चाहिए। व्यञ्जन वर्णों की आधी मात्रा जाननी चाहिए।

एकमात्रिक स्वर- अ, इ, उ, ऋ, ए (ह्रस्व स्वर)।

द्विमात्रिक स्वर- आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ (दीर्घ स्वर)

त्रिमात्रिक स्वर- अ-३, इ-३, उ-३, ऋ-३ आदि। (प्लुत स्वर)

अर्द्धमात्रिक वर्ण- क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् (सभी व्यञ्जनवर्ण) आदि।

मात्राकाल- पलक झपकने के समय को एकमात्राकाल कहते हैं।

## व्यञ्जन ( हल् वर्ण )

व्यञ्जन- 'अन्वग् भवति व्यञ्जनम्'

व्यञ्जन वे वर्ण हैं, जो स्वतन्त्र रूप से न बोले जा सकें; अर्थात् जिनका उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता।

जैसे- क् + अ = क

ख् + अ = ख

ग् + अ = ग आदि।

➤ व्याकरण में जो शुद्ध व्यञ्जन वर्ण होंगे उन्हें हलन्त के साथ ही लिखा जाता है। जैसे- क् च् ट् त् प् आदि। इसीलिए इन्हें अर्धमात्रिक वर्ण कहा गया है। 'व्यञ्जनं चार्धमात्रिकम्'।

➤ सभी व्यञ्जन वर्ण 'हल्' प्रत्याहार में समाहित होते हैं अतः व्यञ्जनों को 'हल्' भी कहते हैं। कुल व्यञ्जन वर्ण 33 माने गये हैं। जो कि माहेश्वर सूत्रों के 'हयवरट्' से लेकर 'हल्' तक 10 सूत्रों में कहे गये हैं।

व्यञ्जन के प्रकार- मुख्यरूप से व्यञ्जन के तीन प्रकार होते हैं; जो माहेश्वरसूत्रों में गिने गये हैं।

1. स्पर्श व्यञ्जन 2. अन्तःस्थ व्यञ्जन 3. ऊष्म व्यञ्जन।

चतुर्थ प्रकार है 4. संयुक्त व्यञ्जन (जो माहेश्वर सूत्रों में परिगणित नहीं है)

(i) स्पर्श व्यञ्जन- जिन वर्णों के उच्चारण में मुख के विभिन्न अवयवों (भागों) का स्पर्श होता है; उन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इसकी संख्या 25 होती है- क से लेकर म तक के वर्ण

स्पर्श व्यञ्जन हैं। ये वर्ण कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि स्थानों को स्पर्श करने के बाद उच्चरित होते हैं। इसीलिए 'स्पर्श' हैं।

'कादयो मावसानाः स्पर्शाः'

क वर्ग- क् ख् ग् घ् ङ्

च वर्ग- च् छ् ज् झ् ञ्

ट वर्ग- ट् ट् ड् ढ् ण्

त वर्ग- त् थ् द् ध् न्

प वर्ग- प् फ् ब् भ् म्

वर्ग- इनमें से 5-5 वर्णों के जो समूह बने हैं, इन समूहों का नाम है- वर्ग। ये वर्ग उच्चारणस्थान के आधार पर बने हैं।

जैसे- (i) क् ख् ग् घ् ङ् ये पाँच व्यञ्जन कण्ठ से बोले जाते हैं, अतः इन सबका एक वर्ग बनाया गया जिसका नाम रखा गया 'कवर्ग'। कण्ठ से उच्चरित होने के कारण इन्हें 'कण्ठ्यवर्ण' भी कहते हैं।

इसीप्रकार (ii) च् छ् ज् झ् ञ् ये पाँच व्यञ्जन तालु से बोले जाने के कारण 'तालव्यवर्ण' कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम है- 'चवर्ग'।

(iii) ट् ट् ड् ढ् ण् - मूर्धा से उच्चारण होने के कारण 'मूर्धन्यवर्ण' हैं। इस वर्ग का नाम है- 'टवर्ग'।

(iv) त् थ् द् ध् न् - दन्त से उच्चारण होने के कारण 'दन्त्यवर्ण' हैं। इस वर्ग को 'तवर्ग' कहते हैं।

(v) प् फ् ब् भ् म् - ये पाँच व्यञ्जन ओष्ठ से बोले जाते हैं, अतः ये 'ओष्ठ्यवर्ण' कहे जाते हैं, इस वर्ग का नाम 'पवर्ग' है।

इसप्रकार कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग कुल पाँच वर्ग होते हैं, तथा प्रत्येक वर्ग के अन्तर्गत 5-5 वर्ण आते हैं अतः 5×5 = 25 वर्ण वर्गाक्षर या वर्गीय व्यञ्जन, या स्पर्श व्यञ्जन कहे जाते हैं।

उदित् - 'कु चु टु तु पु एते उदितः'। इन्हीं पाँच वर्गों का लघुनाम या दूसरा नाम कु चु टु तु पु भी है। इनमें 'उ' की इत् संज्ञा होती है, अतः ये उदित् कहलाते हैं।

संस्कृत व्याकरण में जब भी 'कु' कहा जाएगा तो उस का अर्थ होगा- कवर्ग अर्थात् क् ख् ग् घ् ङ्।

'चु' का मतलब चवर्ग अर्थात् च् छ् ज् झ् ञ्।

'टु' का अर्थ होगा टवर्ग अर्थात् ट् ट् ड् ढ् ण्

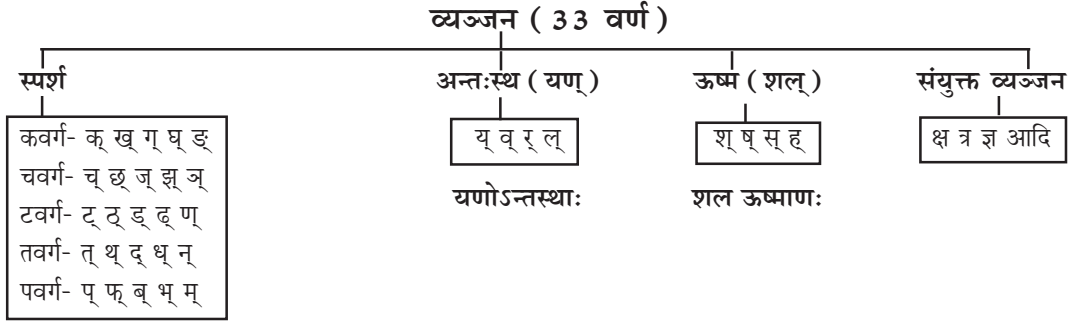
'तु' का अर्थ है- तवर्ग अर्थात् त् थ् द् ध् न्।

'पु' का अर्थ है- पवर्ग अर्थात् प् फ् ब् भ् म्।

जैसे-

(i) 'कुहोश्चुः' सूत्र में 'कु' का अर्थ 'कवर्ग' है और 'चु' का अर्थ चवर्ग है।

(ii) 'चुटू' सूत्र में 'चु' का अर्थ चवर्ग है और 'टु' का अर्थ टवर्ग है।



**कादयो मावसानाः स्पर्शाः**

**अन्तःस्थ व्यञ्जन-** 'यणोऽन्तस्थाः' यण् प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले य् व् र् ल् ये चार वर्ण अन्तःस्थ व्यञ्जन कहे जाते हैं।

**ऊष्म व्यञ्जन-** 'शल ऊष्माणः' शल् प्रत्याहार के अन्तर्गत परिगणित श् ष् स् ह् ये चार वर्ण ऊष्म व्यञ्जन कहे जाते हैं।

**मिश्रित या संयुक्त व्यञ्जन-** दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं उन्हें संयुक्त या मिश्रित व्यञ्जन कहते हैं।

जैसे-  
 क् + ष् + अ = क्ष  
 त् + र् + अ = त्र  
 ज् + ज् + अ = ज्ञ

**अयोगवाह-** वर्णमातृका (वर्णमाला) में पढ़े हुए वर्णों के अतिरिक्त चार वर्ण और भी हैं-

(i) अनुस्वार (ii) विसर्ग (iii) जिह्वामूलीय (iv) उपध्मानीय  
 ➤ वर्णमाला तथा माहेश्वरसूत्रों में न पढ़े जाने के कारण ये अयोगवाह कहलाते हैं।

**(i) अनुस्वार तथा विसर्ग-** "अं अः इत्यचः परावनुस्वारविसर्गौ"

अं और अः ये अच् के बाद आने पर क्रमशः अनुस्वार और विसर्ग कहलाते हैं।

➤ बालकं रामं श्यामं आदि में मकार के बाद अकार के ऊपर जो बिन्दु (·) है उसका नाम अनुस्वार है। इसका उच्चारणस्थान 'नासिका' है। "नासिकाऽनुस्वारस्य"

➤ रामः श्यामः ग्रामः आदि में मकारोत्तर अकार के बाद जो दो बिन्दु (:) है, उसी को विसर्ग (:) कहते हैं।

➤ इसका उच्चारणस्थान 'कण्ठ' है- "अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।"

**जिह्वामूलीय-** "ऋक, १ख इति कखाभ्यां प्रागर्ध्वविसर्गसदृशो जिह्वामूलीयः"

ऋक, १ख के पहले जो आधे विसर्ग के समान लिखा जाता है, उसे जिह्वामूलीय वर्ण कहते हैं।

**यथा-** बालक १क्रीडति। बालक १खेलति।

➤ इसका उच्चारण कण्ठ के भी नीचे 'जिह्वामूल' से होता है।- "जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्"

➤ "कुप्चोः ऋक १पौ च सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से जिह्वामूलीय बन जाता है, नहीं तो विसर्ग भी रह सकता है।

**उपध्मानीय-** "१प १फ इति पफाभ्यां प्रागर्ध्वविसर्गसदृश उपध्मानीयः"

१प १फ के पहिले जो आधे विसर्ग के समान लिखा जाता है, उसे 'उपध्मानीय वर्ण' कहते हैं। जैसे- वृक्ष १पतति। वृक्ष १फलति।

इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है। "उपध्मानीयानां ओष्ठौ"

"कुप्चोः ऋक १पौ च" सूत्र से विसर्ग ही विकल्प से उपध्मानीय बन जाता है।

**कार और इफ प्रत्यय-** "वर्णात्कारः" संस्कृत व्याकरण में वर्णों में 'कार' प्रत्यय लगाकर बोलना चाहिए।

**यथा-** अ + कार = अकार

क + कार = ककार, ख से खकार, ग से गकार आदि।

'र' में 'इफ' प्रत्यय (र + इफ) लगाकर 'रेफ' कहना चाहिए।

**आनुपूर्वी या पदों का अन्तक्रम-** किसी भी शब्द में वर्ण जिस क्रम से व्यवस्थित रहते हैं; उस क्रम का नाम आनुपूर्वी होता है।

जैसे 'बालक' शब्द में छह वर्ण हैं- ब् आ ल् अ क् अ।

'राम' शब्द में चार वर्ण हैं- र् आ म् अ।

➤ 'बालक' और 'राम' के अन्त में अकार है अतः ये अकारान्त शब्द हैं।

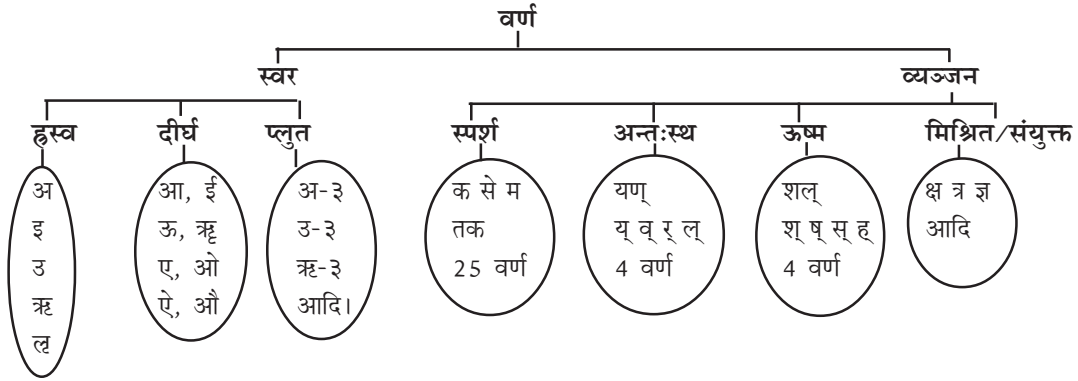
➤ इसीप्रकार हरि, कवि, रवि, ऋषि, कपि आदि इकारान्त हैं।

➤ भानु, गुरु, शिशु आदि उकारान्त शब्द हैं।

➤ पितृ, भ्रातृ, मातृ, जामातृ आदि ऋकारान्त शब्द हैं।

➤ राजन्, आत्मन् आदि नकारान्त हैं, मनस्, पयस्, यशस् आदि सकारान्त हैं, सरित्, जगत् आदि तकारान्त हैं।





## माहेश्वर सूत्र

महर्षि पाणिनि ने संस्कृत का व्याकरण बनाने की इच्छा से घोर तप करके भगवान् महेश्वर (शिव) को प्रसन्न किया। प्रसन्न होकर शिव ने नृत्य के साथ जो डमरू वादन किया उसी से महर्षि पाणिनि को ये 14 सूत्र सुनायी पड़े। भगवान् महेश्वर के डमरू से उत्पन्न होने के कारण इन्हें “माहेश्वर सूत्र” कहा जाता है।

**नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।**

**उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शो शिवसूत्रजालम्॥**  
नटराजराज भगवान् शिव ने नृत्य के अवसान में सनकादि सिद्धों के उद्धार की कामना से चौदह बार डमरू बजाया जिसमें 14 शिवसूत्रों का ताना बाना निहित था।

- अइउण् ऋलृक् आदि ये चौदह सूत्र हैं इसलिए इन्हें “चतुर्दशसूत्र” कहते हैं।
- इन्हीं सूत्रों से प्रत्याहार बनाये जाते हैं, अतः इन्हें “प्रत्याहारसूत्र” भी कहते हैं।
- भगवान् शिव के डमरू से निकलकर पाणिनि को प्राप्त हुए हैं, अतः इन्हें “शिवसूत्र” या “माहेश्वरसूत्र” भी कहते हैं।
- इन सूत्रों में संस्कृत वर्णमाला है अतः इन्हें “वर्णसमाम्नायसूत्र” भी कहते हैं।

### चतुर्दश माहेश्वर सूत्र—

- |                |          |             |         |
|----------------|----------|-------------|---------|
| 1. अइउण्       | 2. ऋलृक् | 3. एओङ्     | 4. ऐऔच् |
| 5. हयवरट्      | 6. लण्   | 7. जमडणनम्  |         |
| 8. झभञ्        | 9. घढधष् | 10. जबगडदश् |         |
| 11. खफछठथचटतव् | 12. कपय् |             |         |
| 13. शषस्       | 14. हल्  |             |         |

### माहेश्वरसूत्रों के विषय में ज्ञातव्य तथ्य—

- माहेश्वरसूत्रों में सबसे पहिले स्वर हैं; उसके बाद अन्तःस्थ वर्ण य् व् र् ल् हैं। उसके बाद वर्णों के पञ्चम वर्ण, फिर चतुर्थ वर्ण, तदनन्तर तृतीयवर्ण फिर द्वितीय वर्ण तब प्रथमवर्ण, सबसे अन्त में श् ष् स् ह् ये चार ऊष्म वर्ण गिने गये हैं।
- इन चतुर्दशसूत्रों के अन्त में जो ण् क् ड् च् आदि व्यञ्जन वर्ण हलन्त हैं उनका नाम ‘इत्’ है। “एषाम् अन्त्याः इतः”
- इन इत्संज्ञक वर्णों का लोप हो जाता है। कुल 14 इत्संज्ञक वर्ण होते हैं। ‘लण्’ सूत्र का अकार भी इत्संज्ञक होने से इत्संज्ञक वर्ण 15 भी कहे जा सकते हैं। “लण्मध्ये तु इत्संज्ञकः” इत् को ‘अनुबन्ध’ भी कहा जाता है। अर्थात् ‘अनुबन्ध’ और ‘इत्’ पर्यायवाची हैं।
- प्रत्याहार बनाने में इत्संज्ञकवर्णों का प्रयोग किया जाता है किन्तु प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों को नहीं गिना जाता है।
- जैसे- ‘अच्’ प्रत्याहार “अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच्”  
इन चार सूत्रों से बना है। यहाँ अइउण् के ‘अ’ से लेकर ऐऔच् के ‘च्’ के बीच आने वाले सभी वर्ण “अच्” प्रत्याहार में गिने जायेंगे किन्तु “ण् क् ड् और च्” ये चार इत्संज्ञक वर्ण ‘अच्’ प्रत्याहार में नहीं गिने जायेंगे।
- अतः ‘अच्’ के अन्तर्गत- “अ, इ, उ, ऋ, ॠ, ए, ओ, ऐ, औ” ये 9 वर्ण आते हैं। जिसमें इत्संज्ञक वर्ण नहीं गिने गये हैं।
- माहेश्वरसूत्रों के पाँचवे सूत्र ‘हयवरट्’ में ‘ह’ वर्ण गिना गया है तथा चौदहवें सूत्र ‘हल्’ में भी ‘ह’ वर्ण गिना गया है। अतः हकार की दो बार गणना की गयी है।

- माहेश्वरसूत्रों में हकार का दो बार ग्रहण क्यों? 'अट्' और 'शल्ल' प्रत्याहार में 'ह' वर्ण को शामिल करने के लिए तथा 'अर्हेण' और 'अधुक्षत' आदि प्रयोगों की सिद्धि के लिए।
- माहेश्वर सूत्रों में 'ण्' इत्संज्ञक वर्ण दो बार आया है- एक बार अइउण् में दूसरी बार लण् में।

### इत्संज्ञा करने वाला सूत्र-

- **हलन्त्यम्** - (1.3.3) उपदेशावस्था में जो अन्तिम हल् होता है, उसकी इत्संज्ञा होती है।

### इत्संज्ञक वर्णों का लोप करने वाला सूत्र-

**तस्य लोपः** - जिस वर्ण की इत्संज्ञा होती है, उसका लोप हो जाता है।

इसीलिए 'अइउण्' में जो 'ण्' है ऋलृक् में जो 'क्' है इनकी "हलन्त्यम्" सूत्र से इत्संज्ञा होकर "तस्य लोपः" सूत्र से लोप हो जाता है। अतएव प्रत्याहार वर्णों की गिनती में इन इत्संज्ञक वर्णों की गिनती नहीं की जाती।

### उपदेश क्या है- "उपदेश आद्योच्चारणम्"

पाणिनि कात्यायन एवं पतञ्जलि ने जिसका प्रथम उच्चारण या प्रथम पाठ किया, उसे व्याकरणशास्त्र में 'उपदेश' कहा जाता है। यहाँ 'अइउण् ऋलृक्' आदि चौदह सूत्रों को महर्षि पाणिनि ने माहेश्वर के डमरू की ध्वनि को प्रथम बार उच्चारण किया अतः ये 14 सूत्र भी 'उपदेश' कहलाये।

- भू आदि धातु, अइउण् आदि सूत्र, उणादि सूत्र, वार्तिक, लिङ्गानुशासन, आगम, प्रत्यय, और आदेश, ये उपदेश माने जाते हैं। कहा भी गया है-

**धातु-सूत्र-गणोणादि-वाक्यलिङ्गानुशासनम्।**

**आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्तिताः॥**

## प्रत्याहार संज्ञा

- **प्रति + आङ् + ह + घञ् = प्रत्याहारः**
- 'प्रत्याहार' शब्द का अर्थ है- संक्षेपीकरण।
- "प्रत्याहियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः"
- जिनकी सहायता से कम से कम शब्दों में अधिकतम बात कही जा सके, उन्हें प्रत्याहार कहते हैं।

### प्रत्याहार संज्ञा विधायक सूत्र- "आदिरन्त्येन सहेता"

(1.1.71) अन्त्य इत् वर्ण के साथ जो आदि वर्ण वह मध्यगामी सभी वर्णों का बोधक होता हुआ स्वयं का भी बोध कराता है। जैसे- अण् प्रत्याहार 'अइउण्' सूत्र के 'अ' से लेकर इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' से मिलकर बना है जिसमें अ इ उ ये तीन वर्ण आते हैं।

- इसीप्रकार 'इक्' प्रत्याहार अइउण्, ऋलृक् इन दो सूत्रों से बना है। यहाँ इ से लेकर क् के बीच के सभी वर्ण इ उ ऋ लृ इक् प्रत्याहार में गिने जाते हैं।

### प्रत्याहारों की संख्या- संस्कृत व्याकरण में कुल 42 प्रत्याहार

हैं। कुछ विद्वान् 'रं' और 'जम्' प्रत्याहार भी मानते हैं अतः इनके अनुसार प्रत्याहार 43 अथवा 44 हो जाते हैं।

### प्रत्याहारों के विषय में कुछ विशेष जानकारी

- 'अच्' प्रत्याहार में समस्त 9 स्वरवर्ण आते हैं, ये अइउण् से ऐऔच् तक के चार सूत्रों से बना है। इसीलिए स्वरों को "अच्" भी कहा जाता है।
- 'हल्' प्रत्याहार में समस्त 33 व्यञ्जन वर्ण आते हैं, जो हयवरट् से लेकर हल् तक के 10 सूत्रों से बना है। इसीलिए व्यञ्जनों को "हल्" भी कहा जाता है।
- 'झष्' प्रत्याहार में वर्णों के चौथे वर्ण (झ भू घू दू धू) आते हैं जो झभञ् और घढधष् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'जश्' प्रत्याहार में वर्णों के तीसरे वर्ण (जू बू गू डू दू) आते हैं, जो 'जबगडदश्' सूत्र से बना है।
- 'चय्' प्रत्याहार में वर्णों के प्रथम वर्ण (चू टू तू कू पू) आते हैं।
- 'शल्ल' प्रत्याहार में चारों ऊष्मवर्ण (शू षू स् हू) आते हैं। जो शषसर् और हल् इन दो सूत्रों से बना है।
- 'यण्' प्रत्याहार में चारों अन्तःस्थ वर्ण (यू वू रू लू) आते हैं। जो हयवरट् और लण् इन दो सूत्रों से बना है।
- अइउण् ऋलृक् एओङ् ऐऔच् आदि 14 सूत्रों के अन्त में जो ण् क् ड् च् आदि हल् वर्ण लगे हुए हैं; इनका प्रयोजन प्रत्याहार बनाना है। जैसा कि कहा गया है, "णादयोऽणाद्यर्थाः--"

### माहेश्वर सूत्रों के इत्संज्ञक वर्णों से मिलकर बनने वाले 42 प्रत्याहार

सूत्र	इत्संज्ञकवर्ण	प्रत्याहार	प्रत्याहारों की संख्या
1. अइउण्	इसके 'ण्' से एक प्रत्याहार	अण्	1
2. ऋलृक्	इसके 'क्' से तीन प्रत्याहार	अक् इक् उक्	3
3. एओङ्	इसके 'ङ्' से एक प्रत्याहार	एङ्	1
4. ऐऔच्	इसके 'च्' से चार प्रत्याहार	अच् इच् एच् ऐच्	4
5. हयवरट्	इसके 'ट्' से एक प्रत्याहार	अट्	1
6. लण्	इसके 'ण्' से तीन प्रत्याहार	अण् इण् यण्	3
7. जमङणनम्	इसके 'म्' से तीन प्रत्याहार	अम् यम् डम्	3
8. झभञ्	इसके 'ञ्' से एक प्रत्याहार	यञ्	1
9. घढधष्	इसके 'ष्' से दो प्रत्याहार	भष् झष्	2
10. जबगडदश्	इसके 'श्' से छह प्रत्याहार	अश् हश् वश् जश् झश् बश्	6
11. खफछठथचटतव्	इसके 'व्' से एक प्रत्याहार	छव्	1
12. कपय्	इसके 'य्' से पाँच प्रत्याहार	यय् मय् झय् खय् चय्	5
13. शषसर्	इसके 'र्' से पाँच प्रत्याहार	यर्र् झर् खर् चर् शर्	5
14. हल्	इसके 'ल्' से छह प्रत्याहार	अल् हल् वल् रल् झल् शल्	6
			कुल-42

### संस्कृतव्याकरण के 42 प्रत्याहार

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
01.	अण्	अ, इ, उ	03 वर्ण	उरण् रपरः (1.1.51)
02.	अक्	अ, इ, उ, ऋ, लृ	05 वर्ण	अकः सवर्णे दीर्घः (6.1.101)
03.	अच्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ ( सम्पूर्ण स्वरवर्ण )	09 वर्ण	अचोऽन्त्यादि टि (1.1.64)
04.	अट्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र	13 वर्ण	शश्छोऽटि (8.4.63)
05.	अण्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल	14 वर्ण	अणुदित्सवर्णस्य चाऽप्रत्ययः (1.1.69)
06.	अम्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न	19 वर्ण	पुमः खय्यम्परे (8.3.6)
07.	अश्	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द	29 वर्ण	“भो भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि” (8.3.17)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
08.	अल्	अ,इ,उ,ऋ,लृ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल ज,म,ड,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ङ,द,ख,फ,छ,ठ, थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह ( सम्पूर्ण वर्णमाला )	42 वर्ण	अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा (1.1.65)
09.	इक्	इ,उ,ऋ,लृ	04 वर्ण	इको गुणवृद्धी (1.1.3)
10.	इच्	इ,उ,ऋ,लृ,ए,ओ,ऐ,औ	08 वर्ण	इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च (6.3.68)
11.	इण्	इ,उ,ऋ,लृ,ए,ओ,ऐ,औ, ह,य,व,र,ल	13 वर्ण	इणकोः (8.3.57)
12.	उक्	उ,ऋ,लृ	03 वर्ण	उगितश्च (4.1.6)
13.	एङ्	ए,ओ ( गुणसंज्ञकवर्ण )	02 वर्ण	एङि पररूपम् (6.1.94)
14.	एच्	ए,ओ,ऐ,औ	04 वर्ण	एचोऽयवायावः (6.1.78)
15.	ऐच्	ऐ,औ ( वृद्धिसंज्ञकवर्ण )	02 वर्ण	वृद्धिरादैच् (1.1.1)
16.	हश्	ह,य,व,र,ल,ज,म,ड,ण,न, झ,भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ङ,द	20 वर्ण	हशि च (6.1.114)
17.	हल्	ह,य,व,र,ल,ज,म,ड,ण,न, झ,भ,घ,ढ, ध,ज,ब,ग,ङ,द, ख,फ,छ,ठ,थ,च,ट, त,क, प,श,ष,स, (ह) ( सम्पूर्ण व्यञ्जनवर्ण )	33 वर्ण	हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)
18.	यण्	य,व,र,ल, ( अन्तःस्थवर्ण )	04 वर्ण	इको यणचि (6.1.77)
19.	यम्	य,व,र,ल,ज,म,ड,ण,न	09 वर्ण	हलो यमां यमि लोपः (8.4.64)
20.	यञ्	य,व,र,ल,ज,म,ड,ण,न,झ,भ	11 वर्ण	अतो दीर्घो यञि (7.3.101)
21.	यय्	य,व,र,ल,ज,म,ड,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ङ,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प	29 वर्ण	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णाः (8.4.58)
22.	यर्	य,व,र,ल,ज,म,ड,ण,न,झ, भ,घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ङ,द,ख, फ,छ,ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स	32 वर्ण	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)
23.	वश्	व,र,ल,ज,म,ड,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ङ,द	18 वर्ण	नेङ् वशि कृति (7.2.8)
24.	वल्	व,र,ल,ज,म,ड,ण,न,झ,भ, घ,ढ,ध,ज,ब,ग,ङ,द,ख,फ,छ, ठ,थ,च,ट,त,क,प,श,ष,स,ह	32 वर्ण	लोपो व्योर्वलि (6.1.66)

क्र.	प्रत्याहारः	वर्णाः	कुलवर्णाः	सूत्रों में प्रत्याहार का प्रयोग
25.	रल्	र, ल, ज, म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह	31 वर्ण	“रलो व्युपधाद्धलादेः संश्च” (1.2.26)
26.	मय्	म, ड, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प	24 वर्ण	मय उजो वो वा (8.3.33)
27.	डम्	ड, ण, न	03 वर्ण	ड-मो ह्रस्वादचि डमुण् नित्यम् (8.3.32)
28.	झष्	झ, भ, घ, ढ, ध	05 वर्ण	एकाचो बशो भष् (8.2.37) झषन्तस्य स्ध्वोः
29.	झश्	झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द	10 वर्ण	झलां जश् झशि (8.4.53)
30.	झय्	झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प	20 वर्ण	झयो होऽन्यतरस्याम् (8.4.62)
31.	झर्	झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स,	23 वर्ण	झरो झरि सवर्णे (8.4.65)
32.	झल्	झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, ह	24 वर्ण	झलो झलि (8.2.26)
33.	भष्	भ, घ, ढ, ध	04 वर्ण	एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
34.	जश्	ज, ब, ग, ड, द	05 वर्ण	झलां जशोऽन्ते (8.2.39)
35.	बश्	ब, ग, ड, द	04 वर्ण	एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः (8.2.37)
36.	खय्	ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प	10 वर्ण	पुमः खय्यम्परे (8.3.6)
37.	खर्	ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स	13 वर्ण	खरि च (8.4.54)
38.	छव्	छ, ठ, थ, च, ट, त	06 वर्ण	नश्छव्यप्रशान् (8.3.7)
39.	चय्	च, ट, त, क, प	05 वर्ण	चयोः द्वितीयाः शरि (8.4.47) पौष्करशादेः वार्तिक-
40.	चर्	च, ट, त, क, प, श, ष, स	08 वर्ण	अभ्यासे चर्च (8.4.54)
41.	शर्	श, ष, स	03 वर्ण	वा शरि (8.3.36)
42.	शल्ल	श, ष, स, ह	04 वर्ण	“शल्ल इगुपधादनितः क्सः” (3.1.45)
		( ऊष्मवर्ण )		
*	रँ	र, ल	02 वर्ण	उरण् रपरः (1.1.51)
*	जम्	ज, म, ड, ण, न	05 वर्ण	जमन्ताडुः (उणादि.1.114)
		( वर्गों के पञ्चमवर्ण )		

## वर्णों का उच्चारण स्थान

**उच्चारणस्थान-** मुख के जिस भाग से जिस वर्ण का उच्चारण किया जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहा जाता है।

क्र.	सूत्रम्	उच्चारित वर्ण ( वर्णों के नाम )	उच्चारण स्थान
1.	अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	अ, आ (18 प्रकार) कु = कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ् ह् और विसर्ग (ः) (कण्ठ्य वर्ण)	कण्ठ
2.	इचुयशानां तालु	इ, ई (18 प्रकार) चु अर्थात् चवर्ग = च् छ् ज् झ् ञ् य् और श् (तालव्य वर्ण)	तालु
3.	ऋटुरषाणां मूर्धा	ऋ, ॠ (18 प्रकार) टु अर्थात् टवर्ग = ट् ठ् ड् ढ् ण् र् और ष् (मूर्धन्यवर्ण)	मूर्धा
4.	लृतुलसानां दन्ताः	लृ (12 प्रकार) तु अर्थात् तवर्ग = त् थ् द् ध् न् ल् और स् (दन्त्यवर्ण)	दन्त
5.	उपूध्मानीयानां ओष्ठौ	उ ऊ (18 प्रकार) पु अर्थात् पवर्ग = प् फ् ब् भ् म् उपध्मानीय ह् प् ह् फ् (ओष्ठ्य वर्ण)	ओष्ठौ
6.	जमङ्गणानां नासिका च	ञ् म् ङ् ण् न् (अनुनासिक वर्ण)	नासिका भी
7.	एदैतोः कण्ठतालु	ए, ऐ (कण्ठतालव्य वर्ण)	कण्ठतालु
8.	ओदैतोः कण्ठोष्ठम्	ओ, औ (कण्ठोष्ठ्य वर्ण)	कण्ठ ओष्ठ
9.	वकारस्य दन्तोष्ठम्	व (दन्तोष्ठ्य वर्ण)	दन्तोष्ठ
10.	जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्	ह् क् ह् ख् (जिह्वामूलीय वर्ण)	जिह्वामूलम्
11.	नासिकाऽनुस्वारस्य	(ः) अनुस्वार (नासिक्य वर्ण)	नासिका

➤ उच्चारणस्थान और प्रयत्न को अष्टाध्यायी सूत्रों में नहीं बताया गया है अपितु पाणिनीय शिक्षा आदि ग्रन्थों में उच्चारणस्थान आठ प्रकार के माने गये हैं-

अष्टौ स्थानानि वर्णानाम् उरः कण्ठः शिरस्तथा।

जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च॥ (पाणिनीय शिक्षा -13)

वर्णों के उरः, कण्ठ, मूर्धा, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु ये आठ उच्चारण स्थान हैं।

**UP-TET और M.P. वर्ग 1-2 ( संस्कृत ) हेतु**  
**YouTube पर संस्कृतगंगा चैनल को देखें।**



## उच्चारणस्थान तालिका

<b>कण्ठ</b> अ, आ क् ख् ग् घ् ङ् ह् विसर्ग (:)	<b>तालु</b> इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श्	<b>मूर्धा</b> ऋ ॠ ऌ ॡ ढ् ण् र् ष्
<b>दन्त</b> ल् त् थ् द् ध् न् ल् स्	<b>ओष्ठ</b> उ ऊ प् फ् ब् भ् म् ङ् ण्	<b>नासिका</b> (ँ) अनुस्वार
<b>कण्ठ तालु</b> ए ऐ	<b>कण्ठ ओष्ठ</b> ओ औ	<b>दन्त ओष्ठ</b> व्
<b>कण्ठ+नासिका</b> ङ्	<b>तालु+नासिका</b> ज्	<b>मूर्धा+नासिका</b> ण्
<b>दन्त+नासिका</b> न्	<b>ओष्ठ+नासिका</b> म्	<b>जिह्वामूलीय</b> ङ्क ङ्ख

## वर्णों का आभ्यन्तर एवं बाह्य प्रयत्न

**प्रयत्न-** वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार का होता है-

(i) आभ्यन्तर प्रयत्न (ii) बाह्य प्रयत्न  
**“यत्नो द्विधा आभ्यन्तरो बाह्यश्च”**

**(i) आभ्यन्तर प्रयत्न-** ‘आभ्यन्तर’ का अर्थ है भीतर/आभ्यन्तर प्रयत्न से तात्पर्य उस चेष्टा से है, जो वर्णों के उच्चारण के पूर्व मुख के अन्दर होती है।

**आभ्यन्तर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है-**

1. **स्पृष्ट-** इस आभ्यन्तर प्रयत्न में जिह्वा-कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त आदि उच्चारण स्थानों को स्पर्श करती है, इसलिए

इन्हें ‘स्पर्श वर्ण’ कहते हैं। इसमें क से म तक के 25 वर्ण आते हैं। **“स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्”**

2. **ईषत् स्पृष्ट-** ईषत् का अर्थ है- थोड़ा स्पृष्ट का अर्थ है- छुआ गया।

इस प्रयत्न में जिह्वा उच्चारण स्थान को थोड़ा स्पर्श करती है। इसमें य् व् र् ल् (यण्) अन्तःस्थ वर्ण आते हैं।

**“ईषत्स्पृष्टम् अन्तःस्थानाम्”**

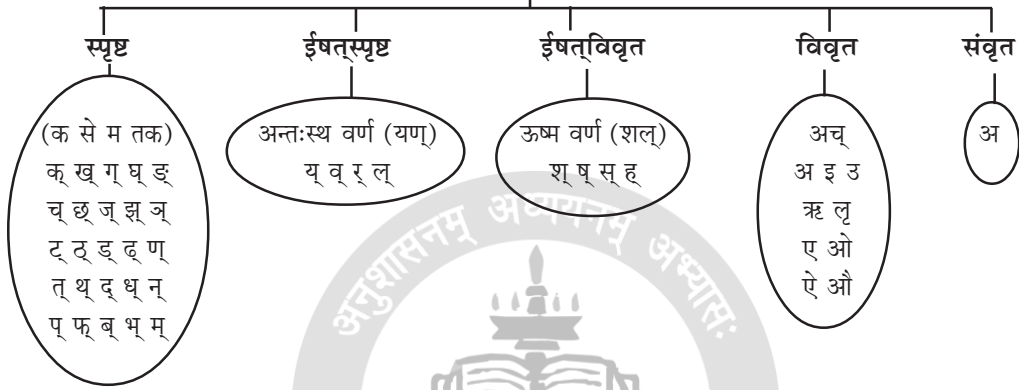
3. **विवृत-** विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इनके उच्चारण में मुँह खोलना पड़ता है। यह प्रयत्न स्वरों का है। **“विवृतं स्वराणाम्”**

- जैसे- अ, इ, उ, ऋ, लृ ए ओ ऐ औ सभी स्वर विवृत हैं।
4. **ईषत् विवृत-** ईषत् का अर्थ है- थोड़ा विवृत का अर्थ है- खुला हुआ। इसमें जिह्वा को कम उठाना पड़ता है। शल् अर्थात् श् ष् स् ह इन चार ऊष्म वर्णों का प्रयत्न ईषत्विवृत होता है।

“ईषत्विवृतम् ऊष्मणाम्”

5. **संवृत-** संवृत का अर्थ है- ढका हुआ या बन्द। इसमें वायु का मार्ग बन्द रहता है। प्रयोग करने अर्थात् उच्चारणावस्था में ह्रस्व ‘अ’ का प्रयत्न संवृत होता है।
- “ह्रस्वस्य अवर्णस्य प्रयोगे संवृतम्”
- किन्तु शास्त्रीय (साधनिका या प्रयोगसिद्धि) अवस्था में ‘अ’ का प्रयत्न अन्य स्वरों की भाँति विवृत ही होता है-
- “प्रक्रियादशायां तु विवृतमेव”

### आभ्यन्तर प्रयत्न तालिका



**बाह्य प्रयत्न-** मुख से जब वर्ण बाहर निकलने लगते हैं उस समय उच्चारण की जो चेष्टा होती है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते हैं।

बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार का होता है- “बाह्यप्रयत्नस्तु एकादशधा”

1. विवार 2. संवार 3. श्वास 4. नाद 5. घोष 6. अघोष

7. अल्पप्राण 8. महाप्राण 9. उदात्त 10. अनुदात्त 11. स्वरित।

**विवार श्वास अघोष-** खर् प्रत्याहार (ख् फ् छ् ट् थ् च् द् त् क् प् श् ष् स्) के अन्तर्गत आने वाले वर्णों का बाह्यप्रयत्न विवार, श्वास और अघोष होगा। “खरो विवाराः श्वासा अघोषाश्च”

विवार श्वास अघोष

खर्

ख् फ् छ् ट् थ् च् द् त् क् प्

श् ष् स्

**संवार नाद घोष-** हश् प्रत्याहार (ह् य् व् र् ल् ज् म् ङ् ण् न् झ् भ् घ् द् ध् ज् ब् ग् ड् द्) के अन्तर्गत आने वाले सभी व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न संवार नाद घोष होगा। -

“हशः संवारा नादा घोषाश्च” इसे संक्षेप में “संवाधो हशः” भी कह सकते हैं।

संवार नाद घोष

हश्

ह् य् व् र् ल् ज् म् ङ् ण् न् झ् भ्

घ् द् ध् ज् ब् ग् ड् द्

**अल्पप्राण-** अल्प का अर्थ है- थोड़ा। ‘प्राण’ का अर्थ होता है- वायु। जिस वर्ण से बोलने के लिए भीतर से कम वायु फेंकना पड़े उसे ‘अल्पप्राण’ कहते हैं।

वर्णों के प्रथम, तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् (य् व् र् ल्) का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

“वर्गाणां प्रथम-तृतीय-पञ्चमा-यणश्च अल्पप्राणाः”

अल्पप्राण वर्ण हैं-

कवर्ग - क ग ङ

चवर्ग - च ज ञ

टवर्ग - ट ड ण

तवर्ग - त द न

पवर्ग - प ब म

यण् - य व र ल

इसप्रकार 19 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न अल्पप्राण होगा।

**महाप्राण-**

महा का अर्थ है- अधिक या ज्यादा, प्राण का अर्थ हुआ-वायु। जिस वर्ण को बोलने के लिए भीतर से अधिक वायु फेंकना पड़े उसे महाप्राण कहते हैं।

महाप्राण- वर्णों के द्वितीय, चतुर्थ और शल् (श् ष् स् ह) वर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

“वर्गाणां द्वितीय-चतुर्थो शलश्च-महाप्राणाः”

महाप्राण वर्ण हैं-

कवर्ग - ख छ  
चवर्ग - छ झ  
टवर्ग - ठ ढ  
तवर्ग - थ ध  
पवर्ग - फ भ  
शल - श ष स ह

इस प्रकार कुल 14 व्यञ्जनवर्णों का बाह्यप्रयत्न महाप्राण होगा।

**ध्यान दें-** किसी भी वर्ण का चार बाह्यप्रयत्न होगा। यदि वर्ण हश् प्रत्याहार का है तो संवार नाद घोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा और यदि वर्ण खर् प्रत्याहार का

है तो विवार श्वास अघोष के साथ-साथ अल्पप्राण और महाप्राण में से कोई एक होगा। जैसे-

**ह-** संवार नाद घोष महाप्राण **ख-** विवार श्वास अघोष महाप्राण  
**य-** संवार नाद घोष अल्पप्राण **क-** विवार श्वास अघोष अल्पप्राण

**उदात्त-** उच्चैरुदात्तः (1.2.29) मुख के भीतर जो कण्ठ तालु आदि उच्चारण स्थान हैं उनमें ऊर्ध्व भाग से बोले जाने वाले अच् (स्वर) की उदात्त संज्ञा होगी।

**अनुदात्त-** नीचैरनुदात्तः (1.2.30) कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थानों के निम्न (अधोभाग) भाग से उच्चरित अच् (स्वर) की अनुदात्त संज्ञा होती है।

**स्वरित-** समाहारः स्वरितः (1.2.31) जहाँ उदात्त और अनुदात्त दोनों का समाहार होता है, उस अच् (स्वर) की स्वरित संज्ञा होगी।

➤ उदात्त अनुदात्त और स्वरित प्रयत्न केवल स्वरों के होते हैं।

➤ उदात्त अनुदात्त और स्वरित को समझने के लिए वैदिकग्रन्थों में विशेष चिह्नों का प्रयोग किया गया है-

➤ अनुदात्त अक्षर के नीचे पड़ी लाइन, स्वरित के ऊपर खड़ी लाइन होती है जबकि उदात्त के लिए कोई चिह्न नहीं होता।

जैसे- स नः पितेव सूनवे, अग्ने सूपायनो भव। (ऋग्वेद 1.1.9)

### बाह्यप्रयत्न बोधक तालिका

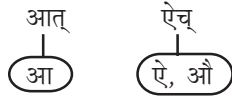
विवार श्वास अघोष	संवार नाद घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
खर् क ख च छ ट ठ त थ प फ श ष स	हश् ग घ ङ ज झ ञ ड ढ ण द ध न ब भ म य व र ल	वर्णों के प्रथम तृतीय और पञ्चम वर्ण और यण् क ग ङ च ज ञ ट ढ ण त द न प ब म य व र ल	वर्णों के द्वितीय चतुर्थ और शल् ख छ छ झ ठ ढ थ ध क ज श ष स ह	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ

## व्याकरणशास्त्र की प्रमुख संज्ञायें एवं परिभाषायें

### 1. वृद्धि संज्ञा

सूत्र- वृद्धिरादैच् (1.1.1)

पदच्छेद- वृद्धिः

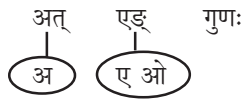


सूत्रार्थ- आ, ऐ, औ- इन तीन वर्णों की वृद्धिसंज्ञा होती है।  
जैसे- त्यागः में आ, सदैव में ऐ, महौषधि में औ वृद्धिसंज्ञक वर्ण हैं।

### 2. गुण संज्ञा

सूत्र- अदेङ् गुणः (1.1.2)

पदच्छेद-



सूत्रार्थ- अ, ए, ओ- इन तीन वर्णों की गुणसंज्ञा होती है।  
उदाहरण- रमेशः में 'ए', सूर्योदयः में 'ओ', महर्षि में 'अ' (र)  
गुणसंज्ञक वर्ण हैं।

### 3. संयोग संज्ञा

सूत्र- हलोऽनन्तराः संयोगः (1.1.7)

पदच्छेद- हलः अनन्तराः संयोगः

सूत्रार्थ- ऐसे दो या दो से अधिक व्यञ्जन जिनके बीच में कोई स्वर न आया हो, उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण- (i) पुष्प में ष् + प् का संयोग है।  
(ii) अग्नि में ग् + न् का संयोग है।  
(iii) राष्ट्र में ष् + ट् + र् का संयोग है।  
(iv) बुद्धि में द् + ध् का संयोग है।

### 4. अनुनासिक संज्ञा

सूत्र- मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः (1.1.8)

पदच्छेद- मुख-नासिका-वचनः अनुनासिकः

सूत्रार्थ- जो वर्ण मुख तथा नासिका दोनों की सहायता से बोले जाते हैं, उसकी अनुनासिक संज्ञा होती है।

उदाहरण- अँ, ङ्, ज्ञ्, ण्, न्, म् आदि वर्ण अनुनासिक हैं।

नोट- जो वर्ण नासिका के साथ नहीं बोले जाते वे अनुनासिक या निरनुनासिक कहे जाते हैं। जैसे- क, ख, ग, घ, च, छ, ज आदि।

### 5. सवर्णसंज्ञा

सूत्र- “तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्” (1.1.9)

पदच्छेद- तुल्य-आस्य-प्रयत्नं सवर्णम्

सूत्रार्थ- जिन दो या दो से अधिक वर्णों के कण्ठ तालु आदि उच्चारणस्थान तथा आभ्यन्तरप्रयत्न दोनों समान हों, वे परस्पर सवर्णी (सवर्णसंज्ञक) होते हैं।

उदाहरण- अ-आ, इ-ई, उ-ऊ आदि परस्पर सवर्णी हैं।

रमा + अपि = रमापि। मुनि + ईशः = मुनीशः

भानु + उदयः = भानूदयः

➤ उच्चारणस्थान और प्रयत्न का साम्य होने पर भी स्वर और व्यञ्जन की परस्पर सवर्णसंज्ञा नहीं होती है- “नाज्झलौ”

यथा- दण्ड हस्तः, दधि शीतम्।

➤ “ऋलृवर्णयोः मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्” इस वार्तिक से ऋ और लृ वर्ण आपस में सवर्णी हैं।

### 6. प्रगृह्य संज्ञा

सूत्र- ईदृदेद्विवचनं प्रगृह्यम् (1.1.11)

पदच्छेद- ईत् ऊत् एत् द्विवचनं प्रगृह्यम्

सूत्रार्थ- द्विवचनान्त ई ऊ ए की प्रगृह्यसंज्ञा होती है।

उदाहरण- (i) हरी एतौ (ii) विष्णू इमौ (iii) गङ्गे अमू  
(iv) अग्नी इति (v) वायू इति (vi) माले इति (vii) पचेते इति

### 7. ‘घ’ संज्ञा

सूत्र- तरपृतमपौ घः (1.1.21)

पदच्छेद- तरप् - तमपौ घः

सूत्रार्थ- तरप् और तमप् - ये दो प्रत्यय ‘घ’ संज्ञक होते हैं।

उदाहरण- कुमारितरा, कुमारितमा

### 8. निष्ठा संज्ञा

सूत्र- क्तक्तवतू निष्ठा (1.1.25)

पदच्छेद- क्त - क्तवतू निष्ठा

सूत्रार्थ- क्त तथा क्तवतू दोनों प्रत्ययों की निष्ठा संज्ञा होती है।

उदाहरण- भुक्तः, भुक्तवान्, पठितः, पठितवान् आदि।

### 9. सर्वनामसंज्ञा

सूत्र- सर्वादीनि सर्वनामानि (1.1.26)

पदच्छेद- सर्व-आदीनि सर्वनामानि

**सूत्रार्थ-** सर्व, विश्व, यत्, तद्, एतत्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि शब्दों की **सर्वनामसंज्ञा** होती है।

### 10. अव्यय संज्ञा

**सूत्र-** स्वरादिनिपातमव्ययम् (1.1.36)

**पदच्छेद-** स्वरादि-निपातम् अव्ययम्

**सूत्रार्थ-** स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

**उदाहरण-** स्वरादि- स्वर, प्रातर इत्यादि

**निपात-** च, वा, ह इत्यादि

➤ क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् प्रत्ययान्त पद भी अव्ययसंज्ञक होते हैं-

**यथा-** पठित्वा, प्रपठ्य, पठितुम् आदि।

➤ कुछ तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों की भी अव्ययसंज्ञा होती है।

जैसे- ततः, तत्र, तदा, विना आदि।

➤ अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है।

जैसे- अधिहरि, अध्यात्मम्, उपगङ्गम्, यथाशक्ति आदि।

### 11. विभाषा संज्ञा

**सूत्र-** न वेति विभाषा (1.1.43)

**पदच्छेद-** न वा इति विभाषा

**सूत्रार्थ-** न का अर्थ है- निषेध। 'वा' का अर्थ है- विकल्प। निषेध तथा विकल्प इन दो अर्थों की **विभाषा संज्ञा** होती है।

### 12. सम्प्रसारण संज्ञा-

**सूत्र-** इग्यणः सम्प्रसारणम् (1.1.44)

**पदच्छेद-** इक् यणः सम्प्रसारणम्

**सूत्रार्थ-** यण् के स्थान पर होने वाले इक् की **सम्प्रसारण संज्ञा** होती है।

यण् -	य्	व्	र्	ल्
इक् -	इ	उ	ऋ	ॠ

**उदाहरण-** (i) यज् + क्त = इष्टः

(ii) वप् + क्त = उप्तः

### 13. टि संज्ञा

**सूत्र-** अचोऽन्त्यादि टि (1.1.63)

**पदच्छेद-** अचः अन्त्य आदि टि

**सूत्रार्थ-** अचों के मध्य में जो अन्तिम अच् होता है, वह आदि में हो जिसके उस वर्णसमुदाय की **टि संज्ञा** होती है।

**व्याख्या-** किसी शब्द में जो अन्तिम स्वर होगा वही टिसंज्ञक वर्ण होगा, उस अन्तिम स्वर के बाद भी जो व्यञ्जन वर्ण होंगे वे भी टिसंज्ञक होंगे।

जैसे-

(i) मनस् = म् अ न् अ स्

यहाँ अन्तिम स्वर है 'नकार' में विद्यमान अ । 'अ' के बाद 'स्' व्यञ्जन वर्ण भी टिसंज्ञा में गिना जाएगा अतः 'मनस्' में 'अस्' की टिसंज्ञा होगी।

(ii) राजन् में 'अन्' इस वर्णसमुदाय की टिसंज्ञा होगी।

(iii) 'राम' में 'अ' टिसंज्ञक वर्ण है। क्योंकि यहाँ अन्तिम स्वर अकार के बाद कोई व्यञ्जन वर्ण नहीं है।

(iv) 'दधि' में 'इ' टिसंज्ञक वर्ण है।

**नोट-**

(i) अन्तिम स्वर तथा उसके बाद आने वाले स्वर रहित व्यञ्जन वर्ण टिसंज्ञक होंगे। जैसे- मनस् में 'अस्'।

(ii) यदि अन्तिम स्वर के बाद व्यञ्जन वर्ण नहीं होगा तो केवल शब्द का अन्तिम स्वर ही टिसंज्ञक होगा। जैसे- दधि में टिसंज्ञक वर्ण हैं- 'इ'।

### 14. उपधा संज्ञा

**सूत्र-** अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा (1.1.64)

**पदच्छेद-** अलः अन्त्यात् पूर्वः उपधा

**सूत्रार्थ-** अन्तिम वर्ण से पूर्व में रहने वाले वर्ण की **उपधा संज्ञा** होती है।

**व्याख्या-** किसी शब्द या धातु में जो अन्त्य वर्ण होगा, उसके ठीक पहले वाले वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) राम- र् आ म् अ - यहाँ अन्तिम वर्ण है 'अ' तो अकार के ठीक पहले वाले वर्ण 'म्' की उपधा संज्ञा होगी।

(ii) 'गम्' में अन्तिम वर्ण मकार के पूर्व 'अकार' की उपधा संज्ञा होगी।

(iii) इसीप्रकार भिद् में 'इ' की, मुच् में 'उ' की, वृध् में 'ऋ' की उपधा संज्ञा होगी।

**नोट-** Second Last वर्ण उपधासंज्ञक होगा।

### 15. नदी संज्ञा

**सूत्र-** यू स्याख्यौ नदी (1.4.3)

**पदच्छेद-** यू स्त्री आख्यौ नदी

**सूत्रार्थ-** 'यू' = (ई + ऊ) का अर्थ है ईकारान्त और ऊकारान्त

➤ 'स्याख्यौ' का अर्थ है- नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्द

इसप्रकार ईकारान्त तथा ऊकारान्त नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।

**उदाहरण-** नदी, गौरी, वधू आदि नदीसंज्ञक पद हैं।

## 16. धि संज्ञा

**सूत्र-** शेषो घ्यसखि (1.4.7)

**पदच्छेद-** शेषः धि असखि

**सूत्रार्थ-** जिनकी नदी संज्ञा नहीं है, ऐसे ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त शब्दों की **धि संज्ञा** होती है। 'सखि' शब्द को छोड़कर।

**उदाहरण-** हरिः, भानुः, वारि, मधु आदि धिसंज्ञक हैं।

**नोट-** (i) 'पति' शब्द समास होने पर ही धिसंज्ञक होता है- जैसे- भूपतिः, सीतापतिः आदि। '**पतिः समास एव**'

## 17. पद संज्ञा

**सूत्र-** सुप्तिङन्तं पदम् (1.4.14)

**पदच्छेद-** सुप् तिङ् अन्तम् पदम्

**सूत्रार्थ-** सुबन्त (सुप् अन्त वाला) तथा तिङन्त (तिङ् अन्त वाला) शब्द की **पद संज्ञा** होती है।

**व्याख्या-**

(i) प्रातिपदिकों में प्रथमा से सप्तमी तक सु औ जस् आदि सुप् विभक्तियाँ लगाकर जो रामः, रामौ, रामाः आदि शब्दरूप बनते हैं, वे **सुबन्त पद** कहलाते हैं।

(ii) धातुओं से विभिन्न लकारों में तिप् तस् झि तथा त आताम् झ आदि 18 तिङ् प्रत्यय लगाकर जो पठति पठतः पठन्ति आदि धातुरूप बनते हैं, वे **तिङन्त पद** कहलाते हैं।

**नोट-** पद दो प्रकार के होते हैं-

(i) सुबन्त पद (शब्दरूप) रामः, हरिः, गुरुः आदि।

(ii) तिङन्त पद (धातुरूप) पठति, लभते, जानाति आदि।

## 18. संहिता संज्ञा

**सूत्र-** परः सन्निकर्षः संहिता (1.4.108)

**पदच्छेद-** परः सन्निकर्षः संहिता

**सूत्रार्थ-** वर्णों के अत्यधिक सामीप्य की **संहिता संज्ञा** होती है।

**उदाहरण-** मधु + अरिः = मध्वरिः

रमा + ईशः = रमेशः

## 19. सत् संज्ञा

**सूत्र-** तौ सत् (3.2.127)

**सूत्रार्थ-** शत्रु एवं शानच् - इनकी **सत् संज्ञा** होती है।

## 20. प्रातिपदिक संज्ञा

**सूत्र-** अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (1.2.45)

**पदच्छेद-** अर्थवत् अधातुः अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

**सूत्रार्थ-** धातुरहित, प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

**उदाहरण-** राम, कृष्ण, लता आदि।

**नोट-** कृतद्धितसमासाश्च (1.2.46) कृत् प्रत्ययान्त, तद्धितप्रत्ययान्त तथा समास भी प्रातिपदिक संज्ञक होते हैं।

**जैसे-** कारकः (कृत्), शालीयः (तद्धित), राजपुरुषः (समास) आदि।

## 21. प्रत्ययसंज्ञा

**प्रत्यय-** धातु और प्रातिपदिक के बाद जो जुड़ते हैं, उनकी प्रत्यय संज्ञा होती है।

**यथा-**

(i) भवति में 'भू' धातु है 'तिप्' प्रत्यय है।

(ii) पठकः में पठ् धातु है 'ण्वुल्' प्रत्यय है।

(iii) रामस्य में राम प्रातिपदिक है 'ङस्' प्रत्यय है।

➤ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय - क्त, क्तवतु, तुमुन् आदि।

2. तिङ् प्रत्यय - तिप्, तस्, झि आदि।

➤ प्रातिपदिक (शब्दों) से लगने वाले प्रत्यय हैं-

1. सुप् प्रत्यय - सु औ जस् आदि।

2. स्त्रीप्रत्यय - टाप्, डीप्, डीष् आदि।

3. तद्धितप्रत्यय - मतुप्, अण्, इनि आदि।

**कृत् प्रत्यय-** कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में लगते हैं, और वे दो प्रकार के शब्द बनाते हैं।

1. अव्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् आदि।

2. विशेषण- तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शत्रु, शानच्, क्त, क्तवतु आदि।

**उदाहरण-** पठ् + क्त = पठितः, पठ् + अनीयर् = पठनीयम्

**तिङ् प्रत्यय-** दसों लकारों के प्रत्ययों को तिङ्प्रत्यय कहा जाता है। ये दो प्रकार के हैं- परस्मैपदी और आत्मनेपदी।



**परस्मैपदी तिङ् प्रत्यय- ( 9 )**

प्र. पु.	तिप्	तस्	झि
म. पु.	सिप्	थस्	थ
उ. पु.	मिप्	वस्	मस्

**आत्मनेपदी तिङ् प्रत्यय- ( 9 )**

प्र. पु.	त	आताम्	झ
म. पु.	थास्	आथाम्	ध्वम्
उ. पु.	इट्	वहि	महिङ्

➤ इस प्रकार ये 18 प्रत्यय तिङ् कहलाते हैं। तिप् के 'ति' से लेकर महिङ् के 'ङ' तक 'तिङ्' कहा गया।

**सुप् प्रत्यय-** सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़कर पद बनाते हैं। जैसे- 'राम' प्रातिपदिक से 'सु' लगेगा तो 'रामः' यह पद बनेगा।

➤ सुप् प्रत्यय 21 होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	डे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

**स्त्रीप्रत्यय-** पुलिङ्ग शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहा जाता है।

**जैसे-** टाप्, डाप्, चाप्, डीप्, डीष्, डीन्, ऊङ्, ति आदि।

**उदाहरण-**

अज + टाप् = अजा  
छात्र + टाप् = छात्रा  
राजन् + डीप् = राज्ञी  
कुमार + डीप् = कुमारी  
नर्तक + डीष् = नर्तकी  
गौर + डीष् = गौरी  
नृ + डीन् = नारी  
युवन् + ति = युवति: आदि।

**तद्धित प्रत्यय-** शब्द के अन्त में लगने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

**यथा-** मतुप्, इनि, त्व, तल्, ष्यञ्, तसिल् आदि।

**उदाहरण-** बुद्धि + मतुप् = बुद्धिमत् (बुद्धिमान् )  
महत् + त्व = महत्त्वम्

**22. स्थानी और आदेश-** किसी वर्ण को या शब्द को हटाकर जब उसकी जगह, कोई दूसरा वर्ण या शब्द आकर बैठ जाता है, तब जिसे हटाया जाता है, उसे 'स्थानी' कहते हैं।

➤ जो स्थानी की जगह आकर बैठ जाता है, उसे आदेश कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में आदेश को शत्रु के समान कहा गया है-  
“शत्रुवदादेशः”

**जैसे-** प्रति + एकः = प्रत्येकः

यहाँ 'इ' को हटाकर उसके स्थान पर 'य्' बैठ गया है, अतः 'इ' स्थानी है तथा 'य्' आदेश है।

**23. निमित्त-** एक वर्ण को हटाकर उसकी जगह दूसरे वर्ण का आदेश जिसके कारण होता है, उसे निमित्त कहा जाता है।

**जैसे-** प्रति + एकः = प्रत्येकः में 'इ' स्थानी के स्थान पर 'य्' आदेश 'ए' स्वर (अच्) के कारण हुआ है अतः 'ए' निमित्त है।

**24. आगम-** जो वर्ण किसी वर्ण को हटाये बिना आकर बैठ जाता है, तो उसे हम 'आगम' कहते हैं।

“मित्रवदागमः” अर्थात् मित्र की तरह आगमन आगम कहा जाता है।

“सम् + सुट् + कृ + क्त” = संस्कृत यहाँ सुट् का आगम हुआ है।

**25. उपसर्ग संज्ञा**

**सूत्र-** “उपसर्गाः क्रियायोगे” (1.4.59)

**सूत्रार्थ-** प्रादि जब किसी क्रिया के साथ लगते हैं तब इनकी उपसर्ग संज्ञा होती है।

➤ उपसर्गों की संख्या 22 है-

प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि अति सु उत् अति प्रति परि उप।

**26. कारक**

**कारक-** कृ + ण्वुल् = कारकम् अर्थात् क्रियां करोति इति कारकम्।

जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध होता है, या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक होते हैं, उन्हें 'कारक' कहा जाता है।

“क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्”, “क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्”

➤ कारक छः होते हैं-

- कर्ता 2. कर्म 3. करण
- सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण

कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥

- संस्कृत व्याकरण में सम्बन्ध और सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता।

## 27. विभक्तियाँ

**विभक्ति-** जिसके द्वारा कारकों और संख्याओं को विभक्त किया जाता है, उसे विभक्ति कहते हैं। इसीलिए सुप् और तिङ् को भी विभक्ति कहते हैं।

- संस्कृत व्याकरण में **विभक्तियाँ सात** होती हैं-
1. प्रथमा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी
  6. षष्ठी 7. सप्तमी
- सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है।

## 28. पुरुष

संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं-

**1. प्रथमपुरुष या अन्य पुरुष-** उत्तम पुरुष के अहं, आवां, वयम् और मध्यम पुरुष के त्वम्, युवां, यूयम् इन छह शब्दों को छोड़कर संस्कृत वाङ्मय के सभी कर्तृपद प्रथम पुरुष के अन्तर्गत गिने जाते हैं।

यथा- भवान्, भवती, बालकः, बालिका, सः, सा, नरः, वानरः, पिता, पुत्रः, इत्यादि।

और इन सभी पदों के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया 'पठति, पठतः, पठन्ति' आदि का ही प्रयोग होता है।

**2. मध्यम पुरुष-** जिससे बात कही जाय, वह मध्यम पुरुष है। इसमें 'त्वम्, युवाम्, यूयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ मध्यमपुरुष की क्रिया क्रमशः त्वम् के साथ पठसि युवां के साथ पठथः तथा यूयं के साथ पठथ का प्रयोग होगा।

**3. उत्तम पुरुष-** जो बात को कहता है; वह उत्तम पुरुष है। इसके अन्तर्गत 'अहं, आवाम्, वयम्' कर्तृपद आते हैं। इनके साथ उत्तम पुरुष की क्रिया क्रमशः अहं के साथ 'पठामि' आवां के साथ पठावः वयं के साथ 'पठामः' का प्रयोग होता है।

## 29. वचन

'वचन' का अर्थ होता है- संख्या।

संस्कृत में तीन वचन होते हैं-

- 1. एकवचन-** एक वस्तु या एक व्यक्ति का बोध कराने के लिए एकवचन का प्रयोग होता है, जैसे- बालकः, हरिः, गुरुः, विद्यालयः आदि।
- 2. द्विवचन-** दो व्यक्तियों या दो वस्तुओं के लिए द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे- बालकौ, हरी, गुरु, विद्यालयौ, पुस्तके आदि।

**3. बहुवचन-** तीन या तीन से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

**"बहुषु बहुवचनम्"**

जैसे- बालकाः, हरयः, गुरवः, विद्यालयाः, पुस्तकानि आदि।

## 30. लिङ्ग

➤ 'लिङ्ग' शब्द का अर्थ है- चिह्न, लक्षण या पहचान।

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं-

- 1. पुलिङ्ग-** जिससे पुरुष जाति का बोध होता है। जैसे- छात्रः, बालकः, मुनिः, विद्यालयः, काकः, व्याघ्रः आदि।
- 2. स्त्रीलिङ्ग-** जिससे स्त्रीजाति का बोध होता है। जैसे- छात्रा, बालिका, गौरी, नदी आदि।
- 3. नपुंसकलिङ्ग-** जिससे न पुरुष जाति का बोध हो और न स्त्री जाति का बोध हो, उसे नपुंसकलिङ्ग कहते हैं। जैसे- फलम्, जलम्, गृहम्, पुष्पम्, नेत्रम् वारि, दधि, मधु आदि।

## 31. लकार

संस्कृत में दस लकार होते हैं-

- 1. लट्लकार -** (वर्तमान काल) वर्तमान काल को सूचित करने के लिए लट्लकार का प्रयोग होता है।
- 2. लिट्लकार -** (अनद्यतन परोक्षभूतकाल) परोक्षभूतकाल अर्थात् बहुत प्राचीनकाल को सूचित करने के लिए लिट्लकार की क्रिया का प्रयोग होता है।
- 3. लुट्लकार -** (अनद्यतन भविष्यत् काल) आज के पश्चात् भविष्यकाल को सूचित करने के लिए लुट्लकार का प्रयोग होता है।
- 4. लृट् -** (सामान्य भविष्यत् काल)
- 5. लेट्लकार -** (संशय अर्थ में) लेट्लकार का प्रयोग वेदों में होता है, लौकिक संस्कृत में नहीं।
- 6. लोट्लकार -** (प्रेरणा तथा आज्ञा अर्थ में)
- 7. लङ्लकार -** (अनद्यतन भूतकाल) अब से पहले के भूतकाल को सूचित करने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।
- 8. लिङ् लकार-** इसके दो भेद हैं-
- (i) विधिलिङ् -** (विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न प्रार्थना, चाहिए अर्थ में)
- (ii) आशीर्लिङ् -** (आशीर्वाद अर्थ में)
- 9. लुङ्लकार -** (सामान्यभूत) सामान्यभूतकाल को सूचित करने के लिए।
- 10. लृङ्लकार -** (हेतु हेतुमद्भाव भूत) जहाँ एक क्रिया का कारण दूसरी क्रिया हो।

### 3.2. धातुसंज्ञा

**सूत्र-** भूवादयो धातवः (1.3.1)

क्रियावाचक भू आदि की धातुसंज्ञा होती है। ये सभी धातुयें पाणिनीय धातुपाठ में दी गयी हैं। इनकी संख्या 1970 अर्थात् लगभग 2000 है।

➤ धातुओं के तीन प्रकार से रूप चलते हैं-

- (i) परस्मैपदी √पठ्- पठति, पठतः, पठन्ति आदि।
- (ii) आत्मनेपदी √ल- लभते, लभेते, लभन्ते आदि।
- (iii) उभयपदी √ज्ञा- जानाति, जानीतः, जानन्ति जानीते, जानाते, जानते।

### 3.3. गण ( धातुओं के विभाग )

संस्कृत में दस गण होते हैं। संस्कृत व्याकरणशास्त्र में लगभग 2000 धातुयें हैं; प्रत्येक धातु किसी न किसी गण में ही परिगणित है।

गण	धातुयें
1. भ्वादिगण	1035 धातुयें
2. अदादिगण	72 धातुयें
3. जुहोत्यादिगण	24 धातुयें
4. दिवादिगण	140 धातुयें
5. स्वादिगण	35 धातुयें
6. तुदादिगण	157 धातुयें
7. रुधादिगण	25 धातुयें
8. तनादिगण	10 धातुयें
9. क्र्यादिगण	61 धातुयें
10. चुरादिगण	411 धातुयें
<b>कुल धातुयें -</b>	<b>1970</b>

भ्वाद्यदादि जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।

तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्रीचुरादयः॥

➤ **भ्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** भू (होना), हस् (हँसना), पठ् (पढ़ना), रक्ष् (रक्षा करना), वद् (बोलना), पच् (पकाना), नम् (झुकना), गम् (जाना), दृश् (देखना), सद् (बैठना), स्था (रुकना), पा (पीना), घ्रा (सूँघना), स्मृ (स्मरण करना), जि (जीतना), श्रु (सुनना), वस् (रहना), सेव् (सेवा करना), लभ् (पाना), वृध् (बढ़ना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहन करना), याच् (माँगना), नी (ले जाना) आदि।

➤ **अदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** अद् (खाना), अस् (होना), ब्रू (कहना), दुह् (दुहना), रुद् (रोना), स्वप् (सोना), हन् (मारना), इ (जाना), आस् (बैठना), शी (सोना) आदि।

➤ **जुहोत्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** हु (हवन करना), भी (डरना), दा (देना), धा (धारण), करना आदि।

➤ **दिवादिगण की प्रमुख धातुएँ-** दिव् (चमकना), नृत् (नाचना), नश् (नष्ट होना), भ्रम् (धूमना), युध् (लड़ना), जन् (उत्पन्न होना) आदि।

➤ **स्वादिगण की प्रमुख धातुएँ-** सु (स्नान करना या रस निकालना), आप् (पाना), शक् (सकना) आदि।

➤ **तुदादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तुद् (दुःख देना), इष् (चाहना), स्मृश् (छूना), प्रच्छ् (पूँछना), लिख् (लिखना), मृ (मरना), मुच् (छोड़ना) आदि।

➤ **रुधादिगण की प्रमुख धातुएँ-** रुध् (ढकना, रोकना), भुज् (पालन करना, भोजन करना), आदि।

➤ **तनादिगण की प्रमुख धातुएँ-** तन् (फैलाना), कृ (करना) आदि।

➤ **क्र्यादिगण की प्रमुख धातुएँ-** क्री (मोल लेना), ग्रह (पकड़ना), ज्ञा (जानना) आदि।

➤ **चुरादिगण की प्रमुख धातुएँ-** चुर् (चुराना), चिन्त् (सोचना), कथ् (कहना), भक्ष् (खाना) आदि।

□□

**UP-TET और M.P. वर्ग 1-2 ( संस्कृत ) हेतु  
YouTube पर संस्कृतगंगा चैनल को देखें।**

## सन्धिः

- सम् + √धा + कि = सन्धिः (पुंल्लिङ्ग)
- 'सन्धि' शब्द का अर्थ है- मेल या योग अर्थात् मिलना।
- “वर्णानां परस्परं विकृतिमत् सन्धानं सन्धिः” अर्थात् वर्णों का आपस में विकारसहित मिलना 'सन्धि' कहलाता है। 'विकृति' का मतलब है- वर्णपरिवर्तन।
- इसप्रकार दो वर्णों के मेल से जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे 'सन्धि' कहते हैं।  
जैसे-
- (i) रमा + ईशः = रमेशः  
(ii) रम् आ ईशः (आ + ई का मेल)  
(iii) रम् ए शः (आ + ई = 'ए' हो गया)  
(iv) रमेशः (गुण सन्धि)
- स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त उदाहरण में रमा के 'मा' में विद्यमान 'आ' तथा ईशः का 'ई' मिलकर 'ए' (वर्णपरिवर्तन) हो गया। यह वर्णविकार या वर्णपरिवर्तन ही सन्धि है।
- **संहिता-** 'सन्धि' के लिए अनिवार्य तत्त्व है- संहिता।
- सूत्र -** “परः सन्निकर्षः संहिता”  
अर्थात् दो वर्णों का अत्यन्त सन्निकट हो जाना ही 'संहिता' है।
- 'संहिता' के विषय में व्याकरणशास्त्र में एक नियम प्रसिद्ध है कि-
- संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।**  
**नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥**
- (i) संहिता (सन्धि) एक पद में नित्य होती है।  
जैसे-
- नै + अकः = नायकः  
पौ + अकः = पावकः  
भो + अनम् = भवनम्
- (ii) उपसर्ग और धातु में संहिता नित्य (अनिवार्य) होती है-  
जैसे-
- नि + अवसत् = न्यवसत्  
प्र + ऋच्छति = प्राच्छति  
अधि + आगच्छति = अध्यागच्छति
- (iii) सामासिक पदों में संहिता अनिवार्य (नित्य) होगी-  
जैसे-
- देवस्य आलयः (सामासिक विग्रह)  
देव + आलयः = देवालयः
- कृष्णस्य अस्त्रम् (सामासिक विग्रह)  
कृष्ण + अस्त्रम् = कृष्णास्त्रम्
- (iv) वाक्य में संहिता (सन्धि) विवक्षाधीन होती है अर्थात् आपकी इच्छा के अधीन है कि आप चाहें तो सन्धि करें या चाहें तो न करें-  
जैसे-
- ☆ रामः गच्छति वनम्। (सन्धि नहीं हुई)  
रामो गच्छति वनम्। (सन्धि कार्य हुआ)
- ☆ अत्र कः अस्ति। (सन्धि नहीं हुई)  
अत्र कोऽस्ति (सन्धि हुई)
- ☆ द्वाविंशे एव वर्षे इन्दुमती अधिजगाम स्वर्गम्। (सन्धि नहीं हुई)
- **सन्धि विच्छेद-** सन्धि युक्त वर्णों को अलग-अलग करना ही सन्धि विच्छेद है।
- सन्धि = मिलना विच्छेद = अलग करना।**  
जैसे- गणेशः का सन्धिविच्छेद होगा = गण + ईशः।  
'विद्यार्थी' का विच्छेद होगा = विद्या + अर्थी।
- **सन्धि में क्या होगा-----?**
1. दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण हो जाता है-  
जैसे-
- रवि + ईशः = रवीशः (इ+ई=ई)  
सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः (अ+इ=ए)  
सदा + एव = सदैव (आ+ए=ऐ)
- एकः पूर्वपरयोः ( 6.1.84 )** पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश होगा।
2. दो वर्णों के निकट आने से केवल पूर्व वर्ण में ही विकार ( परिवर्तन ) होता है।  
जैसे-
- इति + आदिः = इत्यादिः (इ के स्थान पर य्)  
मधु + अरिः = मध्वरिः (उ के स्थान पर व्)  
ने + अनम् = नयनम् (ए के स्थान पर अय्)
- ‘एकस्थाने एकादेशः’** - एक के स्थान पर एक आदेश होगा।
3. दो वर्णों में से किसी वर्ण का लोप हो जाता है-  
जैसे- रामः आगच्छति = राम आगच्छति (विसर्ग का लोप)  
दोषः अस्ति = दोषोऽस्ति (अकार का लोप)

## 4. दो वर्णों में से किसी एक वर्ण का द्वित्व हो जाना।

जैसे- एकस्मिन् + अवसरे = एकस्मिन्नवसरे

## 5. कभी कभी दोनों वर्णों में साथ-साथ परिवर्तन होगा।

जैसे- तत् + शिवः = तच्छिवः

वाक् + हरिः = वाग्हरिः

यहाँ 'त् + श्' वर्णों में सन्धि हुई तो त् को 'च्' तथा श् को 'छ' हो गया।

## 6. कभी कभी दोनों वर्णों के बीच कोई तीसरा वर्ण चला आएगा।

जैसे- वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया

यहाँ 'क्ष' एव 'छ' के बीच 'च्' के रूप में एक नया वर्ण आ गया।

## सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है-

## ( 1 ) स्वर सन्धि ( अच् सन्धि ) -

➤ (स्वर + स्वर = स्वरसन्धि)

➤ जब दो स्वरों के निकट आने से जो परिवर्तन (विकार) होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

➤ संक्षेप में स्वर के स्थान पर होने वाले आदेश को ही स्वर सन्धि कहेंगे।

(i) इति + अलम् = इत्यलम् (इ+अ)

(ii) कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः (इ+इ)

(iii) नर + ईशः = नरेशः (अ+ई)

(iv) तव + एव = तवैव (अ + ए)

(v) पो + इत्रम् = पवित्रम् (ओ+इ)

➤ अर्थात् स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ मेल स्वर सन्धि है। स्वर सन्धि को अच् सन्धि भी कहा जाता है; क्योंकि 'अच्' प्रत्याहार के अन्तर्गत ही सभी स्वर आते हैं।

## ( 2 ) व्यञ्जन सन्धि ( हल् सन्धि ) -

➤ व्यञ्जन + स्वर = व्यञ्जन सन्धि

व्यञ्जन + व्यञ्जन = व्यञ्जन सन्धि

➤ व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होगा, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

➤ संक्षेप में व्यञ्जन (हल्) के स्थान पर होने वाले आदेश को ही व्यञ्जन सन्धि कहेंगे।

जैसे- वाक् + ईशः = वागीशः (हल् + अच्)

जगत् + ईशः = जगदीशः (हल् + अच्)

तत् + लयः = तल्लयः (हल् + हल्)

सत् + जनः = सज्जनः (हल् + हल्)

स्पष्ट है कि उपर्युक्त उदाहरणों में व्यञ्जन के बाद स्वर तथा

व्यञ्जन के बाद व्यञ्जन वर्ण आये हैं; अतः यहाँ व्यञ्जन सन्धि है।

## ( 3 ) विसर्ग सन्धि-

: + स्वर = विसर्ग सन्धि।

: + व्यञ्जन = विसर्ग सन्धि।

➤ जब विसर्ग के बाद कोई स्वर या व्यञ्जन वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर जो विकार (परिवर्तन) होगा, वह विसर्ग सन्धि कही जायेगी। विसर्ग के बाद विसर्ग नहीं आएगा क्योंकि विसर्ग से किसी शब्द का प्रारम्भ नहीं होता।

➤ संक्षेप में ऐसा कह सकते हैं कि- विसर्ग के स्थान पर होने वाले आदेश को ही विसर्ग सन्धि कहेंगे।

जैसे-

बालकः + गच्छति = बालको गच्छति। (: + व्यञ्जन)

नमः + करोति = नमस्करोति (: + व्यञ्जन)

अलिः + अयम् = अलिरयम् (: + स्वर)

यहाँ विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन आ रहा है अतः विसर्ग सन्धि है।

## 1. स्वर सन्धि ( अच् सन्धि ) -

➤ पूर्व तथा पर स्वरों के मिलने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहेंगे। जैसे-

हिम + आलयः = हिमालयः (अ + आ)

उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः (अ + इ)

स्पष्टीकरण- यहाँ पूर्व वर्ण है हिम के 'म' में विद्यमान - 'अ' तथा पर वर्ण है आलयः का 'आ'।

इसीप्रकार दूसरे उदाहरण में - उप के प में विद्यमान 'अ' पूर्ववर्ण है तथा इन्द्रः का 'इ' परवर्ण है। अतः यहाँ स्वर सन्धि हो रही है।

## स्वरसन्धि के प्रमुख भेद

## 1. दीर्घ सन्धि-

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः (6.1.101)

## सूत्र विश्लेषण-

अकः - 'अक्' एक प्रत्याहार है जिसमें पाँच वर्ण आते हैं- अ इ उ ऋ लृ इसी प्रत्याहार से इनके दीर्घ वर्णों (आ ई ऊ ऋ) का भी बोध होगा।

सवर्णे - सवर्ण अक् (अ इ उ ऋ लृ) आने पर।

दीर्घः - दीर्घ आदेश (आ ई ऊ ऋ) हो जाता है।

'लृ' वर्ण का दीर्घ नहीं होता अतः उसका सवर्ण 'ऋ' हो जाता है।

संक्षेप में- अक् + अक् = दीर्घ

अकः (पूर्व वर्ण)	सवर्णी (पर वर्ण)	दीर्घः (आदेश वर्ण)
अ आ	अ आ	आ
इ ई	इ ई	ई
उ ऊ	उ ऊ	ऊ
ऋ ॠ	ऋ ॠ	ॠ

- दीर्घ सन्धि में केवल पाँच वर्णों (अ, इ, उ, ऋ, ॠ) में ही सन्धि कार्य होगा।
- ह्रस्व और दीर्घ स्वरों का मिलना चार प्रकार से हो सकता है-
- (i) अ + अ = आ। जैसे- अद्य + अपि = अद्यापि
- (ii) आ + आ = आ। जैसे- विद्या + आलयः = विद्यालयः
- (iii) अ + आ = आ। जैसे- हिम + आलयः = हिमालयः
- (iv) आ + अ = आ। जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
- इसीप्रकार इ, उ, ऋ, ॠ में भी चार प्रकार से दीर्घ सन्धि हो सकती है।

### दीर्घ सन्धि के उदाहरण

- हिम + आलयः (सन्धि विच्छेद)  
हिम् अ + आलयः (वर्ण विच्छेद)  
हिम् आ लयः (दो वर्णों के स्थान पर दीर्घ 'आ' आदेश)  
हिमालयः (सन्धियुक्त पद)  
उपर्युक्त उदाहरण में 'हिम' के म में विद्यमान 'अ' आलयः के 'आ' से मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया।
- पुस्तक + आलयः (अ + आ = आ)  
पुस्तक् अ + आलयः  
पुस्तक् आ लयः  
= पुस्तकालयः
- रवि + इन्द्रः (इ + इ = ई)  
रव् इ + इन्द्रः  
रव् ई न्द्रः  
= रवीन्द्रः
- भानु + उदयः (उ + उ = ऊ)  
भान् उ + उदयः  
भान् ऊ दयः  
= भानूदयः
- मातृ + ऋणम् (ऋ + ऋ = ॠ)  
मातृ ऋ + ऋणम्  
मातृ ॠ णम्  
मातृणम्

### कुछ अन्य उदाहरण-

वाचन + आलयः = वाचनालयः | देव + आलयः = देवालयः  
शस्त्र + आगारः = शस्त्रागारः | विद्या + आलयः = विद्यालयः

इ + इ = ई

कपि + ईशः = कपीशः  
गौरी + ईशः = गौरीशः  
मुनि + इन्द्रः = मुनीन्द्रः  
श्री + ईशः = श्रीशः  
मही + इन्द्रः = महीन्द्रः  
गिरि + ईशः = गिरीशः

उ + उ = ऊ

वधू + उत्सवः = वधूत्सवः  
लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः  
विधु + उदयः = विधूदयः  
गुरु + उपदेशः = गुरुपदेशः  
साधु + उक्तम् = साधूक्तम्  
भू + ऊर्जा = भूर्जा

ऋ + ऋ = ॠ

मातृ + ऋणम् = मातृणम्  
पितृ + ऋणम् = पितृणम्  
होतृ + ऋकारः = होतृकारः  
होतृ + लकारः = होतृकारः

## 2. गुण सन्धि

सूत्र- आद्गुणः (6.1.87)

सूत्रार्थ- अ या आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, ॠ, आयेँ तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए, ओ, अर्, अल् हो जाता है।

संक्षेप में कहें तो - आत् + अचि = गुण

पूर्ववर्ण + परवर्ण = सन्धिवर्ण

- अ/आ + इ/ई = ए
- अ/आ + उ/ऊ = ओ
- अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
- अ/आ + लृ = अल्

### गुण सन्धि के उदाहरण

- उप + इन्द्रः (सन्धि विच्छेद)  
उप् अ + इन्द्रः (वर्ण विच्छेद)  
उप् ए न्द्रः (अ + इ = ए)  
उपेन्द्रः (गुणसन्धि)



## 2. हित + उपदेशः

हित् अ + उपदेशः

हित् ओ पदेशः

हितोपदेशः

## 3. देव + ऋषिः

देव् अ + ऋषिः

देव् अर् षिः (अ + ऋ = अर्)

देवर्षिः

## 4. तव + लृकारः

तव् अ + लृकारः

तव् अल् कारः

तवल्लकारः

## गुणसन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ + इ = ए

सुर + ईशः = सुरेशः

राजा + इन्द्रः = राजेन्द्रः

रमा + ईशः = रमेशः

गण + ईशः = गणेशः

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः

उमा + ईशः = उमेशः

अ + उ = ओ

महा + उत्सवः = महोत्सवः

पीन + ऊरुः = पीनोरुः

गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा

अ + ऋ = अर्

महा + ऋषिः = महर्षिः

ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः

वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः

वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः

अ + लृ = अल्

तव + लृकारः = तवल्लकारः

शंका 1- अ के बाद इ आने पर 'ए' ही क्यों होता है?

समाधान

(i) क्योंकि 'अदेङ् गुणः' सूत्र से "अ, ए, ओ" ये तीन वर्ण ही गुणसंज्ञक हैं इसलिए -

(ii) अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ

इ का उच्चारणस्थान है- तालु

इसीलिए अ+इ=ए हुआ क्योंकि 'ए' का उच्चारणस्थान है- कण्ठतालु

“एदैतोः कण्ठतालु”

शंका 2- अ के बाद उ आने पर 'ओ' ही क्यों होता है--?

समाधान- चूँकि गुणसंज्ञक वर्ण तीन ही होते हैं- अ, ए, ओ।

गुणसन्धि में गुणवर्ण ही होंगे। इसका भी जवाब पहले जैसा ही है।

अ का उच्चारणस्थान है- कण्ठ

उ का उच्चारणस्थान है- ओष्ठ

इसीलिए अ+उ=ओ होगा क्योंकि 'ओ' का उच्चारणस्थान है- कण्ठोष्ठ।

“ओदैतोः कण्ठोष्ठम्”

➤ इसीप्रकार अ+ऋ के बाद अ होगा। 'अ' गुण वर्ण है। परन्तु एक सूत्र है “उरण् रपरः” जो कहता है कि यदि ऋ या लृ के स्थान पर अ, इ, उ आदेश होगा तो रेफ या लकार के साथ होगा। अतः यहाँ जो अ+ऋ के स्थान पर 'अ' आदेश है पर रेफ के साथ मिलकर 'अर्' हो जाएगा।

इसीप्रकार अ+लृ = अल् हो जाएगा।

## 3. वृद्धि सन्धि

सूत्र- वृद्धिरेचि (6.1.88)

परिभाषा- जब अ या आ के बाद ए या ऐ आये तो = ऐ

और ओ या औ वर्ण के आने पर = औ हो जाता है।

संक्षेप में - आत् + एचि = वृद्धि

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

अ/आ + ओ/औ = औ

➤ “वृद्धिरादैच्” सूत्र से वृद्धिसंज्ञक तीन वर्ण बताये गये हैं- आ, ऐ, औ। अतः वृद्धि सन्धि में पूर्व और पर दोनों वर्णों के मिलने से वृद्धि (आ, ऐ, औ) वर्ण ही होंगे।

वृद्धि सन्धि का सूत्र है- वृद्धिरेचि। इस सूत्र का अर्थ करने के लिए 'आद्गुणः' से 'आत्' पद ले लेंगे।

तो अर्थ होगा- आत् + एचि = वृद्धिः।

अ/आ + ए ओ ऐ औ = ऐ औ

वृद्धि सन्धि के उदाहरण -

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

(i) सदा + एव (सन्धि विच्छेद)

(ii) सद् आ + एव (वर्ण विच्छेद)

(iii) सद् ऐ व (आ + ए = ऐ)

(iv) सदैव (सन्धियुक्त पद)

अ आ + ओ औ = औ

- (i) जल + ओघः  
(ii) जल् अ + ओघः  
(iii) जल् औ घः  
(iv) जलौघः

वृद्धि सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

अ आ + ए ऐ = ऐ

- न + एवम् = नैवम्  
या + एवम् = यैवम्  
लता + एषा = लतैषा  
देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्  
मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्  
धन + एषणा = धनैषणा  
पञ्च + एते = पञ्चैते  
विद्या + ऐश्वर्यम् = विद्यैश्वर्यम्

अ आ + ओ औ = औ

- वन + औषधिः = वनौषधिः  
देव + औदार्यम् = देवौदार्यम्  
महा + औषधिः = महौषधिः  
वन + ओकसः = वनौकसः  
पुष्प + ओकः = पुष्पौकः  
कन्या + ओदनम् = कन्यौदनम्

#### 4. यण् सन्धि

सूत्र- इको यणचि (6.1.77)  
इस सूत्र में तीनों पद प्रत्याहार हैं-

इक् = इ उ ऋ लृ

यण् = य् व् र् ल्

अच् = अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ

सूत्रार्थ- यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, लृ इक् के बाद कोई भी असमान अच् (स्वर) आये तो इ के स्थान पर य्, उ के स्थान पर व्, ऋ के स्थान पर 'र्', 'लृ' के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

संक्षेप में कहें तो-

इक् + अच् = यण्

इ/ई + स्वर = य्

उ/ऊ + स्वर = व्

ऋ/ॠ + स्वर = र्

लृ + स्वर = ल्

नोट- ध्यान रहे पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर एकादेश नहीं होगा केवल इक् (इ उ ऋ लृ) के स्थान पर क्रमशः यण् (य् व् र् ल्) होगा।

यण् सन्धि के उदाहरण

इ ई + अच् = य्

- ( 1 ) इति + आदिः (सन्धि विच्छेद)  
इत् इ + आदिः (वर्ण विच्छेद)  
इत् य् + आदिः (इ + अच् = य्)  
इत्यादिः (सन्धियुक्त पद)

- ( 2 ) मधु + अरिः  
मध् उ + अरिः  
मध् व् अरिः  
मध्वरिः

- ( 3 ) पितृ + आदेशः  
पित् ऋ + आदेशः  
पित् र् आदेशः  
पित्रादेशः

- ( 4 ) लृ + आकृतिः  
लृ + आकृतिः  
लाकृतिः

यण् सन्धि के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण

इ/ई के स्थान पर 'य्'

प्रयायदि + अपि = यद्यपि

सुधी + उपास्यः = सुध्युपास्यः

नदी + ऊर्मिः = नद्यूर्मिः

अभि + उदयः = अभ्युदयः

उ/ऊ के स्थान पर 'व्'

सु + आगतम् = स्वागतम्

वधू + आदेशः = वध्वादेशः

ऋ / ॠ के स्थान पर 'र्'

धातृ + अंशः = धात्रंशः

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

#### 5. अयादि सन्धि ( अयवायाव सन्धि )

सूत्र- 'एचोऽयवायावः' (6.1.78)

सूत्र विश्लेषण- 'एचः' यह प्रत्याहार है, जिसमें ए, ओ, ऐ,

औ- ये चार वर्ण आते हैं।

- अय् अय् आय् आव् - ये चार आदेश वर्ण हैं।
- इसप्रकार ए ओ ऐ औ (एच्) के बाद कोई स्वर वर्ण (अच्) आयें तो 'ए' के स्थान पर 'अय्' ओ के स्थान पर 'अव्' 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' औ के स्थान पर 'आव्' होगा।

**संक्षेप में- एच् + अच् = अयवायावः**

ए + अच् = अय्

ओ + अच् = अव्

ऐ + अच् = आय्

औ + अच् = आव्

**ध्यान दें-** ए + अच् दोनों के स्थान पर 'अय्' आदेश नहीं हो रहा है; केवल 'ए' के स्थान पर 'अय्' होगा।

**अयादि सन्धि के उदाहरण-**

**ए + अच् = अय्**

1. चे + अनम् (सन्धिविच्छेद)

च् ए + अनम् (वर्ण विच्छेद)

च् अय् अनम् (ए के स्थान पर 'अय्')

**चयनम्** (सन्धियुक्त पद)

2. ने + अनम् = नयनम्

3. शे + अनम् = शयनम्

4. हरे + ए = हरये

5. मुने + ए = मुनये

**ओ + अच् = अव्**

1. पवनः

सन्धिविच्छेद- पो + अनः

वर्णविच्छेद- प् ओ + अनः

'ओ' के स्थान पर 'अव्' - प् अव् + अनः

सन्धियुक्त पद = पवनः

2. भो + अनम् = भवनम्

3. साधो + ए = साधवे

4. श्रो + अनम् = श्रवणम्

5. लो + अनम् = लवणम्

6. गुरो + ए = गुरवे

7. भो + अति = भवति

8. गौ + एषणा = गवेषणा

9. पो + इत्रम् = पवित्रम्

**ऐ + अच् = आय्**

1. (i) सन्धि विच्छेद = नै + अकः

(ii) वर्ण विच्छेद = न् ऐ + अकः

(iii) 'ऐ' के स्थान पर 'आय्' = न् आय् अकः

(iv) सन्धियुक्त पद = नायकः

2. गै + इका = गायिका

3. शै + अकः = शायकः

4. दै + अकः = दायकः

5. गै + अनम् = गायनम्

6. गै + अकः = गायकः

**औ + अच् = आव्**

1. पौ + अकः = सन्धिविच्छेद

प् औ + अकः = वर्णविच्छेद

प् आव् + अकः = औ के स्थान पर 'आव्' आदेश

**पावकः** = सन्धियुक्त पद

2. एतौ + अपि = एतावपि

3. द्वौ + एव = द्वावेव

4. बालकौ + अपि = बालकावपि

5. पौ + अनः = पावनः

6. भौ + उकः = भावुकः

7. पौ + अनः = पावनः

8. नौ + इकः = नाविकः

## 6. पूर्वरूप सन्धि

**सूत्र-** एङः पदान्तादति (6.1.109)

**सूत्र विश्लेषण-** एङ् = ए, औ (यह एक प्रत्याहार है)

पदान्तात् = पद के अन्त में

अति = ह्रस्व 'अ' के आने पर

**परिभाषा-** जब पदान्त ए या ओ के बाद ह्रस्व 'अ' आये तो 'अ' को पूर्वरूप हो जाता है।

**पूर्वरूप-** अपने रूप को छोड़कर पूर्व वर्ण जैसा हो जाना-पूर्वरूप है। अर्थात् 'अ' वर्ण ए या ओ में जाकर मिल जायेगा, और ह्रस्व 'अ' की जगह अवग्रह (ऽ) का चिह्न लग जाता है।

**संक्षेप में -** पदान्त एङ् + अ = पूर्वरूप

**ए ओ + अ = ऽ**

**पूर्वरूप सन्धि के उदाहरण**

हरे + अव (सन्धिविच्छेद)

हर् ए + अव (वर्ण विच्छेद)

हर् ए + ऽव ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ए' में मिल गया)

**हरेऽव** (सन्धियुक्त पद)

विष्णो + अव (सन्धिविच्छेद)  
 विष्ण् ओ + अव (वर्ण विच्छेद)  
 विष्ण् ओ ऽ व ('अ' जाकर पूर्ववर्ण 'ओ' में मिल गया)  
 विष्णोऽव (सन्धियुक्त पद)

**ए + अ = ऽ**

रमे + अत्र = रमेऽत्र  
 वने + अत्र = वनेऽत्र

**ओ + अ = ऽ**

को + अपि = कोऽपि  
 बालको + अपि = बालकोऽपि  
 को + अवादीत् = कोऽवादीत्  
 बालो + अवदत् = बालोऽवदत्

## 7. पररूप सन्धि

**सूत्र-** एङि पररूपम् (6.1.94)

**परिभाषा-** अकारान्त उपसर्ग के बाद ए या ओ (एङ्) से प्रारम्भ होने वाली धातुओं के आने पर पररूप हो जाता है।

**पररूप-** पर (बाद) वाले वर्ण के समान हो जाना ही पररूप है।

**पूर्ववर्ण** **परवर्ण** **सन्धियुक्तवर्ण**  
 अवर्णान्त उपसर्ग + ए ओ से प्रारम्भ होने वाले धातुरूप पररूप (ए, ओ के समान रूप)

## पररूप सन्धि के उदाहरण

(1) प्र + एजते (सन्धि विच्छेद)  
 प्र् अ + एजते (वर्ण विच्छेद)  
 प्र् अ + एजते (परवर्ण 'ए' में 'अ' मिल गया)

### प्रेजते

(2) उप + ओषति (सन्धि विच्छेद)  
 उप् अ + ओषति (वर्ण विच्छेद)  
 उप् अ + ओषति ('अ' जाकर परवर्ण 'ओ' में मिल गया)  
**उपोषति** (सन्धियुक्त पद)  
 प्र + ओषति = **प्रोषति**

## 8. प्रकृतिभाव सन्धि

**सूत्र-** प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् (5.1.125)

**सूत्रार्थ-** प्लुत और प्रगृह्य वर्णों को प्रकृतिभाव होता है, यदि बाद में स्वर वर्ण आयें तो।

**प्रकृतिभाव-** प्रकृतिभाव का अर्थ है- कोई भी सन्धि न होना अर्थात् ज्यों का त्यों रहना।

**संक्षेप में-** प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव

**उदाहरण-** हरी + एतौ = हरी एतौ

विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ

गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू

पचेते + इमौ = पचेते इमौ

**विशेष-** दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अतः **हरी, विष्णू, गङ्गे** की प्रगृह्यसंज्ञा है। प्रगृह्यसंज्ञा होने के कारण यहाँ प्रकृतिभाव हुआ।

नहीं तो हरी + एतौ = हर्येतौ बन जाता यण् सन्धि से।

## स्वरसन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. यण् सन्धि	इको यणचि	<b>इक् + अच् = यण्</b> इ/ई + असमान अच् = य् उ/ऊ + अच् (असमान) = व् ऋ ॠ + अच् (असमान) = र् लृ + अच् (असमान) = ल्	यदि + अपि = यद्यपि मधु + अरिः = मध्वरिः पितृ + आदेशः = पित्रादेशः लृ + आकृतिः = लाकृतिः
2. अयादि सन्धि	एचोऽयवायावः	<b>एच् + अच् = अयवायाव</b> ए + अच् = अय् ओ + अच् = अव् ऐ + अच् = आय् औ + अच् = आव्	ने + अनम् = नयनम् पो + अनः = पवनः नै + अकः = नायकः पौ + अकः = पावकः

3. गुण सन्धि	आद्गुणः	<b>आत् + अच् = गुण</b> अ/आ + इ/ई = ए अ/आ + उ/ऊ = ओ अ/आ + ऋ/ॠ = अर् अ/आ + लृ = अल्	रमा + ईशः = रमेशः हित + उपदेशः = हितोपदेशः देव + ऋषिः = देवर्षिः तव + लृकारः = तवलृकारः
4. वृद्धि सन्धि	वृद्धिरेचि	<b>आत् + एच् = वृद्धि</b> अ/आ + ए/ऐ = ऐ अ/आ + ओ/औ = औ	सदा + एव = सदैव महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् जल + ओघः = जलौघः महा + औषधिः = महौषधिः
5. दीर्घ सन्धि	अकः सवर्णे दीर्घः	<b>अक् + अक् = दीर्घः</b> अ/आ + अ/आ = आ इ/ई + इ/ई = ई उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = ॠ	हिम + आलयः = हिमालयः रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः भानु + उदयः = भानूदयः मातृ + ऋणम् = मातृणम्
6. पूर्वरूप सन्धि	एङः पदान्तादति	<b>एङ् + अ = पूर्वरूप</b> ए + अ = (ऽ) पूर्वरूप ओ + अ = (ऽ) पूर्वरूप	हरे + अव = हरेऽव विष्णो + अव = विष्णोऽव
7. पररूप सन्धि	एङि पररूपम्	<b>अवर्णान्त उपसर्ग + एङादिधातु = पररूप</b> प्र, उप + ए, ओ धातु = पररूप	प्र + एजते = प्रेजते उप + ओषति = उपोषति
8. प्रकृतिभाव	प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्	प्लुत/प्रगृह्या + अच् = प्रकृतिभाव	हरी + एतौ = हरी एतौ विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू

### स्वरसन्धि के कुछ अपवाद सूत्र/वार्तिक

( 1 ) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् - 'अक्ष' शब्द के बाद 'ऊहिनी' शब्द के आने पर पूर्व और पर दोनों के (अ+ऊ) स्थान पर वृद्धिसंज्ञक 'औ' वर्ण आदेश होता है।

अक्ष + ऊहिनी  
अक्ष अ + ऊहिनी  
अक्ष औ हिनी  
अक्षौहिणी

नोट- पूर्वपदात्संज्ञायामगः (8.4.3) सूत्र से 'नकार' के स्थान पर 'णकार' आदेश होकर 'अक्षौहिणी' प्रयोग सिद्ध हो जाता है।  
➤ अक्षौहिणी सेना होती है, जिसमें 21870 रथ, 21870 हाथी, 65610 घोड़े और 109350 पैदल सैनिक होते हैं।

( 2 ) प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु ( वा. ) - 'प्र' उपसर्ग के बाद ऊहः, ऊढः, ऊढिः, एषः, और एष्यः पद आयें तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण आदेश होते हैं।

(i) प्र + ऊहः

प्र अ + ऊहः

प्र औ हः

प्रौहः (उत्तम अर्थ करने वाला)

(ii) प्र + ऊढः

प्र अ + ऊढः

प्र औ ढः

प्रौढः (परिपक्व)

(iii) प्र + ऊढिः

प्र अ + ऊढिः

प्र औ ढिः

प्रौढिः (परिपक्वता, प्रौढता)

उपर्युक्त उदाहरणों में गुण सन्धि हो रही थी, किन्तु यहाँ गुण को बाधकर वृद्धिसन्धि हो रही है।

(iv) प्र + एषः

प्र अ + एषः

प्र ऐ षः

प्रैषः (प्रेरणा)

(v) प्र + एष्यः

प्र अ + एष्यः

प्र ऐ ष्यः

प्रैष्यः (प्रेरणीय/सेवक आदि)

**नोट-** इन दोनों उदाहरणों में वृद्धि सन्धि तो हो रही थी किन्तु “एङि पररूपम्” सूत्र से पररूप भी प्राप्त हो रहा था। यदि पररूप हो जाता तो प्रेषः, प्रेष्यः ऐसे अशुद्ध रूप बन जाते।

**( 3 ) ऋते च तृतीयासमासे ( वा. )** - यदि पूर्व में अवर्ण हो और बाद में ‘ऋत’ शब्द हो और दोनों शब्दों में तृतीया तत्पुरुष समास हुआ हो तो पूर्व और पर दोनों वर्णों के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

सुखेन ऋतः = सुखार्तः (तृतीया तत्पुरुष समास)

सुख + ऋतः = सुखार्तः (सुख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

दुःख + ऋतः = दुःखार्तः (दुःख से युक्त) - वृद्धिसन्धि

कष्ट + ऋतः = कष्टार्तः (कष्ट से युक्त) - वृद्धिसन्धि

किन्तु परमश्रासौ ऋतः = परमर्तः यहाँ वृद्धि नहीं हुई क्योंकि यहाँ तृतीया तत्पुरुष समास नहीं, बल्कि कर्मधारय समास है।

परम + ऋतः = परमर्तः (गुण सन्धि)

**4. प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे ( वार्तिक )-**

प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण तथा दश- इन छह शब्दों के बाद यदि ‘ऋण’ शब्द आये तो पूर्व और पर दोनों के स्थान पर

वृद्धिसंज्ञक वर्ण हो जाता है।

(i) प्र + ऋणम्

प्र अ + ऋणम्

प्र आर् णम्

प्रार्णम् (अधिक ऋण)

(ii) वत्सतर + ऋणम् = वत्सतरार्णम् (बछड़े के लिए ऋण)

(iii) कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम् (कम्बल के लिए ऋण)

(iv) वसन + ऋणम् = वसनार्णम् (वस्त्र के लिए ऋण)

(v) ऋण + ऋणम् = ऋणार्णम् (ऋण चुकाने के लिए ऋण)

(vi) दश + ऋणम् = दशार्णम् (दस प्रकार के जल वाला देश)

**5. उपसर्गादृति धातौ-** अवर्णान्त उपसर्ग के बाद ‘ऋ’ से प्रारम्भ होने वाली धातु हो तो पूर्व और पर के स्थान पर वृद्धिसंज्ञक एक आदेश होता है।

जैसे-

प्र + ऋच्छति = प्राच्छति

उप + ऋच्छति = उपाच्छति

प्र + ऋणोति = प्राणोति

प्र + ऋञ्जते = प्राञ्जते

**( 6 ) शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् ( वार्तिक )-**

शकन्ध्वादि गण में टिसंज्ञक पूर्व और पर वर्णों के स्थान पर पररूप सन्धि होती है।

जैसे-

(i) शक + अन्धुः = शकन्धुः (शक नामक देश का कूप)

(ii) कर्क + अन्धुः = कर्कन्धुः (कर्क नामक राजा का कूप)

(iii) मनस् + ईषा = मनीषा (बुद्धि)

(iv) मार्त + अण्डः = मार्तण्डः (सूर्य)

(v) पतत् + अञ्जलिः = पतञ्जलिः (पतञ्जलि)

**( 7 ) स्वादीरेरिणोः ( वार्तिक )-** जब ‘स्व’ शब्द के बाद ‘ईर’ और ‘ईरिन्’ आदि शब्द आयें तो ‘स्व’ के अकार ‘ईर’ और ‘ईरिन्’ के ईकार के स्थान में ‘ऐ’ वृद्धि हो जाता है।

जैसे-

स्व + ईरः = स्वैरः (स्वेच्छाचारी)

स्व + ईरिणी = स्वैरिणी (स्वेच्छाचारिणी)

स्व + ईरम् = स्वैरम् (स्वेच्छाचारिता)

स्व + ईरी = स्वैरी (स्वेच्छाचारी)



## व्यञ्जन ( हल् ) सन्धि

**व्यञ्जन सन्धि-** व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

जैसे-

- (i) वाक् + ईशः = वागीशः (व्यञ्जन + स्वर)  
(ii) सत् + चित् = सच्चित् (व्यञ्जन + व्यञ्जन)

**स्पष्टीकरण-** यहाँ प्रथम उदाहरण में 'क्' व्यञ्जन के बाद 'ई' स्वर है तथा दूसरे उदाहरण में 'त्' व्यञ्जन के बाद 'च्' व्यञ्जन है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यञ्जन वर्णों के बाद स्वर आये चाहे व्यञ्जन दोनों ही स्थितियों में व्यञ्जन सन्धि होगी।

### 1. श्चुत्व सन्धि

**सूत्र-** स्तोः श्चुना श्चुः

**सूत्र विश्लेषण-**

स्तु - सकार तवर्ग = स् त् थ् द् ध् न्

श्चु - शकार चवर्ग = श् च् छ् ज् झ् ञ्

**सूत्रार्थ-** सकार या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) का योग होने पर स् के स्थान पर श् तथा तवर्ग के स्थान पर चवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	श्	श् या
त्	च्	चवर्ग का
थ्	छ्	योग पहले हो
द्	ज्	या बाद में।
ध्	झ्	
न्	ञ्	

**उदाहरण-**

रामस् + शेते = रामश्शेते

**स्पष्टीकरण-** इस उदाहरण में 'रामस्' में विद्यमान सकार के स्थान पर शकार हो गया; क्योंकि 'शेते' में शकार आ रहा था इसलिए।

**ध्यान दें-** इस सूत्र में सकार के बाद शकार आये ऐसा नहीं कहा गया है; अपितु योग होने पर कहा गया है। 'योग' का अर्थ है- 'मिलना'। तात्पर्य यह हुआ कि- 'स्तु' (सकार तवर्ग) पहले हो श्चु बाद में हो या श्चु (शकार चवर्ग) पहले हो 'स्तु' बाद में हो, बदलेगा 'स्तु' ही। जैसे-

(i) सत् + चित् = सच्चित्

(ii) याच् + ना = याच्ना

- उपर्युक्त उदाहरण में 'सत्' के त् का 'चित्' के च् से योग होने पर 'सत्' के 'त्' के स्थान पर 'च्' होकर 'सच्चित्' बन गया।  
➤ दूसरे उदाहरण में 'याच्' के च् का 'ना' के 'न्' से योग होने पर 'न्' के स्थान पर चवर्ग का 'ञ्' हो गया। जबकि 'ना' परवर्ण है तब भी।

- इससे सिद्ध हुआ कि सकार और तवर्ग चाहे पूर्व में हो चाहे पर में उनके स्थान पर ही शकार या चवर्ग आदेश के रूप में होंगे।

**अवश्य देखें-** श्चुत्व सन्धि में हमेशा-

स् के स्थान पर श्

त् के स्थान पर च्

थ् के स्थान पर छ्

द् के स्थान पर ज्

ध् के स्थान पर झ्

न् के स्थान पर ञ् होगा।

**स्तु ( सकार तवर्ग ) स्थानी हैं, श्चु ( शकार चवर्ग ) आदेश हैं।**

**अन्य उदाहरण-** सद् + जनः = सज्जनः

कस् + चित् = कश्चित्

शाङ्गिन् + जयः = शाङ्गिजयः

बृहद् + झरः = बृहज्झरः

दुस् + चरित्रः = दुश्चरित्रः

उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः

उत् + चारणम् = उच्चारणम्

### 2. घृत्व सन्धि

**सूत्र-** 'घृना घृः' (8.4.41)

**सूत्रार्थ-** स्तु (सकार तवर्ग) के स्थान पर 'घृ' (षकार टवर्ग) होता है, 'घृ' के योग में।

स्तु = सकार तवर्ग- स् त् थ् द् ध् न्

घृ = षकार टवर्ग- ष् ट् ठ् ड् ण्

अर्थात् सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट् ठ् ड् ण्) का योग होने पर स् को ष तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

स्थानी	आदेश	योग
स्	ष्	षकार या
त्	ट्	टवर्ग का योग
थ्	ठ्	होने पर
द्	ड्	
ध्	ढ्	
न्	ण्	

**ध्यान रहे-** सकार तवर्ग के पहले या सकार तवर्ग के बाद में षकार टवर्ग होने पर स् के स्थान पर 'ष्'।  
'त्' के स्थान पर 'ट्'। 'थ्' के स्थान पर 'ट्'।  
द के स्थान पर 'ड्'। 'ध्' के स्थान पर 'ड्'।  
'न्' के स्थान पर 'ण्' होता है।

**उदाहरण-**

1. तत् + टीका  
तट् + टीका (त् के स्थान पर ट्)

**तट्टीका**

2. रामस् + षष्ठः  
रामष् + षष्ठः (स् के स्थान पर ष्)

**रामषष्ठः**

3. उद् + डयनम्  
उड् + डयनम् (द् के स्थान पर ड्)

**उड्डयनम्**

4. कृष् + नः  
कृष् + णः (न् के स्थान पर ण्)

**कृष्णः**

5. दुष् + तः  
दुष् + टः (त् के स्थान पर ट्)

**दुष्टः**

6. चक्रिन् + ढौकसे  
चक्रिण् + ढौकसे (न् के स्थान पर ण्)

**चक्रिण्ढौकसे**

7. विष् + नुः  
विष् + णुः (न् के स्थान पर ण्)

**विष्णुः**

8. पेष् + ता  
पेष् + टा (त् के स्थान पर ट्)

**पेष्टा****3.1 जश्त्व सन्धि**

**सूत्र-** झलां जशोऽन्ते (8.2.39)

**सूत्रविवरण-** पदान्त झल् के स्थान पर 'जश्' आदेश होता है।  
'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें - वर्णों के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और ऊष्म वर्ण आते हैं-

**झल्** = झ भ घ ढ ध  
ज ब ग ड द  
ख फ छ ठ थ  
च ट त क प  
श ष स ह

**जश्** = ज ब ग ड द (वर्णों के तीसरे अक्षर)

स्थानी ( झल् )	आदेश ( जश् )
(i) च छ ज्ञ श्	ज्
(ii) प् फ् ब् भ्	ब्
(iii) क् ख् ग् घ् ह्	ग्
(iv) ट् ठ् ड् ढ्	ड्
(v) त् थ् द् ध् स्	द्

**ध्यान रहे-** झल् प्रत्याहार के बाद अच् हो, या हल् हो, या कोई वर्ण हो या न हो तो भी जश् होगा।

**नोट-** जश्त्व सन्धि दो प्रकार की होती है-

- (i) पदान्त जश्त्व सन्धि
- (ii) अपदान्त जश्त्व सन्धि

**उदाहरण-**

1. अच् + अन्तः

अज् + अन्तः

**अजन्तः**

3. षट् + आननः

षड् + आननः

**षडाननः**

5. एतत् + मुरारिः

एतद् + मुरारिः

**एतद् मुरारिः**

7. जगत् + ईशः

जगद् + ईशः

**जगदीशः**

9. दिक् + गजः

दिग् + गजः

**दिग्गजः**

11. सुप् + अन्तः

सुब् + अन्तः

**सुबन्तः**

13. तिप् + अन्तः

तिब् + अन्तः

**तिबन्तः**

15. महत् + दानम्

महद् + दानम्

**महद्दानम्**

2. वाक् + ईशः

वाग् + ईशः

**वागीशः**

4. दिक् + अम्बरः

दिग् + अम्बरः

**दिग्गम्बरः**

6. सुप् + ईशः

सुब् + ईशः

**सुबीशः**

8. वाक् + अत्र

वाग् + अत्र

**वागत्र**

10. चित् + आनन्दः

चिद् + आनन्दः

**चिदानन्दः**

12. कृत् + अन्तः

कृद् + अन्तः

**कृदन्तः**

14. अप् + जम्

अब् + जम्

**अब्जम्**

### 3.2 अपदान्त जश्त्व सन्धि-

**सूत्र-** झलां जश् झशि (8.4.53)

**सूत्रविश्लेषण-** झलाम् - झल् वर्णों के स्थान पर

**जश्** - जश् वर्ण होते हैं

**झशि** - झश् वर्णों के (बाद) में आने पर

**सूत्रार्थ-** झल् वर्णों के बाद झश् वर्णों के आने पर झल् के स्थान पर जश् होगा।

(i) 'झल्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्णों के 1,2,3,4 और श् ष स् ह आते हैं।

**झल्** = झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द  
ख फ छ ठ थ च ट त क प  
श ष स ह

(ii) 'जश्' एक प्रत्याहार है, जिसमें वर्णों के तीसरे वर्ण आते हैं  
**जश्** = ज ब ग ड द।

(iii) 'झश्' भी एक प्रत्याहार है जिसमें वर्णों के तीसरे और चौथे वर्ण आते हैं।

**झश्** = झ भ घ ढ ध  
ज ब ग ड द

स्थानी ( झल् )	आदेश ( जश् )
क् ख् ग् घ् ह्	ग्
च् छ् ज् झ् श्	ज्
ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
त् थ् द् ध् स्	द्
प् फ् ब् भ्	ब्

**ध्यान दें-** 'स्थानेऽन्तरतमः' की सहायता से उच्चारणस्थान की साम्यता को लेकर ज् ब् ग् ड् द् (जश्) आदेश होता है।

**उदाहरण-**

- |   |  |
|---|--|
| (1) कुध् + धः<br>कुद् + धः<br><b>कुद्धः</b>       | (2) शुध् + धः<br>शुद् + धः<br><b>शुद्धः</b>    |
| (3) युध् + धः<br>युद् + धः<br><b>युद्धः</b>       | (4) लभ् + धः<br>लब् + धः<br><b>लब्धः</b>       |
| (5) दुह् + धम्<br>दुग् + धम्<br><b>दुग्धम्</b>    | (6) वृध् + धिः<br>वृद् + धिः<br><b>वृद्धिः</b> |
| (7) रुणध् + धिः<br>रुणद् + धिः<br><b>रुणद्धिः</b> | (8) बोध् + धा<br>बोद् + धा<br><b>बोद्धा</b>    |

### 4. चर्त्त्व सन्धि-

**सूत्र-** खरि च (8.4.55)

**सूत्रार्थ-** यदि झल् के बाद खर् आये तो झल् के स्थान पर 'चर्' होगा।

➤ 'झल्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्णों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ, एवं श ष स ह वर्ण आते हैं।

➤ **झल्** = झ भ घ ढ ध  
ज ब ग ड द  
ख फ छ ठ थ  
च ट त क प  
श ष स ह

➤ 'खर्' एक प्रत्याहार है जिसमें वर्णों के प्रथम, द्वितीय वर्ण और श् ष स् आते हैं।

**खर्** = ख् फ् छ् ठ् थ्  
च् ट् त् क् प्  
श् ष् स्

➤ 'खरि च' सूत्र का सम्पूर्ण अर्थ करने के लिए 'झलाम्' और 'चर्' की अनुवृत्ति आती है।

स्थानी ( झल् )	आदेश ( चर् )	साम्य ( उच्चारण स्थान )	परवर्ण ( खर् )
क् ख् ग् घ्	क्	कण्ठ	ख् फ् छ्
च् छ् ज् झ्	च्	तालु	ट् थ् य्
ट् ठ् ड् ढ्	ट्	मूर्धा	ट् त् क्
त् थ् द् ध्	त्	दन्त	प् श् ष्
प् फ् ब् भ्	प्	ओष्ठ	स्

➤ श् ष् स् के स्थान पर श् ष् स् आदेश होगा

**उदाहरण-**

- |   |   |
|---|---|
| (1) सद् + कारः<br>सत् + कारः<br><b>सत्कारः</b>          | (2) सद् + पात्रम्<br>सत् + पात्रम्<br><b>सत्पात्रम्</b> |
| (3) दिग् + पालः<br>दिक् + पालः<br><b>दिक्पालः</b>       | (4) भेद् + तुम्<br>भेत् + तुम्<br><b>भेत्तुम्</b>       |
| (5) छेद् + तव्यम्<br>छेत् + तव्यम्<br><b>छेत्तव्यम्</b> | (6) लिभ् + सा<br>लिप् + सा<br><b>लिप्सा</b>             |

## 5. अनुस्वार सन्धि-

सूत्र- मोऽनुस्वारः (8.3.23)

सूत्रार्थ- पदान्त 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन (हल्) आये तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार (·) हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
पदान्त मकार	हल्	· अनुस्वार

उदाहरण-

- (i) हरिम् + वन्दे = हरि वन्दे  
(ii) त्वम् + करोषि = त्वं करोषि  
(iii) रामम् + भजामि = रामं भजामि  
(iv) जलम् + वहति = जलं वहति  
(v) धनम् + यच्छ = धनं यच्छ  
(vi) दुःखम् + सहते = दुःखं सहते

## 6. तोर्लि सन्धि-

सूत्र- तोर्लि (8.4.60)

सूत्रविश्लेषण- तोः - तवर्ग के बाद  
लि - ल् वर्ण हो तो

➤ परसवर्ण - परसवर्ण 'ल्' हो जाता है।

➤ 'अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः' से 'परसवर्ण' की अनुवृत्ति।

सूत्रार्थ- यदि तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के बाद 'ल्' वर्ण आये तो तवर्ग के स्थान पर 'ल्' हो जाता है।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
त् थ् द् ध् न्	ल्	ल्

उदाहरण-

- (i) उद् + लिखितम्  
उल् + लिखितम्  
उल्लिखितम्  
(iii) उद् + लेखः  
उल् + लेखः  
उल्लेखः  
(v) तद् + लयः  
तल् + लयः  
तल्लयः  
(vii) विपद् + लीनः  
विपल् + लीनः  
विपल्लीनः  
(ii) तद् + लीनः  
तल् + लीनः  
तल्लीनः  
(iv) विद्वान् + लिखति  
विद्वाल् + लिखति  
विद्वल्लिखति  
(vi) महान् + लाभः  
महाल् + लाभः  
महाल्लभः  
(viii) जगद् + लीयते  
जगल् + लीयते  
जगल्लीयते

(ix) यद् + लक्षणम्  
यल् + लक्षणम्  
यल्लक्षणम्(xi) धनवान् + लुनीते  
धनवाल्लुनीते  
धनवाल्लुनीते(x) विद्युद् + लेखा  
विद्युल् + लेखा  
विद्युल्लेखा

## 7. परसवर्ण सन्धि-

सूत्र- अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (8.4.58)

सूत्रविश्लेषण-

अनुस्वारस्य- अनुस्वार (·) के स्थान पर

परसवर्णः - परसवर्ण होता है।

ययि - 'यय्' प्रत्याहार का वर्ण बाद में आये तो।

सूत्रार्थ- अपदान्त अनुस्वार के बाद यदि यय् प्रत्याहार का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार को परसवर्ण हो जाता है।

➤ परसवर्ण- परस्य सवर्णः परसवर्णः। परसवर्ण का अर्थ है-  
पर = (बाद) में जो वर्ण हैं उसके सवर्णियों में से आदेश  
होना।➤ अर्थात् अनुस्वार के बाद किसी भी वर्ण का कोई भी व्यञ्जन  
आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ण का पञ्चम वर्ण हो  
जाता है।यय - 'यय्' एक प्रत्याहार है जिसमें श् ष् स् ह् को छोड़कर सभी  
व्यञ्जन वर्ण आते हैं।यय = य् व् र् ल्  
ज् म् ङ् ण् न्  
झ् भ् घ् द् ध्  
ज् ब् ग् ङ् द्  
ख् फ् छ् ठ् थ्  
च् ट् त् क् प्।

पूर्ववर्ण ( अनुस्वार )	परवर्ण ( यय् )	सन्धिवर्ण ( परसवर्ण )
अनुस्वार (·)	क् ख् ग् घ् ङ्	ङ्
अनुस्वार (·)	च् छ् ज् झ् ञ्	ञ्
अनुस्वार (·)	ट् ठ् ड् ढ् ण्	ण्
अनुस्वार (·)	त् थ् द् ध् न्	न्
अनुस्वार (·)	प् फ् ब् भ् म्	म्

उदाहरण-

- (1) गं + गा = गङ्गा/गङ्गा  
(2) शं + खः = शङ्खः/शङ्खः

- (3) अं + कः = अङ्कः/अङ्कः  
 (4) अं + कितः = अङ्कितः  
 (5) लं + घनम् = लङ्घनम् / लङ्घनम्  
 (6) अं + चितः = अञ्चितः  
 (7) मं + चः = मञ्चः  
 (8) झं + झा = झञ्झा  
 (9) खं + जः = खञ्जः  
 (10) लां + छनम् = लाञ्छनम्  
 (11) कुं + ठितः = कुण्ठितः  
 (12) घं + टा = घण्टा  
 (13) मुं + डा = मुण्डा  
 (14) दं + डः = दण्डः  
 (15) खं + डः = खण्डः  
 (16) शां + तः = शान्तः  
 (17) मं + दः = मन्दः  
 (18) बं + धनम् = बन्धनम्  
 (19) मं + थनम् = मन्थनम्  
 (20) नं + दति = नन्दति  
 (21) कं + पनम् = कम्पनम्  
 (22) गुं + फितः = गुम्फितः  
 (23) लं + बः = लम्बः  
 (24) स्तं + भः = स्तम्भः  
 (25) पं + पा = पम्पा
- **विशेष-** अनुस्वार तभी अनुस्वार रह सकता है, जब उसके बाद य् व् र् ल् या श् स् ह हों। जैसे-  
 संयमः, संवारः, संरम्भः, संलापः, संयोगः, संशयः, संसारः, संहारः आदि।

- **वा पदान्तस्य-** पदान्त अनुस्वार के स्थान पर परसवर्ण विकल्प से होता है। यय् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आयें तो। अर्थात् पदान्त अनुस्वार में यह नियम वैकल्पिक है। जैसे-

- (i) कार्यं करोति = कार्यं करोति / कार्यङ्करोति।  
 (ii) किं करोषि = किं करोषि / किङ्करोषि  
 (iii) किं चित् = किञ्चित् / किञ्चित्  
 (iv) कथं चलसि = कथं चलसि / कथञ्चलसि।  
 (v) त्वं करोषि = त्वं करोषि / त्वङ्करोषि

### 8. अनुनासिक सन्धि

**सूत्र-** यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा (8.4.45)

**सूत्र विश्लेषण-** यरः = पदान्त यर् के स्थान पर अनुनासिके = अनुनासिक वर्ण बाद में आये तो

**अनुनासिकः** = अनुनासिक वर्ण होगा।

**वा** = विकल्प से।

**सूत्रार्थ-** अनुनासिक वर्ण यदि बाद में आयें तो पदान्त यर् वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है।

➤ **अनुनासिक होने का अर्थ है-** उसी वर्ण का पञ्चमाक्षर हो जाना  
**यर्** - यर् एक प्रत्याहार है जिसमें ह को छोड़कर सभी व्यञ्जन (हल्) वर्ण आते हैं।

पूर्ववर्ण	परवर्ण	सन्धिवर्ण
पदान्त यर् क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म्	अनुनासिक वर्ण ङ् ज् ण् न् म् में से कोई भी अनुनासिक वर्ण बाद में आये	अनुनासिक ङ् ज् ण् न् म्

जैसे-

- (i) प्राक् + मुखः  
 प्राङ् + मुखः  
**प्राङ्मुखः**  
 (iii) षट् + मुखः  
 षण् + मुखः  
**षण्मुखः**  
 (v) दिक् + नागः  
 दिङ् + नागः  
**दिङ्नागः**  
 (vii) तत् + मित्रम्  
 तन् + मित्रम्  
**तन्मित्रम्**

- (ii) षट् + मासाः  
 षण् + मासाः  
**षण्मासाः**  
 (iv) सद् + मतिः  
 सन् + मतिः  
**सन्मतिः**  
 (vi) जगत् + नाथः  
 जगन् + नाथः  
**जगन्नाथः**  
 (viii) एतद् + मुरारिः  
 एतन् + मुरारिः  
**एतन्मुरारिः**

**ध्यान रहे-** यह सन्धि वैकल्पिक है, सन्धि न होने पर जो सन्धि विच्छेद है, वही रूप रहेगा।

### प्रत्यये भाषायां नित्यम् - ( वार्तिक )

अनुनासिक वर्णों से प्रारम्भ होने वाले प्रत्ययों के बाद में आने पर पदान्त यर् के स्थान पर नित्य से अनुनासिक होता है।

- (i) तत् + मात्रम्  
 तन् + मात्रम्  
 = तन्मात्रम्  
 (iii) वाक् + मयम्  
 वाङ् मयम्  
 = वाङ्मयम्
- (ii) चित् + मयम्  
 चिन् + मयम्  
 = चिन्मयम्

## व्यञ्जन सन्धि तालिका

सन्धि का नाम	सन्धिसूत्र	सूत्रार्थ	उदाहरण
1. श्चुत्वसन्धि	स्तोः श्चुना श्चुः	स् तवर्ग + श् चवर्ग = श् चवर्ग	रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति सत् + चित् = सच्चित्
2. घृत्व सन्धि	घृना घृः	स् तवर्ग + ष् टवर्ग = ष् टवर्ग	रामस् + षष्ठः = रामषष्ठः रामस् + टीकते = रामष्टीकते तत् + टीका = तट्टीका जगत् + ईशः = जगदीशः षट् + आननः = षडाननः छेद् + ता = छेता लिभ् + सा = लिप्सा हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे त्वम् करोषि = त्वं करोषि उद् + लेख = उल्लेखः तद् + लीनः = तल्लीनः गं + गा = गङ्गा मं + च = मञ्चः जगत् + नाथः = जगन्नाथः दिक् + नागः = दिङ्नागः
3. जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	झल् को जश् आदेश	
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	झल् + खर् = चर्	
5. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पदान्त म् + हल् = अनुस्वार (ँ)	
6. तोर्लि सन्धि	तोर्लि	तवर्ग + ल् = ल्	
7. परसवर्ण सन्धि	अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः	अनुस्वार + यय् = परसवर्ण (पञ्चमाक्षर)	
8. अनुनासिकसन्धि	यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा	यर् + अनुनासिक = अनुनासिक	

## विसर्ग सन्धि

**विसर्ग सन्धि-** विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर विसर्ग (:) में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

जैसे- मनः + रथः = मनोरथः

➤ विसर्ग हमेशा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे- 'रामः' में 'अ' के बाद, हरिः में 'इ' के बाद, गुरुः में 'उ' के बाद विसर्ग आया है।

➤ विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा विसर्ग के बाद आने वाले स्वर और व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

## 1. सत्व सन्धि-

**विसर्जनीयस्य सः ( 8.3.34 )** - यदि विसर्ग के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण आये तो विसर्ग के स्थान पर 'स्' हो जाता है।

**विसर्ग (:) + खर् = स्**

खर् - खर् एक प्रत्याहार है जिसमें वर्णों के प्रथम, द्वितीय अक्षर और श ष स आते हैं। खर् में कुल 13 वर्ण आते हैं।

खर् = क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, श ष स।

ध्यान रखें-

इस नियम को समझने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है-

(i) यदि विसर्ग के बाद च् या छ आये तो "विसर्जनीयस्य सः" सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है और इस 'स्' को "स्तोः श्चुना श्चुः" सूत्र से 'श्' हो जाता है।

जैसे-

☆ रामः + चलति  
रामस् + चलति  
रामश्चलति

☆ निः + चलम्  
निस् + चलम्  
निश्चलम्

☆ कः + चित्  
कस् + चित्  
कश्चित्

☆ निः + छलम्  
निस् + छलम्  
निश्छलम्

☆ गौः + चरति  
गौस् + चरति  
गौश्चरति

☆ बालः + चलति  
बालस् + चलति  
बालश्चलति

☆ निः + चयः

निस् + चयः

निश्चयः

☆ हरिः + छलति

हरिस् + छलति

हरिश्छलति

(ii) यदि विसर्ग के बाद ट् या ट् हो तो “विसर्जनीयस्य सः”

सूत्र से विसर्ग के स्थान पर ‘स्’ होता है, और उस ‘स्’ को “घुना घुः” सूत्र से ‘ष्’ हो जाता है—

जैसे-

☆ रामः + टीकते

रामस् + टीकते

रामटीकते।

☆ धनुः + टङ्कारः

धनुस् + टङ्कारः

धनुष्टङ्कारः

☆ रामः + ठकारः

रामस् + ठकारः

रामष्ठकारः

(iii) यदि विसर्ग के बाद त् और थ् आये तो “विसर्जनीयस्य

सः” सूत्र से विसर्ग के स्थान पर ‘स्’ हो जाता है और वह ‘स्’ जैसा का तैसा रहता है अर्थात् ‘स्’ ही रहता है। जैसे-

☆ हरिः + त्राता

हरिस्त्राता

☆ विष्णुः + तत्र

विष्णुस्तत्र

☆ बालः + तिष्ठति

बालस्तिष्ठति

☆ विष्णुः + त्रायते

विष्णुस्त्रायते

☆ इतः + ततः

इतस्ततः

☆ कृतः + तथा

कृतस्तथा

☆ गजाः + तिष्ठन्ति

गजास्तिष्ठन्ति

☆ विष्णुः + त्राता

विष्णुस्त्राता

☆ बालकः + थुडति

बालकस्थुडति

☆ मनः + तापः

मनस्तापः

☆ नमः + ते

नमस्ते

(iv) यदि विसर्ग के बाद क् या ख् आये तो विसर्ग के स्थान पर

विसर्ग ही रहता है अथवा “कुप्पोः ऋक् ऋपौ च” (8.3.37)

सूत्र से विकल्प से जिह्वामूलीय हो जाता है।

विसर्ग को ‘स्’ नहीं होता है जैसे-

☆ बालकः क्रीडति अथवा बालकः क्रीडति।

☆ बालकः खेलति अथवा बालकः खेलति।

नोट-

☆ जिह्वामूलीय वर्णों को कण्ठ के भी नीचे जिह्वामूल से बोला जाता है।

☆ जिह्वामूलीय को आधे विसर्गः के समान लिखा जाता है।

(v) यदि विसर्ग के बाद प या फ आये तो विसर्ग के स्थान पर

विसर्ग ही रहता है अथवा “कुप्पोः ऋक् ऋपौ च” (8.3.37)

सूत्र से विसर्ग के स्थान पर उपध्मानीय होता है। विसर्ग को ‘स्’ नहीं होता। जैसे-

वृक्षः पतति = वृक्षः पतति।

वृक्षः फलति = वृक्षः फलति।

☆ पूर्णः + चन्द्रः

पूर्णस् + चन्द्रः

पूर्णश्चन्द्रः

☆ हरिः + चलति

हरिस् + चलति

हरिश्चलति

नोट-

☆ उपध्मानीय वर्ण का उच्चारण ‘ओष्ठ’ से होता है।

☆ उपध्मानीय को भी आधे विसर्गः के समान लिखा जाता है।

(vi) यदि विसर्ग के बाद शर् (श् ष् स्) आये तो “वा शरि” (8.3.36) सूत्र से विसर्ग को विसर्ग ही रहता है अथवा विसर्ग के स्थान पर ‘स्’ होकर परवर्ण श् ष् स् की तरह हो जाता है।

जैसे-

☆ हरिः + शेते

हरिस् + शेते

हरिश्शेते

☆ रामः + षष्ठः

रामस् + षष्ठः

रामषष्ठः/रामःषष्ठः ( विकल्प से )

अथवा हरिःशेते (विकल्प से)

☆ निः + सन्देहम्

निस् + सन्देहम्

निस्सन्देहम्

निःसन्देहम् (विकल्प से)

☆ वायुः + सरति

वायुस् + सरति

वायुस्सरति

वायुःसरति (विकल्प से)

☆ बालकः + शयानः

बालकस् शयानः

बालकश्शयानः

बालकः शयानः (विकल्प से)

☆ मुनिः + शेते - मुनिस् + शेते = मुनिश्शेते

कृष्णः + सर्पः - कृष्णस् + सर्पः = कृष्णस्सर्पः

## 2. रुत्व सन्धि

सूत्र - ससजुषो रुः ( 8.2.66 ) -

☆ पदान्त सकार और ‘सजुष्’ के षकार के स्थान पर ‘रु’ आदेश होता है।

☆ ‘रु’ में ‘उ’ की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है ‘रु’ शेष बचता है।

☆ जब ‘रु’ (रु) के ठीक पहले ह्रस्व ‘अ’ न हो और रु (रु) के ठीक बाद में खर् न हो, तो यह ‘रु’, ‘रु’ ही रहता है। इसे ही ‘रुत्वसन्धि’ कहते हैं।

☆ कविस् + अयम्

कवि रु + अयम्

कवि र् अयम्

कविरयम्

☆ हरेस् + इदम्

हरे रु + इदम्

हरे र् + इदम्

हरेरिदम्

☆ गौस् + अयम्

गौ रु + अयम्

गौ र् + अयम्

गौरयम्

☆ प्रातस् + अहम्

प्रात रु + अहम्

प्रात र् + अहम्

प्रातरहम्



☆ पाशैस् + बद्धः  
पाशै रु + बद्धः  
पाशै र् + बद्धः  
पाशैर्बद्धः

☆ निस् + धनम्  
नि रु + धनम्  
नि र् + धनम्  
निर्धनम्

☆ मातुस् + आज्ञा  
मातु रु + आज्ञा  
मातु र् आज्ञा  
मातुराज्ञा

☆ मुनिस् आगच्छति  
मुनि रु आगच्छति  
मुनि र् आगच्छति  
मुनिरागच्छति

☆ कैस् + उक्तम्  
कै रु + उक्तम्  
कै र् + उक्तम्  
कैरुक्तम्

☆ भानुस् + उदेति  
भानु रु + उदेति  
भानु र् + उदेति  
भानुरुदेति

☆ लक्ष्मीस् + इयम्  
लक्ष्मी रु + इयम्  
लक्ष्मी र् + इयम्  
लक्ष्मीरियम्

☆ गुरोस् + भाषणम्  
गुरो रु + भाषणम्  
गुरो र् + भाषणम्  
गुरोर्भाषणम्

अन्य उदाहरण-

☆ कविस् + आगच्छति  
☆ मुनिस् + इव  
☆ निस् + दयः  
☆ पतिस् + उवाच  
☆ हरेस् + जन्म  
☆ गुरोस् + आगमनम्  
☆ मुनिस् + गच्छति  
☆ भानुस् + उदेति  
☆ प्रातस् + एव  
☆ मातृस् + आदेशः

☆ पितुस् + आज्ञा  
पितु रु + आज्ञा  
पितु र् + आज्ञा  
पितुराज्ञा

☆ ऋषिस् + वदति  
ऋषि रु + वदति  
ऋषि र् + वदति  
ऋषिर्वदति

☆ भानोस् + अयम्  
भानो रु + अयम्  
भानो र् अयम्  
भानोरयम्

☆ हरिस् + जयति  
हरि रु + जयति  
हरि र् + जयति  
हरिर्जयति

☆ साधुस् + गच्छति  
साधु रु + गच्छति  
साधु र् + गच्छति  
साधुर्गच्छति

☆ हरिस् + अवदत्  
हरि रु + अवदत्  
हरि र् + अवदत्  
हरिरवदत्

☆ पितुस् + इच्छा  
पितु रु + इच्छा  
पितु र् + इच्छा  
पितुरिच्छा

= कविरागच्छति  
= मुनिरिव  
= निर्दयः  
= पतिरुवाच  
= हरेर्जन्म  
= गुरोरागमनम्  
= मुनिर्गच्छति  
= भानुरुदेति  
= प्रातरिव  
= मातृरादेशः

### 3. उत्त्व सन्धि

#### अतो रोरप्लुतादप्लुते ( 6.1.13 ) -

यदि 'रु' के ठीक पहले 'ह्रस्व अ' हो और 'रु' के ठीक बाद में पुनः 'ह्रस्व अ' हो, तो ऐसे दो ह्रस्व अ के बीच बैठे 'रु' (रु) को 'उ' हो जाता है। इसे ही उत्त्व सन्धि कहते हैं।

➤ ध्यान रहे कि 'रु' के स्थान पर 'उ' नहीं होता, किन्तु उकार की इत्संज्ञा होकर लोप होने पर शेष बचे 'रु' के स्थान पर ही 'उ' होता है। सूत्र में 'रु' के कथन का यह तात्पर्य है कि 'रु' के 'रु' को ही उत्त्व हो, अन्य 'रु' को नहीं।

जैसे-

☆ शिवस् + अर्च्यः

शिव रु + अर्च्यः ('ससजुषो रुः' से 'रु')

शिव र् + अर्च्यः ('रु' के 'उ' का लोप)

शिव उ + अर्च्यः (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'उ')

शिवो + अर्च्यः (आद् गुणः से अ+उ = ओ गुण)

शिवोऽर्च्यः ("एङः पदान्तादति" से पूर्वरूप)

☆ देवस् + अपि (पदान्त सकार)

देव रु + अपि ('ससजुषो रुः' से रु को 'रु' आदेश)

देव र् + अपि ('रु' के 'उ' का लोप, 'रु' शेष)

देव उ + अपि (अतो रोरप्लुतादप्लुते से 'रु' को 'उ')

देवो + अपि (आद्गुणः से 'ओ' गुण)

देवोऽपि ("एङः पदान्तादति" सूत्र से पूर्वरूप)

☆ शिवस् + अत्र = शिवोऽत्र

☆ सस् + अहम् = सोऽहम्

☆ सस् + अपि = सोऽपि

☆ रामस् + अयम् = रामोऽयम्

☆ रामस् + अवदत् = रामोऽवदत्

☆ देवस् + अधुना = देवोऽधुना

☆ कस् + अयम् = कोऽयम्

☆ सस् + अयम् = सोऽयम्

☆ रामस् + अस्ति = रामोऽस्ति

☆ सस् + अवदत् = सोऽवदत्

“हशि च” ( 6.1.114 ) - यदि 'रु' (रु) के पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और बाद में हश् प्रत्याहार के वर्ण आयें तो रु (रु) के स्थान पर 'उ' हो जाता है फिर अ+उ में गुण सन्धि हो जाती है। यह भी उत्त्व सन्धि है।

➤ हश् प्रत्याहार में वर्णों के तीसरे, चौथे और पाँचवे वर्ण तथा य व र ल ह वर्ण आते हैं।

जैसे-

- ☆ शिवस् + वन्धः (पदान्त सकार)  
शिव रु + वन्धः (‘‘ससजुषो रुः’’ से ‘रु’ आदेश)  
शिव र् + वन्धः (‘रु’ के ‘उ’ का लोप ‘र्’ शेष)  
शिव उ + वन्धः (‘‘हशि च’’ से ‘र्’ के स्थान पर ‘उ’ आदेश)  
शिवो + वन्धः (अ + उ = ओ गुण हुआ)  
**शिवो वन्धः** (उत्त्व सन्धि)

- ☆ मनस् + रथः  
मन रु + रथः  
मन र् + रथः  
मन उ + रथः  
मनो + रथः  
**मनोरथः**

- ☆ रामस् + नमति = रामो नमति
- ☆ रामस् + हसति = रामो हसति
- ☆ मृगस् + धावति = मृगो धावति
- ☆ मेघस् + गर्जति = मेघो गर्जति
- ☆ सरस् + वरः = सरोवरः
- ☆ पयस् + धरः = पयोधरः
- ☆ रामस् + जयति = रामो जयति
- ☆ बालकस् + हसति = बालको हसति
- ☆ वीरस् + गच्छति = वीरो गच्छति
- ☆ पुरुषस् + वदति = पुरुषो वदति
- ☆ अधस् + गतिः = अधोगतिः
- ☆ यशस् + दा = यशोदा
- ☆ मनस् + भावः = मनोभावः

#### 4. रलोप सन्धि

**सूत्र- रो रि ( 8.3.14 ) -**

**सूत्रार्थ-** ‘रु’ के बाद ‘र्’ आये तो पूर्व ‘रु’ का लोप होता है।

**जैसे-**

- ☆ बालकास् + रमन्ते (पदान्त सकार)  
बालका रु + रमन्ते (‘‘ससजुषो रुः’’ से ‘स्’ के स्थान पर रु’)  
बालका र् + रमन्ते (‘‘रो रि’’ से पूर्व रेफ का लोप)  
**बालका रमन्ते** (र लोप सन्धि)
- ☆ गौस् + रम्भते (पदान्त सकार)  
गौरु + रम्भते (ससजुषो रुः)  
गौर् + रम्भते (रो रि)  
**गौ रम्भते** (र लोप सन्धि)

**सूत्र- ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ( 6.3.111 )**

‘ढ्र’ या ‘र्’ का लोप हुआ हो तो उससे पूर्ववर्ती अण् (अ इ उ) को दीर्घ हो जाता है। जैसे-

- ☆ लिढ् + ढः = लीढः
- ☆ पुनर् + रमते = पुनारमते
- ☆ हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः
- ☆ शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते
- ☆ गुरुर् + रुष्टः = गुरू रुष्टः
- ☆ निर् + रोगः = नीरोगः
- ☆ निर् + रसः = नीरसः
- ☆ अन्तर् + राष्ट्रियः = अन्ताराष्ट्रियः

#### 5. रेफ को विसर्ग

**सूत्र- खरवसानयोर्विसर्जनीयः ( 8.3.15 ) -**

**सूत्रार्थ-** पदान्त रेफ (र्) के स्थान पर विसर्ग आदेश होता है यदि खर् प्रत्याहार के वर्ण बाद में आये तो अथवा अवसान (विराम) हो तो-

रु + खर् = विसर्ग (ः)

रु + ----- = विसर्ग (ः)

➤ ‘खर्’ एक प्रत्याहार है जिसमें - क ख, च छ, ट ठ, त थ, प फ, तथा श ष स आते हैं।

➤ अवसान में पदान्त ‘र्’ को विसर्ग-

- ☆ पुनर् = पुनः
- ☆ शनैर् = शनैः
- ☆ उच्चैर् = उच्चैः
- ☆ नीचैर् = नीचैः

➤ ‘खर्’ बाद में आये तो पदान्त ‘र्’ को विसर्ग-

- ☆ रामर् + खादति = रामः खादति
- पुनर् + पृच्छति = पुनः पृच्छति
- ☆ रामस् + करोति (पदान्त स्)  
राम रु + करोति (ससजुषो रुः)  
राम र् + करोति (रु को ‘र्’)  
रामः + करोति (‘र्’ को विसर्ग)
- ☆ वृक्षर् + फलति = वृक्षः फलति
- ☆ गुरु र् + पाठयति = गुरुः पाठयति

□□

## समास

➤ **समासः** - सम् √अस् + घञ् = समासः

➤ **‘अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः’** अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना ‘समास’ कहलाता है।

➤ **‘समसनं समासः’** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। ‘समास’ का अर्थ है- संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं; तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द ‘समास’ कहलाता है।

**विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।**

**पदानां चैकपदं च समासः सोऽभिधीयते॥**

अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता है, उसे ‘समास’ कहते हैं।

जैसे- दशरथस्य पुत्रः = **दशरथपुत्रः**

पीतम् अम्बरं यस्य सः = **पीताम्बरः**

➤ **विग्रह-** “वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः” समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता है, उसे ‘विग्रह’ कहते हैं।

जैसे- ‘पीताम्बरः’ इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए “पीतम् अम्बरं यस्य सः” यह जो वाक्य है यही विग्रह कहा जाता है।

**समास विग्रह-** विग्रह दो प्रकार का होता है-

(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) **लौकिक विग्रह-** लोक के समझने लायक विग्रह को ‘लौकिक विग्रह’ कहते हैं।

जैसे- ‘दशरथपुत्रः’ इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह होगा- दशरथस्य पुत्रः।

(ii) **अलौकिक विग्रह-** जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता है, उसे ‘अलौकिक विग्रह’ कहते हैं।

जैसे- ‘दशरथ डस् पुत्र सु’ यह “दशरथपुत्रः” इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

**समस्त पद या सामासिक पद-** समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे ‘समस्तपद’ या ‘सामासिक पद’ कहते हैं।

जैसे- अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

### समास के भेद

‘लघुसिद्धान्तकौमुदी’ के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं- **‘समासः पञ्चधा’**। किन्तु माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में **समास के छह भेद** बताये गये हैं; अतः आप सभी UP-TET के परीक्षार्थियों के लिए समास के छह भेद ही मानना चाहिए।

**समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं-**

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

**नोट-** भट्टोजिदीक्षित सिद्धान्तकौमुदी में तत्पुरुष का भेद कर्मधारय और कर्मधारय का भेद द्विगु समास को बताते हैं अतः इनके अनुसार समास चार प्रकार का ही होता है।

### 1. अव्ययीभाव समास

**अव्ययीभाव-** ‘पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः’ अर्थात् जिस समास में पूर्वपद का अर्थ प्रधान/मुख्य हो, उसे ‘अव्ययीभाव’ समास कहते हैं। इस समास में पूर्वपद प्रायः अव्यय होता है।

**ध्यान दें-** समास में सामान्यतया दो पद होते हैं। इनमें पहले आने वाला पद ‘पूर्वपद’ और उसके बाद आनेवाला पद ‘उत्तरपद’ होता है। ‘उत्तर’ पद का एक अर्थ ‘बाद में’ या ‘बादवाला’ भी है।

जैसे- समास	पूर्वपद	उत्तरपद
उपनदम्	उप	नदम्

**विशेष ध्यान रखें-** अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है, तथा नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

**‘अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः’** अर्थात् जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर ‘अव्यय’ हो जाय, वही अव्ययीभाव समास है।

जैसे- शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति।

यहाँ ‘शक्ति’ शब्द अव्यय नहीं है किन्तु ‘यथा’ इस अव्यय के साथ समास होने के कारण ‘यथाशक्ति’ यह पूरा पद अव्यय हो गया; और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त है।

**अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र-**

“अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-वृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चात्-यथा-आनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु” (2.1.6)

**सूत्र का अर्थ-** विभक्ति, समीप, समृद्धि, वृद्धि (वृद्धि का अभाव), अर्थाभाव, अत्यय (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द और सादृश्य), आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) अर्थों में विद्यमान अव्यय का समर्थ सुबन्त पदों के साथ नित्य से समास होता है।

**अव्ययीभाव समास के उदाहरण-**

1. ‘विभक्ति’ के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

**समास विग्रह समस्त पद ( अर्थ सहित )**

हरौ इति अधिहरि (हरि में)  
आत्मनि इति अध्यात्मम् (आत्मा में)  
गोपि इति अधिगोपम् (गोप में)  
यहाँ ‘अधि’ अव्यय सप्तमी विभक्ति के अर्थ में है।

2. ‘समीप’ अर्थ में विद्यमान ‘उप’ आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

**समास विग्रह सामासिक पद ( अर्थ सहित )**

गङ्गायाः समीपम् उपगङ्गम् (गङ्गा नदी के समीप)  
नगरस्य समीपम् उपनगरम् (नगर के समीप)  
कृष्णस्य समीपम् उपकृष्णम् (कृष्ण के समीप)  
कूलस्य समीपम् उपकूलम् (किनारे के समीप)  
तटस्य समीपम् उपतटम् (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में ‘उप’ यह अव्यय समीप अर्थ में है। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। समास होने के बाद उपगङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता है।

3. ‘समृद्धि’ के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

**समास विग्रह समस्त पद ( अर्थसहित )**

मद्राणां समृद्धिः सुमद्रम् (मद्रदेशवासियों की समृद्धि)  
भिक्षाणां समृद्धिः सुभिक्षम् (भिक्षाटन की समृद्धि)

4. वृद्धि (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

यवनानां व्युद्धिः = दुर्यवनम् (यवनों की दुर्गति)

भिक्षाणां व्युद्धिः = दुर्भिक्षम् (भिक्षा का न मिलना)  
शकानां व्युद्धिः = दुःशकम् (शकों की दुर्गति)  
राक्षसाणां व्युद्धिः = दुराक्षसम् (राक्षसों की अवनति)

5. ‘अर्थाभाव’ के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः = निर्मक्षिकम् (मक्खियों का अभाव)  
प्राणानाम् अभावः = निष्प्राणम् (प्राणों का अभाव)  
विघ्नानाम् अभावः = निर्विघ्नम् (विघ्नों का अभाव)  
मशकानाम् अभावः = निर्मशकम् (मच्छरों का अभाव)  
जनानाम् अभावः = निर्जनम् (मनुष्यों का अभाव)  
दोषाणाम् अभावः = निर्दोषम् (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में ‘निर्’ आदि अव्ययपदों का ‘मक्षिका’ आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है। यहाँ ‘निर्’ अव्यय का अर्थ है- अर्थाभाव।

6. अत्यय (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हिमस्य अत्ययः = अतिहिमम् (हिम का नाश)  
रोगस्य अत्ययः = अतिरोगम् (रोग का नाश)  
शीतस्य अत्ययः = अतिशीतम् (शीतलता का नाश)

उपर्युक्त उदाहरणों में ‘अति’ इस अव्यय पद का अर्थ है- अत्यय (नाश) अतः ‘अति’ इस अव्यय पद के साथ ‘हिम’ आदि समर्थ सुबन्तों का अव्ययीभाव समास हुआ है।

7. असम्प्रति (अनौचित्य) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

**समास विग्रह सामासिक पद ( अर्थ सहित )**

निद्रा सम्प्रति न युज्यते अतिनिद्रम् (इस समय नींद उचित नहीं)  
स्वप्नः सम्प्रति न युज्यते अतिस्वप्नम् (इस समय स्वप्न उचित नहीं)  
कम्बलं सम्प्रति न युज्यते अतिकम्बलम् (इस समय कम्बल उचित नहीं)

उपर्युक्त उदाहरणों में ‘अति’ यह अव्यय असम्प्रति अर्थ में है, जिसका ‘निद्रा’ आदि समर्थ पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

8. शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकाश) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

हरिशब्दस्य प्रकाशः इतिहरि (‘हरि’ शब्द का प्रकट होना)

विष्णुशब्दस्य प्रकाशः	इतिविष्णु ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
पाणिनिशब्दस्य प्रकाशः	इतिपाणिनि ('पाणिनि' शब्द का प्रकट होना)
ज्ञानशब्दस्य प्रकाशः	इतिज्ञानम् ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)

9. 'पश्चात्' (पीछे) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

विष्णोः पश्चात्	अनुविष्णु (विष्णु के पीछे)
रामस्य पश्चात्	अनुरामम् (राम के पीछे)
रथस्य पश्चात्	अनुरथम् (रथ के पीछे)
शिष्यस्य पश्चात्	अनुशिष्यम् (शिष्य के पीछे)
गोपालस्य पश्चात्	अनुगोपालम् (गोपाल के पीछे)

10. 'यथा' के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। 'यथा' के चार अर्थ होते हैं-  
(क) योग्यता अथवा लायक या अनुकूलता  
(ख) वीप्सा अथवा दुहराया जाना  
(ग) पदार्थानतिवृत्ति अथवा पदार्थों की सीमा के बाहर नहीं जाना  
(घ) सादृश्य अथवा समानता

(क) योग्यता-

रूपस्य योग्यम्	= अनुरूपम् (रूप के योग्य)
गुणस्य योग्यम्	= अनुगुणम् (गुण के योग्य)

(ख) वीप्सा-

अक्षम् अक्षम् प्रति	= प्रत्यक्षम् (प्रत्यक्ष)
एकं एकं प्रति	= प्रत्येकम् (प्रत्येक)
गृहं गृहं प्रति	= प्रतिगृहम् (घर-घर)
दिनं दिनं प्रति	= प्रतिदिनम् (प्रतिदिन)
अर्थम् अर्थं प्रति	= प्रत्यर्थम् (प्रत्येक अर्थ)
जनं जनं प्रति	= प्रतिजनम् (प्रत्येक जन)
छात्रं छात्रं प्रति	= प्रतिच्छात्रम् (प्रत्येक छात्र)
दिशं दिशं प्रति	= प्रतिदिशम् (प्रत्येक दिशा)

(ग) पदार्थानतिवृत्ति-

शक्तिम् अनतिक्रम्य	= यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)
बलम् अनतिक्रम्य	= यथाबलम् (बल के अनुसार)
समयम् अनतिक्रम्य	= यथासमयम् (समय के अनुसार)
बुद्धिम् अनतिक्रम्य	= यथाबुद्धि (बुद्धि के अनुसार)
ज्ञानम् अनतिक्रम्य	= यथाज्ञानम् (ज्ञान के अनुसार)

(घ) सादृश्य-

हरेः सादृश्यम्	= सहरि (हरि की समानता)
रूपस्य सादृश्यम्	= सरूपम् (रूप की समानता)

11. आनुपूर्व्य (क्रम) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण	= अनुज्येष्ठम् (ज्येष्ठ के क्रम से)
वर्णस्य आनुपूर्व्येण	= अनुवर्णम् (वर्ण के क्रमानुसार)

12. यौगपद्य (साथ होना) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

चक्रेण युगपत्	= सचक्रम् (चक्र के साथ)
हर्षेण युगपत्	= सहर्षम् (हर्ष के साथ)

13. सादृश्य (जैसा) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव होता है। जैसे-

सदृशः सख्या	= ससखि (मित्र के जैसा)
सदृशः वर्णेन	= सवर्णम् (वर्ण के समान)

14. सम्पत्ति के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

क्षत्राणां सम्पत्तिः	= सक्षत्रम् (राजाओं की सम्पत्ति)
----------------------	----------------------------------

15. साकल्य (सम्पूर्णता) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

तृणम् अपि अपरित्यज्य	= सतृणम् (तिनके को भी छोड़े बिना सब खाता है)
----------------------	--

16. अन्तवचन (तक) के अर्थ में अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

अग्निग्रन्थपर्यन्तम्	= साग्नि (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है)
----------------------	--

बालकाण्डपर्यन्तम्	= सबालकाण्डम् (बालकाण्ड तक)
-------------------	-----------------------------

➤ आङ्मर्यादाभिविध्योः अर्थात् मर्यादा और अभिविधि (तक) के अर्थ में 'आङ्' अव्यय पद का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

आ मरणात्	= आमरणम् (मरने तक)
आ जीवनात्	= आजीवनम् (जीवन भर)

➤ नदीभिश्च (2.1.20) नदी वाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है, और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। जैसे-

पञ्चानां गङ्गानां समाहारः	= पञ्चगङ्गम् (पाँच गङ्गाओं का समाहार)
---------------------------	---------------------------------------

द्वयोः यमुनयोः समाहारः = द्वियमुनम्  
(दो यमुनाओं का समाहार)

सरतानां नर्मदानाम् समाहारः = सरतनर्मदम्  
उपर्युक्त उदाहरणों में 'पञ्च' आदि संख्यावाची पदों का गङ्गा आदि नदीवाचक पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ है।

#### ➤ अव्ययीभावे शस्त्रभृतिभ्यः ( 5.4.107 )

अव्ययीभाव समास में शस्त्र आदि शब्दों से समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। 'टच्' प्रत्यय में 'ट्' और 'च्' का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष बचता है। जैसे-

शस्त्रः समीपम् = उपशस्त्रम् (शस्त्र के समीप)

विपाशां विपाशां प्रति = प्रतिविपाशम्  
(विपाशा नदी के सम्मुख)

➤ अनश्च ( 5.4.108 ) - जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में 'अन्' होता है, वह अनश्च अव्ययीभाव है। उससे समासान्त 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-

राज्ञः समीपम् = उपराजम् (राजा के समीप)

नपुंसकादन्यतरस्याम् ( 5.4.109 ) - 'अन्' अन्तवाला जो नपुंसकलिङ्ग शब्द है, उस अव्ययीभाव समास के अन्त में विकल्प से 'टच्' प्रत्यय होता है। जैसे-

चर्मणः समीपम् = उपचर्मम् (चर्म के समीप) 'टच्' प्रत्यय हुआ

चर्मणः समीपम् = उपचर्म (चर्म के समीप) 'टच्' नहीं हुआ।

## 2. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष- 'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः'

अर्थात् जिस समास में उत्तरपद का अर्थ प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे- 'गङ्गाजलम् आनय'। यहाँ 'आनय' इस क्रिया पद के साथ 'जलम्' का ही साक्षात् सम्बन्ध है। अतः 'जल' इस उत्तरपद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुषसमास है।

तत्पुरुष समास के भेद- तत्पुरुष समास के मुख्यतः दो भेद होते हैं- 1. समानाधिकरण तत्पुरुष 2. व्यधिकरण तत्पुरुष

1. समानाधिकरण तत्पुरुष- समानाधिकरण को 'समविभक्ति' भी कह सकते हैं। इस तत्पुरुष समास के पूर्वपद एवं उत्तरपद दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष कर्मधारय समास होता है- "तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः"

2. व्यधिकरण तत्पुरुष- जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद तथा उत्तर पद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ लगी हों, वह

व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। वि = विषय और 'अधिकरण' = विभक्ति वाले तत्पुरुष को व्यधिकरण तत्पुरुष कहते हैं। पूर्वपद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही तत्पुरुष के प्रमुख भेद किये जाते हैं। जैसे यदि पूर्वपद में द्वितीया विभक्ति हो तो द्वितीया तत्पुरुष, यदि पूर्व पद में तृतीया विभक्ति लगी हो तो तृतीया तत्पुरुष आदि। इसप्रकार व्यधिकरण तत्पुरुष के छह भेद किये गये हैं-

1. द्वितीया तत्पुरुष
2. तृतीया तत्पुरुष
3. चतुर्थी तत्पुरुष
4. पञ्चमी तत्पुरुष
5. षष्ठी तत्पुरुष
6. सप्तमी तत्पुरुष

तत्पुरुष समास के उपभेद- समानाधिकरण तथा व्यधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इसप्रकार हैं-

( i ) नञ् तत्पुरुष समास - अनश्वः, अब्राह्मणः, अनिच्छा आदि।

( ii ) प्रादि तत्पुरुष समास - कुपुरुषः, प्राचार्यः आदि।

( iii ) उपपद तत्पुरुष समास - कुम्भकारः, धर्मज्ञः आदि।

( iv ) अलुक् तत्पुरुष समास - युधिष्ठिरः, सरसिजम्, अभ्यासादागतः आदि।

द्वितीया तत्पुरुष समास- जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति में हो, ऐसे द्वितीयान्त सुबन्त पद का 'श्रित' आदि शब्दों के साथ द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

सूत्र- "द्वितीया श्रित-अतीत-पतित-गत-अत्यस्त-प्राप्त-आपन्नैः" ( 2.1.24 )

जैसे-

समास विग्रह सामासिक पद ( अर्थ सहित )

कृष्णं श्रितः	कृष्णाश्रितः (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगतः	शरणागतः (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीतः	लोकातीतः (लोक से परे)
भयम् आपन्नः	भयापन्नः (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रितः	रामाश्रितः (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्तः	सुखप्राप्तः (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढः	अश्वारूढः (घोड़े पर आरूढ़)
स्वर्गं गतः	स्वर्गगतः (स्वर्ग को गया हुआ)
दुःखम् अतीतः	दुःखातीतः (दुःख को पार किया हुआ)
कूपं पतितः	कूपपतितः (कूप में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः	ग्रामगतः (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः	जीवनप्राप्तः (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः	सुखापन्नः (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास- जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद तृतीया विभक्ति में हो, ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद का तत्कृत (उसके



द्वारा किये गए) गुणवाचक शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

**सूत्र-** "तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन" (2.1.30)

जैसे-

शङ्कुलया खण्डः	= शङ्कुलाखण्डः (सरोते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः	= धान्यार्थः (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः	= दानार्थः (दान से प्रयोजन)

➤ तृतीयान्त सुबन्त पदों का 'पूर्व' आदि शब्दों के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

**सूत्र-** "पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः" (2.1.30)

**समास विग्रह** **सामासिक पद ( अर्थ सहित )**

मासेन पूर्वः	= मासपूर्वः (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	= पितृसदृशः (पिता के समान)
भ्रात्रा समः	= भ्रातृसमः (भाई के बराबर)
माषेण ऊनम्	= माषोणम् (मासा भर कम)
ज्ञानेन हीनः	= ज्ञानहीनः (ज्ञान से हीन)
वाचा कलहः	= वाक्कलहः (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	= आचारनिपुणः (आचार में निपुण)
गुडेन मिश्रः	= गुडमिश्रः (गुड़ से मिला हुआ)
आचारेण श्लक्ष्णः	= आचारश्लक्ष्णः (आचरण में सहज)
मात्रा सदृशः	= मातृसदृशः (माता के समान)
नेत्राभ्यां हीनः	= नेत्रहीनः (नेत्रों से रहित)
घृतेन पक्वम्	= घृतपक्वम् (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्जः	= पादखञ्जः (पैर से लँगड़ा)

➤ कर्ता और करणकारक में तृतीयान्त पद का कृदन्त के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है- "कर्तृकरणे कृता बहुलम्" (2.1.32)

जैसे-

हरिणा त्रातः	= हरित्रातः (हरि के द्वारा रक्षित)
नखैः भिन्नः	= नखभिन्नः (नखों से फाड़ा गया)
नखैः निर्भिन्नः	= नखनिर्भिन्नः (नखों से फाड़ा गया)
धर्मेण रक्षितः	= धर्मरक्षितः (धर्म से रक्षित)
बाणेन विद्धः	= बाणविद्धः (बाण से घायल)

**चतुर्थी तत्पुरुष समास-** जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद चतुर्थी विभक्ति में हो तथा चतुर्थ्यन्त पदों का अर्थ, बलि, हित, सुख, रक्षित आदि पदों के साथ समास होता है। उसे चतुर्थी

तत्पुरुष समास कहते हैं।

"चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः" (2.1.36)

जैसे-

**समास विग्रह** **सामासिक पद ( अर्थ सहित )**

यूपाय दारु	= यूपदारु (यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी)
कुम्भाय मृत्तिका	= कुम्भमृत्तिका (घड़े के लिए मिट्टी)
भूतेभ्यः बलिः	= भूतबलिः (जीव के लिए बलि)
गोभ्यः हितम्	= गोहितम् (गाय के लिए हितकारी)
ब्राह्मणाय हितम्	= ब्राह्मणहितम् (ब्राह्मण के लिए हितकर)
गोभ्यः सुखम्	= गोसुखम् (गाय के लिए सुखकारी)
गोभ्यः रक्षितम्	= गोरक्षितम् (गाय के लिए रक्षित)
धनाय कामना	= धनकामना (धन के लिए इच्छा)

**विशेष नियम-** अर्थ शब्द के साथ चतुर्थी का नित्यसमास होता है, और अर्थ शब्दान्त शब्द का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है- जैसे-

पुल्लिङ्ग - द्विजाय अयम्	= द्विजार्थः सूपः (ब्राह्मण के लिए दाल)
स्त्रीलिङ्ग - द्विजाय इयम्	= द्विजार्था यवागूः (ब्राह्मण के लिए लप्सी)
नपुंसकलिङ्ग - द्विजाय इदम्	= द्विजार्थ पयः (ब्राह्मण के लिए दूध)

धनाय इदम् = धनार्थम् (धन के लिए)

सुखाय इदम् = सुखार्थम् (सुख के लिए)

रक्षाय इदम् = रक्षार्थम् (रक्षा के लिए)

**पञ्चमी तत्पुरुष समास-** जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद पञ्चमी विभक्ति में हो, ऐसे पञ्चम्यन्त पदों का भय आदि शब्दों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है।

"पञ्चमी भयेन" (2.1.37)

जैसे-

**समास विग्रह** **सामासिक पद ( अर्थ सहित )**

चोरात् भयम्	= चोरभयम् (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	= व्याघ्रभयम् (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	= सिंहभीतः (सिंह से भय)
वृकात् भीतिः	= वृकभीतिः (भेड़िये से भय)
सर्पात् भीः	= सर्पभीः (सर्प से डर)
राज्ञः भयम्	= राजभयम् (राजा से डर)

➤ पञ्चम्यन्त शब्दों का 'अपेत, अपोढः युक्त, पतित' आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे -



**समासविग्रह**

सुखात् अपेतः	=	सुखापेतः (सुख से रहित)
कल्पनायाः अपोढः	=	कल्पनापोढः (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् युक्तः	=	बान्धनमुक्तः (बन्धन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्टः	=	मार्गभ्रष्टः (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतितः	=	अश्वपतितः (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतितः	=	वृक्षपतितः (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतितः	=	स्वर्गपतितः (स्वर्ग से पतित)

**षष्ठी तत्पुरुष समास**

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद षष्ठी विभक्ति में हो, ऐसे षष्ठ्यन्त पदों का समर्थ सुबन्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष समास होता है।

**सूत्र-** “षष्ठी” (2.2.8)

जैसे-

**समासविग्रह**

नराणां पतिः	=	नरपतिः (मनुष्यों का स्वामी)
विद्यायाः आलयः	=	विद्यालयः (विद्या का घर)
राज्ञः सेवकः	=	राजसेवकः (राजा का सेवक)
राज्ञः पुरुषः	=	राजपुरुषः (राजा का पुरुष)
राज्ञः कुमारः	=	राजकुमारः (राजा का कुमार)
राज्ञः पुत्रः	=	राजपुत्रः (राजा का पुत्र)
राज्ञः माता	=	राजमाता (राजा की माता)
दशरथस्य पुत्रः	=	दशरथपुत्रः (दशरथ का पुत्र)
देवस्य पूजा	=	देवपूजा (देव की पूजा)
रामस्य अनुजः	=	रामानुजः (राम का भाई)
प्रजायाः पतिः	=	प्रजापतिः (प्रजा का स्वामी)
कृष्णस्य सखा	=	कृष्णसखः (कृष्ण का सखा)
नन्दस्य नन्दनः	=	नन्दनन्दनः (नन्द का नन्दन)
सीतायाः पतिः	=	सीतापतिः (सीता का पति)
ईश्वरस्य भक्तः	=	ईश्वरभक्तः (ईश्वर का भक्त)
गङ्गायाः जलम्	=	गङ्गाजलम् (गङ्गा का जल)
देवस्य मन्दिरम्	=	देवमन्दिरम् (देवों का मन्दिर)
हिमस्य आलयः	=	हिमालयः (हिम का घर)
राष्ट्रस्य पतिः	=	राष्ट्रपतिः (राष्ट्र का स्वामी)
देवानां भाषा	=	देवभाषा (देवों की भाषा)
पशूनां पतिः	=	पशुपतिः (पशुओं का स्वामी)
पाठस्य शाला	=	पाठशाला (पठन का घर)
काल्याः दासः	=	कालिदासः (काली का दास)

**सप्तमी तत्पुरुष सूत्र - “सप्तमी शौण्डै”**

जिस तत्पुरुष समास का पूर्वपद सप्तमी विभक्ति में हो, ऐसे

सप्तम्यन्त सुबन्तों का शौण्डादिगण में पठित शब्दों के साथ सप्तमी तत्पुरुष समास होता है। जैसे-

**समास विग्रह**

अक्षेषु शौण्डः	=	अक्षशौण्डः (पासों में चतुर)
कार्ये कुशलः	=	कार्यकुशलः (कार्य में कुशल)
रणे कुशलः	=	रणकुशलः (रण में कुशल)
मुनिषु श्रेष्ठः	=	मुनिश्रेष्ठः (मुनियों में श्रेष्ठ)
पुरुषेषु उत्तमः	=	पुरुषोत्तमः (पुरुषों में श्रेष्ठ)
गुरौ भक्तिः	=	गुरुभक्तिः (गुरु में भक्ति)
युद्धे निपुणः	=	युद्धनिपुणः (युद्ध में निपुण)
नरेषु उत्तमः	=	नरोत्तमः (नरों में श्रेष्ठ)
विद्यायां प्रवीणः	=	विद्याप्रवीणः (विद्या में कुशल)

**तत्पुरुष समास के उपभेद****(i) नञ् तत्पुरुष समास -**

**सूत्र-** “नञ्” (2.2.6) ‘नञ्’ इस अव्यय का समर्थ सुबन्त के साथ नञ् तत्पुरुष समास होता है। अर्थात् जिस समास का पूर्वपद ‘नञ्’ हो तथा उत्तरपद कोई संज्ञा या विशेषण हो तो वहाँ नञ् समास होगा।

➤ ‘नञ्’ के बाद यदि व्यञ्जन वर्ण आते हैं तो ‘नञ्’ के स्थान पर ‘अ’ और यदि ‘नञ्’ के बाद स्वरवर्ण आये तो ‘नञ्’ के स्थान पर ‘अन्’ हो जाता है। जैसे-

न स्वस्थः	=	अस्वस्थः (बीमार)
न अश्वः	=	अश्वः (घोड़ा नहीं)

**नञ् समास के उदाहरण****समास विग्रह सामासिक पद ( अर्थ सहित )**

न कृतम्	=	अकृतम् (जो किया न हो)
न इच्छा	=	अनिच्छा (इच्छा न हो)
न आगतम्	=	अनागतम् (जो आया न हो)
न गजः	=	अगजः (जो गज न हो)
न उक्तः	=	अनुक्तः (जो उक्त न हो)
न मोघः	=	अमोघः (अव्यर्थ)
न सिद्धः	=	असिद्धः (असफल)
न ब्राह्मणः	=	अब्राह्मणः (अब्राह्मण)
न ईश्वरः	=	अनीश्वरः (जो ईश्वर न हो)
न अर्थः	=	अनर्थः (अनर्थ)
न उचितः	=	अनुचितः (जो उचित नहीं)

**(ii) गति समास या प्रादि तत्पुरुष समास-**

जिस तत्पुरुष समास के पूर्वपद में कु आदि शब्द, ऊरी आदि गतिसंज्ञक शब्द, प्र आदि शब्द आये तो इनका समर्थ सुबन्तों के

साथ नित्य समास होता है, ऐसे समास को गति तत्पुरुष या प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे-

कुत्सितः पुत्रः	=	कुपुत्रः (बुरा पुत्र)
सुन्दरः देशः	=	सुदेशः (सुन्दर देश)
कुत्सितः पुरुषः	=	कुपुरुषः (निन्दित पुरुष)
कुत्सितः राजा	=	कुराजा (बुरा राजा)
प्रगतः आचार्यः	=	प्राचार्यः (श्रेष्ठ आचार्य)
विरुद्धः पक्षः	=	विपक्षः (जो पक्ष में न हो)
शोभनः पुरुषः	=	सुपुरुषः (सुन्दर पुरुष)
प्रकृष्टो वीरः	=	प्रवीरः (प्रकृष्ट वीर)
ऊरी कृत्वा	=	ऊरीकृत्य (स्वीकार करके)
अशुक्लं शुक्लं कृत्वा	=	शुक्लीकृत्य (सफेद करके)
पटत् पटत् इति कृत्वा	=	पटपटाकृत्य

(पटत् पटत् इसप्रकार शब्द करके)

### ( iii ) उपपद तत्पुरुष समास

कृदन्त सुबन्तों के साथ उपपदों का समास ही उपपदसमास कहलाता है। इस समास में पूर्वपद उपपद तथा उत्तरपद कृत् प्रत्ययान्त समर्थ पद होता है। अर्थात् उपपद सुबन्त का तिङ् रहित धातु के साथ समास होता है। जैसे-

कुम्भं करोति इति	=	कुम्भकारः (कुम्हार)
धर्मं जानाति इति	=	धर्मज्ञः (जो धर्म जानता है)
सामं गायति इति	=	सामगः (जो सामवेद को जानता है)
आसने तिष्ठति इति	=	आसनस्थः (जो आसन पर बैठता है)
धनं ददाति इति	=	धनदः (जो धन देता है)
भारं हरति इति	=	भारहारः (भार ढोने वाला, कुली)
दिनं करोति इति	=	दिनकरः (सूर्य)
शं करोति इति	=	शङ्करः (महादेव)
भिक्षां चरति इति	=	भिक्षाचरः (भिखारी)
निशायां चरति इति	=	निशाचरः

(रात्रि में विचरण करने वाला, राक्षस)

उरसा गच्छति इति	=	उरगः
	=	(छाती के बल चलने वाला, साँप)

विहायसा गच्छति इति	=	विहगः
	=	(आकाशमार्ग से चलने वाला, पक्षी)

पङ्के जायते इति	=	पङ्कजः (कमल)
मर्मं जानाति इति	=	मर्मज्ञः (मर्म को जानने वाला)
कम्बलं ददाति इति	=	कम्बलदः (कम्बल देने वाला)
प्रभां करोति इति	=	प्रभाकरः (सूर्य)

### अलुक् तत्पुरुष समास

- 'अलुक्' का अर्थ है न लुक् अर्थात् 'लोप' का न होना। जिस समास में विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक् समास कहते हैं।
- सामान्यतया समास में सामासिक पदों की विभक्ति का लोप हुआ करता है, किन्तु कुछ शब्दों में समास होने पर भी विभक्ति का लोप (लुक्) नहीं होता, उसे 'अलुक्' तत्पुरुष समास कहते हैं।

### अलुक् तत्पुरुष समास के उदाहरण

समासविग्रह	सामासिक पद ( अर्थ सहित )
आत्मने पदम्	= आत्मनेपदम् (अपने लिए पद)
परस्मै पदम्	= परस्मैपदम् (दूसरे के लिए पद)
युधि स्थिरः	= युधिष्ठिरः (युद्ध में स्थिर)
कृच्छ्रात् आगतः	= कृच्छ्रादागतः
	(कठिनाई से आया हुआ)
अभ्यासात् आगतः	= अभ्यासादागतः
	(अभ्यास से आया हुआ)
सरसि जातम्	= सरसिजम् (तालाब में उत्पन्न)
खे चरति	= खेचरः
	(आकाश में विचरण करने वाला पक्षी)
वाचः पतिः	= वाचस्पतिः (बृहस्पति)
शरदि जायते	= शरदिजः (शरद् में होने वाला)
प्रावृषि जायते	= प्रावृषिजः (बरसात में होने वाला)
देवानां प्रियः	= देवानाम्प्रियः (मूर्ख)

### कर्मधारय समास

तत्पुरुष समास के समानाधिकरण भेद को कर्मधारय समास कहते हैं। अर्थात् समान अधिकरण (विभक्ति) वाला तत्पुरुष, कर्मधारय होता है।

“तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः” (1.2.42)

तात्पर्य यह है कि पूर्वपद एवं उत्तरपद, दोनों में समान विभक्ति (प्रथमा) लगी रहती है। जैसे- कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः

- कर्मधारय अथवा समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्वपद विशेषण एवं उत्तरपद विशेष्य होता है। कहीं कहीं दोनों पद विशेष्य होते हैं।

सूत्र- “विशेषणं विशेष्येण बहुलम्” (2.1.57) अर्थात् समान विभक्ति वाले विशेषण का विशेष्य के साथ बहुलता से समास होता है।

**कर्मधारय समास के भेद**

कर्मधारय समास के कुछ प्रमुख भेद निम्नवत् हैं-

( i ) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय- कर्मधारय समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है, तो उसे विशेषण पूर्वपद कर्मधारय कहते हैं। यथा-

**समास विग्रह सामासिक पद ( अर्थ सहित )**

कृष्णः सर्पः	= कृष्णसर्पः (काला साँप)
महान् चासौ देवः	= महादेवः (महादेव)
महान् चासौ राजा	= महाराजः (महान् राजा)
महान् चासौ आत्मा	= महात्मा (महान् आत्मा)
श्रेष्ठः पुरुषः	= श्रेष्ठपुरुषः (श्रेष्ठ पुरुष)
महान् चासौ पुरुषः	= महापुरुषः (महान् पुरुष)
महान् चासौ ऋषिः	= महर्षिः (महान् ऋषि)
महान् कविः	= महाकविः (महान् कवि)
महान् चासौ रथी	= महारथी (महान् रथी)
महत् काव्यम्	= महाकाव्यम् (महान् काव्य)
श्वेतं च तत् वस्त्रम्	= श्वेतवस्त्रम् (सफेद वस्त्र)
श्वेतः च असौ अश्वः	= श्वेताश्वः (सफेद घोड़ा)
सुन्दरः च असौ बालकः	= सुन्दरबालकः (सुन्दर बालक)
मधुरं च तत्फलम्	= मधुरफलम् (मधुरफल)
नीलः आकाशः	= नीलाकाशः (नीला आकाश)
रक्तं च तत् उत्पलम्	= रक्तोत्पलम् (लाल कमल)
गौरः बालकः	= गौरबालकः (गोरा बालक)
नीलम् उत्पलम्	= नीलोत्पलम् (नीला कमल)
नीलं कमलम्	= नीलकमलम् (नील कमल)
प्रियः सखा	= प्रियसखः (प्रिय मित्र)
महती नदी	= महानदी (बड़ी नदी)

**( ii ) उपमानपूर्वपद कर्मधारय**

“उपमानानि सामान्यवचनैः” ( 2.1.55 ) - जब उपमानवाचक शब्द का सामान्यवाचक शब्द के साथ समास होता है, तो उसे उपमानपूर्वपद कर्मधारय कहते हैं।

**समासविग्रह सामासिक पद ( अर्थसहित )**

घन इव श्यामः	= घनश्यामः (घनश्याम)
विद्युत् इव चञ्चला	= विद्युच्चञ्चला (बिजली सी चञ्चल)
नवनीतम् इव कोमलम्	= नवनीतकोमलम् (नवनीत के समान कोमल)
चन्द्रः इव उज्ज्वलः	= चन्द्रोज्ज्वलः (चन्द्रमा सा उज्ज्वल)
चन्द्रः इव मुखम्	= चन्द्रमुखम् (चन्द्रमा के समान मुख)

नरः शार्दूल इव	= नरशार्दूलः (नरों में चीते के समान)
पुरुषः सिंह इव	= पुरुषसिंहः (सिंह के समान पुरुष)
नरः सिंह इव	= नरसिंहः (मनुष्य सिंह के समान)
चन्द्र इव आह्लादकः	= चन्द्राह्लादकः (चन्द्र के समान कोमल)
कमलम् इव कोमलम्	= कमलकोमलम् (कमल के समान कोमल)
पुरुषः व्याघ्र इव	= पुरुषव्याघ्रः (व्याघ्र के समान पुरुष)
दुग्धम् इव धवलम्	= दुग्धधवलम् (दूध के समान सफेद)
नीरदः इव श्यामः	= नीरदश्यामः (बादल के समान काला)

**( iii ) रूपक कर्मधारय-**

उपमान और उपमेय के एकरूप होने से, उपमान उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे-

<b>समासविग्रह</b>	<b>सामासिक पद ( अर्थ सहित )</b>
शोक एव अग्निः	= शोकाग्निः (शोकरूपी अग्नि)
विद्या एव धनम्	= विद्याधनम् (विद्यारूपी धन)
मुखमेव कमलम्	= मुखकमलम् (मुखरूपी कमल)
परीक्षा एव पयोधिः	= परीक्षापयोधिः (परीक्षारूपी सागर)

**( iv ) उभयपद विशेषण कर्मधारय-**

इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों विशेषण होते हैं। जैसे-

<b>समासविग्रह</b>	<b>सामासिकपद ( अर्थ सहित )</b>
पीतः चासौ कृष्णः	= पीतकृष्णः (पीला और काला)

श्वेतः चासौ कृष्णः	= श्वेतकृष्णः (श्वेत और काला)
चरं च अचरं च	= चराचरम् (चराचर)
पूर्वं सुप्तः पश्चात् उत्थितः	= सुप्तोत्थितः (पहले सोया फिर उठा)

कृतं च अकृतं च	= कृताकृतम् (किया हुआ और न किया हुआ)
----------------	---

शीतं च उष्णम्	= शीतोष्णम् (ठण्डा-गरम)
---------------	-------------------------

रक्तश्च पीतश्च	= रक्तपीतः (लाल-पीला)
----------------	-----------------------

नोट - परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः ( 2.4.26 )

द्वन्द्व और तत्पुरुष का लिङ्ग उस समास के बाद वाले पद के समान होता है।

## 4. द्विगु समास

“संख्यापूर्वो द्विगुः” ( 2.1.52 ) - अर्थात् जिस समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो, वह द्विगु समास कहलाता है। यह कर्मधारय समास का उपभेद है, पर अपने प्रकृति वैशिष्ट्य के कारण स्वतन्त्र समास के रूप में स्वीकृत है।

### द्विगु समास के उदाहरण-

समास विग्रह	सामासिकपद ( अर्थ सहित )
पञ्चानां गवां समाहारः	= पञ्चगवम् (पाँच गायों का समूह)
पञ्चानां वटानां समाहारः	= पञ्चवटी (पाँच वटों/वृक्षों का समूह)
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	= पञ्चपात्रम् (पाँच पात्रों का समूह)
पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः	= पञ्चामृतम् (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः	= पञ्चदिनम् (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः	= त्रिलोकी (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	= त्रिभुवनम् (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः	= चतुर्फलम् (चार फलों का समाहार)
अष्टानाम् अध्यायानां समाहारः	= अष्टाध्यायी (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः	= त्रिफला (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः	= शताब्दी (सौ वर्षों का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः	= चतुर्भुजम् (चार भुजाओं का समूह)
तिसृणां वेणीनां समाहारः	= त्रिवेणी (तीन वेणियों का समूह)
चतुर्णां युगानां समाहारः	= चतुर्युगम् (चार युगों का समूह)
सप्तानां शतानां समाहारः	= सप्तशती (सात सैकड़ों का समूह)
सप्तानाम् अह्नाम् समाहारः	= सप्ताहः (सात अह्नों/दिनों का समाहार)
नवानां रात्रीणां समाहारः	= नवरात्रम् (नव रात्रियों का समूह)

## 5. द्वन्द्व समास

“उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः” अर्थात् जिस समास में उभयपद (दोनों पद) या सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। जैसे- रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ

यहाँ ‘राम’ और ‘कृष्ण’ दोनों पद प्रधान हैं, अतः इसमें द्वन्द्वसमास है।

**द्वन्द्व समास के भेद-** द्वन्द्व समास के मुख्यतः दो ही भेद होते हैं किन्तु एकशेष को शामिल करके इसके कुल तीन भेद हो जाते हैं-

( i ) इतरेतर द्वन्द्व- जब समास में प्रयुक्त होने वाले शब्द के अर्थ अपनी-अपनी प्रधानता अलग-अलग प्रदर्शित करते हैं, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। इसका लिङ्ग निर्धारण उत्तरपद के अनुसार होता है।

जैसे- ‘रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ’ - यहाँ राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ ‘रामलक्ष्मणौ’ में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

( ii ) समाहार द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में आये हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार अर्थ का भी बोध कराते हैं, उसे ‘समाहार द्वन्द्व’ कहते हैं। यह समास नित्य नपुंसकलिङ्ग में होता है।

यथा- पाणिपादम् = पाणी च पादौ च तेषां समाहारः (हाथ और पैर का समूह)

( iii ) एकशेष द्वन्द्व- जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है, उसे ‘एकशेष द्वन्द्व’ कहते हैं। जैसे- दुहिता च दुहित्वा च = दुहितरौ।

➤ यदि समास में पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुल्लिङ्ग शब्द ही शेष बचेगा। जैसे-

माता च पिता च = पितरौ  
मयूरी च मयूरः च = मयूरौ

**द्वन्द्व समास करने वाला सूत्र-**

“चार्थे द्वन्द्वः” (2.2.29) इस सूत्र से ‘च’ (और) के अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का द्वन्द्व समास होता है।

### इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च	= सीतारामौ (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च	= रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च	= देवासुरौ (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च	= धर्मार्थौ (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च	= कृष्णार्जुनौ (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च	= वाणीविनायकौ (वाणी और विनायक)

पार्वती च परमेश्वरश्च	= पार्वतीपरमेश्वरौ (पार्वती और परमेश्वर महादेव)
सूर्यश्च चन्द्रश्च	= सूर्यचन्द्रौ (सूर्य और चन्द्र)
शिवश्च केशवश्च	= शिवकेशवौ (शिव और केशव)
रामश्च लक्ष्मणश्च	= रामलक्ष्मणौ (राम और लक्ष्मण)
भीमश्च अर्जुनश्च	= भीमार्जुनौ (भीम और अर्जुन)
सज्जनश्च दुर्जनश्च	= सज्जनदुर्जनौ (सज्जन और दुर्जन)
ईशश्च कृष्णश्च	= ईशकृष्णौ (ईश और कृष्ण)
पिता च पुत्रश्च	= पितापुत्रौ (पिता और पुत्र)
हरिश्च हरश्च	= हरिहरौ (हरि और हर)
बालश्च वृद्धश्च	= बालवृद्धौ (बालक और वृद्ध)
नरश्च नारी च	= नरनार्यौ (नर और नारी)
जाया च पतिश्च	= जायापती/जम्पती/दम्पती (पति और पत्नी)

**नोट-** इतरेतर द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों का योग होता है। दो पदों के लिए द्विवचन और दो से अधिक पदों का समास होने पर बहुवचन का प्रयोग होता है। लिङ्ग अन्तिम पद के समान प्रयोग किया जाता है। जैसे-

☆ हरिश्च हरश्च गुरुश्च = हरिहरगुरुवः

☆ रामश्च भरतश्च लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्च =

रामभरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः

यहाँ दो से अधिक पदों का समास हुआ है, अतः बहुवचन का प्रयोग हुआ है।

### समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

<b>समास विग्रह</b>	<b>सामासिकपद ( अर्थ सहित )</b>
पाणी च पादौ च तेषां	= पाणिपादम् (हाथ और पैर का समूह)
समाहारः	
रथिकः च अश्वारोही च	= रथिकाश्वारोहम् (रथी और घोड़सवार)
भेरी च पटहश्च	= भेरीपटहम् (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च	= अहिनकुलम् (साँप और नेवला)
अहश्च रात्रिश्च	= अहोरात्रम् (रात और दिन)
रथाश्च अश्वश्च तेषां	= रथाश्वम् (रथ और घोड़े)
समाहारः	
संज्ञा च परिभाषा च अनयोः समाहारः	= संज्ञापरिभाषम् (संज्ञा और परिभाषा का समूह)

**नोट-** जिस समास में अनेक पदों के समूह का बोध होता है, उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। समाहार द्वन्द्व में समास के बाद नपुंसकलिङ्ग एकवचन का प्रयोग होता है।

### एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

<b>समास विग्रह</b>	<b>सामासिक पद ( अर्थ सहित )</b>
माता च पिता च	= पितरौ (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च	= पुत्रौ (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च	= रामौ (दो राम)
हंसश्च हंसी च	= हंसौ (हंस और हंसी)
युवा च युवती च	= युवानौ (युवक और युवती)
दुहिता च दुहिता च	= दुहितरौ (दो पुत्रियाँ)
मयूरी च मयूरः च	= मयूरौ (मयूरी और मयूर)
भ्राता च स्वसा च	= भ्रातरौ (भाई और बहन)
श्वश्रूः च श्वसुरश्च	= श्वसुरौ (सास और ससुर)
नोट- (i) एकः च दश च = एकादश	
(ii) द्वौ च दश च = द्वादश	
(iii) त्रयः च दश च = त्रयोदश	
(iv) अष्टौ च दश च = अष्टादश इत्यादि में द्वन्द्व समास है।	

## 6. बहुव्रीहि समास

“अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः” अर्थात् जिस समास में सामासिक पदों से भिन्न किसी अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है, उसे ‘बहुव्रीहि’ समास कहते हैं। अर्थात् बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं।

जैसे- लम्बम् उदरं यस्य सः = लम्बोदरः।

यहाँ लम्बम् उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो है लेकिन वे किसी अन्य पद ‘गणेश’ की विशेषता बता रहे हैं। अतः यहाँ बहुव्रीहि समास है।

**बहुव्रीहि समास विधायक सूत्र-** अनेकमन्यपदार्थे (2.2.24) - अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक प्रथमान्त पदों का विकल्प से बहुव्रीहि समास होता है।

### बहुव्रीहि समास के भेद-

**( क ) समानाधिकरण बहुव्रीहि-** इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है।

<b>समास विग्रह</b>	<b>सामासिक पद ( अर्थ सहित )</b>
पीतम् अम्बरं यस्य सः	= पीताम्बरः (श्रीकृष्ण)
	पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः	= लम्बोदरः (गणेश)
	लम्बा है उदर जिसका
नीलं कण्ठं यस्य सः	= नीलकण्ठः (शिव)
	नीला है कण्ठ जिसका
श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	= श्वेताम्बरः (साधु)
	सफेद है वस्त्र जिसका

दामम् उदरं यस्य सः	= दामोदरः (श्रीकृष्ण)
	रस्सी है उदर पर जिसके
जितानि इन्द्रियाणि येन सः	= जितेन्द्रियः (मुनि)
	जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा	= शुक्लाम्बरा (सरस्वती)
दश आननानि यस्य सः	= दशाननः (रावण)
चत्वारि आननानि यस्य सः	= चतुराननः (ब्रह्मा)
दिक् अम्बरं यस्य सः	= दिगम्बरः (शिव)
प्राप्तम् उदकं यं सः	= प्राप्तोदकः
	(जल जिसे प्राप्त है।)
महान् आशयः यस्य सः	= महाशयः (सभ्य व्यक्ति)
यशः एव धनं यस्य सः	= यशोधनः (राजा)
	यश ही है धन जिसका
लब्धा प्रतिष्ठा येन सः	= लब्धप्रतिष्ठः (विद्वान्)
नीलम् अम्बरं यस्य सः	= नीलाम्बरः (बलराम)
दिव्यम् अम्बरं यस्य सः	= दिव्याम्बरः
	(दिव्य हैं वस्त्र जिसका, वह)
पञ्च आननानि यस्य सः	= पञ्चाननः (शिव)
नीलं कण्ठं यस्य सः	= नीलकण्ठः (शिव)
गज इव आननं यस्य सः	= गजाननः (गणेश)
कमलम् आसनं यस्य सः	= कमलासनः (ब्रह्मा)
लम्बौ कर्णौ यस्य सः	= लम्बकर्णः
	(लम्बे हैं कान जिसके, वह)
<b>(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि-</b>	
इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। जैसे-	
चक्रं पाणौ यस्य सः	= चक्रपाणिः (विष्णु)
वीणा पाणौ यस्याः सा	= वीणापाणिः (सरस्वती)
धनुः पाणौ यस्य सः	= धनुष्पाणिः (श्रीराम)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	= चन्द्रशेखरः (शिव)
पीयूषं पाणौ यस्य सः	= पीयूषपाणिः (वैद्य)
मृगस्य नयने इव	= मृगनयनी (स्त्री) (मृग के नयनों
नयने यस्याः सा	के समान हैं नयन जिसके)
शूलं पाणौ यस्य सः	= शूलपाणिः
	(शूल है हाथ में जिसके, वह)
शीतिः कण्ठे यस्य सः	= शीतिकण्ठः (नीलिमा है जिसके
	कण्ठ में, वह)
चन्द्रस्य कान्तिः इव	= चन्द्रकान्तिः
कान्तिः यस्य सः	(चन्द्र की कान्ति के
	समान कान्ति है जिसकी, वह)
गदा पाणौ यस्य सः	= गदापाणिः (विष्णु)

**(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि-**

युद्ध लड़ाई आदि का ज्ञान कराने वाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है, उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं।

यथा-

☆ केशेषु केशेषु	= केशाकेशि
गृहीत्वा इदं	(बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने
युद्धं प्रवृत्तम्	वाला युद्ध)
☆ हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां	= हस्ताहस्ति (हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध)
प्रवृत्तं युद्धम्	
☆ दण्डैश्च दण्डैश्च	= दण्डादण्डि (परस्पर लाठियों से
प्रहत्य इदं युद्धं	मार-मार कर युद्ध में प्रवृत्त हुआ)
प्रवृत्तम्	
☆ मुष्टिभिश्च मुष्टिभिश्च	= मुष्टामुष्टि (परस्पर मुक्कों से
प्रहत्य इदं युद्धं	मार-मार कर यह लड़ाई लड़ी
प्रवृत्तम्	गयी)

**(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि-**

जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्ययोग बहुव्रीहि समास होता है। 'सह' को विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे-

अर्जुनेन सह	= सार्जुनः (अर्जुन के साथ)
राधिकया सह इति	= सराधिकः
	(कृष्ण) राधिका के साथ
भार्यया सह	= सभार्यः (स्त्री सहित)
कलाभिः समम्	= सकलम् (कलाओं से युक्त)
सीतया सह	= ससीतः (राम, सीता के साथ)
पुत्रेण सह	= सपुत्रः (पुत्र के साथ)
परिवारेण सह	= सपरिवारः (परिवार के साथ)
अनुजेन सह	= सानुजः (अनुज के साथ)

**बहुव्रीहि समास के कुछ अन्य उदाहरण-**

द्वौ वा त्रयो वा	= द्वित्राः (दो या तीन)
त्रयः वा चत्वारो वा	= त्रिचतुराः (तीन-चार)
पञ्च वा षट् वा	= पञ्चषाः (पाँच या छह)
युवतिः जाया यस्य सः	= युवजानिः
	(जिसकी स्त्री युवती है, वह)
सीता जाया यस्य सः	= सीताजानिः
	(जिसकी स्त्री सीता है, वह)
पठितुं कामं यस्य सः	= पठितुकामः
	(पढ़ने की इच्छा वाला)
अविद्यमानो पुत्रः यस्य सः	= अपुत्रः

□□



## कारक तथा विभक्ति

- 'क्रियां करोति इति कारकम्' क्रिया को करने वाला कारक है।
  - 'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्' क्रिया का जो जनक होता है, वह कारक है।
  - 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध (अन्वय) होता है, उसे कारक कहते हैं।
- जैसे- वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।

**वनात् आगत्य रामः सीतायै लङ्कायां रावणं बाणेन जघान।**  
**स्पष्टीकरण-**

- (i) इस वाक्य में 'मारना' क्रिया को सम्पादित करने वाला 'राम' है, अतः 'राम' कर्ताकारक है।
- (ii) क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह कर्म है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है, अतः 'रावण' कर्म है।
- (iii) क्रिया के सम्पन्न करने में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'मारने' की क्रिया में अत्यधिक सहायक 'बाण' है अतः 'बाण' करण कारक है।
- (iv) सीता के लिए रावण मारा गया, अतः 'सीता' सम्प्रदान है।
- (v) 'वन' अपादान कारक है।
- (vi) मारने की क्रिया लंका में पूर्ण हुई थी, अतः लंका अधिकरण कारक है।

इसप्रकार इस वाक्य में 'राम, सीता, रावण, वन, बाण, लंका' इन सभी शब्दों का 'मारना' (जघान) क्रिया से सम्बन्ध है, अतः उपर्युक्त ये सभी शब्द कारक हैं।

**कारकों की संख्या -** कारक छह हैं-

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण

**कर्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।**

**अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्॥**

जिनका क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता या जो क्रिया की सिद्धि में सहायक नहीं होते, उन्हें कारक नहीं कहा जा सकता। इसीलिए सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं माने जाते क्योंकि क्रिया के साथ इनका साक्षात् सम्बन्ध नहीं होता।

### कारक चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा/तृतीया	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पै, पर
प्रथमा	सम्बोधन	हे, भो, अरे

### प्रथमा विभक्ति

1. **स्वतन्त्रः कर्ता-** क्रिया करने में जिसकी स्वतन्त्रता मानी जाय, वही कर्ता होता है। यह सूत्र 'कर्तृसंज्ञा' करने वाला संज्ञा सूत्र है। जैसे- मोहनः पठति। यहाँ 'मोहन' पठन क्रिया करने में स्वातन्त्र्येण विवक्षित है, अतः 'मोहन' कर्ता है।
- वाक्य में कर्ता की स्थिति के अनुसार संस्कृत में वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-
- (क) **कर्तृवाच्य-** मोहनः पुस्तकं पठति। - यहाँ कर्ता की प्रधानता होती है, और उसमें प्रथमा विभक्ति होती है।
- (ख) **कर्मवाच्य-** मोहनेन पुस्तकं पठ्यते। यहाँ 'कर्म' की प्रधानता होती है और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- (ग) **भाववाच्य-** रामेण भूयते। यहाँ भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, और कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

### 2. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा-

प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्गमात्र के आधिक्य में, परिमाण मात्र के आधिक्य में तथा वचनमात्र के आधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है।

➤ किसी प्रातिपदिक के उच्चारण से स्वार्थ, द्रव्य, लिङ्ग, संख्या और कारक- इन पाँचों में, जिसका ज्ञान निश्चित रूप से हो, उसे प्रातिपदिकार्थ कहते हैं।

**उदाहरण-** उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्।

**लिङ्गमात्राधिक्ये प्रथमा-** जिन शब्दों के लिङ्ग निश्चित नहीं हैं, उन शब्दों से लिङ्गमात्राधिक्य में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- तटः (पुलिङ्ग), तटी (स्त्रीलिङ्ग), तटम् (नपुंसकलिङ्ग)

**परिमाणमात्राधिक्ये प्रथमा-** परिमाण (वजन, माप, तौल) मात्रा का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- द्रोणो व्रीहिः।



**वचनमात्रे प्रथमा-** वचन अर्थात् संख्यामात्र का बोध कराने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा- एकः, द्वौ, बहवः।

**3. सम्बोधने च -** सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है- जैसे- हे राम! अत्र आगच्छ! यहाँ हे राम! में सम्बोधन होने से प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त है।

**4. उक्ते कर्तरि प्रथमा-** कर्तृवाच्य में जहाँ कर्ता उक्त या 'कहा गया' रहता है, उसमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे- रामः गृहं गच्छति।

➤ यहाँ 'राम' कर्तृवाच्य का कर्ता है जो कि उक्त है अतः 'रामः' में प्रथमा विभक्ति है।

इसप्रकार प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में, सम्बोधन में, उक्त कर्ता में प्रथमा विभक्ति होगी।

## द्वितीया विभक्ति ( कर्मकारक )

**1. कर्तुरीप्सिततमं कर्म-** कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे विशेष रूप से प्राप्त करना चाहता है उसकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे- रामः लेखन्या पत्रं लिखति।

यहाँ 'राम' रूपी कर्ता अपनी लेखन रूपी क्रिया से सबसे ज्यादा 'पत्र' लिखना चाह रहा है अतः 'पत्र' यहाँ कर्म होगा।

**2. कर्मणि द्वितीया-** कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

जैसे-

1. रामः गृहं गच्छति।
2. छात्रः विद्यालयं गच्छति।
3. अहं जलं पिबामि।
4. बालकाः फलानि खादन्ति।
5. सः नगरं गच्छति।
6. भक्तः हरिं भजति।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गृह, विद्यालय, जल, फल, नगर, हरि' इन सभी की कर्मसंज्ञा है, अतः सभी पदों में कर्म होने के कारण 'कर्मणि द्वितीया' से द्वितीया विभक्ति हुई है।

**3. अकथितं च-** अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों के द्वारा अविवक्षित कारक कर्मसंज्ञक होता है। दुह् आदि (बारह) एवं नी आदि (चार) कुल 16 धातुओं के कर्म से जिसका सम्बन्ध होता है, वह अकथित कहा जाता है।

**सोलह द्विकर्मक धातुयें-** दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष् -12

नी, ह्, कृष्, वह् = 4 ये **सोलह द्विकर्मक धातुयें** हैं।

इन सोलह धातुओं एवं इनके समानार्थक धातुओं के योग में अपादान, सम्प्रदान, करण आदि कारकों की कर्मसंज्ञा होती है, और उनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

## द्विकर्मक धातुओं के योग में अपादान आदि का कर्म होना

धातु	प्रयोग	अर्थ
1. दुह् (दुहना)	ग्वालः धेनुं दुग्धं दोषिध।	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।
2. याच् (माँगना)	हरिः बलिं वसुधां याचते। सः नृपं क्षमां याचते।	हरि वामन बलि से पृथ्वी माँगते हैं। वह राजा से क्षमा माँगता है।
3. पच् (पकाना)	माता तण्डुलान् ओदनं पचति।	माता चावलों से भात पकाती है।
4. दण्ड् (दण्ड देना)	राजा चौरं शतं दण्डयति।	राजा चोर से 100 रुपये दण्ड लेता है।
5. रुध् (रोकना)	राजा शत्रून् दुर्गं रुणद्धि।	राजा शत्रुओं को किले में रोकता है।
6. प्रच्छ् (पूछना)	गुरुः शिष्यं प्रश्नं पृच्छति।	गुरु शिष्य से प्रश्न पूछता है।
7. चि (चुनना)	बालकः वृक्षं फलानि अवचिनोति।	बालक वृक्ष से फल चुनता है।
8. ब्रू (बोलना)	गुरुः शिष्यं धर्मं ब्रूते।	गुरु शिष्य से धर्म बताता है।
9. शास् (उपदेश देना)	गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति।	गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है।
10. जि (जीतना)	सः देवदत्तं शतं जयति।	वह देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।
11. मथ् (मथना)	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति।	अमृत के लिए समुद्र को मथता है।
12. मुष् (चुराना)	यज्ञदत्तं शतं मुष्णाति।	यज्ञदत्त से सौ रुपये चुराता है।
13. नी (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं नयति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
14. ह् (हरना)	कृषकः धेनुं ग्रामं हरति।	किसान गाय को गाँव ले जाता है।
15. कृष् (खींचना)	कृषकः धेनुं ग्रामं कर्षति।	किसान गाय को गाँव तक खींचकर ले जाता है।
16. वह् (ले जाना)	कृषकः धेनुं ग्रामं वहति।	किसान गाय को ग्राम तक वहन करता है।

**4. अधिशीङ्स्थासां कर्म-** (1.4.46) शी (सोना), स्था (ठहरना), आस् (बैठना) - इन तीन धातुओं के पहले यदि 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हो तो इनके आधार की कर्मसंज्ञा होती है, और कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे-

1. राजा **सिंहासनम्** अधितिष्ठति। (राजा सिंहासन पर बैठता है)
  2. हरिः **वैकुण्ठम्** अध्यास्ते। (हरि वैकुण्ठ में बैठते हैं)
  3. शिष्यः **आसनम्** अधितिष्ठति। (शिष्य आसन पर बैठता है)
  4. मुनिः **शिलाम्** अधिशेते। (मुनि शिला पर सोते हैं)
  5. सः **पर्यङ्कम्** अधिशेते (वह पलंग पर सोता है)
- उपर्युक्त वाक्यों में सिंहासन, वैकुण्ठ, आसन, शिला, पर्यङ्क ये सभी आधार हैं। यहाँ सभी क्रिया पदों में 'अधि' उपसर्ग के साथ शीङ्, स्था, आस्, धातुओं का प्रयोग है। अतः आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी।

**5. अभिनिविशश्च-** (1.4.47) 'अभि' और 'नि' इसी क्रम से ये दोनों ही उपसर्ग यदि 'विश्' धातु के पूर्व में आयें तो आधार की कर्मसंज्ञा हो जाती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति होगी। जैसे- सन्तः सन्मार्गम् अभिनिविशते।

(सज्जन सन्मार्ग में प्रवेश करते हैं)

- यहाँ 'अभिनिविशते' में 'अभि' एवं 'नि' उपसर्ग के साथ 'विश्' धातु का प्रयोग हुआ है अतः 'सन्मार्गम्' इस आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

**6. उपान्वध्याङ्वसः-** (1.4.48) उप, अनु, अधि या आङ् इनमें से कोई उपसर्ग यदि वस् धातु के पूर्व में आये तो आधार की कर्मसंज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होगा। जैसे-

- राजा नगरम् उपवसति। (राजा नगर में रहता है)  
 राजा नगरम् अनुवसति।  
 राजा नगरम् अधिवसति।  
 राजा नगरम् आवसति।
- यहाँ 'वस्' धातु के पूर्व उप, अनु, अधि एवं आङ् उपसर्ग का प्रयोग हुआ है अतः आधार 'नगर' की कर्मसंज्ञा हो गयी और उसमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

**7. अन्तराऽन्तरेण युक्ते-** (2.3.4) 'अन्तरा' (मध्य में) और 'अन्तरेण' (बिना) इन अव्ययों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

- (i) अन्तरा **ग्रामं** नदी प्रवहति। (दो गाँवों के बीच नदी बहती है)
- (ii) **संस्कृतम्** अन्तरेण न किमपि जानामि। (संस्कृत के सिवाय और कुछ नहीं जानता)

**8. अभितः - परितः - समया - निकषा - हा - प्रति-योगेऽपि-**

अभितः (दोनों ओर या आस पास) परितः (चारों ओर) समया (समीप) निकषा (निकट) हा (शोक) प्रति (ओर)  
 इन शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।  
 जैसे-

- (i) **ग्रामम्** अभितः वनम् अस्ति। (गाँव के आस-पास वन है)
- (ii) **आश्रमम्** अभितः वृक्षाः सन्ति। (आश्रम के दोनों ओर वृक्ष हैं)
- (iii) **विद्यालयं** परितः वृक्षाः सन्ति। (विद्यालय के चारों ओर वृक्ष हैं)
- (iv) **ग्रामं** परितः उपवनानि सन्ति। (गाँव के चारों ओर उपवन हैं)
- (v) **लङ्कां** समया सागरः अस्ति। (लङ्का के समीप सागर है)
- (vi) **लङ्कां** निकषा हनिष्यति (लङ्का के समीप मारेगा)
- (vii) हा **कृष्णाभक्तम्** (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद है)
- (viii) **बुभुक्षितं** न प्रतिभाति किञ्चित् (भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता)

(ix) छात्रः **गुरुं** प्रति श्रद्धधाति। (छात्र की गुरु के प्रति श्रद्धा है)

(x) सः **नगरं** प्रति गच्छति। (वह नगर की ओर जाता है)

**9. उभयसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु त्रिषु।**

**द्वितीयाऽऽप्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥**

उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अध्यधि, अधोऽधः पदों के योग होने पर द्वितीया विभक्ति होगी।

- जैसे-
- (i) उभयतः नदी वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं)
  - (ii) मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर पेड़ हैं)
  - (iii) नगरं सर्वतः प्राकारः अस्ति। (नगर के चारों ओर परकोटा है)
  - (iv) धिक् कृष्णाभक्तम्। (कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है)
  - (v) उपर्युपरि लोकं हरिः। (इस लोक के ठीक ऊपर हरि हैं)
  - (vi) अध्यधि लोकं हरिः। (हरि लोक के पास हैं)
  - (vii) अधोऽधः लोकं हरिः। (पाताल लोक के ठीक नीचे हरि हैं)

**10. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ( 2.3.5 )-**

- यदि किसी काल में कोई क्रिया लगातार हो तो ऐसे कालवाची पद में द्वितीया विभक्ति होगी।
- इसीतरह यदि अध्व (मार्ग की दूरी) में कोई वस्तु लगातार हो तो उस अध्ववाचक = मार्गवाचक शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) छात्रः मासम् अधीते (छात्र महीने भर लगातार पढ़ता है)  
- कालवाचक
- (ii) छात्रः क्रोशम् अधीते (छात्र कोश भर लगातार पढ़ता है)  
- मार्गवाचक
- (iii) क्रोशं गिरिः वर्तते। (कोश भर विस्तृत पर्वत है)  
- मार्गवाचक
- (iv) क्रोशं कुटिला नदी (कोश भर नदी टेढ़ी है)  
- मार्गवाचक
- (v) सः मासम् अधीते रामायणम् (वह महीने भर रामायण पढ़ता है)  
- कालवाचक
- (vi) सः सप्ताहं पठिष्यति (वह सप्ताह भर पढ़ता है)  
- कालवाचक

### तृतीया विभक्ति ( करण कारक )

1. साधकतमं करणम् - क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक उपकारक होता है, उसे करण कहते हैं।

‘क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात्’।

यथा- सः हस्तेन मिष्टान्नं वितरति।

यहाँ- मिष्टान्न वितरण रूपी कार्य को करने में हाथ सबसे अधिक सहायक है, अतः ‘हाथ’ करण है।

2. कर्तृकरणयोस्तृतीया ( 2.3.18 ) - अनुक्त कर्ता

अर्थात् (कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता) और करण में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

- (i) सः कुठारेण वृक्षं छिनत्ति। (वह कुल्हाड़ी से वृक्ष को काटता है) - करण में तृतीया
- (ii) रामेण बालिः हतः (राम के द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता में तृतीया
- (iii) बालकः दण्डेन सर्पं हन्ति। (बालक डण्डे से साँप को मारता है) - करण में तृतीया
- (iv) त्वं कलमेन पत्रं लिख। (तू कलम से पत्र लिख) - करण में तृतीया
- (v) मोहनः दात्रेण लुनाति। (मोहन हसियें से काटता है) - करण में तृतीया
- (vi) रामेण बाणेन हतो बाली। (राम के बाण द्वारा बाली मारा गया) - कर्ता (रामेण) और करण (बाणेन) दोनों में तृतीया।

3. सहयुक्तेऽप्रधाने ( 2.3.19 ) -

सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि सहार्थक शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

- (i) पुत्रेण सह आगतः पिता। (पुत्र के साथ पिता आया)
- (ii) पिता पुत्रेण सह मेरठनगरं गतः (पिता पुत्र के साथ मेरठनगर को गया)
- (iii) रामः जानक्या साकं गच्छति। (राम जानकी के साथ जाते हैं)
- (iv) मोहनः गुरुणा सार्धं विद्यालयं गच्छति। (मोहन गुरु के साथ विद्यालय जाता है।)
- (v) लक्ष्मणेन समं रामः गच्छति। (लक्ष्मण के साथ राम जाते हैं)

4. येनाङ्गविकारः - (2.3.20) शरीर के जिस अङ्ग के विकार से शरीरधारी का विकार समझा जाय, उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) अक्षणा काणः (आँख से काना)
- (ii) हस्तेन लुञ्जः (हाथ से लुञ्जा)
- (iii) शिरसा खल्वाटः (शिर से गंजा)
- (iv) कर्णाभ्यां बधिरः (कानों से बहरा)
- (v) पादेन खञ्जः (पैर से लँगड़ा)
- (vi) पृष्ठेन कुब्जः (पीठ से कुबड़ा)

यहाँ ‘आँख से’ काना दिखायी पड़ रहा है, इसलिए ‘अक्षणा’ में तृतीया विभक्ति हुई। इसीप्रकार ‘हाथ से’ लुञ्जा है अतः ‘हस्तेन’ इस अङ्गवाची पद में तृतीया विभक्ति हुई।

5. पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम् -

पृथक्, विना, नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग विकल्प से होता है। तृतीया न हो तो पञ्चमी अथवा द्वितीया विभक्ति होती है।

‘नाना’ शब्द अनेकार्थक है लेकिन यहाँ ‘विना’ के अर्थ में प्रयुक्त है।

जैसे-

- (i) जलेन विना न जीवति कमलम्। (जल के विना कमल जीवित नहीं रहता)
- (ii) ग्रामं पृथक् या ग्रामेण पृथक् या ग्रामात् पृथक् (गाँव से अलग)
- (iii) रामं विना या रामेण विना या रामात् विना (राम के विना)
- (iv) नाना रामेण या नाना रामात् या नाना रामम् (राम के विना)

## चतुर्थी विभक्ति ( सम्प्रदान कारक )

**1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ( 1.4.32 ) -**  
कर्ता दान कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है; अर्थात् कर्ता जिसे कुछ देता है, या जिसके लिए कुछ करता है, वह 'सम्प्रदान' कहलाता है।

**सम्प्रदान-** 'सम्यक् प्रदीयते अस्मै तत् सम्प्रदानम्' (जिसे कुछ दिया जाय, परन्तु उस वस्तु को वापस न लिया जाय, वह सम्प्रदान होता है)

**2. चतुर्थी सम्प्रदाने ( 2.3.13 ) -** सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) राजा **ब्राह्मणाय** गां ददाति। (राजा ब्राह्मण को गाय देता है)
- (ii) माता **बालकाय** फलं ददाति। (माता बालक को फल देती है)
- (iii) **उपाध्यायाय** गां ददाति (उपाध्याय के लिए गाय देता है)
- (iv) **ब्राह्मणाय** भूमिं ददाति। (ब्राह्मण को भूमि देता है)

**3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ( 1.4.33 ) -**

रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो प्रीयमाण अर्थात् जो प्रसन्न होता है, या जिसको पसन्द होता है उस कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) **हरये** रोचते भक्तिः। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)
- (ii) **सुरेशाय** दुग्धं रोचते। (सुरेश को दूध अच्छा लगता है)
- (iii) **मह्यं** मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू पसन्द है)
- (iv) **मह्यम्** ओदनं रोचते। (मुझे भात अच्छा लगता है)

यहाँ 'हरि' को भक्ति पसन्द है, सुरेश को दूध पसन्द है, मुझे लड्डू पसन्द है, मुझे ओदन (भात) पसन्द है, तो जिसे पसन्द है वो प्रीयमाण है, और जो प्रीयमाण है उसी की सम्प्रदानसंज्ञा होगी, और सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होगी, इसीलिए "हरये, सुरेशाय, मह्यम्" में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

**4. "क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः" ( 1.4.37 )**

क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य (ईर्ष्या करना), असूय् (जलन करना) इन धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध किया जाता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है, और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) पिता **पुत्राय** क्रुध्यति। (पिता पुत्र पर क्रोध करता है)
- (ii) दुष्टाः **सज्जनाय** द्रुह्यन्ति (दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं)
- (iii) कंसः **कृष्णाय** ईर्ष्यति (कंस कृष्ण से ईर्ष्या करता है)
- (iv) दैत्याः **देवेभ्यः** असूयन्ति (दैत्य देवों से जलते हैं)
- (v) तनुश्रीदत्ता **नानापाटेकराय** क्रुध्यति (तनुश्रीदत्ता नानापाटेकर पर क्रोध करती है)

(vi) रावणः **रामाय** असूयति (रावण राम से द्वेष करता है) यहाँ पिता अपने पुत्र पर क्रोध करता है, इसलिए जिस पर क्रोध किया जाय उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है इसीलिए 'पुत्राय' में चतुर्थी विभक्ति लगी है।

**5. स्पृहेरीप्सितः ( 1.4.36 ) -**

स्पृह् (चाहना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह, इच्छा या अभीप्सा होती है उसकी सम्प्रदानसंज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

- (i) सा **पुरुषेभ्यः** स्पृहयति। (वह पुरुषों को चाहती है)
- (ii) रमा **पुष्पेभ्यः** स्पृहयति (रमा फूलों की चाह करती है)
- (iii) बालिकाः **फलेभ्यः** स्पृहयन्ति (लड़कियाँ फलों की चाह करती हैं)
- (iv) अहं **संस्कृताय** स्पृहयामि (मैं संस्कृत चाहता हूँ)

**6. "नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषट्द्योगाच्च" ( 2.3.16 )**

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् - इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा-

- (i) गणेशाय नमः (गणेश के लिए नमस्कार)
- (ii) शिवाय नमः (शिव को नमस्कार है)
- (iii) देवेभ्यः नमः (देवताओं को नमस्कार है)
- (iv) विष्णवे नमः (विष्णु को नमस्कार है)
- (v) तुभ्यम् स्वस्ति (तुम्हारा कल्याण हो)
- (vi) बालकाय स्वस्ति (बालक का कल्याण हो)
- (vii) इन्द्राय स्वाहा (इन्द्र के लिए स्वाहा)
- (viii) अग्नये स्वाहा (अग्नि के लिए स्वाहा)
- (ix) पितृभ्यः स्वधा (पितरों को स्वधा)
- (x) दैत्येभ्यः हरिः अलम् (दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं)

## पञ्चमी विभक्ति ( अपादान कारक )

**1. ध्रुवमपायेऽपादानम् ( 1.4.24 ) -**

अपाय (अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे कोई वस्तु अलग हो रही हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। जैसे-

**वृक्षात्** पत्रं पतति। (वृक्ष से पत्ता गिरता है)  
इस वाक्य में पत्ता 'वृक्ष' से अलग हो रहा है अतः वृक्ष 'अपादान' है।

**2. अपादाने पञ्चमी ( 2.3.28 ) -**

अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) सः **ग्रामात्** गच्छति। (वह गाँव से जाता है)
- (ii) **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं)

- (iii) महेशः आसनात् उत्तिष्ठति (महेश आसन से उठता है)  
 (iv) गङ्गा हिमालयात् प्रभवति। (गंगा हिमालय से निकलती है)  
 (v) बालकः सोपानात् पतति (बालक सीढ़ी से गिरता है)  
 (vi) सर्वे विमानात् अवतरन्ति (सभी विमान से उतरते हैं)

### 3. जुगुप्सा-विराम-प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् ( वा. )

**सूत्रार्थ-** जुगुप्सा (घृणा, निन्दा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य)  
 इन अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद किया जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है, और उसमें पञ्चमी विभक्ति होगी।

जैसे-

- (i) पापात् जुगुप्सते। (पाप से घृणा करता है)  
 (ii) सः कार्यात् विरमति (वह कार्य से रुकता है)  
 (iii) सः पठनात् प्रमाद्यति। (वह पढ़ने से प्रमाद करता है)  
 (iv) सः धर्मात् प्रमाद्यति। (वह धर्म से प्रमाद करता है)  
 (v) स्वाध्यायात् मा प्रमदः (स्वाध्याय से प्रमाद मत कर)

**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वाक्यों में जुगुप्सा, विराम और प्रमाद अर्थ वाली धातुओं का प्रयोग है तथा पाप, कार्य, पठन, धर्म और स्वाध्याय से जुगुप्सा, विराम या प्रमाद किया जा रहा है इसलिए इनकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति हो गयी है।

### 4. भीत्रार्थानां भयहेतुः ( 1.4.25 ) -

**सूत्रार्थ-** भय (डर) अर्थवाली और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के योग में जिससे भय हो या जिससे रक्षा की जाय, उसकी अपादान संज्ञा होती है। जैसे-

- (i) चोरात् बिभेति (चोर से डरता है)  
 (ii) वृकः सिंहात् बिभेति (भेड़िया सिंह से डरता है)  
 (iii) शिशुः सर्पात् बिभेति (बच्चा साँप से डरता है)  
 (iv) पिता पुत्रं सिंहात् रक्षति (पिता पुत्र की सिंह से रक्षा करता है)  
 (v) माता पुत्रम् अग्नेः रक्षति (माता पुत्र की आग से रक्षा करती है)  
 (vi) पापात् त्रायते (पाप से रक्षा करता है)

**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त उदाहरणों में भयार्थक 'भी' (बिभेति) धातु का तथा त्राणार्थक 'रक्ष्' (रक्षति) धातु का प्रयोग है, तथा चोर, सिंह, सर्प, अग्नि, पाप आदि से डर या रक्षा हो रही है, इसीलिए इनमें अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

### 5. आख्यातोपयोगे ( 1.4.29 ) -

जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय ऐसे व्याख्याता/प्रवक्ता/शिक्षक/पढ़ाने वाले की अपादान संज्ञा होगी, और अपादान में पञ्चमी विभक्ति होगी। जैसे-

- (i) उपाध्यायात् अधीते। (उपाध्याय से पढ़ता है)  
 (ii) छात्रः गुरोः अधीते (छात्र गुरु जी से पढ़ता है)  
 (iii) रविः शिक्षकात् सङ्गीतं शिक्षते (रवि शिक्षक से संगीत सीखता है)

- (iv) बालकः अध्यापकात् संस्कृतं पठति (बालक अध्यापक से संस्कृत पढ़ता है)  
 (v) वटुः गुरोः कर्मकाण्डं जानाति। (वटु गुरु से कर्मकाण्ड जानता है)

### 6. "अन्यारादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते" ( 2.3.29 ) -

अन्य, भिन्न, इतर, ऋते, पूर्व, प्राक्, प्रत्यक्, बहिः, आरभ्य, प्रभृति आदि शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

- (i) अन्यः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)  
 (ii) भिन्नः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)  
 (iii) इतरः कृष्णात् (कृष्ण से भिन्न)  
 (iv) ऋते कृष्णात् (कृष्ण के विना)  
 (v) पूर्वो ग्रामात् (गाँव से पूर्व)  
 (vi) प्राक् ग्रामात् (गाँव से पूर्व)  
 (vii) प्रत्यक् ग्रामात् (गाँव के बाद)  
 (viii) भवात् प्रभृति हरिः सेव्यः। (जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त हरि सेव्य हैं)  
 (ix) ग्रामाद् बहिः उद्यानम् अस्ति। (गाँव के बाहर बगीचा है)

## षष्ठी विभक्ति ( सम्बन्ध )

**1. षष्ठी शेषे ( 2.3.50 ) -** कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण कारकों में तथा प्रातिपदिकार्थ में विभक्तियों का विधान कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त जो बच गया हो, वही 'शेष' है। इस प्रकार कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव, जन्यजनकभाव, कार्यकारणभाव आदि सम्बन्ध शेष है। उस शेष की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति होती है।

जैसे-

- (i) राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)  
 (ii) गङ्गायाः जलम् (गङ्गा का जल)  
 (iii) दशरथस्य पुत्रः (दशरथ का पुत्र)  
 (iv) पाञ्चालानां भूमिः (पाञ्चालों की भूमि)

### 2. षष्ठी हेतुप्रयोगे ( 2.3.36 ) -

**सूत्रार्थ-** यदि किसी वस्तु की हेतुता (कारणता) प्रकट करनी हो, और 'हेतु' शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु या कारण तथा 'हेतु' शब्द - दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे-

- (i) छात्रः अध्ययनस्य हेतोः प्रयागे वसति।  
 (छात्र अध्ययन के लिए प्रयाग में रहता है)  
 (ii) सः धनस्य हेतोः सेवते। (वह धन के हेतु सेवा करता है)  
 (iii) सः अन्नस्य हेतोः वसति। (वह अन्न के कारण रहता है)  
 (iv) सुमना गृहस्य हेतोः यतते। (सुमन घर के लिए प्रयास कर रही है)



**स्पष्टीकरण-** यहाँ कोई छात्र 'अध्ययन के लिए' प्रयाग में रहता है, अतः उसके रहने का कारण 'अध्ययन' है इसलिए अध्ययन में षष्ठी विभक्ति हुई और वाक्य में 'हेतु' शब्द का प्रयोग हुआ है अतः 'हेतु' में भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

**3. क्तस्य च वर्तमाने ( 2.3.67 )** - वर्तमान अर्थ में होने वाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) राज्ञां पूजितः विद्वान् (वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है)
- (ii) सर्वेषाम् आदृतः गुरुः (वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं)
- (iii) राज्ञां मतः बुद्धः पूजितः वा (राजा मानते हैं, जानते हैं अथवा पूजते हैं)

**4. षष्ठी चानादरे ( 2.3.38 )** - अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा-

- (i) बालकानां चन्दनः दुष्टः (बालकों में चन्दन दुष्ट है)
- (ii) खगानां काकः धूर्तः (पक्षियों में कौआ धूर्त होता है)
- (iii) पशूनां शृगालः मूर्खः (पशुओं में गीदड़ मूर्ख होता है)
- (iv) रुदतः पुत्रस्य पिता वनं गतः (रोते हुए पुत्र को छोड़कर पिता वन चला गया)
- (v) रुदति पुत्रे सः प्रव्राजीत् (पुत्र के रोते रहने पर भी उसे छोड़कर संन्यास ले लिया)

### सप्तमी विभक्ति ( अधिकरण कारक )

**1. आधारोऽधिकरणम् ( 1.4.45 )** - आधार को 'अधिकरण' कहते हैं। अधिकरण उसे कहते हैं, जो कर्ता और कर्म का आधार होता है।

#### आधार के भेद

आधार तीन प्रकार का होता है-

- (i) औपश्लेषिक आधार - कटे आस्ते।
- (ii) वैषयिक आधार - मोक्षे इच्छा अस्ति।
- (iii) अभिव्यापक आधार - तिलेषु तैलम्, पयसि घृतम्, सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति।

**2. सप्तम्यधिकरणे च ( 2.3.36 )** - अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है- जैसे-

- (i) वयं गेहे वसामः (हम घर में रहते हैं)
- (ii) गङ्गायां निर्मलं जलम् अस्ति। (गङ्गा में निर्मल जल है)
- (iii) क्षेत्रेषु अन्नम् उत्पद्यते (खेतों में अन्न उत्पन्न होता है)
- (iv) वनेषु सिंहाः वसन्ति (वनों में सिंह रहते हैं)

**3. 'कुशल' तथा 'निपुण' शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-**

- (i) सः शास्त्रे कुशलः अस्ति (वह शास्त्र में कुशल है)
- (ii) विद्वान् वेदेषु निपुणः अस्ति (विद्वान् वेदों में निपुण हैं)

### 4. साध्वसाधुप्रयोगे च ( वा. )

'साधु' और 'असाधु' शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

- (i) कृष्णः मातरि साधुः (कृष्ण माता के विषय में साधु हैं)
  - (ii) कृष्णः मातुले असाधुः। (कृष्ण मामा के विषय में असाधु हैं)
- यहाँ साधु शब्द के प्रयोग होने से 'मातरि' में सप्तमी तथा 'असाधु' शब्द के प्रयोग होने से 'मातुले' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

**5. यतश्च निर्धारणम् ( 2.3.41 )** - निर्धारण में समुदाय वाचक शब्द से षष्ठी या सप्तमी विभक्ति होती है।

➤ यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट बताया जाय तो वही 'निर्धारण' कहलाता है।

**अथवा**

**निर्धारण-** जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा के द्वारा किसी समुदाय से उसके एकदेश का उत्कर्ष या अपकर्ष बताने के लिए अलग निर्देश करना 'निर्धारण' कहलाता है।

**उदाहरण-**

- (i) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः। (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)
- (ii) कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः।
- (iii) नदीषु गङ्गा पवित्रतमा। (नदियों में सबसे पवित्र गङ्गा हैं)
- (iv) नदीनां गङ्गा पवित्रतमा।
- (v) बालकेषु रविः श्रेष्ठः। (बालकों में रवि सबसे अच्छा हैं)
- (vi) बालकानां रविः श्रेष्ठः।
- (vii) पर्वतानां हिमालयः उच्चतमः।
- (viii) पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः। (पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा हैं)
- (ix) नृणां ब्राह्मणः श्रेष्ठः (मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं)
- (x) नृषु ब्राह्मणः श्रेष्ठः
- (xi) गवां कृष्णा बहुक्षीरा
- (xii) गोषु कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में काली गाय बहुत दूध देती है)
- (xiii) गच्छतां धावन् शीघ्रः।
- (xiv) गच्छत्सु धावन् शीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र पहुँचता है)

□□

## प्रत्यय

**प्रत्यय-** प्रति + √अच् + अच् अर्थात् जो वर्णसमूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नए अर्थ की प्रतीति कराते हैं, उस वर्णसमूह को प्रत्यय कहते हैं।

➤ मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

1. कृत् प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

➤ धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-

(i) कृत् प्रत्यय- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्यत्, अनीयर् आदि।

(ii) तिङ् प्रत्यय- तिप्, तस्, झि आदि 18 प्रत्यय।

➤ शब्दों से लगने वाले प्रत्यय हैं-

(i) सुप् प्रत्यय- सु औ जस् आदि 21 प्रत्यय।

(ii) स्त्रीप्रत्यय- टाप्, डीप्, डीष्, डीन् आदि।

(iii) तद्धित प्रत्यय- मतुप्, अण्, इनि आदि।

➤ कृत् प्रत्यय (कृदन्त)

कृत् प्रत्यय धातुओं से जोड़े जाते हैं, और इनसे बने पद को 'कृदन्त' कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से तीन प्रकार के शब्द निर्मित होते हैं- अव्यय, विशेषण और संज्ञा।

### 1. क्त्वा प्रत्यय

जब एक ही कर्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो समाप्ति क्रिया में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्द को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।

**जैसे-** छात्रः पठित्वा गृहं गच्छति। (छात्र पढ़कर घर जाता है)

इस वाक्य में 'छात्र' रूपी कर्ता दो क्रियायें करता है- (i) पढ़ता है (ii) घर जाता है। इन दो क्रियाओं में पढ़ने की क्रिया पूर्वकाल में हुई अतः यह पूर्वकालिक क्रिया होगी जिसमें 'क्त्वा' प्रत्यय लगाकर 'पठित्वा' रूप बना है। अतः 'क्त्वा' पूर्वकालिक कृदन्त है।

➤ 'क्त्वा' प्रत्यय के 'क्' की "लशक्वतद्धिते" सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त्वा' शेष रहता है। कुछ धातुओं में 'इट्' का आगम होता है तो 'इत्वा' लगता है।

**जैसे-** बालकः पठित्वा गृहं गच्छति।

यहाँ 'पठ्' धातु में 'इट्' का आगम होकर 'क्त्वा' प्रत्यय लगा है, इसीलिए 'पठित्वा' बना है।

धातु + प्रत्यय

1. कृ + क्त्वा	=	कृत्वा (करके)
2. दा + क्त्वा	=	दत्त्वा (देकर)
3. पा + क्त्वा	=	पीत्वा (पीकर)

क्त्वा-प्रत्ययान्त रूप

4. गम् + क्त्वा	=	गत्वा (जाकर)
5. हस् + क्त्वा	=	हसित्वा (हँसकर)
6. जि + क्त्वा	=	जित्वा (जीतकर)
7. स्था + क्त्वा	=	स्थित्वा (ठहरकर)
8. श्रु + क्त्वा	=	श्रुत्वा (सुनकर)
9. ज्ञा + क्त्वा	=	ज्ञात्वा (जानकर)
10. पत् + क्त्वा	=	पतित्वा (गिरकर)
11. स्ना + क्त्वा	=	स्नात्वा (स्नानकर)
12. दृश् + क्त्वा	=	दृष्ट्वा (देखकर)
13. पठ् + क्त्वा	=	पठित्वा (पढ़कर)
14. लभ् + क्त्वा	=	लब्ध्वा (प्राप्तकर)
15. भू + क्त्वा	=	भूत्वा (होकर)
16. त्यज् + क्त्वा	=	त्यक्त्वा (त्यागकर)
17. कथ् + क्त्वा	=	कथयित्वा (कहकर)
18. क्री + क्त्वा	=	क्रीत्वा (खरीदकर)
19. खेल + क्त्वा	=	खेलित्वा (खेलकर)
20. नी + क्त्वा	=	नीत्वा (लेकर)
21. पृच्छ् + क्त्वा	=	पृष्ट्वा (पूँछकर)
22. ग्रह् + क्त्वा	=	ग्रहीत्वा (लेना)

### 2. ल्यप् प्रत्यय

➤ जब धातु से पहले कोई उपसर्ग होता है तो 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'ल्यप्' आदेश हो जाता है।

➤ 'ल्यप्' में 'ल्' और 'प्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'य' शेष बचता है। "लशक्वतद्धिते" सूत्र से 'ल्' की तथा "हलन्त्यम्" सूत्र से 'प्' की इत्संज्ञा।

➤ 'क्त्वा' और 'ल्यप्' प्रत्ययों से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं और दोनों प्रत्यय 'पूर्वकालिक कृदन्त' हैं।

➤ समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् (7.1.37) सूत्र से 'ल्यप्' प्रत्यय का विधान होता है।

➤ 'ल्यप्' प्रत्ययान्त पदों का भी वही अर्थ है जो 'क्त्वा' प्रत्यय का है।

**जैसे-** अनुभूय (अनुभव करके), आगम्य (आकर), प्रणम्य (प्रणाम करके) आदि।

(i) छात्रः आगत्य पठति (छात्र आकर पढ़ता है)

(ii) मनुष्यः सर्वं विस्मृत्य सुखी भवति (मनुष्य सब कुछ भूलकर सुखी होता है)



उपसर्ग + धातु + प्रत्यय = प्रत्ययान्त रूप ( अर्थसहित )

1. अनु + भू + ल्यप् = अनुभूय (अनुभव करके)
2. आङ् + गम् + ल्यप् = आगम्य (आकर)
3. वि + नी + ल्यप् = विनीय (लेकर)
4. आङ् + प्रच्छ् + ल्यप् = आपृच्छ्य (पूँछकर)
5. प्र + कृ + ल्यप् = प्रकृत्य (करके)
6. प्र + आप् + ल्यप् = प्राप्य (प्राप्तकर)
7. वि + चि + ल्यप् = विचित्य (चुनकर)
8. वि + रम् + ल्यप् = विरम्य/विरत्य (रुककर)
9. प्र + नम् + ल्यप् = प्रणत्य/प्रणम्य (प्रणाम करके)
10. उत् + तृ + ल्यप् = उत्तीर्य (तैरकर, पारकर)
11. आ + दा + ल्यप् = आदाय (लेकर)
12. उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य (समीप जाकर)
13. वि + हा + ल्यप् = विहाय (छोड़कर)
14. नि + पा + ल्यप् = निपीय (पानकर)
15. वि + स्मृ + ल्यप् = विस्मृत्य (भूलकर)
16. अव + तृ + ल्यप् = अवतीर्य (उतरकर)
17. सम् + श्रु + ल्यप् = संश्रुत्य (सुनकर)
18. आ + नी + ल्यप् = आनीय (लाकर)
19. प्र + स्था + ल्यप् = प्रस्थाय (चलकर)
20. उत् + लिख् + ल्यप् = उल्लिख्य (ऊपर लिखकर)
21. वि + ज्ञा + ल्यप् = विज्ञाय (अच्छी तरह से जानकर)
22. सम् + भू + ल्यप् = सम्भूय (मिलकर, इकट्ठा होकर)
23. प्र + पठ् + ल्यप् = प्रपठ्य (पढ़कर)
24. आङ् + पा + ल्यप् = आपीय (पूरी तरह से पीकर)
25. अनु + श्रु + ल्यप् = अनुश्रूय (सुन-सुनकर)
26. उप + कृ + ल्यप् = उपकृत्य (उपकार करके)
27. प्र + कुप् + ल्यप् = प्रकुप्य (अत्यधिक क्रोधित होकर)
28. अव + मुच् + ल्यप् = अवमुच्य (छोड़कर)
29. उप + भुज् + ल्यप् = उपभुज्य (खाकर)
30. सम् + दृश् + ल्यप् = सन्दृश्य (अच्छी तरह से देखकर)
31. उप + लभ् + ल्यप् = उपलभ्य (प्राप्त करके)

### 3. तुमुन् प्रत्यय

➤ तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् (3.3.10) इस सूत्र से 'तुमुन्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

- 'के लिए' यह अर्थ बताना हो तो धातुओं से 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे- पठितुम् (पढ़ने के लिए) गन्तुम् (जाने के लिए), क्रेतुम् (खरीदने के लिए) आदि।
- इसीलिए 'तुमुन्' प्रत्यय को 'हेतु कृदन्त' कहते हैं। अर्थात् धातु के अर्थ के साथ 'के लिए' जोड़ देने पर तुमुन्नत पदों का अर्थ निकल आता है। जैसे- 'पठ्' धातु का अर्थ है- पढ़ना। इसमें 'तुमुन्' जोड़ने से बनेगा- पठितुम्, जिसका अर्थ है- पढ़ने के लिए।
- 'तुमुन्' प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।
- कर्ता जिस कार्य के निमित्त कोई क्रिया करता है उसे निमित्तार्थक क्रिया कहते हैं, निमित्तार्थक क्रिया में ही 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है।
- जैसे- बालकः पठितुं विद्यालयं गच्छति। (बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है)
- यहाँ बालक रूपी कर्ता पढ़ने के निमित्त विद्यालय जाता है; अतः निमित्तार्थक क्रिया 'पठ्' में तुमुन् प्रत्यय लगकर 'पठितुम्' बना। बालक की गमन क्रिया पढ़ने के निमित्त हो रही है।
- 'तुमुन्' प्रत्यय में नकार की 'हलन्त्यम्' से और उकार की "उपदेशोऽनुनासिक इत्" से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर 'तुम्' शेष रहता है।

### तुमुन् प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु + प्रत्यय	=	तुमुन्नत पद ( अर्थ सहित )
1. भू + तुमुन्	=	भवितुम् (होने के लिए)
2. पा + तुमुन्	=	पातुम् (पीने के लिए)
3. पठ् + तुमुन्	=	पठितुम् (पढ़ने के लिए)
4. गम् + तुमुन्	=	गन्तुम् (जाने के लिए)
5. स्था + तुमुन्	=	स्थातुम् (बैठने के लिए)
6. दृश् + तुमुन्	=	द्रष्टुम् (देखने के लिए)
7. दा + तुमुन्	=	दातुम् (देने के लिए)
8. लभ् + तुमुन्	=	लब्धुम् (पाने के लिए)
9. ज्ञा + तुमुन्	=	ज्ञातुम् (जानने के लिए)
10. हन् + तुमुन्	=	हन्तुम् (मारने के लिए)
11. कृ + तुमुन्	=	कर्तुम् (करने के लिए)
12. जि + तुमुन्	=	जेतुम् (जीतने के लिए)
13. श्रु + तुमुन्	=	श्रोतुम् (सुनने के लिए)
14. प्रच्छ् + तुमुन्	=	प्रष्टुम् (पूँछने के लिए)
15. त्यज् + तुमुन्	=	त्यक्तुम् (छोड़ने के लिए)
16. स्ना + तुमुन्	=	स्नातुम् (नहाने के लिए)
17. गै (गा) + तुमुन्	=	गातुम् (गाने के लिए)

18. खाद् + तुमुन् = खादितुम् (खाने के लिए)  
 19. क्रीड् + तुमुन् = क्रीडितुम् (खेलने के लिए)  
 20. वन्द् + तुमुन् = वन्दितुम्  
 (वन्दना करने के लिए)  
 21. भुज् + तुमुन् = भोक्तुम् (खाने के लिए)  
 22. शीङ् + तुमुन् = शयितुम् (सोने के लिए)  
 23. वच् + तुमुन् = वक्तुम् (बोलने के लिए)  
 24. ग्रह् + तुमुन् = ग्रहीतुम् (लेने के लिए)  
 25. अस् + तुमुन् = भवितुम् (होने के लिए)  
 26. क्षिप् + तुमुन् = क्षेप्तुम् (फेंकने के लिए)  
 27. क्री + तुमुन् = क्रेतुम् (खरीदने के लिए)  
 28. चि + तुमुन् = चेतुम् (चुनने के लिए)  
 29. कुप् + तुमुन् = कोपितुम्  
 (क्रोध करने के लिए)  
 30. मुच् + तुमुन् = मोक्तुम् (छोड़ने के लिए)

#### 4. यत् प्रत्यय

- “अचो यत्” (3.1.97) सूत्र से ‘यत्’ प्रत्यय का विधान किया जाता है। अर्थात् अच् (स्वर) वर्ण जिन धातुओं के अन्त में होते हैं, उनसे ‘यत्’ प्रत्यय होता है।  
 ➤ ‘चाहिए’ या ‘योग्य’ अर्थ को बताने वाले ‘यत्’ प्रत्यय के ‘त्’ की ‘हलन्त्यम्’ सूत्र से इत्संज्ञा होकर लोप होने पर केवल ‘य’ शेष बचता है।  
 ➤ ‘यत्’ प्रत्यय जुड़ने के बाद धातु के स्वर को गुण हो जाता है।

नपुंसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
चि + यत् = चेयम् (चयन करने योग्य)	चेयः	चेया
पा + यत् = पेयम् (पीने योग्य)	पेयः	पेया
नी + यत् = नेयम् (ले जाने योग्य)	नेयः	नेया
जि + यत् = जेयम् (जीतने योग्य)	जेयः	जेया
श्रु + यत् = श्रव्यम् (सुनने योग्य)	श्रव्यः	श्रव्या
दा + यत् = देयम् (देने योग्य)	देयः	देया
गै + यत् = गेयम् (गाने योग्य)	गेयः	गेया
भू + यत् = भव्यम् (होने योग्य)	भव्यः	भव्या
भी + यत् = भेयम् (डरने योग्य)	भेयः	भेया
लभ् + यत् = लभ्यम् (प्राप्त करने योग्य)	लभ्यः	लभ्या
शक् + यत् = शक्यम् (होने योग्य)	शक्यः	शक्या
हन् + यत् = वध्यम् (वधयोग्य)	वध्यः	वध्या

- पोरदुपधात् ( 3.1.98 ) - सूत्र से पवर्ग अन्त में हो अथवा ह्रस्व अकार उपधा में हो, ऐसी धातुओं से ‘यत्’ प्रत्यय होता है जैसे- लभ् + यत् = लभ्यम्  
 शप् + यत् = शप्यम्

#### 5. क्तिन् प्रत्यय

- स्त्रियां क्तिन् (3.3.94) सूत्र से भाव अर्थ में स्त्रीत्व की विवक्षा होने पर धातु से ‘क्तिन्’ प्रत्यय होता है।  
 ➤ ‘क्तिन्’ में ककार और नकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल ‘ति’ शेष बचता है। “लशक्वतद्धिते” से ‘क्’ की तथा “हलन्त्यम्” से ‘न्’ की इत्संज्ञा होती है।  
 ➤ ‘क्तिन्’ प्रत्यय से बने शब्द सदैव स्त्रीलिङ्ग में होंगे।  
 जैसे- कृतिः, गतिः, भूतिः, धृतिः आदि।

##### उदाहरण-

- |                    |   |         |
|--------------------|---|---------|
| (1) कृ + क्तिन्    | = | कृतिः   |
| (2) नी + क्तिन्    | = | नीतिः   |
| (3) गम् + क्तिन्   | = | गतिः    |
| (4) धृ + क्तिन्    | = | धृतिः   |
| (5) भू + क्तिन्    | = | भूतिः   |
| (6) नम् + क्तिन्   | = | नतिः    |
| (7) स्तु + क्तिन्  | = | स्तुतिः |
| (8) श्रु + क्तिन्  | = | श्रुतिः |
| (9) स्मृ + क्तिन्  | = | स्मृतिः |
| (10) दृश् + क्तिन् | = | दृष्टिः |
| (11) मन् + क्तिन्  | = | मतिः    |
| (12) भज् + क्तिन्  | = | भक्तिः  |
| (13) बुध् + क्तिन् | = | बुद्धिः |
| (14) मुच् + क्तिन् | = | मुक्तिः |
| (15) शम् + क्तिन्  | = | शान्तिः |
| (16) गै + क्तिन्   | = | गीतिः   |
| (17) पुष् + क्तिन् | = | पुष्टिः |

#### 6. ल्युट् प्रत्यय

- “नपुंसके भावे क्तः” (3.3.114) “ल्युट् च” (3.3.115) सूत्र से भाववाचक अर्थ में नपुंसकत्व में ‘ल्युट्’ प्रत्यय लगता है।  
 ➤ ल्युट् प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिङ्ग में ही होते हैं।  
 जैसे- पठनम्, लेखनम्, दानम्, लेखनम् आदि।  
 ➤ ‘ल्युट्’ प्रत्यय के ‘ल्’ और ‘ट्’ की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, ‘यु’ शेष रहता है। तथा ‘यु’ को “युवोरनाकौ” सूत्र से ‘अन’ आदेश हो जाता है।

##### उदाहरण-

- |                  |   |         |
|------------------|---|---------|
| 1. लिख् + ल्युट् | = | लेखनम्  |
| 2. दा + ल्युट्   | = | दानम्   |
| 3. अर्च + ल्युट् | = | अर्चनम् |
| 4. कथ् + ल्युट्  | = | कथनम्   |
| 5. पठ् + ल्युट्  | = | पठनम्   |

6. ज्ञा + ल्युट्	=	ज्ञानम्
7. कृ + ल्युट्	=	करणम्
8. नी + ल्युट्	=	नयनम्
9. ग्रह + ल्युट्	=	ग्रहणम्
10. गम् + ल्युट्	=	गमनम्
11. भू + ल्युट्	=	भवनम्
12. दृश् + ल्युट्	=	दर्शनम्
13. हन् + ल्युट्	=	हननम्
14. अपि + इङ् + ल्युट्	=	अध्ययनम्
15. श्रु + ल्युट्	=	श्रवणम्
16. स्मृ + ल्युट्	=	स्मरणम्
17. हृ + ल्युट्	=	हरणम्
18. कथ् + ल्युट्	=	कथनम्
19. शीङ् + ल्युट्	=	शयनम्
20. चि + ल्युट्	=	चयनम्
21. यच् + ल्युट्	=	याचनम्

### 7. तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय

- “तव्यत्तव्यानीयर्ः” (3.1.96) सूत्र से धातु के बाद तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं।
- तव्यत् के त् का लोप होकर ‘तव्य’ एवं ‘अनीयर्’ प्रत्यय के ‘र्’ का लोप होकर ‘अनीय’ शेष बचता है।
- तव्यत् और अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग ‘चाहिए’ या ‘योग्यता’ अर्थ में होता है।
- जैसे-
- पठितव्यम् (पढ़ना चाहिए)
- पठनीयम् (पढ़ना चाहिए)
- इन प्रत्ययों का प्रयोग कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है; कर्तृवाच्य में नहीं।
- जैसे- मया पठनीयम्।
- मया पठितव्यम्।

### ‘अनीयर्’ प्रत्यय के उदाहरण

1. कथ् + अनीयर्	=	कथनीयम्	-	कथनीयः	-	कथनीया
2. भू + अनीयर्	=	भवनीयम्	-	भवनीयः	-	भवनीया
3. दृश् + अनीयर्	=	दर्शनीयम्	-	दर्शनीयः	-	दर्शनीया
4. पठ् + अनीयर्	=	पठनीयम्	-	पठनीयः	-	पठनीया
5. पा + अनीयर्	=	पानीयम्	-	पानीयः	-	पानीया
6. कृ + अनीयर्	=	करणीयम्	-	करणीयः	-	करणीया
7. गम् + अनीयर्	=	गमनीयम्	-	गमनीयः	-	गमनीया
8. रम् + अनीयर्	=	रमणीयम्	-	रमणीयः	-	रमणीया
9. हस् + अनीयर्	=	हसनीयम्	-	हसनीयः	-	हसनीया
10. घ्रा + अनीयर्	=	घ्राणीयम्	-	घ्राणीयः	-	घ्राणीया
11. स्था + अनीयर्	=	स्थानीयम्	-	स्थानीयः	-	स्थानीया
12. वच् + अनीयर्	=	वचनीयम्	-	वचनीयः	-	वचनीया
13. लिख् + अनीयर्	=	लेखनीयम्	-	लेखनीयः	-	लेखनीया
14. श्रु + अनीयर्	=	श्रवणीयम्	-	श्रवणीयः	-	श्रवणीया
15. दा + अनीयर्	=	दानीयम्	-	दानीयः	-	दानीया

### तव्यत् प्रत्यय के उदाहरण

1. कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्तव्या
2. गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
3. पच् + तव्यत्	=	पक्तव्यम्	-	पक्तव्यः	-	पक्तव्या
4. दृश् + तव्यत्	=	द्रष्टव्यम्	-	द्रष्टव्यः	-	द्रष्टव्या
5. प्रच्छ् + तव्यत्	=	प्रष्टव्यम्	-	प्रष्टव्यः	-	प्रष्टव्या
6. भू + तव्यत्	=	भवितव्यम्	-	भवितव्यः	-	भवितव्या

7. स्था + तव्यत्	=	स्थातव्यम्	-	स्थातव्यः	-	स्थातव्या
8. रुद् + तव्यत्	=	रोदितव्यम्	-	रोदितव्यः	-	रोदितव्या
9. नृत् + तव्यत्	=	नर्तितव्यम्	-	नर्तितव्यः	-	नर्तितव्या
10. पठ् + तव्यत्	=	पठितव्यम्	-	पठितव्यः	-	पठितव्या
11. लिख् + तव्यत्	=	लेखितव्यम्	-	लेखितव्यः	-	लेखितव्या
12. स्मृ + तव्यत्	=	स्मर्तव्यम्	-	स्मर्तव्यः	-	स्मर्तव्या
13. कृ + तव्यत्	=	कर्तव्यम्	-	कर्तव्यः	-	कर्तव्या
14. गम् + तव्यत्	=	गन्तव्यम्	-	गन्तव्यः	-	गन्तव्या
15. श्रु + तव्यत्	=	श्रोतव्यम्	-	श्रोतव्यः	-	श्रोतव्या
16. जि + तव्यत्	=	जेतव्यम्	-	जेतव्यः	-	जेतव्या
17. दा + तव्यत्	=	दातव्यम्	-	दातव्यः	-	दातव्या
18. पा + तव्यत्	=	पातव्यम्	-	पातव्यः	-	पातव्या
19. ज्ञा + तव्यत्	=	ज्ञातव्यम्	-	ज्ञातव्यः	-	ज्ञातव्या

### 8. क्त और क्तवतु प्रत्यय

- क्तकृतवतु निष्ठा (1.1.26)- क्त और क्तवतु प्रत्यय निष्ठासंज्ञक होते हैं।
- निष्ठा (3.2.102)- सूत्र से क्त और क्तवतु प्रत्यय भूतकाल अर्थ में सभी धातुओं से लगाये जाते हैं।
- 'क्त' प्रत्यय में 'क्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है केवल 'त' शेष बचता है। यह प्रत्यय भाववाच्य एवं कर्मवाच्य में प्रयुक्त होता है।
- क्त और क्तवतु प्रत्ययों से बने पदों का रूप तीनों लिङ्गों में होता है-  
जैसे- पठितः (पुं.) पठिता (स्त्री.) पठितम् (नपुं.) - क्त प्रत्ययान्तपद  
पठितवान् (पुं.) पठितवती (स्त्री.) पठितवत् (नपुं.) - क्तवतु प्रत्ययान्तपद

### 'क्त' प्रत्ययान्त पदों की सूची-

	पु.	स्त्री.	नपुं.
1. गम् + क्त	= गतः	गता	गतम्
2. कृ + क्त	= कृतः	कृता	कृतम्
3. पठ् + क्त	= पठितः	पठिता	पठितम्
4. प्रच्छ् + क्त	= पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्
5. लिख् + क्त	= लिखितः	लिखिता	लिखितम्
6. कथ् + क्त	= कथितः	कथिता	कथितम्
7. कम्प् + क्त	= कम्पितः	कम्पिता	कम्पितम्
8. चिन्त् + क्त	= चिन्तितः	चिन्तिता	चिन्तितम्
9. जि + क्त	= जितः	जिता	जितम्
10. पूज् + क्त	= पूजितः	पूजिता	पूजितम्
11. विद् + क्त	= विदितः	विदिता	विदितम्
12. नश् + क्त	= नष्टः	नष्टा	नष्टम्
13. शक् + क्त	= शक्तः	शक्ता	शक्तम्
14. शिक्ष् + क्त	= शिक्षितः	शिक्षिता	शिक्षितम्
15. भू + क्त	= भूतः	भूता	भूतम्
16. शोभ् + क्त	= शोभितः	शोभिता	शोभितम्

17. प्रविश् + क्त	=	प्रविष्टः	प्रविष्टा	प्रविष्टम्
18. भाष् + क्त	=	भाषितः	भाषिता	भाषितम्
19. मिल् + क्त	=	मिलितः	मिलिता	मिलितम्
20. पा + क्त	=	पीतः	पीता	पीतम्
21. अधि + इङ् + क्त	=	अधीतः	अधीता	अधीतम्
21. आङ् + हु + क्त	=	आहूतः	आहूता	आहूतम्
22. ज्वल् + क्त	=	ज्वलितः	ज्वलिता	ज्वलितम्
23. जीव् + क्त	=	जीवितः	जीविता	जीवितम्
24. रुच् + क्त	=	रुचितः	रुचिता	रुचितम्

### क्तवतु प्रत्ययान्त पदों की सूची

		पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. कृ + क्तवतु	=	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्
2. गम् + (जाना)	=	गतवान्	गतवती	गतवत्
3. श्रु (सुनना)	=	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
4. पूज् (पूजा करना)	=	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
5. लिख् (लिखना)	=	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्
6. ज्ञा (जानना)	=	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
7. अर्च् (पूजा करना)	=	अर्चितवान्	अर्चितवती	अर्चितवत्
8. आ दिश् (आज्ञा देना)	=	आदिष्टवान्	आदिष्टवती	आदिष्टवत्
9. आप् (प्राप्त करना)	=	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
10. आ + रुह् (चढ़ना)	=	आरूढवान्	आरूढवती	आरूढवत्
11. उप् + विश् (बैठना)	=	उपविष्टवान्	उपविष्टवती	उपविष्टवत्
12. कथ् (कहना)	=	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
13. क्री (खरीदना)	=	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
14. पत् (गिरना)	=	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
15. त्यज् (त्यागना)	=	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
16. लभ् (प्राप्त करना)	=	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
17. सृज् (सृष्टि करना)	=	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्
18. ग्रह् (ग्रहण करना)	=	गृहीतवान्	गृहीतवती	गृहीतवत्
19. पा (पीना)	=	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्
20. भू (होना)	=	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
21. स्ना (स्नान करना)	=	स्नातवान्	स्नातवती	स्नातवत्

### 9. णमुल् प्रत्यय

- “आभीक्ष्ये णमुल् च” (3.4.22) सूत्र से समान कर्ता वाले दो धातुओं से पूर्वकालिक धातु से ‘णमुल्’ प्रत्यय होता है; बार-बार होना अर्थ द्योतित होने पर।

- यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ ‘णमुल्’ प्रत्यय जोड़ा जाता है। ‘णमुल्’ में ‘अम्’ शेष रहता है।
- णमुल् प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं, इनके रूप नहीं चलते।

**‘णमुल्’ प्रत्ययान्त पदों की सूची**

- (1) तड् + णमुल् = ताडं ताडम् (मार मारकर)
- (2) दा + णमुल् = दायं दायम् (दे-देकर)
- (3) पा + णमुल् = पायं पायम् (पी-पीकर)
- (4) गम् + णमुल् = गामं गामम् (जा-जाकर)
- (5) वृ + णमुल् = वारं वारम् (बार-बार)
- (6) छिद् + णमुल् = छेदं छेदम् (छेद-छेदकर)
- (7) नम् + णमुल् = नामं नामम् (झुक-झुककर)
- (8) पठ् + णमुल् = पाठं पाठम् (पढ़-पढ़कर)
- (9) रुद् + णमुल् = रोदं रोदम् (रो-रोकर)
- (10) भिद् + णमुल् = भेदं भेदम् (फोड़-फोड़कर)
- (11) पच् + णमुल् = पाचं पाचम् (पका पकाकर)
- (12) दृश् + णमुल् = दर्शं दर्शम् (बार बार देखकर)
- (13) नश् + णमुल् = नाशं नाशम् (नष्ट कर करके)
- (14) लभ् + णमुल् = लाभं लाभम् (बार बार प्राप्त करके)
- (15) ग्रह् + णमुल् = ग्राहं ग्राहम् (बार बार पकड़कर)

- शतृ और शानच् - दोनों प्रत्यय वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्तर्गत गिने जाते हैं।
- “तौ सत्” सूत्र से शतृ और शानच् - दोनों प्रत्ययों की ‘सत् संज्ञा’ होती है।
- ‘लगातार कार्य का होना’ इस अर्थ को बताने के लिए इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है।
- शतृ प्रत्यय में ‘अत्’ और ‘शानच्’ में ‘आन’ शेष बचता है।
- परस्मैपदी धातुओं से ‘शतृ’ एवं आत्मनेपदी धातुओं से ‘शानच्’ प्रत्यय का विधान किया जाता है। किन्तु उभयपदी धातुओं से दोनों प्रत्यय होते हैं।
- ‘शतृ’ और ‘शानच्’ प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों और सातों विभक्तियों में चलते हैं-

- (i) पठ् + शतृ = पठन् (पुं.) पठन्ती (स्त्री.) पठत् (नपु.)
- (ii) कम्प् + शानच् = कम्पमानः (पुं.) कम्पमाना (स्त्री.) कम्पमानम् (नपु.)

➤ ये प्रत्यय कर्ता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- पठन् बालकः गच्छति। (पढ़ता हुआ बालक जाता है)

भाषमाणः शिक्षकः लिखति। (बोलता हुआ शिक्षक लिखता है)

**10. शतृ प्रत्यय और शानच् प्रत्यय**

- लटः शतृशानच्चावप्रथमासमानाधिकरणे ( 3.2.124 )  
सूत्र से शतृ और शानच् प्रत्ययों का विधान होता है।

**शतृ प्रत्ययान्त शब्दों की सूची**

धातु ( अर्थ सहित )	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. पठ् (पढ़ना)	पठन्	पठन्ती	पठत्
2. लिख् (लिखना)	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
3. क्रीड् (खेलना)	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
4. कृ (करना)	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्
5. धाव् (दौड़ना)	धावन्	धावन्ती	धावत्
6. शृ (सुनना)	शृण्वन्	शृण्वती	शृण्वत्
7. आप् (पाना)	आप्नुवन्	आप्नुवती	आप्नुवत्
8. गम् (जाना)	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
9. गर्ज् (गरजना)	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
10. दृश् (देखना)	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
11. कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्
12. अर्च् (पूजना)	अर्चन्	अर्चन्ती	अर्चत्
13. क्री (खरीदना)	क्रीणन्	क्रीणती	क्रीणत्
14. गै (गाना)	गायन्	गायन्ती	गायत्
15. छिद् (काटना)	छिन्दन्	छिन्दन्ती	छिन्दत्
16. शक् (सकना)	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती	शक्नुवत्
17. स्वप् (सोना)	स्वपन्	स्वपन्ती	स्वपत्
18. स्मृ (स्मरण करना)	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
19. हृ (हरण करना)	हरन्	हरन्ती	हरत्

20. हस् (हँसना)	हसन्	हसन्ती	हसत्
21. अस् (होना)	सन्	सती	सत्
22. खाद् (खाना)	खादन्	खादन्ती	खादत्
23. चल् (चलना)	चलन्	चलन्ती	चलत्
24. ज्ञा (जानना)	जानन्	जानती	जानत्
25. भू (होना)	भवन्	भवन्ती	भवत्
26. कथ् (कहना)	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्

### शानच् प्रत्ययान्त पदों की सूची

धातु ( अर्थ सहित )	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. भाष्	भाषमाणः	भाषमाणा	भाषमाणम्
2. एध्	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
3. कृ	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्
4. यज्	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
5. लभ्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्
6. याच्	याचमानः	याचमाना	याचमानम्
7. नी	नयमानः	नयमाना	नयमानम्
8. वृध्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्
9. वृत् (होना)	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
10. शी (सोना)	शयानः	शयाना	शयानम्
11. कम्प् (काँपना)	कम्पमानः	कम्पमाना	कम्पमानम्
12. आस् (बैठना)	आसीनः	आसीना	आसीनम्
13. जन् (पैदा होना)	जायमानः	जायमाना	जायमानम्
14. त्वर् (जल्दी करना)	त्वरमाणः	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
15. सेव् (सेवा करना)	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्
16. सह् (सहन करना)	सहमानः	सहमाना	सहमानम्
17. कथ् (कहना)	कथयमाणः	कथयमाणा	कथयमाणम्

### तद्धितप्रत्यय

**तद्धितप्रत्यय-** संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवम् अव्ययपदों से जोड़े जाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय हैं। तद्धितप्रत्यय के योग से बने शब्द 'तद्धितान्त' कहे जाते हैं।

#### 1. मतुप् प्रत्यय

- (i) तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ( 5.2.94 ) सूत्र से 'वह इसका है' 'वह इसमें है' - इन अर्थों में 'मनुप्' प्रत्यय होता है।  
(ii) 'मतुप्' के पकार एवं उकार का योग होकर 'मत्' शेष बचता है।  
(iii) 'मतुप्' प्रत्ययान्त पद विशेषण होते हैं अतः विशेष्य के अनुसार इनका लिङ्ग, वचन और विभक्ति निर्धारित होती है।

#### मनुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची-

1. गो + मतुप् = गोमत् ( गोमान् ) गौ वाला

2. मति + मतुप् = मतिमत् ( मतिमान् ) बुद्धि वाला  
3. श्री + मतुप् = श्रीमत् ( श्रीमान् ) श्री से युक्त  
4. धी + मतुप् = धीमत् ( धीमान् ) बुद्धि वाला  
5. आयुस् + मतुप् = आयुष्मत् ( आयुष्मान् ) दीर्घायु  
( 1 ) मतुप् ( मत् ) का 'म' बदलकर 'व' हो जाता है,  
यदि- अकारान्त या आकारान्त हो; जैसे-  
(i) बल + मतुप् = बलवत् ( बलवान् )  
(ii) विद्या + मतुप् = विद्यावत् ( विद्यावान् )  
(iii) धन + मतुप् = धनवत् ( धनवान् )  
(iv) दया + मतुप् = दयावत् ( दयावान् )  
(v) गुण + मतुप् = गुणवत् ( गुणवान् )  
(vi) भग + मतुप् = भगवत् ( भगवान् )  
( 2 ) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम स्वर के पहले 'म्' हो-  
लक्ष्मी + मतुप् = लक्ष्मीवान्



( 3 ) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम व्यञ्जन के पहले 'अ' या 'आ' हो। जैसे-

यशस् + मतुप् = यशस्वत् (यशस्वान्)

भास् + मतुप् = भास्वत् (भास्वान्)

( 4 ) जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से कोई हो। जैसे-

विद्युत् + मतुप् = विद्युत्वत् (विद्युत्वान्)

सुहृद् + मतुप् = सुहृद्वत् (सुहृद्वान्)

**मतुप् प्रत्ययान्त पदों की सूची —**

शब्द + प्रत्यय	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
1. धन् + मतुप्	धनवान्	धनवती	धनवत्
2. रूप + मतुप्	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
3. बल + मतुप्	बलवान्	बलवती	बलवत्
4. गुण + मतुप्	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
5. रस + मतुप्	रसवान्	रसवती	रसवत्
6. धी + मतुप्	धीमान्	धीमती	धीमत्
7. श्री + मतुप्	श्रीमान्	श्रीमती	श्रीमत्

## 2. इनि प्रत्यय

( 1 ) अत इनिठनौ ( 5.2.115 ) अर्थात् अकारान्त शब्दों से 'इनि' और 'ठन्' प्रत्यय होते हैं।

( 2 ) 'इनि' प्रत्यय के अन्त में विद्यमान 'इ' का लोप हो जाता है। अतः केवल 'इन्' शेष बचता है।

( 3 ) यह प्रत्यय भी 'वाला' अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे-

धन + इनि = धनिन् (धनी) = धन वाला।

**इनि ( इन् ) प्रत्ययान्त पदों की सूची**

1. चक्र + इनि	=	चक्रिन् / चक्री
2. धन + इनि	=	धनिन् / धनी
3. बल + इनि	=	बलिन् / बली
4. दुःख + इनि	=	दुःखिन् / दुःखी
5. गुण + इनि	=	गुणिन् / गुणी
6. कर + इनि	=	करिन् / करी
7. हस्त + इनि	=	हस्तिन् / हस्ती
8. दण्ड + इनि	=	दण्डिन् / दण्डी
9. शिखा + इनि	=	शिखिन् / शिखी
10. सुख + इनि	=	सुखिन् / सुखी
11. कर्म + इनि	=	कर्मिन् / कर्मी
12. प्रणय + इनि	=	प्रणयिन् / प्रणयी
13. माला + इनि	=	मालिन् / माली
14. दोष + इनि	=	दोषिन् / दोषी
15. ज्ञान + इनि	=	ज्ञानिन् / ज्ञानी

16. दान + इनि = दानिन् / दानी

17. माया + इनि = मायिन् / मायी

## 3. त्व और तल् प्रत्यय

( 1 ) "तस्य भावस्त्वतलौ" (5.1.119) सूत्र से किसी शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए उस शब्द में 'त्व' अथवा 'तल्' (ता) प्रत्यय जोड़ देते हैं।

( 2 ) 'त्व' से अन्त होने वाले शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और 'तल्' से अन्त होने वाले शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

( 3 ) 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (4.2.43) सूत्र से तल् प्रत्यय होता है। जैसे- ग्रामता, बन्धुता, जनता आदि।

## 'त्व' और तल् प्रत्ययान्त सूची

शब्द	'त्व' प्रत्ययान्त पद	'तल्' प्रत्ययान्त पद
1. कुशल	कुशलत्वम्	कुशलता
2. गुरु	गुरुत्वम्	गुरुता
3. मित्र	मित्रत्वम्	मित्रता
4. देव	देवत्वम्	देवता
5. सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
6. मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता
7. शिशु	शिशुत्वम्	शिशुता
8. पशु	पशुत्वम्	पशुता
9. मूर्ख	मूर्खत्वम्	मूर्खता
10. दुर्जन	दुर्जनत्वम्	दुर्जनता
11. महत्	महत्त्वम्	महत्ता

## 4. ठक् प्रत्यय

( 1 ) 'ठक्' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर 'ठक्' के 'ठ्' के स्थान पर 'इक्' आदेश होता है।

( 2 ) शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है; जैसे- 'अ' को 'आ', 'इ' को 'ऐ', 'उ' को 'औ' हो जाता है। अर्थात् आदि अच् की वृद्धि होती है।

## ठक् ( इक् ) प्रत्ययान्त पदों की सूची

1. धर्म + ठक् (इक्)	=	धार्मिकः
2. अस्ति + ठक् (इक्)	=	आस्तिकः
3. सप्ताह + ठक् (इक्)	=	साप्ताहिकः
4. संस्कृति + ठक् (इक्)	=	सांस्कृतिकः
5. अश्व + ठक् (इक्)	=	आश्विकः
6. साहित्य + ठक् (इक्)	=	साहित्यिकः
7. लोक + ठक् (इक्)	=	लौकिकः
8. दिन + ठक् (इक्)	=	दैनिकः

### स्त्रीप्रत्यय

पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'स्त्रीप्रत्यय' कहा जाता है।

जैसे- टाप्, चाप्, डाप्, डीप्, डीष्, डीन्, ऊङ्, ति आदि।

#### ( 1 ) टाप् प्रत्यय-

( i ) अजाद्यतष्टाप् ( 4.1.4 ) सूत्र से अजादिगण में गिने गये शब्दों को और अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'टाप्' प्रत्यय लगाया जाता है।

( ii ) 'टाप्' प्रत्यय के 'ट्' और 'प्' का लोप होकर केवल 'आ' बचता है। अतः 'टाप्' प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं।

( iii ) 'टाप्' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप 'रमा' की भाँति चलते हैं। जैसे-

अज + टाप्	=	अजा
चटक + टाप्	=	चटका
सुत + टाप्	=	सुता
शूद्र + टाप्	=	शूद्रा
कनिष्ठ + टाप्	=	कनिष्ठा
प्रथम + टाप्	=	प्रथमा
बाल + टाप्	=	बाला
अश्व + टाप्	=	अश्वा
क्षत्रिय + टाप्	=	क्षत्रिया
अनुकूल + टाप्	=	अनुकूला
सुनयन + टाप्	=	सुनयना
अचल + टाप्	=	अचला
कुशल + टाप्	=	कुशला

नोट- 'टाप्' प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो, और 'क' से पूर्व 'अ' हो तो.....'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है। जैसे-

कारक + टाप्	=	कारिका
नाटक + टाप्	=	नाटिका
बालक + टाप्	=	बालिका
अध्यापक + टाप्	=	अध्यापिका
गायक + टाप्	=	गायिका

#### ( 2 ) डीष् प्रत्यय-

( i ) 'षिद्गौरादिभ्यश्च' ( 4.1.4.1 ) सूत्र से 'डीष्' प्रत्यय का विधान किया जाता है।

( ii ) जिन प्रत्ययों में 'षकार' का लोप हुआ हो, ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए 'डीष्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

( iii ) 'डीष्' में 'ङ्' की और 'ष्' की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है, केवल 'ई' शेष बचता है। इसीलिए डीष् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग पद कहलाते हैं।

( iv ) डीप् प्रत्ययान्त पदों का रूप 'नदी' की तरह चलता है।

जैसे-

नर्तक + डीष्	=	नर्तकी
गौर + डीष्	=	गौरी
नट + डीष्	=	नटी
मातामह + डीष्	=	मातामही
चन्द्रमुख + डीष्	=	चन्द्रमुखी
मनुष्य + डीष्	=	मनुषी
शिखण्ड + डीष्	=	शिखण्डी
तट + डीष्	=	तटी
शूद्र + डीष्	=	शूद्री

#### ( 3 ) डीप् प्रत्यय-

( i ) 'डीप्' प्रत्यय के 'ङ्' और 'प्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

( ii ) डीप् प्रत्ययान्त पद ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग कहलाते हैं, इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलता है।

( iii ) "टिड्ढाणञ् ....." "वयसि प्रथमे" "द्विगोः" आदि सूत्रों से 'डीप्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

नद + डीप्	=	नदी
देव + डीप्	=	देवी
तरुण + डीप्	=	तरुणी
गार्ग्य + डीप्	=	गार्गी
कुमार + डीप्	=	कुमारी
किशोर + डीप्	=	किशोरी
त्रिलोक + डीप्	=	त्रिलोकी
अष्टाध्याय + डीप्	=	अष्टाध्यायी
पञ्चवट + डीप्	=	पञ्चवटी
त्रिपाद + डीप्	=	त्रिपादी

#### ( 4 ) डीन् प्रत्यय-

( i ) 'डीन्' प्रत्यय का भी 'ङ्' और 'न्' का लोप होकर 'ई' शेष बचता है।

( ii ) इस प्रत्यय से बने रूप भी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग होते हैं, अतः इनका रूप भी 'नदी' की तरह चलेगा।

( iii ) "शार्ङ्गरवाद्यञो डीन्" एवं "नृनरयोर्वृद्धिश्च" से 'डीन्' प्रत्यय का विधान होता है।

जैसे-

ब्राह्मण + डीन्	=	ब्राह्मणी
शार्ङ्गरव + डीन्	=	शार्ङ्गरवी
नृ + डीन्	=	नारी
नर + डीन्	=	नारी

## वाच्य

➤ वाक्य के कहने की विधि को संस्कृत में वाच्य कहते हैं।  
वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

**1. कर्तृवाच्य-** जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।

कर्तृवाच्य के वाक्यों में-

- (i) कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है
- (ii) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है
- (iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे-

कर्ता	कर्म	क्रिया।
(i) सीता	गृहं	गच्छति।
(ii) अहं	रामायणं	पठामि।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों के कर्ता में प्रथमाविभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा क्रिया कर्ता के अनुसार प्रयुक्त है।

**2. कर्मवाच्य-** कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म की प्रधानता होती है, अतः-

- (i) कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।
- (ii) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- (iii) क्रिया का पुरुष तथा वचन कर्म के अनुसार होता है।

कर्ता	कर्म	क्रिया
जैसे- बालकेन	पुस्तकं	पठ्यते।
त्वया	विद्यालयः	गम्यते।
मया	पत्रं	लिख्यते।

**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त वाक्यों के कर्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा क्रिया कर्म के अनुसार प्रयुक्त है।  
अतः सभी वाक्य कर्मवाच्य के उदाहरण हैं।

**3. भाववाच्य-** 'भाव' का अर्थ है- क्रिया। जिस वाक्य में भाव (क्रिया) की प्रधानता होती है, उसे भाववाच्य कहते हैं।

**भाववाच्य में -**

- (i) कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- (ii) क्रिया हमेशा प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त होगी।
- (iii) अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं से ही भाववाच्य होगा।
- (iv) भाववाच्य में कर्म का अभाव होता है।

जैसे-

कर्ता	क्रिया
(i) मया	हस्यते।
(ii) त्वया	स्थीयते।
(iii) ईश्वरेण	भूयते।

**स्पष्टीकरण-** उपर्युक्त उदाहरणों में कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा अकर्मक क्रिया प्रथमपुरुष एकवचन की प्रयुक्त है। कर्म पद का अभाव है।

### वाच्य के सन्दर्भ में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

➤ वाक्य में जो प्रधान होता है, उसमें प्रथमा विभक्ति आती है। कर्तृवाच्य के वाक्यों में कर्ता प्रधान होता है, अतः इसके कर्ता में प्रथमा विभक्ति आती है। इसीप्रकार कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्म प्रधान होता है, अतः इसके कर्म में प्रथमा विभक्ति आती है।

➤ सकर्मक (कर्म सहित) धातुओं के रूप दो वाच्यों में होते हैं-

- (i) कर्तृवाच्य और (ii) कर्मवाच्य

➤ अकर्मक (कर्म रहित) धातुओं के रूप भी दो वाच्यों में होते हैं-

- (i) कर्तृवाच्य (ii) भाववाच्य

➤ सकर्मक एवं अकर्मक दोनों प्रकार की धातुओं से- कर्तृवाच्य सकर्मक धातुओं से - कर्मवाच्य अकर्मक धातुओं से - भाववाच्य

➤ कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु और प्रत्यय के बीच 'यक्' लग जाता है। 'यक्' का 'य' शेष रहता है। धातु का रूप सदा आत्मनेपद में ही चलता है।

जैसे- पठ्यते, लिख्यते, हस्यते, नीयते, पीयते आदि।

### कर्ता पदों की सूची

कर्तृवाच्य कर्ता	कर्मवाच्य कर्ता/भाववाच्य कर्ता
भवान्	भवता
भवती	भवत्या
त्वम्	त्वया
अहम्	मया
सः	तेन
सा	तया
कः	केन
का	कया

एषः	एतेन
एषा	एतया
यः	येन
या	यया
सर्वः	सर्वेण
सर्वा	सर्वया
अयम्	अनेन
इयम्	अनया
रामः	रामेण
बालकः	बालकेन
हरिः	हरिणा
मुनिः	मुनिना
पिता	पित्रा
माता	मात्रा
रमा	रमया
लता	लतया
नदी	नद्या
लक्ष्मीः	लक्ष्म्या
गुरुः	गुरुणा
साधुः	साधुना
मतिः	मत्या
युवतिः	युवत्या
मित्रम्	मित्रेण
फलम्	फलेन
वारि	वारिणा

## 4. लङ् लकार

अभूयत	अभूयेताम्	अभूयन्त
अभूयथाः	अभूयेथाम्	अभूयध्वम्
अभूये	अभूयावहि	अभूयामहि।

## 5. लृट् लकार

भविष्यते	भविष्येते	भविष्यन्ते
भविष्यसे	भविष्येथे	भविष्यध्वे
भविष्ये	भविष्यावहे	भविष्यामहे

गम् धातु ( सकर्मक, अनिट्, परस्मैपद, भ्वादिगण )

## लट् लकार

गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
गम्यसे	गम्येथे	गम्यध्वे
गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

वद् धातु ( सकर्मक, सेट्, परस्मैपद, भ्वादिगण )

उद्यते	उद्येते	उद्यन्ते
उद्यसे	उद्येथे	उद्यध्वे
उद्ये	उद्यावहे	उद्यामहे

पठ् धातु ( सकर्मक, सेट्, परस्मैपद, भ्वादिगण )

पठ्यते	पठ्येते	पठ्यन्ते
पठ्यसे	पठ्येथे	पठ्यध्वे
पठ्ये	पठ्यावहे	पठ्यामहे

## कृ धातु लट् लकार

क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते
क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे
क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे

याच् धातु ( सकर्मक, सेट्, उभयपदी, भ्वादिगण )

याच्यते	याच्येते	याच्यन्ते
याच्यसे	याच्येथे	याच्यध्वे
याच्ये	याच्यावहे	याच्यामहे

कर्मवाच्य/भाववाच्य के अनुसार प्रमुख धातुरूप

भू धातु ( अकर्मक, अनिट्, परस्मैपद )

## 1. लट् लकार

भूयते	भूयेते	भूयन्ते
भूयसे	भूयेथे	भूयध्वे
भूये	भूयावहे	भूयामहे

## 2. विधिलिङ् लकार

भूयेत	भूयेयाताम्	भूयेरन्
भूयेथाः	भूयेथाम्	भूयध्वम्
भूयेय	भूयेवहि	भूयेमहि।

## 3. लोट् लकार

भूयताम्	भूयेताम्	भूयन्ताम्
भूयस्व	भूयेथाम्	भूयध्वम्
भूयै	भूयावहै	भूयामहै।

पच् धातु ( सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, भ्वादिगण )

पच्यते	पच्येते	पच्यन्ते
पच्यसे	पच्येथे	पच्यध्वे
पच्ये	पच्यावहे	पच्यामहे

रुच् धातु ( अकर्मक, सेट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण )

रुच्यते	रुच्येते	रुच्यन्ते
रुच्यसे	रुच्येथे	रुच्यध्वे
रुच्ये	रुच्यावहे	रुच्यामहे

रम् धातु ( अकर्मक, अनिट्, आत्मनेपद, भ्वादिगण )

रम्यते	रम्येते	रम्यन्ते
रम्यसे	रम्येथे	रम्यध्वे
रम्ये	रम्यावहे	रम्यामहे

यज् धातु ( सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण )

इज्यते इज्येते इज्यन्ते  
इज्यसे इज्येथे इज्यध्वे  
इज्ये इज्यावहे इज्यामहे

वह् धातु ( सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,भ्वादिगण )

उह्यते उह्येते उह्यन्ते  
उह्यसे उह्येथे उह्यध्वे  
उह्ये उह्यावहे उह्यामहे

श्रु धातु ( सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,भ्वादिगण )

श्रूयते श्रूयेते श्रूयन्ते  
श्रूयसे श्रूयेथे श्रूयध्वे  
श्रूये श्रूयावहे श्रूयामहे

तुद् धातु ( सकर्मक,अनिट्,उभयपदी,तुदादिगण )

तुद्यते तुद्येते तुद्यन्ते  
तुद्यसे तुद्येथे तुद्यध्वे  
तुद्ये तुद्यावहे तुद्यामहे

भुज् धातु ( अकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,तुदादिगण )

भुज्यते भुज्येते भुज्यन्ते  
भुज्यसे भुज्येथे भुज्यध्वे  
भुज्ये भुज्यावहे भुज्यामहे

हन् धातु ( सकर्मक,अनिट्,परस्मैपद,अदादिगण )

हन्यते हन्येते हन्यन्ते

हन्यसे

हन्येथे

हन्यध्वे

हन्ये

हन्यावहे

हन्यामहे

हस् धातु ( अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण )

हस्यते हस्येते हस्यन्ते  
हस्यसे हस्येथे हस्यध्वे  
हस्ये हस्यावहे हस्यामहे

क्रीड् धातु ( अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण )

क्रीड्यते क्रीड्येते क्रीड्यन्ते  
क्रीड्यसे क्रीड्येथे क्रीड्यध्वे  
क्रीड्ये क्रीड्यावहे क्रीड्यामहे

स्था धातु

स्थीयते स्थीयेते स्थीयन्ते  
स्थीयसे स्थीयेथे स्थीयध्वे  
स्थीये स्थीयावहे स्थीयामहे

आस् धातु ( अकर्मक,सेट्,आत्मनेपद,अदादिगण )

आस्यते आस्येते आस्यन्ते  
आस्यसे आस्येथे आस्यध्वे  
आस्ये आस्यावहे आस्यामहे

जीव् धातु ( अकर्मक,सेट्,परस्मैपद,भ्वादिगण )

जीव्यते जीव्येते जीव्यन्ते  
जीव्यसे जीव्येथे जीव्यध्वे  
जीव्ये जीव्यावहे जीव्यामहे

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
भू (होना)	भवति	भूयते	ईश्वरेण भूयते	ईश्वरः अस्ति।
भी (डरना)	बिभेति	भीयते	शिशुभिः मूषकेभ्यः भीयते	शिशवः मूषकेभ्यः बिभ्यति।
शी (सोना)	शेते	शय्यते	पथिकैः मार्गे शय्यते	पथिकाः मार्गे शेते।
याच् (माँगना)	याचति	याच्यते	याचकैः भैक्ष्यं याच्यते	याचकाः भैक्ष्यं याचन्ते।
अद् (खाना)	अत्ति	अद्यते	तेन मिष्ठानं अद्यते	सः मिष्ठानं अत्ति।
वद् (बोलना)	वदति	उद्यते	आचार्येण सत्यम् उद्यते	आचार्यः सत्यं वदति।
ज्ञा (जानना)	जानाति	ज्ञायते	तेन श्लोकः न ज्ञायते	सः श्लोकं न जानाति।
खन् (खोदना)	खनति	खन्यते	श्रमिकः भूमिः खन्यते	श्रमिकः भूमिं खनति।
वप् (बोना)	वपति	उप्यते	कृषकेण बीजानि उप्यन्ते	कृषकः बीजानि वपन्ति।
स्था (ठहरना)	तिष्ठति	स्थीयते	मुनिना कुटीरे स्थीयते	मुनिः कुटीरे तिष्ठति।
कथ् (कहना)	कथयति	कथ्यते	ऋषिणा रामकथा कथ्यते	ऋषिः रामकथां कथयति।
दुह् (दोहना)	दोग्धि	दुह्यते	तेन गौः पयः दुह्यते	सः गां पयः दोग्धि।

धातु/अर्थ	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य	कर्मवाच्य/ भाववाच्य प्रयोग	कर्तृवाच्य प्रयोग
नी (ले जाना)	नयति	नीयते	भृत्येन भारः नीयते	भृत्यः भारं नयति।
गम् (जाना)	गच्छति	गम्यते	पुत्रेण ग्रामः गम्यते	पुत्रः ग्रामं गच्छति।
भक्ष् (खाना)	भक्षयति	भक्ष्यते	मया फलानि भक्ष्यन्ते	अहं फलानि भक्षयामि।
हन् (मारना)	हन्ति	हन्यते	राज्ञा सिंहः हन्यते	राजा सिंहं हन्ति।
पा (पीना)	पिबति	पीयते	शिशुना दुग्धं पीयते	शिशुः दुग्धं पिबति।
अस् (होना)	अस्ति	भूयते	तेन कुत्रापि न भूयते	सः कुत्रापि न भवति।
श्रु (सुनना)	शृणोति	श्रूयते	बालकेन कथा श्रूयते	बालकः कथां शृणोति।
सेव् (सेवा करना)	सेवते	सेव्यते	प्रजाभिः राजा सेव्यते	प्रजाः राजानं सेवन्ते।
चि (चुनना)	चिनोति	चीयते	मालाकारेण पुष्पाणि चीयन्ते	मालाकारः पुष्पाणि चिनोति।
हु (हवन करना)	जुहोति	हूयते	यतिभिः अग्नौ हूयते	यतयः अग्नौ जुह्वति।
स्वप् (सोना)	स्वपिति	सुष्यते	चालकेन मार्गं सुष्यते	चालकः मार्गं स्वपिति।
मन्थ् (मथना)	मथ्नाति	मथ्यते	मात्रा दधि मथ्यते	माता दधि मथ्नाति।
पूज् (पूजा करना)	पूजयति	पूज्यते	यत्र नार्यः पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः	यत्र नारीः पूजयन्ति रमन्ते तत्र देवताः।
कृ (करना)	करोति	क्रियते	ऋषिभिः शुभकर्माणि क्रियन्ते	ऋषयः शुभकर्माणि कुर्वन्ति।
धृ (धारण करना)	धारयति	धार्यते	शिष्येन वस्त्रं धार्यते	शिष्यः वस्त्रं धरति।
गण् (गिनना)	गणयति	गण्यते	छात्रेण शतं गण्यते	छात्रः शतं गणयति।
लिख् (लिखना)	लिखति	लिख्यते	छात्रेण पत्रं लिख्यते	छात्रः पत्रं लिखति।
स्मृ (याद करना)	स्मरति	स्मर्यते	मया ईश्वरः स्मर्यते	अहं ईश्वरं स्मरामि।
दृश् (देखना)	पश्यति	दृश्यते	बालकेन चित्रं दृश्यते	बालकः चित्रं पश्यति।
प्रच्छ् (पूछना)	पृच्छति	पृच्छ्यते	अध्यापकेन प्रश्नः पृच्छ्यते	अध्यापकः प्रश्नं पृच्छति।
वस् (रहना)	वसति	उष्यते	बालकैः उद्याने उष्यते	बालकाः उद्याने वसन्ति।

**कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में प्रयोग**

- कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।
- कर्तृवाच्य के कर्म में द्वितीया विभक्ति तथा कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार हो जाता है।

**कर्तृवाच्य**

अहं शिक्षां लभे  
सः पुस्तकं पठति  
सः ईश्वरं स्मरति  
छात्राः प्रश्नं पृच्छन्ति  
गायकः गीतानि गायति  
शिशुः दुग्धं पिबति

**कर्मवाच्य**

मया शिक्षा लभ्यते  
तेन पुस्तकं पठ्यते  
तेन ईश्वरः स्मर्यते  
छात्रैः प्रश्नः पृच्छ्यते  
गायकेन गीतानि गीयन्ते  
शिशुना दुग्धं पीयते

**प्रयोग**

- सः सत्यं वदति  
अहं पुस्तकं पश्यामि  
माता ओदनं पचति  
वयं युद्धं कुर्मः  
तेन सत्यम् उद्यते  
मया पुस्तकं दृश्यते  
मात्रा ओदनं पच्यते  
अस्माभिः युद्धं क्रियते

**कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में प्रयोग**

- कर्मवाच्य में कर्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति हो जाती है।
- कर्मवाच्य में कर्म के स्थान पर प्रयुक्त प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति हो जाती है।
- क्रिया के पुरुष और वचन कर्ता के अनुसार हो जाते हैं।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त के स्थान पर कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय हो जाता है।
- कर्मवाच्य में प्रयुक्त तव्य प्रत्यय के स्थान पर कर्तृवाच्य में विधिलिङ् का प्रयोग कर दिया जाता है।

## वाच्य परिवर्तन अभ्यास

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य	भाववाच्य	कर्तृवाच्य
अध्यापकेन पाठः पठ्यते अस्माभिः सिंहः दृश्यते सैनिकैः युद्धं क्रियते रमेशेन ईश्वरः स्मर्यते बालकेन पत्रं लिख्यते गायकेन गीतं गीयते नृपेण सिंहः हन्यते स्वामिना कथा कथ्यते तेन ग्रामः गम्यते सेनया युद्धः जीयते तेन कथा श्रूयते मया चन्द्रः दृश्यते गुरुभिः किं न ज्ञायते मया लोभः त्यजते वृक्षैः फलानि दीयन्ते	अध्यापकः पाठं पठति वयं सिंहं पश्यामः सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति रमेशः ईश्वरं स्मरति बालकः पत्रं लिखति गायकः गीतं गायति नृपः सिंहं हन्ति स्वामी कथां कथयति सः ग्रामं गच्छति सेना युद्धं जयति सः कथां शृणोति अहं चन्द्रं पश्यामि गुरुवः किं न जानन्ति अहं लोभं त्यजामि वृक्षाः फलानि ददति	हरिणा वैकुण्ठे उष्यते अस्माभिः विद्यालये स्थीयते मयूरैः नृत्यते मया नैव रुद्यते तेन गृहे सुष्यते <b>कर्तृवाच्य</b> रामः वेदं पठति बालकः चन्द्रं पश्यति बालकः गीतां पठति रामः पत्रं लिखति सुरेशः ग्रामं गच्छति सः आपणं गच्छति सः गीतं गायति सः रघुवंशं पठति कृष्णः जलं पिबति बालकः मोहनं पश्यति बालिका पुस्तकं पठति रजकः गर्दभं ताडयति कृषकः जलं पिबति सः दुग्धं पिबति कविः काव्यं करोति सा विद्यालयं गच्छति माता ओदनं पचति रामः तीव्रं हसति भक्तः ज्ञानं प्राप्नोति रामः धनं ददाति सः ईश्वरं स्मरति सः सत्यं वदति सः कथां शृणोति वृक्षाः फलानि ददति सैनिकाः युद्धं कुर्वन्ति छात्राः पत्रं लिखन्ति तौ प्रयागं गच्छति छात्राः पुस्तकानि नयन्ति तौ गृहं गच्छतः कृषकाः जलं पिबन्ति ते पुस्तकानि पठन्ति	हरिः वैकुण्ठे वसति वयं विद्यालये तिष्ठामः मयूराः नृत्यन्ति अहं नैव रोदिमि सः गृहे स्वपिति <b>कर्मवाच्य</b> रामेण वेदः पठ्यते। बालकेन चन्द्रः दृश्यते। बालकेन गीता पठ्यते। रामेण पत्रं लिख्यते। सुरेशेन ग्रामः गम्यते। तेन आपणः गम्यते। तेन गीतं गीयते। तेन रघुवंशं पठ्यते। कृष्णेन जलं पीयते। बालकेन मोहनः दृश्यते। बालिकया पुस्तकं पठ्यते। रजकेन गर्दभः ताड्यते। कृषकेन जलं पीयते। तेन दुग्धं पीयते। कविना काव्यं क्रियते। तया विद्यालयः गम्यते। माता ओदनं पच्यते। रामेण तीव्रं हस्यते। भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते। रामेण धनं दीयते। तेन ईश्वरः स्मर्यते। तेन सत्यम् उद्यते। तेन कथा श्रूयते। वृक्षैः फलानि दीयन्ते। सैनिकैः युद्धं क्रियते। छात्रैः पत्रं लिख्यते। ताभ्याम् प्रयागः गम्यते। छात्रैः पुस्तकानि नीयन्ते। ताभ्याम् गृहं गम्यते। कृषकैः जलं पीयते। तैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।

## कर्तृवाच्य से भाववाच्य में प्रयोग

भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है और क्रिया सदा प्रथम पुरुष एकवचन में होती है। उदाहरण-

## कर्तृवाच्य

छात्रः क्रीडति  
बालकाः तिष्ठन्ति  
सिंहः गर्जति  
अहं पठामि  
ईश्वरः अस्ति  
अश्वाः धावन्ति  
कन्याः लिखति  
अहं गच्छामि  
त्वं खादसि  
लता वर्धते  
युवां हसथः  
पुष्पाणि विकसन्ति  
गुरुः तिष्ठति  
वयं हसामः  
त्वं पठसि

## भाववाच्य

छात्रेण क्रीड्यते  
बालकैः स्थीयते  
सिंहेन गर्ज्यते  
मया पठ्यते  
ईश्वरेण भूयते  
अश्वैः धाव्यते  
कन्याभिः लिख्यते  
मया गम्यते  
त्वया खाद्यते  
लतया वर्ध्यते  
युवाभ्यां हस्यते  
पुष्पैः विकस्यते  
गुरुणा स्थीयते  
अस्माभिः हस्यते  
त्वया पठ्यते



**कर्तृवाच्य**

बालकौ गीतं गायतः  
भक्तौ ईश्वरं स्मरतः  
तौ पुस्तकं पठतः  
त्वं गृहं गच्छसि  
त्वं पत्रं लिखसि  
त्वं किं लिखसि  
यूवां पुस्तकं पठथः  
त्वं कुत्र गच्छसि  
त्वं ईश्वरं पश्यसि  
त्वं प्रश्नं पृच्छसि  
युवां गृहं गच्छथः  
युवां प्रश्नानि पृच्छथः  
युवां बालकौ पश्यथः  
यूयं पुस्तकानि पठथ  
यूयं गीतानि गायथ  
अहं पुस्तकं पठामि  
अहं दुग्धं पिबामि  
अहं पुस्तकं लिखामि  
अहं त्वां पश्यामि  
अहं जलं पिबामि  
अहं पत्रं लिखामि  
आवां गृहं गच्छवः  
आवां पुस्तकानि पठावः  
आवां जलं पिबावः  
वयं पत्रं लिखामः  
वयं नगरं गच्छामः  
वयं विद्यालयं गच्छामः  
वयं बालकं पश्यामः  
रामः वेदं पठिष्यति  
बालकः चन्द्रं द्रक्ष्यति  
रमेशः पत्रं पठिष्यति  
सीता काव्यं करिष्यति  
सः ग्रन्थं पठिष्यति  
मोहनः दुग्धं पास्यति  
मुनिः रामायणं कथयिष्यति  
छात्रः विद्यालयं गमिष्यति  
राधा नृत्यं करिष्यति  
शिशुः दुग्धं पास्यति  
सः त्वां द्रक्ष्यति

**कर्मवाच्य**

बालकाभ्याम् गीतं गीयते।  
भक्ताभ्याम् ईश्वरः स्मर्यते।  
ताभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।  
त्वया गृहं गम्यते।  
त्वया पत्रं लिख्यते।  
त्वया किं लिख्यते।  
युवाभ्याम् पुस्तकं पठ्यते।  
त्वया कुत्र गम्यते।  
त्वया ईश्वरः दृश्यते।  
त्वया प्रश्नः पृच्छ्यते।  
युवाभ्यां गृहं गम्यते।  
युवाभ्यां प्रश्नानि पृच्छयन्ते।  
युवाभ्यां बालकौ दृश्येते।  
युष्माभिः पुस्तकानि पठ्यन्ते।  
युष्माभिः गीतानि गीयन्ते।  
मया पुस्तकं पठ्यते।  
मया दुग्धं पीयते।  
मया पुस्तकं लिख्यते।  
मया त्वं दृश्यसे।  
मया जलं पीयते।  
मया पत्रं लिख्यते।  
आवाभ्यां गृहं गम्यते।  
आवाभ्यां पुस्तकानि पठ्यन्ते।  
आवाभ्यां जलं पीयते।  
अस्माभिः पत्रं लिख्यते।  
अस्माभिः नगरं गम्यते।  
अस्माभिः विद्यालयं गम्यते।  
अस्माभिः बालकः दृश्यते।  
रामेण वेदः पठिष्यते।  
बालकेन चन्द्रः द्रक्ष्यते।  
रमेशेन पत्रं पठिष्यते।  
सीतया काव्यं करिष्यते।  
तेन ग्रन्थः पठिष्यते।  
मोहनेन दुग्धं पास्यते।  
मुनिना रामायणं कथयिष्यते।  
छात्रेण विद्यालयः गंस्यते।  
राधया नृत्यं करिष्यते।  
शिशुना दुग्धं पास्यते।  
तेन त्वं द्रक्ष्यसे

**कर्तृवाच्य**

सः आपणं गमिष्यति  
तौ दुग्धं पास्यन्ति  
तौ कार्याणि करिष्यन्ति  
तौ वनं गमिष्यन्ति  
ते पत्राणि पठिष्यन्ति  
ते फलानि नेष्यन्ति  
ते कथां कथयिष्यन्ति

**कर्तृवाच्य**

सः हसति  
त्वं पठसि  
अहं गच्छामि  
वयं हसामः  
ते हसन्ति  
रामः गच्छति  
सीता गच्छति  
पिता गच्छति  
अहं वदामि  
यूयं पठथ  
अहं हसामि  
सा लिखति  
सः तिष्ठति  
त्वं हससि  
त्वं खादसि  
सः क्रीडति  
रामः हसति  
अहं तिष्ठामि  
श्यामः गच्छति  
छात्रः क्रीडति  
बालकाः तिष्ठन्ति  
ईश्वरः अस्ति  
गुरुः तिष्ठति  
मयूराः नृत्यन्ति

**कर्मवाच्य**

तेन आपणं गम्यते  
ताभ्याम् दुग्धं पास्यते  
ताभ्याम् कार्याणि करिष्यन्ते  
ताभ्याम् वनं गंस्यते  
तैः पत्राणि पठिष्यन्ते  
तैः फलानि नेष्यन्ते  
तैः कथा कथयिष्यते।

**भाववाच्य**

तेन हस्यते  
त्वया पठ्यते  
मया गम्यते  
अस्माभिः हस्यते  
तैः हस्यते  
रामेण गम्यते  
सीतया गम्यते  
पित्रा गम्यते  
मया उद्यते  
युष्माभिः पठ्यते  
मया हस्यते  
तया लिख्यते  
तेन स्थीयते  
त्वया हस्यते  
त्वया खाद्यते  
तेन क्रीड्यते  
रामेण हस्यते  
मया स्थीयते  
श्यामेन गम्यते  
छात्रेण क्रीड्यते  
बालकैः स्थीयते  
ईश्वरेण भूयते  
गुरुणा स्थीयते  
मयूरैः नृत्यते

## उपसर्ग एवं अव्यय

### उपसर्ग

- उप उपसर्ग पूर्वक 'सृज्' धातु से घञ् प्रत्यय करने पर "उपसर्ग" शब्द निर्मित होता है। जिसका अर्थ है- 'जो समीप रखे जाय'
  - "उपसृज्यन्ते धातूनां समीपे क्रियन्ते इति उपसर्गाः" अर्थात् जो धातुओं के समीप रखे जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।
  - पाणिनि कहते हैं "प्रादयः उपसर्गाः क्रियायोगे" (1.4.59) अर्थात् क्रिया के योग में 'प्र' आदि उपसर्गसंज्ञक होते हैं। यथा- प्रभवति, पराभवति, अपहरति, निरीक्षते आदि।
  - जो किसी भी 'धातु' अथवा शब्द के पहले जुड़कर अर्थ को बदल देता है, उसे 'उपसर्ग' कहा जाता है। जैसे- हार = माला, या पराजय किन्तु इसमें 'प्र' उपसर्ग जुड़कर इसके अर्थ को परिवर्तित कर देता है- प्रहारः (चोट, आघात), आहारः (भोजन), संहारः (विनाश), विहारः (भ्रमण), परिहारः (त्याग)।
- उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।**  
**प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत्॥**
- उपसर्ग सहित धातुओं के प्रयोग से भाषा परिष्कृत, सुन्दर और चमत्कृत लगती है।
  - उपसर्ग हमेशा धातुओं या शब्दों के पूर्व ही जोड़े जाते हैं। उपसर्ग भी अव्यय पद ही हैं।

### धातु के साथ उपसर्गों के जुड़ने से तीन परिवर्तन होते हैं-

- (i) क्रिया का अर्थ बिल्कुल बदल जाता है अर्थात् मुख्यार्थ को बाधकर नवीन अर्थ का बोध कराता है। जैसे- विजयते = जीतता है (वि उपसर्ग जि धातु), पराजयते = हारता है (परा उपसर्ग जि धातु), उपकार - अपकारः।  
आहारः - प्रहारः आदि।
  - (ii) क्रिया के अर्थ में विशिष्टता आ जाती है। जैसे- गच्छति- अनुगच्छति, आप्नोति - प्राप्नोति आदि।
  - (iii) क्रिया के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे- वसति- निवसति, उच्यते-प्रोच्यते, वसति-अधिवसति आदि।
- यही बात इस श्लोक में इसप्रकार से कही गयी है-  
**धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।**  
**विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥**
- उपसर्गों के योग से कहीं कहीं अकर्मक भी सकर्मक हो जाती है। जैसे भू (भवति) धातु अकर्मक है किन्तु 'अनु' उपसर्ग के साथ 'अनुभवति' सकर्मक क्रिया हो जाती है। जैसे- सः सुखम् अनुभवति। माता दुःखम् अनुभवति। आदि।

**उपसर्गों की संख्या-** संस्कृत व्याकरण में कुल 22 (बाइस) उपसर्ग हैं। जिनका अर्थसहित प्रयोग अधोलिखित तालिका में देखा जा सकता है-

1. प्र 2. परा 3. अप 4. सम् 5. अनु 6. अव 7. निस् 8. निर् 9. दुस् 10. दुर् 11. वि 12. आड् 13. नि 14. अधि 15. अपि 16. अति 17. सु 18. उत् 19. अभि 20. प्रति 21. परि 22. उप

### उपसर्गयुक्त शब्द

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
1.	प्र	विशेष रूप से, उत्कर्ष, अधिक	प्रचारः, प्रसारः, प्रहारः, प्रकारः, प्रख्यातम्।
2.	परा	पीछे, विपरीत, अनादर, नाश	पराक्रमः, परामर्शः, पराजयः, पराकाष्ठाः।
3.	अप	दूर, विरोध, लघुता	अपमानः, अपकारः, अपयशः, अपशब्दः, अपकर्षः।
4.	सम्	साथ, अच्छा, अच्छी तरह से पूर्ण	संकल्पः, संसर्गः, सम्मोहः, संग्रहः।
5.	अनु	पीछे, साथ-साथ, योग्य, अनुकूल	अनुजः, अनुचरः, अनुभवः, अनुनयः।
6.	अव	नीचे, दूर, अनादर, हीनता, पतन	अवगुणः, अवनतिः, अवलोकनम्, अवतारः।
7.	निस्	वियोग, बिना, बाहर	निस्सारः, निशङ्कः, निस्तत्त्वम्, निश्चयः।
8.	निर्	निषेध, रहित, बाहर, बिना, निकलना	निरपराधः, निर्गच्छति, निरक्षरः, निर्दयः।
9.	दुस्	कठिन, बुरा	दुस्तरः, दुष्करः, दुस्साहसः।
10.	दुर्	बुरा, कठिनता, दुष्टता, निन्दा	दुराचारः, दुराग्रहः, दुर्गतिः, दुरात्मा।

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
11.	वि	विशेषता, अलग, बिना	विकारः, विवादः, विज्ञानम्, विदेशः, विरोधः।
12.	आङ् ( आ )	तक, कम, स्वीकृति	आहारः, आरम्भः, आचारः, आग्रहः, आगमनम्।
13.	नि	नीचे, निषेध, समूह, निश्चित	निबन्धः, नियुक्तः, निषेधः, निवारणम्।
14.	अधि	ऊपर, श्रेष्ठ, प्रधान	अधिकम्, अध्यात्मम्, अध्यक्षः, अधिभारः, अधिकृतः।
15.	अति	बहुत, अधिक, बाहर	अत्याचारः, अतिशयः, अत्युत्तमम्, अत्यन्तम्, अतिरिक्तम्।
16.	सु	सुन्दर, अच्छा, अत्यधिक	स्वागतम्, सुवेषः, सुस्वरः, सूक्तिः, सुपुत्रः।
17.	उत्	ऊपर, श्रेष्ठ, विपरीत	उत्पत्तिः, उत्तरम्, उत्तमः, उन्नतिः, उद्धारः।
18.	अभि	सामने, ओर, ऊपर, पास, तरफ	अभ्यागतः, अभियानम्, अभिमुखम्, अभिमानः।
19.	प्रति	ओर, तरफ, पीछे, विपरीत	प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्, प्रतिध्वनिः, प्रतिपन्नः, प्रतिकारः।
20.	परि	चारों ओर, और भी, आस-पास	परिश्रमः, परिवादः, परिचयः, परिजनः, प्रतिकूलम्, प्रत्युत्तरम्।
21.	उप	निकट, समीप, शक्ति	उपकारः, उपदेशः, उपाधिः, उपेन्द्रः, उपद्रवः।
22.	अपि	निकट	अपिधानः, अपिगीर्णः।

### उपसर्गयुक्त क्रियायों का वाक्य में प्रयोग

क्र०	उपसर्ग	धातु ( अर्थसहित )	उपसर्ग सहित धातुरूप	प्रयोग
1.	उत्	√अय् (जाना)	उदयति (उगना)	सूर्यः उदयति
2.	प्र	√अर्थ् (मॉगना)	प्रार्थयते (प्रार्थना करना)	भक्तः भगवन्तं प्रार्थयते।
3.	अभि	√अस् (फेंकना)	अभ्यसति (अभ्यास करना)	छात्रः पाठम् अभ्यसति।
4.	प्र	√आप् (प्राप्त करना)	प्राप्नोति (प्राप्त करना)	छात्रः अध्यापकात् ज्ञानं प्राप्नोति
5.	अव	√इ (जाना)	अवेहि (जानना)	अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः।
6.	प्रति	√ईक्ष् (देखना)	प्रतीक्षते (इन्तजार करना)	न हि प्रतीक्षते कालः।
7.	अनु	√कृ (करना)	अनुकरोति (नकल करना)	बालः मातरम् अनुकरोति।
8.	अव	√क्षिप् (फेंकना)	अवक्षिपति (निन्दा करना)	दुष्टः सज्जनम् अवक्षिपति।
9.	आङ्	√गम् (जाना)	आगच्छति (आना)	अहं विद्यालयात् आगच्छामि।
10.	अनु	√गम् (जाना)	अनुगच्छति (पीछे पीछे चलना)	दिलीपः नन्दिनीम् अनुगच्छति
11.	उप	√चर् (चरना)	उपचरति (सेवा करना)	वैद्यः रोगिणं उपचरति।
12.	सम्	√चि (चुनना)	सञ्चिनोति (संग्रह करना)	धनिकः धनं सञ्चिनोति।
13.	निर्	√दिश् (देना, सौंपना)	निर्दिशति (निर्देश देना)	माता अङ्गुल्या निर्दिशति।
14.	वि	√धा (धारण करना)	विदधीत (करना)	सहसा विदधीत न क्रियाम्।
15.	नि	√मन्त्र (मन्त्रणा करना)	निमन्त्रयति (निमन्त्रण देना)	मित्रं मां निमन्त्रयति।
16.	अप	√लप् (बोलना)	अपलपति (मुकरना)	स अपलपति।
17.	अव	√सद् (बैठना)	अवसीदति (दुःखित होना)	उद्यमं कृत्वा न अवसीदति जनः।
18.	अधि	√स्था (रुकना)	अधितिष्ठति (बैठना)	राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति।
19.	अति	√वह (बहना)	अतिवहति (बिताना)	सः सुखेन कालम् अत्यवहत्।
20.	निस्	√क्रम् (चलना, जाना)	निष्क्रामति (निकलना)	इति निष्क्रान्ताः सर्वे।

## महत्त्वपूर्ण उपसर्गयुक्त क्रियायें

उपसर्ग	उपसर्ग युक्त क्रियायें
प्र	प्रभवति, प्रसरति, प्राप्नोति, प्रददाति।
परा	पराभवति, पराजयते, पलायते आदि।
अप	अपहरति, अपनयति, अपकरोति, अपेहि, अपेक्षते, अपलपति।
सम्	संक्षिपति, सञ्चिनोति, संगृह्णाति, सन्तपति, सन्तरति, संहरति।
अनु	अनुभवति, अनुतिष्ठति, अनुकरोति, अनुगच्छति, अनुवदति।
अव	अवरोहति, अवतरति, अवजानाति, अवक्षिपति, अवगच्छति।
निस्	निश्चिनोति, निष्क्रामति।
निर्	निरीक्षते, निरस्यति, निर्दिशति।
दुस्	दुष्करोति, दुश्चरति।
दुर्	दुर्गच्छति, दुर्वक्ति।
वि	विचरति, विलपति, वितरति, व्याप्नोति, विदधति, विरमति।
आङ्	आरोहति, आगच्छति, आददाति, आक्षिपति, आचरति, आनयति।
नि	निषीदति, निगृह्णाति, निमन्त्रयति, नियन्त्रयति, निवर्तते।
अधि	अधिगच्छति, अधिक्षिपति, अध्यास्ते, अधितिष्ठति।
अपि	अपिधत्ते, अपिनहति।
अति	अतिशेते, अतिरिच्यते, अत्येति, अतिक्रामति, अतिवहति।
सु	सुचरति, सुकरोति, सुनयति।
उत्	उत्पतति, उत्तिष्ठति, उत्तरति, उदयति, उदेति, उक्षिपति।
अभि	अभिमन्यते, अभिजानाति, अभिधत्ते।
प्रति	प्रतिवदति, प्रतीक्षते, प्रतिजानाति, प्रतिवसति।
परि	परिवर्तते, परिचिनोति, परीक्षते।
उप	उपदिशति, उपतिष्ठते, उपक्रमते, उपास्ते, उपैति, उपकरोति, उपचरति।

## अव्यय

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।

वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

- जो शब्द तीनों लिङ्गों, सभी विभक्तियों तथा तीनों वचनों में समान रहते हैं; वे 'अव्यय' कहलाते हैं।
- 'न व्ययम् इति अव्ययम्' अर्थात् जो व्यय (खर्च, घट-बढ़, यानी परिवर्तन) को प्राप्त नहीं होता अर्थात् हमेशा ज्यों का त्यों यथावत् स्थिति में रहता है वह अव्यय (अविकारी) पद कहा जाता है।
- अव्यय पदों का रूप नहीं चलता।  
जैसे- यथा, तत्र, अत्र, किम्, कुत्र, कदा आदि।
- "स्वरादिनिपातमव्ययम्" ( 1.1.3.7 ) सूत्र से स्वर आदि शब्द तथा निपातशब्द अव्यय संज्ञक होते हैं।  
जैसे- स्वः, अन्तः, प्रातः, पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, ऋते,

पृथक्, अद्य, ईषत्, आदि।

➤ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः, कृन्मेजन्तः, क्त्वातोसुन्कसुनः  
आदि सूत्रों से कुछ तद्धित प्रत्ययान्त एवं कुछ कृदन्त प्रत्ययान्त शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

जैसे-

(i) कृदन्त प्रत्यय जो अव्यय बनाते हैं- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तोसुन्, कसुन् आदि प्रत्ययों से बने पद अव्यय संज्ञक होते हैं- गत्वा, आगत्य, पठितुम् आदि पद अव्यय पद हैं।

(ii) तद्धित प्रत्यय तसिल्, त्रल्, थाल्, धा, शस् प्रत्ययों से भी अव्यय पद बनते हैं। जैसे-

सर्वतः, अत्र, तत्र, सर्वथा, एकधा, द्विधा, अनेकशः, अक्षरशः, शब्दशः आदि

➤ **अव्ययीभावश्च ( 1.1.41 )** अव्ययीभाव समास भी अव्यय होता है। जैसे- यथाशक्ति, उपगङ्गम्, यथानिर्देशम्, यथोचितम् आदि।

मुख्यतः अव्यय चार प्रकार के हैं-

(i) **उपसर्ग-** प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव आदि 22 उपसर्ग।

(ii) **क्रियाविशेषण-** अद्य, अत्र, अधुना, अभितः, किल आदि।

(iii) **समुच्चय बोधक-** च, इति, तथापि, तु, वा आदि।

(iv) **मनोविकार सूचक** (विस्मयबोधक)- अहा, अहो, हन्त, धिक्, अये, अरे, आदि।

### प्रमुख अव्यय पदों का वाक्यों में प्रयोग

अव्यय पद	वाक्य प्रयोग		
1. सदा (हमेशा)	रामः सदा सत्यं वदति।	17. विना (बिना)	मोहनः लेखन्या विना कथं लिखति।
2. सर्वत्र (सब जगह)	ईश्वरः सर्वत्र अस्ति।	18. सायम् (सायंकाल)	चन्द्रः सायं उदयति।
3. प्रतिदिनम् (प्रतिदिन)	अहं प्रतिदिनं दुग्धं पिबामि।	19. नमः (नमस्कार)	गणेशाय नमः।
4. यदा तदा (जब-तब)	यदा कृष्णः आगच्छति तदा सुदामा गच्छति।	20. नक्तम् (रात्रि में)	सः नक्तं भोजनं न करोति।
5. अत्र (यहाँ)	सः अत्र आगच्छति।	21. दिवा (दिन में)	मोहनः दिवा न पठति।
6. तत्र (वहाँ)	सः तत्र गच्छति।	22. अधुना (इस समय)	राजेन्द्रः अधुना न पठति।
7. श्वः (आने वाला कल)	अहं श्वः विद्यालयं गमिष्यामि।	23. अचिरम् (शीघ्र ही)	अचिरं सः गतवान्।
8. कुत्र (कहाँ)	बालकाः कुत्र निवसन्ति।	24. उभयतः (दोनों ओर)	विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।

### अव्ययशब्दसंग्रहः अव्यय शब्दों का संग्रह

अव्ययशब्दः	हिन्दी	अव्ययशब्दः	हिन्दी
	<b>अ</b>	अति	— बहुत
अकस्मात्	— अचानक	अत्यन्तम्	— बहुत
अग्रतः	— आगे	अतीव	— बहुत ही
अग्रिमवर्षे	— परसाल, अगले साल।	अत्र	— यहाँ
अग्रे	— पहले, आगे	अत्रापि	— यहाँ भी
अचिरेण	— शीघ्र, जल्दी	अत्रैव	— यहाँ ही/यहीं
अचिरम्	— शीघ्र	अथ	— इसके बाद/तब/फिर / मङ्गल
अचिराय	— शीघ्र	अथवा	— या, अथवा
अचिराद्	— शीघ्र, जल्दी	अथ किम्	— और क्या, तो क्या, हाँ
अजस्रम्	— निरन्तर/लगातार	अद्य	— आज
अतएव	— इसलिए	अद्यतनम्	— आज का
अतः	— इसलिए	अद्यत्वे	— आजकल
अतःपरम्	— इसके बाद	अद्यपर्यन्तम्	— आजतक

अव्ययशब्दः	हिन्दी	अव्ययशब्दः	हिन्दी
अद्याप्रभृति	— आज से लेकर	अभिमुखम्	— तरफ
अद्यापि	— आज भी	अभितः	— दोनों ओर, पास
अद्यारभ्य	— आज से	अये	— हे (आदर सहित बुलाने में)
अद्यावधि	— आज तक, अब तक	आरात्	— दूर
अधः	— नीचे, नीचा	अर्थम्	— लिए
अर्धम्	— आधा	अरे	— हे (अवज्ञापूर्वक बुलाने में)
अधस्तात्	— नीचे	अल्पम्	— थोड़ा, कुछ, (मात्रा)
अधिकम्	— अधिक, बहुत	अल्पशः	— थोड़ा-थोड़ा
अधिकतरम्	— अधिकतर	अलम्	— बस/काफी, रहने दो
अधुना	— अब	अविलम्बम्	— जल्दी, शीघ्र
अधुनापि	— आज भी/अभी	अवश्यम्	— जरूर/अवश्य/निश्चय ही
अधुनैव	— अभी	अर्वाक्	— पहले
अन्तः	— अन्दर, भीतर, बीच में	असकृत्	— बार-बार
अन्ततः	— आखिरकार, आखिर	असत्यम्	— असत्य
अन्ततोगत्वा	— आखिरकार, आखिर	अस्तु	— इसलिए, खैर, अच्छा, ठीक है
अनन्तरम्	— पीछे, बाद में	असाम्प्रतम्	— अनुचित
अन्तरा	— बीच में	अहा	— उल्लास या हर्षसूचक, अहो, अहा
अन्यत्	— दूसरा	आ	—
अन्यच्च	— और भी, और	आः	— क्रोधसूचक
अन्तिकम्	— पास	आगत्य/आगम्य	— आकर के
अनारतम्	— निरन्तर/लगातार	आगामिदिनम्	— आने वाला कल
अनायासेन	— बिना मेहनत के	आदि	— बगैरह
अनवरतम्	— निरन्तर/लगातार	आम्	— हाँ (अङ्गीकारवाचक)
अनिशम्	— निरन्तर/लगातार	आश्चर्यम्	— ओफ-हो
अनुमानतः	— लगभग	आशु	— शीघ्र/त्वरित
अनेकम्	— अनेक	इ	—
अन्तर्बहिः	— बाहर-भीतर	इत्थम्	— इसप्रकार से, ऐसे
अन्यत्र	— दूसरी जगह	इति	— समाप्ति सूचक शब्द
अन्यथा	— नहीं तो	इतस्ततः	— इधर-उधर, जहाँ-तहाँ
अन्योन्यम्	— परस्पर	इतरेद्युः	— दूसरे दिन
अपरत्र	— दूसरी जगह	इतः	— यहाँ से
अपरम्	— और, दूसरा	इत्थमेव	— यों ही
अब्दे	— परसाल, अगले साल	इदानीम्	— अब/इससमय
अपि	— भी	इदानीमपि	— आज भी
अपितु	— बल्कि, वरन्	इयत्	— इतना
अन्येद्युः	— दूसरे दिन		
अपरेद्युः	— दूसरे दिन		
अपेक्षया	— अपेक्षा		

अव्ययशब्दः	हिन्दी	अव्ययशब्दः	हिन्दी
इव	- तरह/सदृश, समान	कुत्रापि	- कहीं/कहीं पर/कहीं भी
इह	- यहाँ/इस लोक में	कृते	- के लिए, लिए
	<b>ई</b>	कृतम्	- बस
ईषत्	- थोड़ा, कुछ (मात्रा)	कथम्	- कैसे/क्यों
	<b>उ</b>	कथमपि	- जैसे-तैसे, किसी प्रकार
उच्चैः	- ऊँचे/जोर से	कदा	- कब/किस समय
उत्तरेद्युः	- दूसरे दिन	कदापि	- कभी भी, जब कभी
उत	- अथवा (विकल्पार्थवाचक)	कदाचित्	- कभी/शायद
उपरि	- ऊपर	कष्टम्	- अफसोस
उपर्यधः	- ऊपर- नीचे	कुत्रचित्	- कहीं
उभयतः	- दोनों ओर, दोनों तरफ	किञ्चित्	- कुछ, थोड़ा
उभयेद्युः	- दोनों दिन	किञ्चिदपि	- कुछ भी
ऊर्ध्वम्	- ऊपर	किन्तु	- लेकिन, मगर
	<b>ऋ</b>	कथञ्चित्	- किसी तरह
ऋतम्	- बिना, सत्य	कतिचित्	- थोड़ा/कुछ (संख्या)
ऋते	- बिना, सिवाय	कतिपय	- थोड़ा (संख्या)
	<b>ए</b>	कस्मात्	- क्यों
एकधा	- एकप्रकार से	कस्मात् स्थानात्	- कहाँ से
एकदा	- एकबार, एक समय	कस्मिन् स्थाने	- कहाँ
एकैकम्	- एक-एक करके	किम्	- क्या/क्यों
एकपदे	- एक साथ, अचानक	कियत्	- कितना
एकत्र	- इकट्ठा	किमुत	- और कितना
एतर्हि	- इसीसमय/अब	किमपि	- कुछ (संख्या)
एव	- ही	किं परिमाणम्	- कितना
एवम्	- इसतरह/और/तुल्य/हाँ	किं मात्रम्	- कितना
एवमस्तु	- ऐसा ही हो।	किं भोः	- क्यों हो
एतावत्	- इतना	किमिति	- क्यों
एकैकशः	- एक-एक करके	क्रमशः	- लगातार
	<b>ऐ</b>	किल	- सचमुच/निश्चय
ऐषमे	- इस वर्ष	केन प्रकारेण	- कैसे
	<b>क</b>	केवलम्	- केवल,सिर्फ
कञ्चित्	- क्या	क्व	- कहाँ
कतिवारम्	- कितनी बार	क्वचित्	- कहीं
किञ्च	- और	कर्हि	- कब
कुतः	- कहाँ से, क्यों	किमर्थम्	- क्यों
कुत्र	- कहाँ	कतिशः	- एक बार में कितना, कितनी बार
कुतश्चन	- कहीं से	खलु	- निश्चय ही/जरूर
		गतेद्युः	- कल (बीता हुआ)



अव्ययशब्दः	हिन्दी	अव्ययशब्दः	हिन्दी
	<b>च</b>		<b>द</b>
च	- और	दक्षिणतः	- दाहिना
चतुर्धा	- चार प्रकार से	दिने दिने	- प्रतिदिन
चिरम्	- देर तक, देर में	दिने	- दिन में
चिराय	- देर तक, देर में	दूरम्	- दूर
चिरात्	- देर तक	दूरे	- दूर
चिरेण	- देर तक, देर में	द्वारा	- द्वारा, मास्फत
चेत्	- यदि/अगर	दिवा	- दिन में
	<b>ज</b>	दिशि-दिशि	- चारों तरफ
जातु	- कभी भी	दिष्ट्या	- सौभाग्य से
जातुचित्	- कभी भी	द्राक्	- शीघ्र/फौरन
जयतु जयतु	- जय जय	द्रुतम्	- शीघ्र, जल्दी
झटिति	- शीघ्र, जल्दी, झटपट	दैवात्	- भाग्यवश
	<b>त</b>	द्विधा	- दो प्रकार से
ततः	- फिर/तब/वहाँ से		<b>ध</b>
ततः प्रभृति	- तब से	धिक-धिक	- धिक्कार है, छिः-छिः
ततः पर्यन्तम्	- तब तक	ध्रुवम्	- निश्चय ही/जरूर
तत्र	- वहाँ/वहाँ पर	धन्यम्-धन्यम्	- शाबास-शाबास
तत्रापि	- वहाँ भी		<b>न</b>
तत्रैव	- वहीं	निकटे	- समीप, नजदीक
तथा	- उस तरह/वैसे	न	- नहीं, मत
तथैव	- उसी तरह/वैसे ही	न च	- न कि
तथापि	- फिर भी, तो भी	न तु	- न कि
तथाहि	- जैसे कि, वैसे ही	नमस्कारः	- नमस्कार
तदा	- तब	नो	- नहीं, मत
तदानीम्	- तभी, उस समय, तब	नहि	- नहीं, मत
तदारभ्य	- तब से	नमः	- प्रणाम/नमस्कार
तदा-तदा	- तब-तब	निकषा	- समीप, नजदीक
तदापि	- तब भी	नित्यम्	- हमेशा/लगातार/ नित्य
तु	- तो, किन्तु, लेकिन, मगर	निरन्तरम्	- लगातार, निरन्तर
तूष्णीम्	- चुपचाप	नीचैः	- नीचा
तावत्	- तब तक, उतना	निस्सन्देहम्	- बेशक
तर्हि	- तब, तो	निमित्तम्	- हेतु
तेन प्रकारेण	- वैसे	नितराम्	- बिल्कुल
तावन्मात्रम्	- उतना	नोचेत्	- नहीं तो

अव्ययशब्दः	हिन्दी	अव्ययशब्दः	हिन्दी
नाना	– अनेक	पृष्ठतः	– पीछे
नक्तम्	– रात को, रात में	पार्श्वतः	– बगल में/पास में
	<b>प</b>	पार्श्वदेशे	– बगल में
परन्तु	– लेकिन, मगर	पर्याप्तम्	– काफी
परम्	– परन्तु		<b>ब</b>
परश्वः	– परसों (आने वाला)	बलात्	– जबरदस्ती से
परस्परम्	– आपस में, परस्पर	बहिः	– बाहर
पदे पदे	– जगह-जगह	बहु	– अधिक
परह्यः	– परसों (बीता हुआ)	बहुधा	– अक्सर, अधिकतर
परितः	– चारों ओर	बहुकालम्	– देर में, देर तक
प्रत्यूषः	– प्रातः काल	बहु	– अधिक
प्रतिकूलम्	– विरुद्ध	बहुत्र	– बहुत जगह
प्रथमम्	– पहले	बाढम्	– अच्छा/हाँ (अंगीकार सूचक), बहुत अच्छा
पृष्ठदेशे	– पीछे	बारम्बारम्	– बार-बार
प्राक्	– पहले, पूर्वकाल में	बाहुल्येन	– अधिकता से
प्रायशः	– अक्सर		<b>भ</b>
प्रायेण	– अक्सर	भिन्नम्	– अलग
प्रातः	– प्रातःकाल	भूयः	– फिर/अधिक/बार-बार
प्रायः	– अक्सर	भूयोऽपि	– फिर भी
पश्चात्	– बाद में/पीछे/फिर	भूरि	– बहुत
परेद्युः	– दूसरे दिन, आने वाला कल	भृशम्	– अधिक/बार-बार
पर्याप्तम्	– काफी/यथेष्ट/ बस	भोः	– हे (आदर सहित बुलाने में), अरे
प्रकामम्	– काफी/यथेष्ट		<b>म</b>
प्रतिदिनम्	– रोज/नित्य प्रतिदिन	प्रयागः	
प्रसह्य	– जबरदस्ती	मङ्गलम्	– मङ्गल
प्रत्युत्	– बल्कि, वरन्	मध्ये	– बीच में, भीतर, मध्य में
पायं-पायम्	– पी-पीकर/पीते-पीते	मनाक्	– थोड़ा, कुछ (मात्रा)
पुनः	– फिर	मन्दम्	– धीरे-धीरे
पुनश्च	– फिर भी	मा	– मत, नहीं
पुनरपि	– फिर भी	मा स्म	– रहने दो
पुनः-पुनः	– बार-बार	मिथः	– परस्पर/एकान्त में/ आपस में
पुरः	– सामने/आगे	मिथ्या	– झूठ, असत्य
पुरतः	– सामने/आगे	मुधा	– बेकार में
पुरस्तात्	– सामने/आगे	मुहुर्मुहुः	– बार-बार
पुरा	– पहले/प्राचीन काल में	मृषा	– झूठा/बेकार/ असत्य
पूर्वेद्युः	– पहले दिन	मौनम्	– चुप
पूर्वदिने	– कल (बीता हुआ)		<b>य</b>
पूर्वम्	– पहले, पूर्वकाल में		
पृथक्	– अलग, अलावा	यत्र	– जहाँ/जहाँ पर

अव्ययशब्दः	हिन्दी	अव्ययशब्दः	हिन्दी
यत्र-तत्र	- जहाँ-तहाँ	व्यर्थम्	- व्यर्थ
यत्र-कुत्र	- जहाँ-कहीं	वृथा	- व्यर्थ/बेकार में
यत्र कुत्रापि	- जहाँ कहीं भी	वत्	- समान
यत्रापि	- जहाँ भी	विना	- बिना
यत्रैव	- जहाँ पर ही	विशेषतः	- विशेष रूप से
यत्	- कि/क्योंकि/जो	विलम्बेन	- देर से , देर तक
यतः	- क्योंकि/जो/जहाँ से	विषये	- बाबत
यथार्थतः	- सचमुच/वस्तुतः/ दर-असल	विपरीतम्	- विरुद्ध
यथापूर्वम्	- पूर्व के अनुसार/पहले की तरह	वरम्	- श्रेष्ठ, बढ़िया, अच्छा
यथा-तथा	- जिस प्रकार से/जैसे-तैसे करके/ जैसे-तैसे	वा	- अथवा
यथाशक्ति	- शक्ति के अनुसार	वामतः	- बाँए, बायाँ
यथा	- जैसे/जैसे कि/ ताकि/ समान	श	
यथायथम्	- यथायोग्य	शनैः	- धीरे-धीरे
यथायोग्यम्	- यथायोग्य	श्वः	- कल (आने वाला)
यथेष्टम्	- मनमाना	शाश्वत्	- निरन्तर, सदा, नित्य, लगातार
यथाकथञ्चित्	- जैसे-तैसे	शीघ्रम्	- जल्दी, शीघ्र
यत्किञ्चित्	- जो कुछ	श्रावं श्रावम्	- सुनते-सुनते, सुन-सुन कर।
यद्यपि	- हलाकि/यद्यपि	शोभनम्	- अच्छा
यदा	- जब	स	
यदापि	- जब कभी	स्वैरम्	- स्वेच्छा से।
यदा कदाचित्	- जब कभी	सततम्	- लगातार।
यदा-यदा	- जब -जब	सपदि	- शीघ्र, तुरन्त।
यदापर्यन्तम्	- जब तक	सत्यम्	- सत्य
यदि	- अगर, यदि	समक्षम्	- सामने
यदैव	- जब ही	समानम्	- समान
यदा-कदा	- कभी-कभी	स्पष्टम्	- स्पष्ट
यावत्	- जब तक, जीतना	स्फुटम्	- स्पष्ट
यस्मात्	- क्योंकि/जहाँ से	स्तोकम्	- थोड़ा, कुछ (मात्रा)
यस्मिन् काले	- जब	सद्यः	- शीघ्र, तुरन्त
यस्मिन् स्थाने	- जहाँ	सम्प्रति	- इसी समय, अब
यस्मात् स्थानात्	- जहाँ से	साम्प्रतम्	- इसी समय, अब, ठीक, युक्त
युक्तम्	- युक्त	सकृत्	- एक बार
युगपत्	- एकसाथ	स्थाने-स्थाने	- जगह-जगह
यथार्थम्	- सत्य	स्थले-स्थले	- जगह-जगह
येन केन प्रकारेण	- किसी भी प्रकार	स्तोकशः	- थोड़ा-थोड़ा
येन	- जिससे	सदा	- हमेशा
येन प्रकारेण	- जैसे	संवत्सरे	- अगले साल
रे रे	- हे (अवज्ञा से बुलाने में)		
रात्रौ	- रात्रि में		
	<b>व</b>		
वस्तुतः	- वास्तविक		

अव्ययशब्दः	हिन्दी	अव्ययशब्दः	हिन्दी
सर्वदा	– हमेशा	स्वयम्	– अपने आप, खुद, स्वयं
सदैव	– हमेशा	स्वतः	– अपने आप।
सायम्	– शाम, सायंकाल	सहितम्	– साथ।
सर्वत्र	– जब जगह	समकालम्	– एक साथ
सर्वथा	– सब तरह से, बिल्कुल	समन्ततः	– चारों तरफ
सविधे	– समीप, नजदीक	समम्	– साथ, बराबर-बराबर।
समीपम्	– पास, नजदीक	समया	– निकट, समीप, नजदीक
सम्बन्धे	– बाबत	समीचीनम्	– ठीक, अच्छा
सम्भवतः	– लगभग	सम्मुखम्	– सामने, तरफ
सम्यक्	– भली प्रकार से	सर्वतः	– चारों ओर/सभी ओर
सहसा	– एक दम, अचानक	स्मारं-स्मारम्	– याद कर-करके, याद करते-करते।
सह	– साथ	सत्वरम्	– शीघ्रता से, जल्दी-जल्दी, झटपट।
साकम्	– साथ	सुतराम्	– बिलकुल
समम्	– साथ	ह	–
सार्धम्	– साथ	हठात्	– जबरदस्ती
सुष्ठु	– ठीक, अच्छी तरह, अच्छा	हि	– इसलिए, निश्चय वाचक।
साधु	– ठीक, खूब, अच्छा	ह्यः	– कल (बीता हुआ)।
साधु-साधु	– शाबाश (प्रशंसा सूचक), वाह-वाह	हन्त	– विषादसूचक, हर्ष सूचक, हा।
स्वस्ति	– आशीर्वाद, कल्याण, कल्याण हो, मङ्गल	हा	– शोक या पीड़ासूचक।
साक्षात्	– प्रत्यक्ष, तुल्य।	हा हा	– शोक या परितापसूचक।
समन्तात्	– आसपास, चारों तरफ।	हुम्	– क्रोध सूचक।
सपद्येव	– तुरन्त, एकदम।	हे	– हे, अरे
		हेतौ	– हेतु

YouTube पर संस्कृतगंगा चैनल को देखें।

**UP-TET**  
( संस्कृत )



**M.P. वर्ग 1-2**  
( संस्कृत )

## पर्यायवाचिशब्दाः ( पर्यायवाची शब्द )

अ	क
<p><b>अग्निः</b> (पुं.) - अग्निः, वैश्वानरः, वह्निः, वीतिहोत्रः, धनञ्जयः, कृपीटयोनिः, जातवेदाः, ज्वलनः, तनूनपात्, बर्हिः, शुष्मा, कृष्णावर्त्मा, शोचिष्केशः, उषर्बुधः, आश्रयाशः, बृहद्भानुः, कृशानुः, पावकः, अनलः, रोहिताश्वः, वायुसखः, शिखावान्, आशुशुक्षणिः, हिरण्यरेताः, हुतभुक्, दहनः, हव्यवाहनः, सप्तार्चिः, दमुनाः, शुक्रः, चित्रभानुः, विभावसुः, शुचिः।</p> <p><b>असुरः</b> (पुं.) - दैत्यः, दैतेयः, दनुजः, इन्द्रारिः, दानवः, शुक्रशिष्यः, दितिसुतः, पूर्वदेवः, सुरद्विषः।</p> <p><b>अमृतम्</b> (नपुं.) - त्रिदशाहारः, सुधा, पीयूषम्, अमिय।</p> <p><b>अश्वः</b> (पुं.) - घोटकः, वीतिः, तुरगः, तुरङ्गः, तुरङ्गमः, वाजी, वाहः, अर्वा, गन्धर्वः, हयः सन्धवः, सद्रिः।</p>	<p><b>कर्णः</b> (पुं.) - शब्दग्रहः, श्रोत्रम्, श्रुतिः, श्रवणम्, श्रवः।</p> <p><b>कामदेवः</b> (पुं.) - मदनः, मन्मथः, मारः, प्रद्युम्नः, मीनकेतनः, कन्दर्पः, दर्णकः, अनङ्गः, कामः, पञ्चशरः, स्मरः, शम्बरारिः, मनसिजः, अनन्यजः, पुष्पधन्वा, रतिपतिः, मकरध्वजः, आत्मभूः, ब्रह्मसूः, विश्वकेतुः, कुसुमेष्टः।</p> <p><b>काकः</b> (पुं.) - अरिष्टः, करटः, बलिपुष्टः, स्कृत्त्रजः, एकदृक्, बलिभुक्, ध्वाङ्क्षः, चिरञ्जीवी, वायसः, आत्मघोषः, परभृत्, काकोलः।</p> <p><b>कोकिलः</b> (पुं.) - वनप्रियः, परभृत्, कोकिला, पिकः, परभृतिका।</p> <p><b>कमलम्</b> (नपुं.) - नीरजम्, पङ्कजम्, पुण्डरीकम्, इन्दीवरम्, तामरसम्, उत्पलम्, पद्मम्, कुवलयम्, नीलाम्बुजम्, कुमुदम्, कैरवम्, राजीवम्, नलिनम्, अरविन्दम्, सहस्रपत्रम्, कुशेशयम्, शतपत्रम्, सरसीरुहः, जलजम्।</p>
<p><b>अध्यापकः</b> (पुं.) - उपाध्यायः, गुरुः, आचार्यः।</p> <p><b>असिः</b> (पुं.) - कृपाणः, करपालः, चन्द्रहासः, खड्गः।</p>	<p><b>कपोतः</b> (पुं.) - पारावतः, कलरवः।</p> <p><b>कन्या</b> (स्त्री.) - कुमारी, गौरी, नग्निका, अनागतार्तवा।</p>
आ	<p><b>कृषकः</b> (पुं.) - कर्षकः, क्षेत्राजीवः, कृषीवलः, कृषिकः।</p>
<p><b>आनन्दः</b> (पुं.) - मुदा (स्त्री), प्रीतिः, प्रमदः (पुं.), हर्षः (पुं.), प्रमोदः (पुं.), आमोदः (पुं.), सम्मदः, आनन्दथुः, शर्मम्, शातम्, सुखम् (नपुं.)</p>	<p><b>कुक्कुरः</b> (पुं.) - शुनकः, श्वा, कौलेयकः, सारमेयः, मृगदंशकः।</p> <p><b>कामी</b> (पुं.) - कामुकः, कमिता, अनुकः, कामयिता, कम्पः, अभीकः, कमनः, कामनः, अभिकः।</p>
<p><b>आकाशः</b> (पुं.) - नभः, मरुद्वर्त्मा, वियत्, विहायः, तारापथः, पुष्करम्, अन्तरिक्षम्, व्योम, अम्बरम्, विष्णुपदम्, खम्, द्यौः, विहायसम्, गगनम्, द्यु, अभ्रम्, अनन्तम्, महाविलम्, मेघाध्वा।</p>	<p><b>कार्तिकेयः</b> (पुं.) - महासेनः, शरजन्मा, षडाननः, पार्वतीनन्दनः, स्कन्दः, सेनानी, अग्निभूः, बाहुलेयः, तारकजित्, विशाखः, शिखिवाहनः, षाण्मातुरः, शक्तिधरः, कुमारः, क्रौञ्चदारणः।</p>
<p><b>आम्रः</b> (पुं.) - चूतः, रसालः, सहकारः, अतिसौरभः।</p>	<p><b>कुबेरः</b> (पुं.) - त्र्यम्बकसखः, यक्षराट्, गुह्यावेश्वरः, मनुष्यधर्मा, धनदः, राजराजः, धनाधिपः, किनरेशः, वैश्रवणः, पौलस्त्यः, नरवाहनः, यक्षः, एकपिंगः, ऐलविलः, श्रीदः, पुण्यजनेश्वरः।</p>
इ	<p><b>कल्पवृक्षः</b> (पुं.) - पारिजातिकः, मन्दारः, सन्तानः, हरिचन्दनम्।</p>
<p><b>इन्द्रः</b> (पुं.) - ऋभुक्षः, संक्रन्दनः, सहस्राक्षः, इन्द्रः, दुश्च्यवनः, शक्रः, हरिः, बलारातिः, स्वाराट्, नमुचिसूदनः, वृत्रहा, शुनासीरः, आखण्डलः, गोत्रभिद्, वज्री, वृषा, वास्तोष्पतिः, वासवः, पुरन्दरः, लेखर्षभः, शतमन्युः, दिवस्पतिः, सुत्रामा, मघवा, विडौजाः, पाकशासनः, सुरपतिः, शचीपतिः, मेघवाहनः, मरुत्वान्, वृद्धश्रवाः, पुरुहूतः।</p>	ग
उ	<p><b>गणेशः</b> (पुं.) - विनायकः, विघ्नराजः, द्वैमातुरः, गणाधिपः, एकदन्तः, हेरम्बः, गजाननः, लम्बोदरः।</p> <p><b>गङ्गा</b> (स्त्री.) - मन्दाकिनी, त्रिपथगा, भागीरथी, विष्णुपदी, जहुतनया, सुरनिम्नगा, त्रिस्रोता, भीष्मसूः।</p> <p><b>गजः</b> (पुं.) - दन्ती, दन्तावलः, हस्ती, द्विरदः, अनेकपः, द्विपः, मतङ्गजः, गजः, नागः, कुञ्जरः,</p>

गृहम् (नपुं.)	वारणः, करी। - गेहम्, उदवसितम्, वेश्म, निवेतनम्, निशान्तम्, वस्त्यम्, सदनम्, भवनम्, आगारम्, मन्दिरम्, निलयः, निकायः, आलयः, वासः, प्रासादः, सौधः, हर्म्यम्।	दम्पती (पुं., द्विव.)	- जम्पती, जायापती, भार्यापती।
गरुडः (पुं.)	- वैनतेयः, खगेश्वरः, विष्णुरथः, सुपर्णः, नागान्तकः, तार्क्ष्यः, पन्नगाशनः।	दासः (पुं.)	- कर्मकरः, वैतनिकः, भृतकः, भृत्यः, चेतकः, किकरः, भुजिष्यः।
गुप्तचरः (पुं.)	- गूढपुरुषः, चरः, चारः, स्पशः, अपसर्पः, प्रणिधिः।	धनम् (नपुं.)	- द्रव्यम्, वित्तम्, अर्थः, राः, रिक्थम्, वशुः, स्वापतेयम्, हिरण्यम्, द्रविणम्, ऋक्थम्।
गर्दभः (पुं.)	- रासभः, खरः, वालेयः, चक्रीवान्।	न	
चन्द्रः (पुं.)	- इन्दुः, चन्द्रमाः, सोमः, कुमुदबान्धवः, निशापतिः, ओषधीशः, राजा, रोहिणी-वल्लभः, अब्जः, शशाङ्कः, सुधांशुः, विधुः, ऋक्षेशः, अत्रिनेत्रप्रसूतः, नक्षत्रेशः, शशधरः, जैवातुकः, प्रालेयांशुः, श्वेतरोचिः, हिमांशुः, ग्लौः, मृगाङ्कः, कलानिधिः, द्विजराजः, क्षपाकरः।	नर्मदा (स्त्री.)	- रेवा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका, सदानीरा, बाहुदा, सैतवाहिनी।
चिकित्सकः (पुं.)	- वैद्यः, भिषक्, रोगहारी।	नायकः (पुं.)	- पतिः, स्वामी, ईश्वरः, ईशिता, अधिभूः, नेता, प्रभुः, परिवृढः, अधिपः।
चौरः (पुं.)	- स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषकः, पाटच्चरः।	नदी (स्त्री.)	- सरिता, निर्झरिणी, तरिनी, हृदिनी, नदः, स्रवन्ती, तरङ्गिणी, पयस्विनी, लहरी, शैवालिनी, अपगा, स्रोतस्विनी, सरिः, तरङ्गवती, निम्नगा, धुनिः, समुद्रकान्ता, कूलङ्कषा, सरस्वती, द्वीपवती, धुनी, तटिनी।
जलम् (नपुं.)	- आपः, तोयम्, घनरसः, पयः, पुष्करम्, मेघपुष्पम्, कम्, पानीयम्, सलिलम्, उदकम्, वारि, कुशम्, जलम्, वनम्, क्षीरम्, अम्भः, अम्बु, नीरम्, भुवनम्, अमृतम्, जीवनीयम्, पाथम्, कीलालम्।	नरकः (पुं.)	- यमलोकः, यमपुरम्, यमालयः, निरयः, दुर्गतिः, नारकः, तामिस्रम्, सज्जीवनम्, सम्प्रतापनम्, अन्धतामिस्रम्।
जगत् (नपुं.)	- भुवनम्, विष्टपम्, लोकः, जगत्।	नौका (स्त्री.)	- तरणी, जलयानम्, तरी, वनवाहनम्, पतङ्गम्।
जिह्वा (स्त्री.)	- रसज्ञा, रसना, जिह्वा।	निधनः (पुं.)	- पञ्चता, कालधर्मः, दिष्टान्तः, प्रलयः, अत्ययः, अन्तः, नाशः, मृत्युः, मरणम्।
तरुणी (स्त्री.)	- युवती, मनोज्ञा, सुन्दरी, यौवनवती, प्रमदा, रमणी।	नासिका (स्त्री.)	- घ्राणम्, गन्धवहा, नासा, घोणा।
तडागः (पुं.)	- सरः, जलाशयः, कासारः, तालः, सरसी, पुष्करः, हृदः, सरोवरः, जलाधारः, खातम्, अखातम्।	पतिः (पुं.)	- भर्ता, वल्लभः, धवः, आर्यपुत्रः, ईशः, स्वामी, जीवनाधारः, नाथः, प्रियः, प्राणेशः, प्राणवल्लभः।
तरुः (पुं.)	- वृक्षः, विटपः, द्रुमः, पादपः।	पण्डितः (पुं.)	- सुधी, विद्वान्, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी, प्राज्ञः, विलक्षणः, युधः, विज्ञः।
दक्षः (पुं.)	- चतुरः, प्रवीणः, कुशलः, निपुणः।	पर्वतः (पुं.)	- भूधरः, गिरिः, महीधरः, महीध्रः, शिखरी, धीरः, शैलः, नगः, मेरुः, गोत्रः, अद्रिः, क्षमाभृत्, भूमिधरः, महीधरः, तुङ्गम्, शिलोच्चयः, अहार्यः, अचलः, धराधरः।
दन्तः (पुं.)	- रदनः, दशनः, रदः, दन्तः, द्विजः, मुखक्षुरः।	पक्षी (पुं.)	- द्विजः, अण्डजः, विहङ्गः, खगः, शकुन्तः, शकुनिः, पतङ्गः, विः, विष्किरः, पतत्रिः, वाजी, पत्री, विहायसः, विहगः, शकुनः।
दानवः (पुं.)	- राक्षसः, दैत्यः, निशाचरः, असुरः, शम्बरः, दनुजः, इन्द्रारिः।	परशुरामः (पुं.)	- भृगुसुतः, जामदग्न्यः, भार्गवः, परशुधरः, रेणुकातनयः, भृगुनन्दनः।
दिवसः (पुं.)	- वासरः, दिवा, वारः, दिनम्, अहः, घस्रः।		
द्रौपदी (स्त्री.)	- कृष्णा, पाञ्चाली, द्रुपदसुता, याज्ञसेनी।		
देवः (पुं.)	- अमरः, निर्जरः, अजरः, सुरः, सुमनाः, सुपर्वा,		

पवित्रम् (वि.)	— पावनम्, पुनीतम्, पूतम्, विशुद्धम्, पाकम्, शुद्धम्, शुचिः, स्वच्छम्।		
पार्वती (स्त्री.)	— उमा, कात्यायनी, गौरी, शिवा, भवानी, दुर्गा, गिरिजा, गिरिराजकुमारी, सती, अम्बिका, शैलसुता, ईश्वरी, रुद्राणी, आर्या, अभया, सर्वमङ्गला, हैमवती, शर्वाणी, अपर्णा, मृडानी, चण्डिका, काली, मैनसुता, दाक्षायणी, दाक्षी।	बाणः (पुं.)	— शरः, पृषत्कः, विशिखः, खगः, आशुगः, कलम्बः, मार्गणः, पत्नी, इषुः, नाराचः।
पुत्रः (पुं.)	— तनयः, आत्मजः, सुतः, औरसः, सूनुः।	भ्रमरः (पुं.)	— मधुकरः, मधुपः, अलिः, भृङ्गः, भ्रमरः, षट्पदः, मधुराजः, मधुभक्षः, द्विरेफः, मधुव्रतः।
पुत्री (स्त्री.)	— तनया, आत्मजा, सुता, दुहिता, सूनुः।	मनः (नपुं.)	— चितः, चेतः, हृदयः, स्वान्तः, मानस्, मनस्।
पातालम् (नपुं.)	— वडवामुखम्, वैरोचनिकेतनम्, रसातलम्, नागलोकः, अधोभुवनम्, अतलम्, वितलम्, सुतलम्, तलातलम्, महातलम्, बलिसदम्।	मार्गः (पुं.)	— अयनम्, वर्त्म, अध्वा, पन्थानः, पदवी, सृतिः, सरणिः, पद्धतिः, पद्य, वर्तनिः, एकपदी।
पुरुषः (पुं.)	— मनुष्यः, मानवः, मर्त्यः, मनुजः, मानुषः, नरः, पञ्चजनः, पूरुषः, पुमान्, कान्तः।	मन्दिरम् (नपुं.)	— देवालयः, देवस्थानम्, देवगृहम्, ईशगृहम्।
पथिकः (पुं.)	— अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिकः।	महादेवः (पुं.)	— शिवः, शम्भुः, हरः, शङ्करः, महेशः, गिरीशः, चन्द्रशेखरः, नीलकण्ठः, रुद्रः, त्रिलोचनः, त्रिपुरारी, गङ्गाधरः, उमापतिः, भूतनाथः, पशुपतिः, महेश्वरः, गिरिजापतिः, कपर्दी, वामदेवः, कैलाशपतिः, शितिकण्ठः, चन्द्रमौलिः, देवाधिदेवः, मदनारिः, ईशः, ईशानः, ईश्वरः, शर्वः, शूली, भूतेशः, पिनाकी, मृत्युञ्जयः, सर्वज्ञः।
पुष्पम् (नपुं.)	— सुमनस्, पुष्पम्, प्रसूनम्, कुसुमम्, सुमनसः।	मानुष्यः (पुं.)	— मानुषः, मर्त्यः, मनुजः, मानवः, नरः।
पृथ्वी (स्त्री.)	— भूः, भूमिः, अचला, अनन्ता, रसा, धरा, धरित्री, धरणी, वसुन्धरा, वसुधा, उर्वी, क्षितिः, विश्वम्भरा, क्षोणिः, ज्या, कुः, पृथिवी, गोवा, क्षमा, अविनिः, मेदिनी, मही, स्थिरा, सर्वसहा, काश्यपी, वसुमती, जगतिः, धाप्ती।	माता (स्त्री.)	— जननी, जनयित्री, प्रसूः, अम्बा।
पाषाणः (पुं.)	— प्रस्तरः, ग्रावा, उपलः, अश्म, शिला, दृषत्।	मीनः (पुं.)	— मत्स्यः, शफरी, झणः, जलजीवनम्, अण्डजः, विसारः, शकुली।
पत्नी (स्त्री.)	— पाणिगृहीती, सहधर्मिणी, भार्या, जाया, दासः।	मदिरा (स्त्री.)	— आसवः, मधु, सोमरसः, मद्यम्, मध्वासवः, वारुणी, मध्विजा।
ब		महात्मा (पुं.)	— महामनाः, महाशयः, महानुभावः, महापुरुषः।
बलरामः (पुं.)	— बलदेवः, बलभद्रः, हलधरः, बलवीरः, हलायुधः, रौहिणेयः, श्यामबन्धुः, रेवतीरमणः, नीलाम्बरः, मुसली, कामपालः।	मूर्खः (पुं.)	— मूढः, अज्ञानी, जडः, निर्बुद्धिः, अज्ञः, बालिशः।
ब्रह्मा (पुं.)	— पितामहः, स्वयम्भूः, विधिः, चतुराननः, विरञ्चिः, विधाता, विधना, सृष्टा, प्रजापतिः, कमलासनः, हिरण्यगर्भः, आत्मभूः, हंसवाहनः, लोकेशः, अजः, नाभिजन्मा, सदानन्दः, अण्डजः, गिरापतिः, सुरज्येष्ठः, परमेष्ठी, पितामहः।	मेघः (पुं.)	— धाराधरः, घनः, जलधरः, वारिदः, जीमूतः, नीरदः, वारिधरः, पयोदः, पयोधरः, अम्बुदः, वारिवाहः, बलाहकः।
बुद्धिः (स्त्री.)	— मनीषा, धिषणा, धीः, प्रज्ञा, शेमुषी, मतिः, प्रेक्षा, उपलब्धिः, चित्, संवित्, प्रतिपद्, ज्ञप्तिः, चेतना।	मयूरः (पुं.)	— केकी, कलापी, शिखी, शिखण्डी, ध्वजी, हरिः, नीलकण्ठः, भुजगारिः, सारङ्गः, शिवसुतवाहनः।
बुद्धः (पुं.)	— सुगतः, सर्वज्ञः, सर्ववित्, भगवान्, तथागतः, समन्तभद्रः।	यमः (पुं.)	— सूर्यपुत्रः, जीवनपतिः, पितृपतिः, समवर्ती, अन्तकः, धर्मराजः, शमनः, परेतराट्, शमनः, वैवस्वतः, कीनासः, कृतान्तः, कालः, अन्तकः, जीवितेशः, मृत्युपतिः, यमराजः, नरदण्डधरः, यमुनाभ्राता, दण्डधरः, श्राद्धदेवः।
बृहस्पतिः (पुं.)	— सुराचार्यः, गीर्षतिः, गुरुः, जीवः, वाचस्पतिः, चित्रशिखण्डिजः, आङ्गिरसः, धिषणः।	यमुना (स्त्री.)	— कालिन्दी, अर्कजा, रवितनया, कृष्णा,
बिडालः (पुं.)	— मार्जारः, ओतुः, वृषदंशकः, आखुभुक्।		
ब्राह्मणः (पुं.)	— विप्रः, भूदेवः, भूसुरः, महिदेवः, महीसुरः,		



कालगङ्गा, सूर्यसुता, भानुजा, तरणितनूजा, अर्कसुता, सूर्यतनया, शमनस्वसा।	वायुः (पुं.)	प्रधानम्।
युवती (स्त्री.) - सुन्दरी, श्यामा, किशोरी, तरुणी, नवयौवना, सुवासिनी, स्नुषा, रमणी, यौवनवती, वनिता, वधूः, इच्छावती, मध्यमा, वामा, भामा, अभिसारिका।	विष्णुः (पुं.)	- पवनः, समीरः, अनिलः, वातः, मारुतः, समीरणः, गन्धवाहः, सदागतिः, श्वसनः, जगत्प्राणः, मारुतः, प्रकम्पनः।
यज्ञः (पुं.) - सवः, अध्वरः, यागः, क्रतुः, मखः।	विद्युत् (स्त्री.)	- गरुडध्वजः, अच्युतः, जनार्दनः, चक्रपाणिः, विश्वम्भरः, मुकुन्दः, नारायणः, हृषीकेशः, माधवः, केशवः, गोविन्दः, दामोदरः, लक्ष्मीपतिः, विधुः, विश्वरूपः, जलाशायी, वनमाली, उपेन्द्रः, पीताम्बरः, चतुर्भुजः, अधोक्षजः, शार्ङ्गिन्, मधुरिपुः।
युद्धम् (नपुं.) - आयोधनम्, जन्यम्, प्रधानम्, प्रविदारणम्, रणः, साम्प्रदायिकम्, कलहः, विग्रहः, सम्प्रहारः, अभिसम्पातः, संस्फोटः, समाघातः, आहवः, समुदायः, समितिः, आजिः, तुमुलम्।	वानरः (पुं.)	- विद्युत्, शम्पा, ह्यादिनी, ऐरावती, क्षणप्रभा, तडित्, सौदामिनी, चञ्चला, चपला, क्षणप्रभा, घनवल्ली।
राधा (स्त्री.) - बृषभानुजा, राधिका, ब्रजरानी, हरिप्रिया, ब्रजेश्वरी।	वृक्षः (पुं.)	- बलीमुखः, मर्कटकः, वनौकाः, हरिः, प्लवङ्गमः, प्लवङ्गः, प्लवगः, कपिः, कीशः, शाखामृगः, वानरः।
राजा (पुं.) - नृपः, नृपतिः, भूपः, महीशः, नरेशः, नरपतिः, नरेन्द्रः, सम्राट्, महीपतिः, भूस्वामी, भूपतिः, भूपालः, महीपालः।	वेदः (पुं.)	- महीरुहः, शाखी, विटपी, पादपः, तरुः, अनोकहः, कुटः, सालः, पलाशी, दुः, दुमः, अगमः।
रात्रिः (स्त्री.) - रजनी, निशा, निशीथः, यामिनी, विभावरी, शर्वरी, तमी, त्रियामा, तमिस्रा, विभा, क्षपा, तमस्विनी, क्षणदा, ज्यौत्स्नी।	विद्वान् (पुं.)	- श्रुतिः, आम्नायः, त्रयी, निगमः।
रोगः (पुं.) - रुजा, उपतापः, व्याधः, गदः, आमयः, रुग्णः, अस्वस्थः।	शरीरम् (नपुं.)	- दोषज्ञः, सुधी, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी, ज्ञः, प्राज्ञः, संख्यावान्, पण्डितः, कविः, धीमान्, सूरिः, कृती, कृष्टिः, विचक्षणः, दूरदर्शी, दीर्घदर्शी।
राक्षसः (पुं.) - कौणपः, क्रव्यादः, अस्त्रपः, आशरः, रात्रिचरः, कर्बुरः, निकषात्मजः, यातुधानः, पुण्यजनः, नैऋतः, यातुः, रक्षसी।	शिवः (पुं.)	श
राज्ञी (स्त्री.) - देवी, महिषी, भट्टिनी, साम्राज्ञी।	शृगालः (पुं.)	- गात्रम्, वपुः, संहननम्, वर्ष्मन्, विग्रहः, कायः, देहः, मूर्तिः, तनुः, तनूः।
रोगी (पुं.) - आतुरः, आमयावी, विकृतः, व्याधितः, अपटुः, अभ्यान्तः, अभ्यमितः।	सरस्वती (स्त्री.)	- शम्भुः, पशुपतिः, महेश्वरः, शङ्करः, चन्द्रशेखरः, हरः।
लक्ष्मणः (पुं.) - शेषावतारः, शेषः, रामानुजः, सौमित्रः, अनन्तः	स्वर्गः (पुं.)	- शिवा, फेखः, जम्बुकः, फेरुः, क्रोष्टुः, वञ्चकः, मृगधूर्तकः, गोमायुः, भूरिमायः।
लक्ष्मीः (स्त्री.) - श्रीः, कमला, रमा, पद्मासना, इन्दिरा, समुद्रजा, हरिप्रिया, क्षीरोदतनया, भार्गवी, सिन्धुसुता, पद्मवासा, मा, लोकमाता, लोकजननी, पद्मालया, पद्मा।	सूर्यः (पुं.)	स
लवणम् (नपुं.) - सामुद्रम्, सैन्धवम्, अक्षीवम्, वशिरम्, शीतशिवम्, सिन्धुजम्, रौमकम्, माणिमन्थम्, खिडम्, रुचकम्, सौवर्चलम्, पाक्यम्, वसुकम्।	सर्वस्वती (स्त्री.)	- ब्राह्मी, भारती, भाषा, गीः, वाक्, वाणी, वागेश्वरी, वीणावादिनी, शारदा, विद्यादेवी, विधात्री।
व्याधः (पुं.) - वागुरिकः, जालिकः, कौटिकः, मृगयुः, लुब्धकः, वैतंसिकः।	स्वर्गः (पुं.)	- स्वः, स्वर्गः, नाकः, द्यौः, त्रिदशालयः, सुरलोकः, दिवम्, त्रिविष्टपम्, त्रिदिवः, देवलोकः।
वनम् (नपुं.) - अरण्यम्, काननम्, अटवी, विपिनम्, कान्तारम्, वनम्, गहनम्, सत्वम्	सूर्यः (पुं.)	- आदित्यः, सविता, सहस्रकिरणः, प्रद्योतनः, भास्करः, तिग्मांशुः, तरणिः, दिनमणिः, भास्वान्, विवस्वान्, हरिः, मार्तण्डः, तपनः, विकर्तनः, इनः, पूषन्, पतङ्गः, भगः, सूरः, गोपतिः, अर्यमान्, रविः, दिनकरः, अंशुमाली, प्रभाकरः, भानुः।
वरः (पुं.) - श्रेष्ठः, उत्तमः, मुख्यः, सर्वोपरिः, उत्कृष्टः,		

सिंहः (पुं.)	– मृगेन्द्रः, हर्यक्षः, केसरी, हरिः, पञ्चास्यः।	सीता (स्त्री.)	– भूमिजा, वैदेही, जनककिशोरी, जनकतनया, जानकी, रामप्रिया, जनकसुता।
सूकरः (पुं.)	– वराहः, घृष्टिः, कोलः, पोत्री, किरः, किटिः, दष्ट्री, घोणी, स्तब्धरोमा, क्रोडः, भूदारः।	समुद्रः (पुं.)	– अब्धिः, अकूपारः, उदधिः, सिन्धुः, सागरः, अर्णवः, रत्नाकरः, जलनिधिः, पारावारः, अपांपतिः, सरित्पतिः, उदन्वान्, सरस्वान्।
स्त्री (स्त्री.)	– रामा, वामा, वामनेत्रा, नारी, भीरुः, भामिनी, कामिनी, योषी, योषित्, वासिता, वर्णिनी, सीमन्तिनी, अङ्गना, सुन्दरी, अबला, वधूः, वनिता, महिला, कान्ता, अङ्गना, रमणी, जाया, दाराः।	हरिणः (पुं.)	– मृगः, कुरङ्गः, वातायुः, अजिनयोनिः।
सर्पः (पुं.)	– पृदाकुः, चक्री, व्यालः, सरीसृपः, उरगः, पन्नगः, भोगी, जिह्मगः, पवनाशनः, काकोलः, फणी, अहिः, विषधरः, बिलेशयः, भुजङ्गः।	हनुमान् (पुं.)	– पवनसुतः, पवनकुमारः, महावीरः, रामदूतः, मारुततनयः, वज्राङ्गी, वज्राङ्गिः, मारुतिनन्दनः, आज्ञनेयः, कपिशः, पवनपुत्रः
सुन्दरम् (वि.)	– सुन्दरम्, रुचिरम्, चारु, सुषमा, साधु, शोभनम्, कान्तम्, मनोरमम्, रुच्यम्, मनोज्ञम्, मञ्जुः, मञ्जुलम्।	हिमालयः (पुं.)	– हिमपतिः, नगराजः, शैलेन्द्रः, नगपतिः, हिमाद्रिः, हिमाचलः, गिरिराजः, हिमगिरिः।
सारङ्गः (पुं.)	– सिंहः, गजः, कामदेवः, मृगः, मयूरः, दीपः, नेत्रम्, बादलः, वायुः,	हिमम् (नपुं.)	– नीहारः, अवश्यायः, तुहिनम्, प्रालेयम्, हिमानी, हिमसंहतिः, मिहिका।

### विलोम-शब्दाः

अनुलोमः	विलोमः	अनुलोमः	विलोमः
	अ		
असीमः (वि.)	– ससीमः (वि.)	अग्रिमः (वि.)	– अन्तिमः (वि.)
अतिवृष्टिः (स्त्री.)	– अनावृष्टिः (स्त्री.)	असाध्यम् (वि.)	– साध्यम् (वि.)
अमावस्या (स्त्री.)	– पूर्णिमा (स्त्री.)	अन्तरङ्गम् (वि.)	– बहिरङ्गम् (वि.)
अमृतम् (नपुं.)	– विषम् (नपुं.)	अङ्गीकारः (वि.)	– अस्वीकारः (वि.)
अधोगामी (पुं.)	– ऊर्ध्वगामी (पुं.)	अल्पज्ञः (पुं.)	– बहुज्ञः (पुं.)
अर्वाचीनम् (वि.)	– प्राचीनम् (वि.)	अभिमानी (पुं.)	– निरभिमानी (पुं.)
अनुकूलः (वि.)	– प्रतिकूलः (वि.)	अम्बरम् (नपुं.)	– अवनः (स्त्री.)
अपकारः (पुं.)	– उपकारः (पुं.)	अचलम् (वि.)	– चलम् (वि.)
अनुरागः (पुं.)	– विरागः (पुं.)	अभिव्यक्तः (वि.)	– अनभिव्यक्तः (वि.)
अभिज्ञः (पुं.)	– अनभिज्ञः (पुं.)	अज्ञः (पुं.)	– विज्ञः (पुं.)
अनुजः (पुं.)	– अग्रजः (पुं.)	अकर्तव्यः (वि.)	– कर्तव्यः (वि.)
अर्धम् (वि.)	– पूर्णम् (वि.)	अपेक्षा (स्त्री.)	– अनपेक्षा (स्त्री.)
अवकाशः (पुं.)	– अनवकाशः (पुं.)	अन्तिमः (वि.)	– प्रथमः (वि.)
अल्पम् (वि.)	– बहु (वि.)	अङ्कुशः (पुं.)	– निरङ्कुशः (पुं.)
अनुलोमः (पुं.)	– प्रतिलोमः (पुं.)	अवलम्बः (पुं.)	– निरालम्बः (पुं.)
अनादरः (पुं.)	– आदरः (पुं.)	अधर्मः (पुं.)	– सद्धर्मः (पुं.)
अधमः (वि.)	– उत्तमः (वि.)	अन्तरम् (वि.)	– बाह्यम् (वि.)
अनुकूलः (वि.)	– प्रतिकूलः (वि.)	अंशतः (अव्य.)	– पूर्णतः (अव्य.)
अनुलोपः (वि.)	– विलोपः (वि.)	अल्पकालिकः (पुं.)	– दीर्घकालिकः (पुं.)
		अध्यवसायः (पुं.)	– अनध्यवसायः (पुं.)
		अवरोधः (पुं.)	– अनवरोधः (पुं.)

अनुलोमः	विलोमः	अनुलोमः	विलोमः
अपेक्षितम् (वि.)	– अनपेक्षितम् (वि.)	आवरणम् (नपुं.)	– अनावरणम् (नपुं.)
अग्राह्यः (वि.)	– ग्राह्यः (वि.)	आवृत्तः (पुं.)	– अनावृत्तः (पुं.)
अरुचिः (स्त्री.)	– सुरुचिः (स्त्री.)	आज्ञा (स्त्री.)	– अवज्ञा (स्त्री.)
अकर्मण्यः (पुं.)	– कर्मण्यः (पुं.)	आमिषः (पुं.)	– निरामिषः (पुं.)
अत्यधिकम् (नपुं.)	– स्वल्पम् (नपुं.)	आदत्तः (पुं.)	– प्रदत्तः (पुं.)
अत्र (अव्य.)	– तत्र (अव्य.)	आदानम् (वि.)	– प्रदानम् (वि.)
अथ (अव्य.)	– इति (अव्य.)	आकर्षणम् (नपुं.)	– विकर्षणम् (नपुं.)
अधस्तन (वि.)	– उपरितन (वि.)	आहूतः (वि.)	– अनाहूतः (वि.)
अधमर्णः (पुं.)	– उत्तमर्णः (पुं.)	आदिः (वि.)	– अन्तम् (नपुं.)
अधिकतमः (वि.)	– न्यूनतमः (वि.)	आश्रितः (वि.)	– अनाश्रितः (वि.)
अधित्यका (स्त्री.)	– उपत्यका (स्त्री.)	आहारः (पुं.)	– निराहारः (पुं.)
अधिकांशः (पुं.)	– अल्पांशः (पुं.)	आरम्भः (पुं.)	– अन्तः (पुं.)
अधः (अव्य.)	– उपरि (अव्य.)	आदरः (पुं.)	– निरादरः (पुं.)
अधुनातनः (पुं.)	– पुरातनः (पुं.)	आदरणीयः (पुं.)	– अनादरणीयः (पुं.)
अनृतम् (नपुं.)	– ऋतम् (नपुं.)	आयातः (पुं.)	– निर्यातः (पुं.)
अनुपस्थितः (पुं.)	– उपस्थितः (पुं.)	आस्तिकः (पुं.)	– नास्तिकः (पुं.)
अनिवार्यः (पुं.)	– वैकल्पिकः (पुं.)	आर्द्रम् (नपुं.)	– शुष्कम् (नपुं.)
अन्धकारः (पुं.)	– प्रकाशः (पुं.)	आकाशः (पुं.)	– पातालम् (नपुं.)
अन्तर्मुखी (वि.)	– बहिर्मुखी (वि.)	आशा (स्त्री.)	– निराशा (स्त्री.)
अन्तर्भूतः (पुं.)	– बहिर्भूतः (पुं.)	आवरणम् (वि.)	– निरावरणम् (वि.)
अनुरक्तिः (पुं.)	– विरक्तिः (पुं.)	आकुञ्चनम् (नपुं.)	– प्रसारणम् (नपुं.)
अनुग्रहः (पुं.)	– विग्रहः (पुं.)	आचारः (पुं.)	– अनाचारः (पुं.)
अन्तर्द्वन्द्वः (पुं.)	– बहिर्द्वन्द्वः (पुं.)	आवाहनम् (नपुं.)	– विसर्जनम् (नपुं.)
अपररात्रः (पुं.)	– पूर्वरत्रः (पुं.)	आरोहणम् (नपुं.)	– अवरोहणम् (नपुं.)
अर्पणम् (नपुं.)	– ग्रहणम् (नपुं.)	आतपः (पुं.)	– निरातपः (पुं.)
अपराह्णः (पुं.)	– पूर्वाह्णः (पुं.)	आरूढः (पुं.)	– अनारूढः (पुं.)
अपकीर्तिः (स्त्री.)	– कीर्तिः (स्त्री.)	आविर्भावः (पुं.)	– तिरोभावः (पुं.)
अपकर्षः (पुं.)	– उत्कर्षः (पुं.)	आभ्यन्तरः (वि.)	– बाह्यः (वि.)
अर्पितः (पुं.)	– गृहीतः (पुं.)	आध्यात्मिकः (पुं.)	– भौतिकः (पुं.)
अभीष्टः (पुं.)	– अनभीष्टः (पुं.)	आर्षः (पुं.)	– अनार्षः (पुं.)
अल्पसंख्यकः (पुं.)	– बहुसंख्यकः (पुं.)	आवश्यकम् (नपुं.)	– अनावश्यकम् (नपुं.)
अल्पायुः (वि.)	– दीर्घायुः (वि.)	आग्रहः (पुं.)	– दुराग्रहः (पुं.)
अवनिः (स्त्री.)	– अम्बरः (पुं.)	आधारः (पुं.)	– निराधारः (पुं.)
अवनतिः (स्त्री.)	– उन्नतिः (स्त्री.)	इहलोकम् (वि.)	– परलोकम् (वि.)
अशिवः (पुं.)	– शिवः (पुं.)	ईश्वरः (पुं.)	– अनीश्वरः (पुं.)
असभ्यः (पुं.)	– सभ्यः (पुं.)		

## आ

आकीर्णः (पुं.)	– विकीर्णः (पुं.)
आदिष्टः (पुं.)	– निषिद्धः (पुं.)

## उ

उत्कृष्टः (वि.)	– निकृष्टः (वि.)
उत्खननम् (नपुं.)	– निखननम् (नपुं.)
उदयः (पुं.)	– अस्तः (पुं.)
उदयाचलः (पुं.)	– अस्ताचलः (पुं.)
उत्तरार्द्धः (पुं.)	– पूर्वार्द्धः (पुं.)

[illegible]



अनुलोमः	विलोमः	अनुलोमः	विलोमः
दूरवर्ती (पुं.)	– निकटवर्ती (पुं.)	प्रकटः (वि.)	– प्रच्छन्नः (वि.)
दैविकः (पुं.)	– भौतिकः (पुं.)	प्रदानम् (वि.)	– आदानम् (वि.)
दैत्यः (पुं.)	– देवः (पुं.)	प्रभुः (पुं.)	– भृत्यः (पुं.)
दिवा (स्त्री.)	– रात्रिः (स्त्री.)	प्रदोषः (पुं.)	– प्रत्यूषः (पुं.)
<b>ध</b>		प्रातः (अव्य.)	– सायम् (अव्य.)
धर्मः (पुं.)	– अधर्मः (पुं.)	पराधीनम् (वि.)	– स्वाधीनम् (वि.)
धनिकः (पुं.)	– निर्धनः (पुं.)	प्रतिकूलः (वि.)	– अनुकूलः (वि.)
धीरः (पुं.)	– अधीरः (पुं.)	प्रलयः (पुं.)	– सृष्टिः (स्त्री.)
ध्वंसः (पुं.)	– निर्माणः (पुं.)	प्रज्ञः (वि.)	– मूढः (वि.)
धृष्टः (पुं.)	– विनीतः (पुं.)	परिग्रहः (पुं.)	– अपरिग्रहः (पुं.)
<b>न</b>		परिगृहीतम् (वि.)	– परित्यक्तम् (वि.)
नराधमः (वि.)	– नरोत्तमः (वि.)	पार्थिवः (पुं.)	– अपार्थिवः (पुं.)
निन्द्यः (पुं.)	– वन्द्यः (पुं.)	पूर्वार्द्धः (पुं.)	– उत्तरार्द्धः (पुं.)
निर्मलम् (वि.)	– मलिनम् (वि.)	पौरुषम् (नपुं.)	– स्त्रीत्वम् (नपुं.)
निर्लज्जः (वि.)	– सलज्जः (वि.)	प्रबुद्धः (पुं.)	– बुद्धिहीनः (पुं.)
नीरोगः (पुं.)	– रोगः (पुं.)	प्रमेयम् (वि.)	– अप्रमेयम् (वि.)
न्यासः (पुं.)	– विन्यासः (पुं.)	पक्षः (पुं.)	– विपक्षः (पुं.)
न्यायः (पुं.)	– अन्यायः (पुं.)	पराजयः (पुं.)	– जयः (पुं.)
नीरसः (पुं.)	– सरसः (पुं.)	पाश्चात्यः (वि.)	– पौर्वात्यः (वि.)
निष्पापः (पुं.)	– पापः (पुं.)	परोक्षः (वि.)	– प्रत्यक्षः (वि.)
नास्तिकः (पुं.)	– आस्तिकः (पुं.)	प्राचीनम् (वि.)	– अर्वाचीनम्/नवीनम् (वि.)
निष्कण्टकम् (वि.)	– कण्टकाकीर्णम् (वि.)	पण्डितः (पुं.)	– मूर्खः (पुं.)
निरादरः (पुं.)	– आदरः (पुं.)	प्राप्त्याशा (स्त्री.)	– दुराशा (स्त्री.)
निद्रा (स्त्री.)	– जागरणम् (नपुं.)	पर्णकुटी (स्त्री.)	– प्रासादः (पुं.)
निरावृतः (वि.)	– आवृतः (वि.)	पतनम् (नपुं.)	– उत्थानम् (नपुं.)
न्यूनम् (वि.)	– अधिकम् (वि.)	परम् (वि.)	– अपरम् (वि.)
निरुद्विग्नः (वि.)	– उद्विग्नः (वि.)	पुण्यम् (नपुं.)	– पापम् (नपुं.)
निवृत्तः (वि.)	– प्रवृत्तः (वि.)	परिमितम् (वि.)	– अपरिमितम् (वि.)
निःशङ्कः (पुं.)	– सशङ्कः (पुं.)	प्रवरम् (वि.)	– अवरम् (वि.)
निष्कलङ्कम् (वि.)	– कलङ्कितम् (वि.)	पूर्वाह्नः (पुं.)	– अपराह्नः (पुं.)
निर्माणः (वि.)	– विध्वंसः (वि.)	प्रवृत्तिः (स्त्री.)	– निवृत्तिः (स्त्री.)
निर्वाक् (वि.)	– सवाक् (वि.)	प्राची (स्त्री.)	– प्रतीची (स्त्री.)
निश्चेष्टः (वि.)	– सचेष्टः (वि.)	प्रशान्तः (पुं.)	– उद्भ्रान्तः (पुं.)
निर्भीकः (वि.)	– भीरुः (वि.)	प्रियोक्तिः (स्त्री.)	– कटूक्तिः (स्त्री.)
निष्कामः (पुं.)	– सकामः (पुं.)	प्रजातन्त्रम् (नपुं.)	– राजतन्त्रम् (नपुं.)
निरक्षरम् (वि.)	– साक्षरम् (वि.)	पतनोन्मुखः (पुं.)	– विकासोन्मुखः (पुं.)
नगरम् (नपुं.)	– ग्रामः (पुं.)	प्रस्थानम् (नपुं.)	– प्रवेशः (पुं.)
<b>प</b>		प्रकाशः (पुं.)	– अन्धकारः (पुं.)
परकीयः (वि.)	– स्वकीयः (वि.)	प्रशंसकः (पुं.)	– निन्दकः (पुं.)
		फलम् (नपुं.)	– निष्फलम् (नपुं.)

अनुलोमः	विलोमः	अनुलोमः	विलोमः
	<b>ब</b>		
बन्धनम् (नपुं.)	– मोक्षः (पुं.)	मितव्ययः (पुं.)	– अपव्ययः (पुं.)
बोध्यम् (नपुं.)	– दुर्बोध्यम् (नपुं.)	मनःस्थैर्यम् (नपुं.)	– मनःदौर्बल्यम् (नपुं.)
बुद्धिमान् (पुं.)	– बुद्धिहीनः (पुं.)	मतैक्यम् (नपुं.)	– मतभेदः (पुं.)
बहु (वि.)	– अल्पः (वि.)	महायोगी (पुं.)	– महाभोगी (पुं.)
बहिः (अव्य.)	– अन्तः (वि.)	मुक्तिः (स्त्री.)	– बन्धनम् (नपुं.)
ब्रह्म (पुं.)	– जीवः (पुं.)	मलिनम् (वि.)	– पवित्रम् (वि.)
	<b>भ</b>		<b>य</b>
भर्ता (पुं.)	– भार्या (स्त्री.)	योगी (पुं.)	– भोगी (पुं.)
भेदः (पुं.)	– अभेदः (पुं.)	यौवनम् (नपुं.)	– वार्धक्यम् (नपुं.)
भक्ष्यम् (वि.)	– अभक्ष्यम् (वि.)	यशः (नपुं.)	– अपयशः (नपुं.)
भद्रम् (वि.)	– अभद्रम् (वि.)	यद्यपि (अव्य.)	– तथापि (अव्य.)
भयम् (नपुं.)	– अभयम् (नपुं.)	यथार्थः (वि.)	– काल्पनिकः (वि.), कल्पितः (वि.)
भावः (पुं.)	– अभावः (पुं.)	यादृशः (वि.)	– तादृशः (वि.)
भयाक्रान्तः (पुं.)	– भयशून्यः (पुं.)		<b>र</b>
भव्यम् (वि.)	– सामान्यम् (वि.)	रात्रिः (स्त्री.)	– दिनम् (नपुं.)
भूमिका (स्त्री.)	– उपसंहारः (पुं.)	राजा (पुं.)	– रानी (स्त्री.)
भोग्यम् (वि.)	– अभोग्यम् (वि.)	रिक्तः (वि.)	– पूर्णम् (वि.)
भ्रामकः (पुं.)	– निश्चयात्मकः (पुं.)	राष्ट्रप्रेम (नपुं.)	– राष्ट्रद्रोहः (पुं.)
भूगोलः (पुं.)	– खगोलः (पुं.)	रुग्णः (वि.)	– नीरोगी (पुं.)
भविष्यम् (वि.)	– भूतम् (वि.)	रसवान् (पुं.)	– नीरसः (पुं.)
भौतिकः (पुं.)	– आध्यात्मिकः (पुं.)	रुचिः (स्त्री.)	– अरुचिः (स्त्री.)
भ्रान्तिः (स्त्री.)	– निर्भ्रान्तिः (स्त्री.)		<b>ल</b>
	<b>म</b>		
मङ्गलम् (वि.)	– अमङ्गलम् (वि.)	लङ्घनीयः (वि.)	– अलङ्घनीयः (वि.)
मन्दम् (अव्य.)	– शीघ्रम् (अव्य.)	लाभः (पुं.)	– हानिः (पुं.)
मर्त्यः (पुं.)	– अमर्त्यः (पुं.)	लिप्तः (वि.)	– अलिप्तः (वि.)
महिमा (पुं.)	– लघिमा (पुं.)	लक्ष्यम् (नपुं.)	– निर्लक्ष्यम् (नपुं.)
मानवः (पुं.)	– दानवः (पुं.)	लौकिकम् (वि.)	– अलौकिकम् (वि.)
मधुरम् (वि.)	– कटुः (वि.)	लज्जावान् (पुं.)	– निर्लज्जः (पुं.)
मुखरः (पुं.)	– तूष्णीकः (पुं.)		<b>व</b>
मिथ्या (स्त्री.)	– सत्यम् (नपुं.)	वाचालः (पुं.)	– मूकः (पुं.)
मूर्खः (पुं.)	– बुद्धिमान् (पुं.)	वादी (पुं.)	– प्रतिवादी (पुं.)
मानम् (वि.)	– अपमानम् (वि.)	वाग्मी (वि.)	– मितभाषी (वि.)
मूकः (पुं.)	– वाचालः (पुं.)	वृद्धः (पुं.)	– बालकः (पुं.)
मृत्युः (पुं.)	– जीवनम् (नपुं.)	विजयः (पुं.)	– पराजयः (पुं.)
महात्मा (पुं.)	– दुरात्मा (पुं.)	विपद् (स्त्री.)	– सम्पद् (स्त्री.)
मित्रम् (नपुं.)	– शत्रुः (पुं.)	विपुलः (पुं.)	– न्यूनः (पुं.)
		विश्लेषणम् (नपुं.)	– संश्लेषणम् (नपुं.)
		विशेषम् (वि.)	– सामान्यम् (वि.)



अनुलोमः	विलोमः	अनुलोमः	विलोमः
विधवा (स्त्री.)	– सधवा (स्त्री.)		
वरिष्ठः (वि.)	– कनिष्ठः (वि.)		
विहितः (वि.)	– निषेधः (वि.)		
विदेशी (पुं.)	– स्वदेशी (पुं.)		
वन्दनीयः (वि.)	– निन्दनीयः (वि.)		
विभाज्यम् (वि.)	– अविभाज्यम् (वि.)		
विश्रान्तः (वि.)	– श्रान्तः (वि.)		
वैषम्यम् (वि.)	– साम्यम् (वि.)		
वीरः (पुं.)	– कायरः (पुं.)		
व्यष्टिः (स्त्री.)	– समष्टिः (स्त्री.)		
विकारी (पुं.)	– अविकारी (पुं.)		
विशिष्टम् (वि.)	– सामान्यम् (वि.)		
विश्वसनीयः (वि.)	– अविश्वसनीयः (वि.)		
वैयक्तिकः (पुं.)	– सार्वजनिकः (पुं.)		
वैमनस्यः (पुं.)	– मैत्री (स्त्री.)		
व्यस्तः (पुं.)	– अव्यस्तः (पुं.)		
विषम् (नपुं.)	– अमृतम् (नपुं.)		
विस्तृतम् (वि.)	– संक्षिप्तम् (वि.)		
व्ययः (पुं.)	– आयः (पुं.)		
	<b>श</b>		
शत्रुः (पुं.)	– मित्रम् (नपुं.)		
शुभम् (वि.)	– अशुभम् (वि.)		
शुक्लः (वि.)	– कृष्णः (वि.)		
शीतलम् (वि.)	– उष्णम् (वि.)		
शेषम् (वि.)	– अशेषम् (वि.)		
शयनम् (वि.)	– जागरणम् (वि.)		
शापितः (वि.)	– शापमुक्तः (वि.)		
शासकः (वि.)	– शासितः (वि.)		
शिक्षितः (वि.)	– अशिक्षितः (वि.)		
शिष्टाचारः (पुं.)	– अशिष्टाचारः (पुं.)		
शिष्टः (वि.)	– अशिष्टः (वि.)		
श्लिष्टः (वि.)	– अश्लिष्टः (वि.)		
शापः (पुं.)	– आशीर्वादः (पुं.)		
शुष्कम् (वि.)	– आर्द्रम् (वि.)		
शरीरी (पुं.)	– अशरीरी (पुं.)		
शीघ्रता (स्त्री.)	– विलम्बम् (नपुं.)		
शूरः (पुं.)	– कायरः (पुं.)		
शोकः (पुं.)	– आनन्दः (पुं.)		
शोषणम् (नपुं.)	– पोषणम् (नपुं.)		
श्वासः (पुं.)	– प्रश्वासः (पुं.)		
	<b>स</b>		
	संस्कृतम् (वि.)	– असंस्कृतम् (वि.)	
	सभ्यः (वि.)	– असभ्यः (वि.)	
	संकल्पः (पुं.)	– विकल्पः (पुं.)	
	संक्षिप्तम् (नपुं.)	– विस्तृतम् (नपुं.)	
	सापेक्षः (पुं.)	– निरपेक्षः (पुं.)	
	सुसङ्गतिः (स्त्री.)	– कुसङ्गतिः (स्त्री.)	
	सङ्घटनम् (नपुं.)	– विघटनम् (नपुं.)	
	सञ्ज्ञावान् (पुं.)	– सञ्ज्ञाहीनः (पुं.)	
	सरलम् (वि.)	– कठिनम् (वि.)	
	सन्दिग्धः (वि.)	– असन्दिग्धः (वि.)	
	सन्धिः (पुं.)	– वियोगः (पुं.), विग्रहः (पुं.)	
	सम्पत्तिः (स्त्री.)	– विपत्तिः (स्त्री.)	
	सम्भावितम् (वि.)	– असम्भावितम् (वि.)	
	संयोगः (पुं.)	– वियोगः (पुं.)	
	सङ्कीर्णः (पुं.)	– विस्तारः (पुं.)	
	सङ्गः (पुं.)	– निःसङ्गः (पुं.)	
	संग्रहः (पुं.)	– विग्रहः (पुं.)	
	सन्तः (पुं.)	– असन्तः (पुं.)	
	सन्देहः (पुं.)	– निःसन्देहः (पुं.)	
	सम्पूर्णम् (वि.)	– अपूर्णम् (वि.)	
	सम्प्रेद्यम् (वि.)	– अभेद्यम् (वि.)	
	स्तुतिः (स्त्री.)	– निन्दा (स्त्री.)	
	स्वीकारः (पुं.)	– अस्वीकारः (पुं.)	
	साक्षरः (वि.)	– निरक्षरः (वि.)	
	साकारः (वि.)	– निराकारः (वि.)	
	समः (वि.)	– विषमः (वि.)	
	सम्भवम् (वि.)	– असम्भवम् (वि.)	
	समर्थः (वि.)	– असमर्थः (वि.)	
	सजीवम् (वि.)	– निर्जीवम् (वि.)	
	सत्यम् (नपुं.)	– असत्यम् (नपुं.)	
	सूक्ष्मम् (वि.)	– विराटम् (वि.)	
	सृष्टिः (स्त्री.)	– प्रलयः (पुं.)	
	स्वर्गः (पुं.)	– नरकः (पुं.)	
	सार्थकः (वि.)	– निरर्थकः (वि.)	
	सुगन्धः (वि.)	– दुर्गन्धः (वि.)	
	संस्कारः (पुं.)	– असंस्कारः (पुं.)	
	सुगमः (वि.)	– दुर्गमः (वि.)	
	सङ्कलनम् (नपुं.)	– व्यकलनम् (नपुं.)	
	सगुणः (वि.)	– निर्गुणः (वि.)	

अनुलोमः	विलोमः	अनुलोमः	विलोमः
स्वस्थः (पुं.)	– अस्वस्थः (पुं.)	सम्मुखम् (वि.)	– विमुखम् (वि.)
सधवा (स्त्री.)	– विधवा (स्त्री.)	सुयोगः (पुं.)	– कुयोगः (पुं.)
संयोगः (पुं.)	– वियोगः (पुं.)	समर्थनम् (वि.)	– विरोधः (वि.)
सकामम् (वि.)	– निष्कामम् (वि.)	स्वाभाविकः (वि.)	– अस्वाभाविकः (वि.)
स्थावरः (वि.)	– जङ्गमः (वि.)	स्वदेशः (पुं.)	– परदेशः (पुं.)
स्त्री (स्त्री.)	– पुरुषः (पुं.)	सामिषम् (वि.)	– निरामिषम् (वि.)
संयमः (वि.)	– असंयमः (वि.)	सगुणः (वि.)	– निर्गुणः (वि.)
संरक्षितः (वि.)	– असंरक्षितः (वि.)	सर्वज्ञः (वि.)	– अल्पज्ञः (वि.)
संस्थापनम् (नपुं.)	– विस्थापनम् (नपुं.)		
स्वकीया (स्त्री.)	– परकीया (स्त्री.)		
समासः (पुं.)	– व्यासः (पुं.)	हितम् (वि.)	– अहितम् (वि.)
सात्त्विकः (वि.)	– तामसिकः (वि.)	हर्षः (पुं.)	– विषादः (पुं.)
सुकालः (वि.)	– अकालः (वि.)	ह्रस्वः (वि.)	– दीर्घः (वि.)
सजलम् (वि.)	– निर्जलम् (वि.)	हानिप्रदः (वि.)	– लाभप्रदः (वि.)
संग्रहः (पुं.)	– अपरिग्रहः (पुं.)	हासः (पुं.)	– वृद्धिः (स्त्री.)
समादृतः (वि.)	– निरादृतः (वि.)	हताशः (पुं.)	– आशावान् (पुं.)
सापेक्षः (वि.)	– निरपेक्षः (वि.)		
सुमार्गी (पुं.)	– कुमार्गी (पुं.)		
सुमतिः (स्त्री.)	– कुमतिः (स्त्री.)	क्षतम् (वि.)	– अक्षतम् (वि.)
समाधानम् (नपुं.)	– अवधानम् (नपुं.)	क्षमता (स्त्री.)	– अक्षमता (स्त्री.)
सरलम् (वि.)	– कठिनम् (वि.)	क्षणिकम् (वि.)	– शाश्वतम् (वि.)
सदाचारः (वि.)	– दुराचारः (वि.)	क्षुण्णः (वि.)	– अक्षुण्णः (वि.)
सुबुद्धिः (स्त्री.)	– दुर्बुद्धिः (स्त्री.)	क्षुद्रः (वि.)	– महान् (वि.)
स्पष्टम् (वि.)	– अस्पष्टम् (वि.)	ज्ञानी (पुं.)	– अज्ञानी (पुं.)
स्वल्पायुः (पुं.)	– दीर्घायुः (पुं.)		
सूर्योदयः (पुं.)	– सूर्यास्तः (पुं.)		
सत्कारः (वि.)	– तिरस्कारः (वि.)	श्रीगणेशः (पुं.)	– इतिश्रीः (स्त्री.)
सुधा (स्त्री.)	– गरलम् (नपुं.)	श्रमः (पुं.)	– विश्रामः (पुं.)
सच्चरित्रम् (वि.)	– दुश्चरित्रम् (वि.)	श्रोता (पुं.)	– वक्ता (पुं.)
स्वतन्त्रता (स्त्री.)	– परतन्त्रता (स्त्री.)	श्रद्धा (स्त्री.)	– घृणा (स्त्री.)
सत् (वि.)	– असत् (वि.)	श्रव्यः (वि.)	– अश्रव्यः (वि.)
		श्रुतम् (वि.)	– अश्रुतम् (वि.)

**UP-TET और M.P. वर्ग 1-2 ( संस्कृत ) हेतु  
YouTube पर संस्कृतगंगा चैनल को देखें।**

## शरीर अंगों के नाम, घर, परिवार, परिवेश, पशु, पक्षी एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं के संस्कृत नाम

शरीर के अंगों के नाम		हिन्दी	संस्कृत
हिन्दी	संस्कृत	खाल	– त्वच् (स्त्री.)
अंग	– अङ्गम् (नपुं.), अवयवः (पुं.)	खून	– रक्तम्/रुधिरम्/शोणितम् (नपुं.)
अँजली	– अञ्जलिः (स्त्री.)	खोपड़ी	– कपालः, खपरः (पुं.), मस्तकम् (नपुं.)
अण्डकोष	– वृषणः, मुष्कः (पुं.)	गर्दन	– ग्रीवा (स्त्री.)/शिरोधरः (पुं.)
अस्थिपञ्जर	– कङ्कालः (पुं.)	गला	– कण्ठः/गलः (पुं.)
आँख	– नेत्रम्, लोचनम्, नयनम्, चक्षुः (नपुं.)	गंजा	– खल्वाटः (पुं.)
आँत	– अन्त्रम् (नपुं.)	गंजी	– खल्वाटा (स्त्री.)
आँसू	– अश्रु, अस्त्रम्, नेत्रवाष्पम् (नपुं.)	ग्रन्थि (गाँठ)	– ग्रन्थिः (स्त्री.)
आँख का कीचड़	– इषिका, दूषिका (स्त्री.), अक्षिमलम् (नपुं.)	गाल	– कपोलः, गण्डः (पुं.)
आँख की पुतली	– कनीनिका, तारका (स्त्री.)/नेत्रगोलकम् (नपुं.)	गुदा	– गुदम्/मलद्वारम्/ अपानम् (नपुं.)
आँख का कोना	– अपाङ्गः (पुं.)	गुर्दा	– वृक्कः (पुं.)
अँगुली	– अङ्गुलिः, करशाखा (स्त्री.)	गोद	– क्रोडम् (नपुं.)/अङ्कः/ उत्सङ्गः (पुं.)
अंगूठा	– अङ्गुष्ठः (पुं.)	घुटना	– जानु (नपुं.)
अँगूठे के पास की अँगुली	– तर्जनी, प्रदेशिनी (स्त्री.)	घुंघराले बाल	– अलकः/चूर्णकुन्तलः (पुं.)
इन्द्रिय	– करणम्, इन्द्रियम् (नपुं.)	चरण (पैर)	– चरणः (पुं.) पा
ओठ	– ओष्ठः (पुं.)	चर्बी	– मेदः (पुं.)/वसा (स्त्री.)/वपा (स्त्री.)
एड़ी	– पाष्णिः (पु./स्त्री.), एडुकम् (नपुं.)	चिकोटी	– नखक्षतम् (नपुं.)
कण्ठ	– कण्ठः (पुं.)	चूटकी	– छोटिका, अङ्गुलिध्वनिः (स्त्री.)
कन्धा	– स्कन्धः, अंसः (पुं.)	चूतड़	– नितम्बः (पुं.)/स्फिक् (स्त्री.)
कन्धे की हड्डी	– जत्रु (नपुं.)	चोटी	– शिखा, चूडा (स्त्री.)
कमर	– कटिः, श्रोणिः (स्त्री.)	छाती	– वक्षस्थलम् (नपुं.), वक्षः, उरः
कंकाल	– कङ्कालः (पुं.)	छोटी अँगुली के पास की अँगुली	– अनामिका (स्त्री.)
कनपटी	– हनुः (पुं.)/हनू (स्त्री.), गण्डस्थलः (पुं.)	जटा	– जटा, सटा (स्त्री.)
कलाई	– मणिबन्धः (पुं.), कलाचिका (स्त्री.)	जबड़ा	– सूक्कणी (नपुं.)
कलेजा	– वृक्कम्/अग्रमांसम्, हृद् (नपुं.), बुक्कः (पुं.)	जाँघ	– जङ्घा (स्त्री.)/ऊरुः (पुं.), जघनम् (नपुं.)
काँख	– कक्षान्तरम् / कक्षः, बाहुमूलम् (नपुं.)	जिगर	– यकृतम्/कालेयम् (नपुं.)
कान	– कर्णः (पुं.), श्रोत्रम्, श्रवणम् (नपुं.)	जीभ	– जिह्वा/रसना (स्त्री.)
कूला	– कटिप्रोक्षः, कटिप्रोथः (पुं.)	जूड़ा	– वेणिः (स्त्री.)
कूबड़	– कुब्जः (पुं.)	टुड्डी	– चिबुकम्/हनुः (नपुं.)
कोहनी	– कफोणिः (स्त्री.)/कूर्परः (पुं.)	टेढ़ी भौं	– भृकुटिः (स्त्री.)
		तलवा	– तलः (पुं.), पादतलम् (नपुं.)
		ताली	– करतलध्वनिः (पुं.)/तालः (पुं.)
		तालु	– तालु/काकुदम् (नपुं.)
		त्यौरी	– मस्तकावलिः, मस्तकरेखा (स्त्री.)

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
तोंद	- तुन्दम् (नपुं.)	मल	- मलम् (नपुं.)/विष्टा (स्त्री.), पुरीषम् (नपुं.)
तोंद के बीच छिद्र	- नाभिः (स्त्री.)	मन	- मनः, चित्तम्, स्वान्तम्, मानसम् (नपुं.)
थप्पड़	- चपेटा (स्त्री.)/चर्पटः (पुं.)	मसूड़ा	- काकुदम्, दन्तमूलम् (नपुं.)
थूक ( खखार )	- निष्ठ्यूतिः (स्त्री.)/निष्ठ्यूतम् (नपुं.)	माथा	- ललाटम्, मस्तकम्
दाढ़	- दंष्ट्रा (स्त्री.)	माँग	- सीमन्तः (पुं.)
दाढ़ी	- श्मश्रु (नपुं.)/दाढिका (स्त्री.)/ कूर्चम् (नपुं.)	माँस	- मांसम्/पिशितम्/ आमिषम् (नपुं.)
दाँत	- दन्तः, रदनः, दशनः (पुं.)	माँसपेशी	- मांसपेशिका (स्त्री.)
दिल	- हृदयम् (नपुं.)	मुख	- मुखम्, आननम्, वक्त्रम् (नपुं.)
दिमाग	- मस्तिष्कम् (नपुं.)	मुट्ठी	- मुष्टिका/मुष्टिः (स्त्री.)
दिमागी	- मानसिकः/बौद्धिकः (पुं.)	मूँछ	- मुच्छः/गुम्फः (पुं.)/गण्डलोमन् (नपुं.)
नरम	- मृदु (वि.), कोमलम् (नपुं.)	मूत्राशय	- वस्तिः (पु., स्त्री.)
नस	- रक्तवाहिनी, शिरा, स्नायुः, धमनी (स्त्री.)	मूत्र	- मूत्रम् (नपुं.)/प्रस्रावः (पुं.)
नाखून	- नखः, करजः (पुं.), नखम् (नपुं.)	योनि	- योनिः (स्त्री.)/भगः (पुं.)
नाक	- नासिका (स्त्री.), घ्राणम् (नपुं.)	रज	- रजः (नपुं.)
नाक के छेद	- नासारन्ध्रम्/नासिक्यम् (नपुं.)	रीढ़	- कशेरुका (स्त्री.), पृष्ठास्थि (नपुं.)
नाड़ी	- स्नायुः (पुं.), नाडी, नाडिः, धमनी (स्त्री.)	रोएं	- रोमः (पुं.)
नेत्र	- नेत्रम् (नपुं.)	लार	- लाला (स्त्री.), स्यन्दिनी (स्त्री.)
पंजड़ी	- पर्शुका (स्त्री.)	लिंग	- लिङ्गम् (नपुं.), शिशनः, मेढ्रः (पुं.)
पंजा	- पञ्चाङ्गलम् (नपुं.)	वीर्य	- वीर्यम्/शुक्रम् (नपुं.)
पलक	- नेत्रोमन्/पक्ष्म (नपुं.)	शरीर	- गात्रम्, शरीरम् (नपुं.), देहः, कायः (पुं.)
पसीना	- स्रवणम् (नपुं.)/स्वेदः, प्रस्वेदः (पुं.)	शरीर का तिल	- क्लोमन् (नपुं.)
पीठ	- पृष्ठम् (नपुं.), पृष्ठदेशः (पुं.)	सफेद बाल	- पलितम् (नपुं.), श्वेतकचः (पुं.)
पेट	- उदरम्, जठरम् (नपुं.)	सबसे छोटी अँगुली	- कनिष्ठिका (स्त्री.)
पैर	- पादः/चरणः/अङ्घ्रिः (पुं.)	सिर	- मस्तकः (पुं.), शीर्षम्, शिरः (नपुं.)
पैर का टखना	- गुल्फः (पुं.)	स्तन	- पयोधरः, स्तनः, उरोजः (पुं.)
प्लीहा	- गुल्मः (पुं.)	स्तन का अग्रभाग	- चूचुकम्, कुचाग्रम् (नपुं.), कुचः (पुं.)
फेफड़ा	- फुफ्फुसम् (नपुं.)	स्त्रियों की जाँघ	- जघनम् (स्त्री.)
बस्ति	- मूत्रपुटम् (नपुं.)	हड्डियों का ढाँचा	- अस्थिपञ्जरः (पुं.)
बाल	- केशः/कचः (पुं.), शिरोरुहः (वि.)	हड्डी	- अस्थि, कीकसम् (नपुं.)
बाँह	- बाहुः (पुं.)/भुजा (स्त्री.), भुजः (पुं.)	हड्डी के अन्दर की चर्बी	- मज्जा (स्त्री.)
बीच की अँगुली	- मध्यमा (स्त्री.)	हथेली	- करतलम् (नपुं.), प्रहस्तः (पुं.)
बुद्धि	- बुद्धिः, प्रज्ञा, मनीषा, धीः (स्त्री.)	हाथ	- हस्तः/करः (पुं.)
भौंह	- भ्रूः (स्त्री.)	हृदय	- हृदयम् (नपुं.)
भौंह का मध्य भाग	- कूर्चम् (नपुं.)		
भुजा	- बाहुः (पुं.)		

### बन्धुबान्धवानां नामानि ( बन्धु-बान्धवों के नाम )

हिन्दी	संस्कृत
अतिथि	- अतिथिः, अभ्यागतः (पुं.)
पिता	- पिता/जनकः/तातः (पुं.)

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
अम्मा	– अम्बा/माता/जननी (स्त्री.)	जेठ	– ज्येष्ठः, पत्यग्रजः (पुं.)
भाई	– भ्राता (पुं.)	जेठानी	– ज्येष्ठा (स्त्री.)
बड़ा भाई	– अग्रजः (पुं.)	ननद	– ननान्दा (स्त्री.)
छोटा भाई	– अनुजः (पुं.)	नन्दोई	– ननान्दपतिः (पुं.)
सगा भाई	– सहोदरः (पुं.)	समधी	– सम्बन्धी (पुं.)
चचेरा भाई	– पितृव्यपुत्रः/पितृव्यजः (पुं.)	समधिन	– सम्बन्धिनी (स्त्री.)
ममेरा भाई	– मातुलपुत्रः/मातुलेयः (पुं.)	सास	– श्वश्रूः (स्त्री.)
फुफेरा भाई	– पैतृष्वस्त्रीयः/पैतृष्वसेयः (पुं.)	ससुर	– श्वसुरः (पुं.)
मौसेरा भाई	– मातृष्वस्त्रीयः/मातृष्वसेयः (पुं.)	दामाद	– जामाता (पुं.)
सौतेला भाई	– विमातृजः (पुं.)	पतोहू	– पुत्रवधूः, स्नुषा (स्त्री.)
बहिन	– भगिनी/स्वसा/सोदर्या (स्त्री.)	बेटा	– पुत्रः, तनयाः, सुतः, आत्मजः (पुं.)
बड़ी बहिन ( दीदी )	– अत्तिका/अग्रजा (स्त्री.)	सगा बेटा	– औरसः, उरस्यः (पुं.)
छोटी बहिन	– अनुजा (स्त्री.)	बेटी	– पुत्री, तनया, सुता, आत्मजा (स्त्री.)
सगी बहिन	– सहोदरा (स्त्री.)	धेवता ( नाना का नाती )–	दौहित्रः/नप्ता (पुं.)
पति	– पतिः/भर्ता/वरः (पुं.)	धेवती ( नाना की नातिन )–	दौहित्री/नप्ती (स्त्री.)
पत्नी	– अर्धाङ्गिनी/पत्नी/भार्या/ जाया (स्त्री.)	पोता	– पौत्रः (पुं.)
चाचा	– पितृव्यः/तातकः (पुं.)	पोती	– पौत्री (स्त्री.)
चाची	– पितृव्या, पितृव्याणी, पितृव्यपत्नी (स्त्री.)	परपोता	– प्रपौत्रः (पुं.)
बड़े पापा	– प्रतातः, ज्येष्ठतातः (पुं.)	परपोती	– प्रपौत्री (स्त्री.)
बड़ी अम्मा	– ज्येष्ठाम्बा, अम्बाला, प्राम्बा (स्त्री.)	भतीजा	– भ्रातृव्यः/भ्रातृजः/ भ्रात्रीयः (पुं.)
मामा	– मातुलः (पुं.)	भतीजी	– भ्रातृसुता/भ्रातृव्या/भ्रातृजा (स्त्री.)
मामी	– मातुली, मातुलानी (स्त्री.)	भानजा	– भागिनेयः/स्वस्त्रीयः (पुं.)
फूफा	– पितृष्वसृपतिः (पुं.)	भानजी	– भागिनेयी/स्वस्त्रीया (स्त्री.)
बुआ ( फुफू )	– पितृष्वसा (स्त्री.)	बाबा (दादा)	– पितामहः (पुं.)
मौसा	– मातृष्वसृपतिः (पुं.)	दाई (दादी)	– पितामही (स्त्री.)
मौसी	– मातृष्वसा (स्त्री.)	परदादा	– प्रपितामहः (पुं.)
भौजी	– भ्रातृजाया/प्रजावती/भामिनी (स्त्री.)	परदादी	– प्रपितामही (स्त्री.)
साला	– श्यालः (पुं.)	नाना	– मातामहः (पुं.)
साला-पुत्र	– श्यालजः (पुं.)	नानी	– मातामही (स्त्री.)
सरहज	– श्यालिनी/श्यालपत्नी (स्त्री.)	परनाना	– प्रमातामहः (पुं.)
साली	– श्याली/श्यालिका (स्त्री.)	परनानी	– प्रमातामही (स्त्री.)
साढ़ू	– श्यालिपतिः, सढोकः (पुं.)	यार (प्रेमी)	– जारः/उपपतिः/प्रेमी (पुं.)
बहनोई	– आवुत्तः/भगिनीपतिः (पुं.)	प्रेमिका	– प्रेमिका/उपपत्नी (स्त्री.)
देवर	– देवरः, देवा (पुं.)	दोस्त	– सखा/मित्रम् (नपुं.)/वयस्यः/ सुहृद् (वि.) / सार्थी (पुं.)
देवरानी	– याता (स्त्री.)	सहेली	– आलिः/वयस्या/सखी/सहचरी (स्त्री.)

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
मालिक	– स्वामी (पुं.)	खरगोश	– शशकः, शशः (पुं.)
नौकर	– भृत्यः/सेवकः/परिचारकः (पुं.)	खेखर	– खिङ्गिरिः (पुं.)
नौकरानी	– भृत्या/सेविका/परिचारिका (स्त्री.)	गधा	– गर्दभः/खरः/ रासभः (पुं.)
आदमी	– मनुष्यः, नरः, मानवः (पुं.)	गधी	– गर्दभी, खरी (स्त्री.)
मर्द	– पुरुषः (पुं.)	गाय	– गौः/धेनुः (स्त्री.)
महिला	– महिला, ललना, नारी, स्त्री (स्त्री.)	गिलहरी	– वृक्षशायिका (स्त्री.)/चिक्रोडः/ वृक्षमार्जारः/ काष्ठमार्जारः/ चमरपुच्छः (पुं.)
औरत	– महिला (स्त्री.)	गीदड़ (सियार)	– शृगालः, गोमायुः, शिवालुः (पुं.)
जवान स्त्री	– युवती/युवतिः (स्त्री.)	गीदड़ी (सियारिन)	– शृगाली, शिवा (स्त्री.)
कामेच्छु स्त्री	– कामुकी (स्त्री.)	गैंडा	– गण्डकः/खड्गः/ गण्डः/ खड्गमृगः (पुं.)
प्रेमी से मिलने वाली स्त्री	– अभिसारिका (स्त्री.)	गोह	– गोधा/गोधिका (स्त्री.)
जिसका पति मर गया हो	– विधवा, मृतभर्तृका (स्त्री.)	घड़ियाल	– ग्राहः (पुं.)
जिसका पति जीवित हो	– सधवा, सनाथा, सौभाग्यवती (स्त्री.)	घोड़ा	– अश्वः, घोटकः, तुरगः, घोटकः, हयः, वाजी (पुं.)
जिसकी पत्नी मर गयी हो	– विधुरः (पुं.)	घोड़ी	– अश्व/घोटिका/ बडवा (स्त्री.)
जिसकी पत्नी जीवित हो	– सपत्नीकः (पुं.)	घोड़े का बच्चा	– किशोरः (पुं.)
स्वयं पति को चुनने वाली	– स्वयंवरा (स्त्री.)	चीता	– चित्रकायः/शार्दूलः/ चित्रकः (पुं.)
सुहागिन स्त्री	– सौभाग्यवती स्त्री (स्त्री.)	तेन्दुआ	– तरक्षुः (पुं.)
पतिव्रता स्त्री	– पतिव्रता/साध्वी/ सचचरित्रा (स्त्री.)	नीलगाय	– गवयः, गवयी, वनधेनुः (पुं.)
वेश्या	– वेश्या/गणिका/ पण्याङ्गना (स्त्री.)	नेवला	– नकुलः (पुं.)
कुंवारी कन्या का पुत्र	– कानीनः (पुं.)	पूँछ	– पुच्छः, लाङ्गूलम् (नपुं.)
खानदानी	– सगोत्रः (पुं.)	बकरा	– अजः, छागः (पुं.)
पति-पत्नी	– दम्पती (पुं., द्विव०)	बकरी	– अजा, छागी (स्त्री.)
रिश्तेदार / सम्बन्धी	– ज्ञातिः, बन्धुः (पुं.)	बछड़ा	– वत्सः, तर्णकः (पुं.)
दुलारा	– प्रियः (वि.), दुर्लालितः (पुं.)	बाघ	– व्याघ्रः, द्वीपी, शार्दूलः (पुं.)
		बाघिन	– व्याघ्री (स्त्री.)
		बारहसिंगा	– शम्बरः (पुं.)
		बन्दर	– वानरः, कपिः, शाखामृगः, कीशः (पुं.)
		बँदरिया	– वानरी (स्त्री.)
		बिलाव	– बिडालः/मार्जारः (पुं.)
		बिल्ली	– बिडाली/मार्जारी (स्त्री.)
		बैल	– वृषभः, बलदः, बलीवर्दः (पुं.)
		बैल का कूबड़	– ककुदः (पुं.), ककुद् (स्त्री.)
		भालू	– भल्लूकः, ऋक्षः, भालूकः (पुं.)
		भेड़	– मेषः/एडकः/ ऊर्णायुः (पुं.)
		भेड़िया	– वृकः, इहामृगः (पुं.)
		भैंसा	– महिषः, कलुषः (पुं.)

### पशूनां नामानि ( पशुओं के नाम )

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
ऊँट	– उष्ट्रः/क्रमेलकः (पुं.)	बँदरिया	– वानरी (स्त्री.)
ऊँटनी	– उष्ट्री, वागी, लम्बोष्ठी (स्त्री.)	बिलाव	– बिडालः/मार्जारः (पुं.)
ऊदबिलाव	– उदविडालः (पुं.)	बिल्ली	– बिडाली/मार्जारी (स्त्री.)
एक वर्ष ब्याई गाय	– गृष्टिः (स्त्री)	बैल	– वृषभः, बलदः, बलीवर्दः (पुं.)
काला हरिण	– कृष्णसारः (पुं.)	बैल का कूबड़	– ककुदः (पुं.), ककुद् (स्त्री.)
कुत्ता	– कुक्कुरः सारमेयः, श्वानः (पुं.)	भालू	– भल्लूकः, ऋक्षः, भालूकः (पुं.)
कुतिया	– कुक्कुरी, शुनी, सरमा (स्त्री.)	भेड़	– मेषः/एडकः/ ऊर्णायुः (पुं.)
कछुआ	– कच्छपः, कूर्मः (पुं.)	भेड़िया	– वृकः, इहामृगः (पुं.)
खच्चर	– खच्चरः, अश्वतरः (पुं.)	भैंसा	– महिषः, कलुषः (पुं.)

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
भैंस	– महिषी, कलुषा (स्त्री.)	घोंसला	– नीडम् (नपुं.), कुलायः, खगालयः (पुं.)
रीछ	– ऋक्षः (पुं.)	चकवा	– चक्रवाकः, चक्रकोकः (पुं.)
रोज	– रुरुः (पुं.)	चकवी	– चक्रवाकी (स्त्री.)
लँगूर	– लाङ्गुलिन् (पुं.)	चकोर	– चकोरः, चन्द्रिकापायी (पुं.)
लोमड़ी	– लोमशा, लोमाली (स्त्री.) लोमशः (पुं.)	चमगादड़	– जतुका, अजिनपत्रा (स्त्री.)
शेर	– सिंहः, केसरी, मृगेन्द्रः, वनाधिपः (पुं.)	चिड़िया (गौरैया)	– चटका (स्त्री.)
साही	– शल्लकी (स्त्री.), शल्यः, शल्यकः (पुं.)	चिरौटा (नरचिड़िया)	– चटकः, कलविड्डः (पुं.)
साँड	– बलीवर्दः, गोपतिः, षण्डः, वृषभः (पुं.)	चील	– चिल्लः, चिल्ला, आतापी (पुं.)
सुअर	– शूकरः/वराहः (पुं.)	चोंच	– चञ्चुः, त्रोटिः (स्त्री.)
सूअरी	– वराही, शूकरी (स्त्री.)	छोटी मक्खी	– लघुमक्षिका (स्त्री.)
हिरन	– हरिणः/मृगः/ कुरुङ्गः (पुं.)	जलकौआ	– कारण्डवः, मरुलः (पुं.)
हिरनी	– हरिणी/मृगी (स्त्री.)	टिड्डी	– षट्चरणः/शलभः (पुं.)
हथिनी	– हस्तिनी, करिणी (स्त्री.)	टिटहरी	– टिट्टिभी (स्त्री.)
हाथी	– गजः, हस्ती, करी, कुञ्जरः (पुं.)	टिटहरा	– टिट्टिभः (पुं.)
हाथी का बच्चा	– कलभः/करिशावकः (पुं.)	तीतर	– तित्तिरः (पुं.)
		तोता	– शुकः/कीरः (पुं.)
		नीलकण्ठ	– नीलकण्ठः, चाषः (पुं.)
		पक्षी	– पक्षी, खगः, विहगः, विहङ्गमः (पुं.)
		पंख	– पक्षः (पुं.), डयनम्, पत्रम् (नपुं.)
		पण्डुक (पनडुब्बी)	– श्वेतकपोतः (पुं.)
		पपीहा	– चातकः, सारङ्गः (पुं.)
		पपीहिन	– चातकी (स्त्री.)
		पिंजड़ा	– पञ्जरम् (नपुं.)
		बगुला	– बकः, कहः (पुं.)
		बटेर	– लावः, लावकः (पुं.)
		बतख	– वर्तकः (पुं.)
		बुलबुल	– बुलबुलः (पुं.)
		मादा बतख	– वर्तिका (स्त्री.)
		बया	– सुगृहः/चञ्चूसूचकः (पुं.)
		बाज	– श्येनः, शशादनः (पुं.)
		भरदूल	– भारद्वाजः, व्याघ्राटः (पुं.)
		मुर्गा	– कुक्कुटः, ताम्रचूडः, चरणायुधः (पुं.)
		मुर्गी	– कुक्कुटी (स्त्री.)
		मैना	– सारिका, शारिका, मदना, चित्रलोचना (स्त्री.)
		मोर	– मयूरः, बर्हिन्, शिखी (पुं.)
		मोर की पंख	– पिच्छम्, बर्हः (पुं.)
		मोर की कलंगी	– शिखा, चूडा (स्त्री.)

### पक्षीणां नामानि ( पक्षियों के नाम )

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
अण्डा	– अण्डम् (नपुं.), कोषः (पुं.)	बगुला	– बकः, कहः (पुं.)
अबाबील	– कृष्णचटका (स्त्री.)	बटेर	– लावः, लावकः (पुं.)
उल्लू	– उलूकः, कौशिकः, धूकः, दिवान्धः (पुं.)	बतख	– वर्तकः (पुं.)
कबूतर	– कपोतः, पारावतः (पुं.)	बुलबुल	– बुलबुलः (पुं.)
कबूतरी	– कपोती (स्त्री.)	मादा बतख	– वर्तिका (स्त्री.)
कुरर	– कुररः (पुं.)	बया	– सुगृहः/चञ्चूसूचकः (पुं.)
कोयल	– कोकिलः/पिकः परभृतः (पुं.)	बाज	– श्येनः, शशादनः (पुं.)
कौआ	– काकः, वायसः, ध्वाक्षः (पुं.)	भरदूल	– भारद्वाजः, व्याघ्राटः (पुं.)
क्रौञ्च	– क्रौञ्चः, खञ्जरीटः (पुं.)	मुर्गा	– कुक्कुटः, ताम्रचूडः, चरणायुधः (पुं.)
खञ्जन	– खञ्जनः (पुं.)	मुर्गी	– कुक्कुटी (स्त्री.)
खुटकपरिया (कठफोड़वा)	– दार्वाघाटः/काष्ठकुट्टः (पुं.)	मैना	– सारिका, शारिका, मदना, चित्रलोचना (स्त्री.)
गरुण	– गरुणः (पुं.)	मोर	– मयूरः, बर्हिन्, शिखी (पुं.)
गिरगिट	– कृकलासः (पुं.)	मोर की पंख	– पिच्छम्, बर्हः (पुं.)
गीध	– गृध्रः (पुं.)	मोर की कलंगी	– शिखा, चूडा (स्त्री.)



हिन्दी	संस्कृत
मोरनी	– मयूरी (स्त्री.)
लावापक्षी	– भरद्वाजः (पुं.)
सारस	– सारसः, पुष्कराहवः (पुं.)
सारसी	– लक्ष्मणा, सारसी (स्त्री.)
हरियल	– हारीतः (पुं.)
हंस	– हंसः, मरालः (पुं.)
हंसी	– हंसिनी/वरटा/ चक्राङ्गी (स्त्री.)

### कीटानां नामानि ( कीड़े-मकोड़ों के नाम )

हिन्दी	संस्कृत
अजगर	– अजगरः, शयुः, बाहसः (पुं.)
कनखजूरा	– कर्णजलौका (स्त्री.)
केंचुआ	– किञ्चुलुकः, गण्डूपदः (पुं.)
कीड़ा	– कृमिः/कीटः/ कीटकः (पुं.)
केंकड़ा	– कर्कटकः, कुलीरः (पुं.)
खटमल	– मत्कुणः, उत्कुणः (पुं.)
गिरगिट	– कृकलासः, सरटः, सरटुः (पुं.)
घुन	– घुणः (पुं.)
घोंघा	– शम्बुकः, कोषस्थः (पुं.)
चींटा	– पिपीलकः, पिपीलः (पुं.)
चींटी	– पिपीलिका, पिपीली (स्त्री.)
चूहा	– मूषकः, मूषः, आखुः (पुं.)
चुहिया	– मूषिका, मूषा, गरिका (स्त्री.)
छुछुन्दर	– छुछुन्दरी (स्त्री.)
छिपकली	– गृहगोधिका, मुषली, गृहालिका (स्त्री.)

जुँगनू	– खद्योतः, प्रभाकीटः, ज्योतिरिङ्गणः (पुं.)
जुआ (जूँ)	– यूका, केशटः, षट्पदी (स्त्री.)
जौंक	– रक्तपः (पुं.)/जलौका (पुं.)
झींगुर	– झिल्लिका, झिल्ली (स्त्री.)
डाँस	– दंशः, कण्टकः (पुं.), वनमक्षिका (स्त्री.)
तिलचट्टा	– तैलपः (पुं.)
तितली	– शलभः, चित्रपतङ्गः, तित्तिरः (पुं.)
दीमक	– उपदीका, सीमिका, वप्त्री, पुत्तिका (स्त्री.)

हिन्दी	संस्कृत
नाग	– सर्पः/भुजङ्गः/नागः/फणकरः/ फणधरः (पुं.)
नाग की मणि	– नागमणिः (स्त्री.)
नागिन	– भुजङ्गी/सर्पिणी (स्त्री.)
पतङ्गा	– पतङ्गः, शलभः, पत्रचिल्लः (पुं.)
बरे	– वरटा, गन्धाली (स्त्री.)
बिच्छू	– वृश्चिकः (पुं.)
भौरा	– भ्रमरः/द्विरेफः/ अलिः (पुं.)
मकड़ी	– मर्कटकः, ऊर्णनाभः (पुं.), लूता, बृहल्लूता (स्त्री.)
मकड़ी का जाला	– मर्कटजालम् (नपुं.)
मक्खी	– मक्षिका (स्त्री.)
मक्खी (शहद)	– मधुमक्षिका, सरधा (स्त्री.)
मच्छर	– मशकः, वज्रतुण्डः (पुं.)
मछली	– मत्स्यः/मीनः (पुं.)
मेंढक	– मण्डूकः (पुं.)
मेंढकी	– मण्डूकी (स्त्री.)
लीख	– लिखा, रिखा (स्त्री.)
सर्प का डसना	– दंशनम् (नपुं.)
साँप	– अहिः, सर्पः, भुजंगः, उरगः (पुं.)
साँप केंचुल	– कञ्चुकः, निर्मोकः, अहित्वचः (पुं.)
सीपी	– शुक्तिः (स्त्री.)

### गृहोपयोगिवस्तुनां नामानि

#### ( घर की उपयोगी वस्तुओं के नाम )

हिन्दी	संस्कृत
अगरबत्ती	– अगरवर्तिका, गन्धवर्तिका (स्त्री.)
अँगीठी	– अग्नीष्टिका, अङ्गारशकटी, अङ्गारधानी, हसन्ती (स्त्री.)
अरगनी	– लङ्गनी (स्त्री.)
अलार्म घड़ी	– प्रबोधनघटी (स्त्री.)
आलमारी	– आधानी, आधानिका, काष्ठमञ्जूषा (स्त्री.)
आरामकुर्सी	– आसन्दः (पुं.), सुखासनिका, सुखासन्दिका (स्त्री.)
आँवा	– आवाकः (पुं.)
ओखर	– उलूखलम्/उदूखलम् (नपुं.)
इन्धन	– इध्यम्/इन्धनम्/ ज्वलनकाष्ठम् (नपुं.)

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
इस्तरी	– स्तरकी (स्त्री.), वस्त्रस्तरस्योपकरणम् (नपुं.)	चकला	– पिष्टिशिला (स्त्री.)
ईंट	– इष्टका (स्त्री.)	चटाई	– कटः (पुं.)
उपला	– करीषम्, गोमयपिण्डम् (नपुं.)	चम्मच	– चमसः (पुं.)
कनस्तर	– कर्णस्त्रम् (नपुं.)	चलनी	– चालनी (स्त्री.), तितउः (पुं.)
कनात	– काण्डपटः (पुं.)	चप्पल	– पादरक्षा (स्त्री.)
कमण्डलु	– कमण्डलुः (पुं.)	चबूतरा	– कुट्टिमः (पुं.)
कम्बल	– कम्बलः (पुं.)	चादर	– शय्याच्छादनम्/शय्यच्छदम् (नपुं.)
कर्छुली	– कम्भिः/दर्वी (स्त्री.)	चाकू	– असिपुत्रम् (नपुं.)/छुरिका (स्त्री.)
कराही	– कटाहः (पुं.)	चाभी	– कुञ्चिका (स्त्री.)
कटोरी	– कंसः (पुं.)/कंसिका (स्त्री.)/कंसम् (नपुं.)	चारपाई	– शय्या (स्त्री.)
कठौती	– गलन्तिका/कर्करी (स्त्री.)	चिराग	– दीपकः (पुं.)
कील	– कीलकम् (नपुं.)	चूल्हा	– चूलिका (स्त्री.)/चुल्लिः (स्त्री.)
कुञ्जी	– कुञ्जिका/तालिका (स्त्री.)	चौकी	– चतुष्की (स्त्री.)/चतुष्पादिकः (पुं.)
किंवाड़	– कपाटः (पुं.)	छकड़ा	– शकटः (पुं.)/शकटम् (नपुं.)
कुप्पी	– स्नेहपात्रम् (नपुं.)	छड़ी	– यष्टिका (स्त्री.), दण्डः (पुं.)
कुर्सी	– आसन्दिका (स्त्री.)/आसन्दः (पुं.)	छाता	– छत्रम्/आतपत्रम्/ जलत्रम् (नपुं.)
कुल्हाड़ा	– कुठारः (पुं.)	छींका	– शिक्क्यम् (नपुं०)
कुल्हाड़ी	– कुठारिका (स्त्री.)	छुरी	– छुरिका (स्त्री.)
कैंची	– कर्त्री (स्त्री.)	छोटा बक्सा	– पेटिका (स्त्री.)
कैलेण्डर	– दिनदर्शिका (स्त्री.)	जाल	– जालम् (नपुं.)
खलबट्टा	– खल्लः (पुं.)	जाला	– वागुरा (स्त्री.)
खाट	– खट्वा (स्त्री.)	जीना (सीढ़ी)	– आरोहणम्, सोपानम् (नपुं.)
पलङ्ग की पाटी	– पल्यङ्कपट्टिका (स्त्री.)	जूता	– पादत्राणम् (नपुं.)/पादुका (स्त्री.)
खुण्टी	– नागदन्तः (पुं.)	झाड़ू	– मार्जनी, सम्मार्जनी, शोधनी (स्त्री.)
खूँटा	– कीलकः (पुं.)	झूला	– दोला (स्त्री.)
खिड़की	– गवाक्षः (पुं.)/वातायनम् (नपुं.)	झोपड़ी	– उटजः (पुं.)
खिलौना	– क्रीडनकम् (नपुं.)	झोला	– स्यूतः (पुं.)
गद्दी	– गर्दिका (स्त्री.)	ट्यूबलाइट	– दण्डदीपः (पुं.)
गलीचा	– कुथः (पुं.)	टार्च	– हस्तदीपिका (स्त्री.)/करदीपः/सम्पुटकः (पुं.)
गागर	– गगरः (पुं.)	टेलीफोन	– दूरभाषः (पुं.)
गुलदस्ता	– पुष्पदानी (स्त्री.)	टोकरी	– कण्डोलः (पुं.)
गुदड़ी (कथरी)	– कन्था (स्त्री.)	डाइनिंग टेबिल	– भोजनफलकम् (नपुं.)
गेंद	– कन्दुकः (पुं.)/कन्दुकम् (नपुं.)	डिब्बा	– सम्पूरकः/करण्डकः (पुं.)
घड़ा	– घटः/कलशः (पुं.)	डेस्क	– लेखनपीठम् (नपुं.)
घड़ी	– घटी, घटिका (स्त्री.)	डोरा	– सूत्रम् (नपुं.)/तन्तुः (पुं.)
चक्की	– घरदुः (पुं.)/पेषणयन्त्रम् (नपुं.)/ पेषणी (स्त्री.)	डोंगी	– दोला (स्त्री.)/हिन्दोलः (पुं.)
		तखत	– काष्ठपटलम् (नपुं.)
		तकला	– तर्कः (पुं.)/सूत्रवेष्टनम् (नपुं.)

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
तकली	- तर्कुटिः (स्त्री.)	बटलोई	- पिठरः (पुं.)/स्थाली (स्त्री.)
तकिया	- उपधानम् (नपुं.)	बल्ब	- गोलदीपः (पुं.)
तराजू	- तुला (स्त्री.)	बत्ती	- वर्तिका (स्त्री.)
तराजू का पलड़ा	- तुलाफलकम् (नपुं.)	बाँस की पिटारी ( झौआ )	- करण्डः (पुं.)
तराजू की डण्डी	- तुलादण्डः (पुं.)	बाल्टी	- द्रोणी (स्त्री.)
तीली	- शलाका (स्त्री.)	बिजली की बत्ती	- विद्युज्ज्योतिः (स्त्री.)
तवा	- ऋजीषम् (नपुं.)	बेलन	- बेल्लनम् (नपुं.)
तिजोरी	- शेवधिः (स्त्री.)	बेंच	- काष्ठासनम्/फलकम् (नपुं.)
थाली	- स्थालिका (स्त्री.)	बैट्टी ( सेल )	- विद्युत्कोषः (पुं.)
थैला	- स्यूतः (पुं.)	बोतल	- काचकूपिका/कूपी (स्त्री.)
थैली	- भस्त्रिका (स्त्री.)	बोरा	- गोणी (स्त्री.)/शणपुटः (पुं.)
दन्तमञ्जन	- दन्तफेनः (पुं.)	बैलगाड़ी	- गन्त्री (स्त्री.)/शकटयानम् (नपुं.)
दरेती ( पक्कड़ )	- दात्रम् (नपुं.)	भट्टी	- भ्राष्ट्रिका (स्त्री.)
दाँत खोदनी	- दन्तशोधनी (स्त्री.)	मथानी	- मन्थानः, मथी (पुं.)
दातून	- दन्तधावनम् (नपुं.)	माचिस	- अग्निपेटिका (स्त्री.)
दियासलाई	- दीपशलाका, अग्निपेटिका (स्त्री.)	मूसल	- मुसलम्/अयोग्रम् (नपुं.)/ मूसलः (पुं.)
दीया	- दीपकः, दीपः (पुं.), दीपकम् (नपुं.)	मोगरी ( थपका )	- लोष्टभेदनः (पुं.)
दीवट	- दीपस्तम्भः (पुं.)	मृगछाला	- कृष्णाजिनम् (नपुं.)
दोना	- पत्रपुटम् (नपुं.)	मेज	- उत्पीठिका (स्त्री.)/फलकम्/काष्ठपीठम् (नपुं.)
धागा	- तन्तुः (पुं.), सूत्रम् (नपुं.)	मोमबत्ती	- मधूच्छिष्टवर्तिः, सिक्थवर्तिका (स्त्री.), दीपपादपः (पुं.)
नाँव	- नौका/तरणिः (स्त्री.)	मोम	- सिक्थम् (नपुं.)
नीवार	- नीवारः (नपुं.)	रस्सी	- रज्जुः (स्त्री.)
पत्तल	- पत्राली/पत्रावली (स्त्री.)	लालटेन	- आवृत्तदीपिका (स्त्री.), प्रदीपकोशः, काचदीपः (पुं.)
पलंग	- पर्यङ्कः/पल्यङ्कः (पुं.)	लैम्प	- नेयदीपः (पुं.)
पंखा	- व्यजनम् (नपुं.)	सिल	- शिला (स्त्री.), शिलापट्टम् (नपुं.)
पंखा ( हाथ का )	- तालवृन्तकम्/हस्तव्यजनम् (नपुं.)	सिल का बट्टा	- शिलावटकम् (नपुं.)
पीढ़ा	- पीठम् (नपुं.)/पीठिका (स्त्री.)	सन्दूक	- मञ्जूषा (स्त्री.)
पाँसा	- अक्षः (पुं.)/अक्षम् (नपुं.)	साँकल	- अर्गला (स्त्री.)/अर्गलम् (नपुं.)
पेटी	- पेटिका/मञ्जूषा (स्त्री.)	सरौता	- शङ्कुला (स्त्री.)
प्रेस	- समीकरः (पुं.)	सियेफल	- वक्रदीपः (पुं.)
प्याला	- चषकः (पुं.)	सीढ़ी	- सोपानम् (नपुं.)
फर्नीचर	- उपस्करः (पुं.)/काष्ठीयम् (नपुं.)		
फ्रिज	- हिमीकरः (पुं.)		
बटन	- कुड्मलः (पुं.)		

हिन्दी	संस्कृत	हिन्दी	संस्कृत
सुआ	– बृहत्सूची (स्त्री.)	टीपॉट	– चायपात्रम् (नपुं.)
सुई	– सूची/सूचिका (स्त्री.)	टोकरा	– कण्डोलः (पुं.)
सूपा	– सूर्पम्/प्रस्फोटनम् (नपुं.)	टोकरी	– कण्डोलिका (स्त्री.)
स्टूल	– संवेशः (पुं.)/उच्चपीठम् (नपुं.)/ सन्दिका (स्त्री.)	तवा	– तवी, तप्तिका (स्त्री.), ऋजीषम् (नपुं.)
स्टील	– आयसम् (नपुं.)	तसला	– धिषणः (पुं.), धिषणा (स्त्री.)
स्टोव	– उद्धानम्, अश्मन्तकम् (नपुं.)	तस्तरी	– शरावः (पुं.)/उपस्तरी (स्त्री.)
सोफा	– तल्पासन्दी (स्त्री.)	थाली	– स्थालिका, थालिका (स्त्री.)
सिकहर	– शिख्यम् (नपुं.)	दोना	– पत्रपुटः, द्रोणः, पुटकः (पुं.), द्रोणा (स्त्री.)
स्विच	– विद्युत्कुञ्चिका (स्त्री.) पिञ्जः (पुं.)	पतीली (बटलोई)	– स्थाली, पातिली, चरुः (स्त्री.)
हीटर	– तापकम् (नपुं.)	पत्तल	– पत्रस्थालिका (स्त्री.), पत्तलम् (नपुं.)
हैंगर	– अवलम्बकः (पुं.)	परात	– परामत्रम्, परायतम् (नपुं.), महास्थालिका (स्त्री.)

## पात्राणां नामानि (वर्तनों के नाम)

हिन्दी	संस्कृत	पानदान	प्याला
अँगीठी	– अग्नीष्टिका/हसन्ती/ अङ्गारशकटी (स्त्री.)	प्लेट	– चषकः (पुं.)/पानपात्रम् (नपुं.)
कटोरा	– कंसः (पुं.), कटोरम् (नपुं.)	पेटी /ट्रैंक	– शरावः (पुं.)/आस्थालिका (स्त्री.)
कटोरी	– कटोरिका, कसोरिका (स्त्री.)	वर्तन	– मञ्जूषा (स्त्री.)
कठौती	– काष्ठपात्रम् (नपुं.)	बाल्टी	– भाण्डम्, भाजनम्, पात्रम् (नपुं.)
कड़ाहा	– कटाहः, कर्परः (पुं.)	बोतल	– उदञ्चनम् (नपुं.), जलधरी (स्त्री.)
कड़ाही	– कटाहः (पुं.), स्वेदनी (स्त्री.)	मलसा	– काचकूपकः, कूपी (पुं.)
कण्डाल	– वारिधिः (पुं.)	मिट्टी की प्याली	– मल्लिका (स्त्री.)
करछुल	– दर्वी/कम्बी (स्त्री.)/ कडच्छदकः (पुं.)	लोटा	– कुण्डिका (स्त्री.)
काँच का जार	– काचघटी (स्त्री.)	संसी	– गण्डूकः/करकः (पुं.)
काँच का गिलास	– काचकंसः (पुं.)	सॉस / पैन	– सन्दशिका (स्त्री.), कङ्कमुखः (पुं.)
कुल्हड़	– मल्लकः/चषकः (पुं.)	सुराही	– उखा (स्त्री.)
कुकर	– वाष्पस्थाली (स्त्री.)	स्टोव	– कर्करी, जलशीतिका (स्त्री.)
गिलास	– चषकः/गल्लकः (पुं.)/ पानपात्रम् (नपुं.)	हड़िया	– उद्धानम् (नपुं.)
घड़ा	– घटः/कुम्भः/ कलशः (पुं.)		– हण्डिका (स्त्री.)
चम्मच	– चमसः (पुं.)		
चिमटा	– कङ्कमुखः/सन्दंशः (पुं.)		
चिलमची	– हस्तधावनी (स्त्री.)		
जलेबी बनाने की तई	– पिष्टपचनम् (नपुं.)		
टब	– बृहत्द्रोणी (स्त्री.)		

## शब्दरूप

### 1. अकारान्त पुलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	राम	श्याम	शिक्षक	देव	बालक
प्रथमा	रामः	श्यामः	शिक्षकः	देवः	बालकः
द्वितीया	रामम्	श्यामम्	शिक्षकम्	देवम्	बालकम्
तृतीया	रामेण	श्यामेन	शिक्षकेण	देवेन	बालकेन
चतुर्थी	रामाय	श्यामाय	शिक्षकाय	देवाय	बालकाय
पञ्चमी	रामात्	श्यामात्	शिक्षकात्	देवात्	बालकात्
षष्ठी	रामस्य	श्यामस्य	शिक्षकस्य	देवस्य	बालकस्य
सप्तमी	रामे	श्यामे	शिक्षके	देवे	बालके
सम्बोधन	हे राम!	हे श्याम!	हे शिक्षक!	हे देव!	हे बालक!

### अकारान्त पुलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
द्वितीया	रामौ	श्यामौ	शिक्षकौ	देवौ	बालकौ
तृतीया	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
चतुर्थी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
पञ्चमी	रामाभ्याम्	श्यामाभ्याम्	शिक्षकाभ्याम्	देवाभ्याम्	बालकाभ्याम्
षष्ठी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सप्तमी	रामयोः	श्यामयोः	शिक्षकयोः	देवयोः	बालकयोः
सम्बोधन	हे रामौ!	हे श्यामौ!	हे शिक्षकौ!	हे देवौ!	हे बालकौ!

### अकारान्त पुलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	रामाः	श्यामाः	शिक्षकाः	देवाः	बालकाः
द्वितीया	रामान्	श्यामान्	शिक्षकान्	देवान्	बालकान्
तृतीया	रामैः	श्यामैः	शिक्षकैः	देवैः	बालकैः
चतुर्थी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
पञ्चमी	रामेभ्यः	श्यामेभ्यः	शिक्षकेभ्यः	देवेभ्यः	बालकेभ्यः
षष्ठी	रामाणाम्	श्यामानाम्	शिक्षकाणाम्	देवानाम्	बालकानाम्
सप्तमी	रामेषु	श्यामेषु	शिक्षकेषु	देवेषु	बालकेषु
सम्बोधन	हे रामाः!	हे श्यामाः!	हे शिक्षकाः!	हे देवाः!	हे बालकाः!

### अन्य अकारान्त पुलिङ्ग शब्द

नोट- निम्नलिखित शब्दों का रूप 'राम' की तरह चलेगा।

कृष्ण, वृक्ष, कोविद (विद्वान्), सिंह (शेर), नृप, चन्द्र, चिकित्सक (डॉक्टर), नाग (सॉप), छात्र, अश्व, वैद्य (डॉक्टर), जनक (पिता), नर, वानर, मधुप (भौरा), सूत (पुत्र), पुत्र, सुर, खग (पक्षी), कर (हाथ), मूषक, अर्चक (पुजारी), तस्कर (चोर), नायक (हीरो), मातुल, काण (काना), गर्दभ (गदहा), गायक (गाने वाला), गज, कृपण (कंजूस), याचक (भिक्षुक), चालक (ड्राइवर), सर्प, विप्र (ब्राह्मण), इन्द्र, कूप, नारिकेल (नारियल), गणेश, तडाग, केशव (कृष्ण), मयूर आदि अनेक अकारान्त पुलिङ्ग शब्दों का रूप 'राम' की तरह चलेगा।

## 2. इकारान्त पुलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	हरि	मुनि	ऋषि	कवि	रवि
प्रथमा	हरिः	मुनिः	ऋषिः	कविः	रविः
द्वितीया	हरिम्	मुनिम्	ऋषिम्	कविम्	रविम्
तृतीया	हरिणा	मुनिना	ऋषिणा	कविना	रविणा
चतुर्थी	हरये	मुनये	ऋषये	कवये	रवये
पञ्चमी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	रवेः
षष्ठी	हरेः	मुनेः	ऋषेः	कवेः	रवेः
सप्तमी	हरौ	मुनौ	ऋषौ	कवौ	रवौ
सम्बोधन	हरे!	हे मुने!	हे ऋषे!	हे कवे!	हे रवे!

## इकारान्त पुलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
द्वितीया	हरी	मुनी	ऋषी	कवी	रवी
तृतीया	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
चतुर्थी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
पञ्चमी	हरिभ्याम्	मुनिभ्याम्	ऋषिभ्याम्	कविभ्याम्	रविभ्याम्
षष्ठी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सप्तमी	हर्योः	मुन्योः	ऋष्योः	कव्योः	रव्योः
सम्बोधन	हे हरी!	हे मुनी!	हे ऋषी!	हे कवी!	हे रवी!

## इकारान्त पुलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	हरयः	ऋषयः	रवयः	मुनयः	कवयः
द्वितीया	हरीन्	ऋषीन्	रवीन्	मुनीन्	कवीन्
तृतीया	हरिभिः	ऋषिभिः	रविभिः	मुनिभिः	कविभिः
चतुर्थी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
पञ्चमी	हरिभ्यः	ऋषिभ्यः	रविभ्यः	मुनिभ्यः	कविभ्यः
षष्ठी	हरीणाम्	ऋषीणाम्	रवीणाम्	मुनीनाम्	कवीनाम्
सप्तमी	हरिषु	ऋषिषु	रविषु	मुनिषु	कविषु
सम्बोधन	हे हरयः !	हे ऋषयः !	हे रवयः !	हे मुनयः !	हे कवयः !

## अन्य इकारान्त पुलिङ्ग शब्द

अग्नि (आग), मणि (मणि), अरि (शत्रु), अहि (सॉप), यति (संन्यासी), अतिथि (मेहमान), कपि (वानर), राशि (ढेर), उदधि (समुद्र), ध्वनि (आवाज), सभापति (सभाध्यक्ष), गिरि (पहाड़), पशुपति (शिव), परिधि (एक रेखा), नृपति (राजा), पाणिनि (वैयाकरण), आधि (मानसिक कष्ट), मारुति (हनुमान्), सन्धि (मेल), अवधि (सीमा), रमापति (विष्णु), सारथि (ड्राइवर), प्रणिधि (प्रार्थना), विधि (तरीका), उपाधि (उपाधि), रश्मि (किरण), समाधि (समाधि), निधि (खजाना), अद्रि (पर्वत), पाणि (हाथ), बलि (राजा बलि), अवि (भेंड) आदि।

**नोट-** इसीप्रकार सभी इकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के रूप 'हरि' के समान बना लीजिए।

## 3. उकारान्त पुंलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	गुरु	भानु	शम्भु	शिशु	साधु
प्रथमा	गुरुः	भानुः	शम्भुः	शिशुः	साधुः
द्वितीया	गुरुम्	भानुम्	शम्भुम्	शिशुम्	साधुम्
तृतीया	गुरुणा	भानुना	शम्भुना	शिशुना	साधुना
चतुर्थी	गुरुवे	भानवे	शम्भवे	शिशवे	साधवे
पञ्चमी	गुरोः	भानोः	शम्भोः	शिशोः	साधोः
षष्ठी	गुरोः	भानोः	शम्भोः	शिशोः	साधोः
सप्तमी	गुरौ	भानौ	शम्भौ	शिशौ	साधौ
सम्बोधन	हे गुरो!	हे भानो!	हे शम्भो!	हे शिशो!	हे साधो!

## उकारान्त पुंलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	गुरू	भानू	शम्भू	शिशू	साधू
द्वितीया	गुरू	भानू	शम्भू	शिशू	साधू
तृतीया	गुरुभ्याम्	भानुभ्याम्	शम्भुभ्याम्	शिशुभ्याम्	साधुभ्याम्
चतुर्थी	गुरुभ्याम्	भानुभ्याम्	शम्भुभ्याम्	शिशुभ्याम्	साधुभ्याम्
पञ्चमी	गुरुभ्याम्	भानुभ्याम्	शम्भुभ्याम्	शिशुभ्याम्	साधुभ्याम्
षष्ठी	गुरवोः	भान्वोः	शम्भवोः	शिशवोः	साध्वोः
सप्तमी	गुरवोः	भान्वोः	शम्भवोः	शिशवोः	साध्वोः
सम्बोधन	हे गुरू!	हे भानू!	हे शम्भू!	हे शिशू!	हे साधू!

## उकारान्त पुंलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	गुरवः	भानवः	शम्भवः	शिशवः	साधवः
द्वितीया	गुरून्	भानून्	शम्भून्	शिशून्	साधून्
तृतीया	गुरुभिः	भानुभिः	शम्भुभिः	शिशुभिः	साधुभिः
चतुर्थी	गुरुभ्यः	भानुभ्यः	शम्भुभ्यः	शिशुभ्यः	साधुभ्यः
पञ्चमी	गुरुभ्यः	भानुभ्यः	शम्भुभ्यः	शिशुभ्यः	साधुभ्यः
षष्ठी	गुरूणाम्	भानूनाम्	शम्भूनाम्	शिशूनाम्	साधूनाम्
सप्तमी	गुरुषु	भानुषु	शम्भुषु	शिशुषु	साधुषु
सम्बोधन	हे गुरवः!	हे भानवः!	हे शम्भवः!	हे शिशवः!	हे साधवः!

## अन्य उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द

कृशानु (आग), प्रभु (स्वामी), विधु (चन्द्रमा), परशु (मृत्यु), बाहु (भुजा), पांशु (धूला), वायु (हवा), पशु (पशु), तरु (वृक्ष), इषु (गन्ना) आदि।

नोट- इसीप्रकार सभी उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों का रूप 'गुरु' की तरह चलेगा।



## 4. ऋकारान्त पुलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	पितृ	भ्रातृ	जामातृ	कर्तृ	हर्तृ
प्रथमा	पिता	भ्राता	जामाता	कर्ता	हर्ता
द्वितीया	पितरम्	भ्रातरम्	जामातरम्	कर्तारम्	हर्तारम्
तृतीया	पित्रा	भ्रात्रा	जामात्रा	कर्त्रा	हर्त्रा
चतुर्थी	पित्रे	भ्रात्रे	जामात्रे	कर्त्रे	हर्त्रे
पञ्चमी	पितुः	भ्रातुः	जामातुः	कर्तुः	हर्तुः
षष्ठी	पितुः	भ्रातुः	जामातुः	कर्तुः	हर्तुः
सप्तमी	पितरि	भ्रातरि	जामातरि	कर्तरि	हर्तरि
सम्बोधन	हे पितः!	हे भ्रातः!	हे जामातः!	हे कर्तः!	हे हर्तः!

## ऋकारान्त पुलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	पितरौ	भ्रातरौ	जामातरौ	कर्तारौ	हर्तारौ
द्वितीया	पितरौ	भ्रातरौ	जामातरौ	कर्तारौ	हर्तारौ
तृतीया	पितृभ्याम्	भ्रातृभ्याम्	जामातृभ्याम्	कर्तृभ्याम्	हर्तृभ्याम्
चतुर्थी	पितृभ्याम्	भ्रातृभ्याम्	जामातृभ्याम्	कर्तृभ्याम्	हर्तृभ्याम्
पञ्चमी	पितृभ्याम्	भ्रातृभ्याम्	जामातृभ्याम्	कर्तृभ्याम्	हर्तृभ्याम्
षष्ठी	पित्रोः	भ्रात्रोः	जामात्रोः	कर्त्रोः	हर्त्रोः
सप्तमी	पित्रोः	भ्रात्रोः	जामात्रोः	कर्त्रोः	हर्त्रोः
सम्बोधन	हे पितरौ!	हे भ्रातरौ!	हे जामातरौ!	हे कर्तारौ!	हे हर्तारौ!

## ऋकारान्त पुलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	पितरः	भ्रातरः	जामातरः	कर्तारः	हर्तारः
द्वितीया	पितॄन्	भ्रातॄन्	जामातॄन्	कर्तॄन्	हर्तॄन्
तृतीया	पितृभिः	भ्रातृभिः	जामातृभिः	कर्तृभिः	हर्तृभिः
चतुर्थी	पितृभ्यः	भ्रातृभ्यः	जामातृभ्यः	कर्तृभ्यः	हर्तृभ्यः
पञ्चमी	पितृभ्यः	भ्रातृभ्यः	जामातृभ्यः	कर्तृभ्यः	हर्तृभ्यः
षष्ठी	पितॄणाम्	भ्रातॄणाम्	जामातॄणाम्	कर्तॄणाम्	हर्तॄणाम्
सप्तमी	पितॄषु	भ्रातॄषु	जामातॄषु	कर्तॄषु	हर्तॄषु
सम्बोधन	हे पितरः!	हे भ्रातरः!	हे जामातरः!	हे कर्तारः!	हे हर्तारः!

## अन्य ऋकारान्त पुलिङ्ग शब्द

नेतृ (नेता), नेष्टृ (नष्टा), वक्तृ (वक्ता), होतृ (होता), प्रष्टृ (प्रष्टा), रक्षितृ (रक्षिता), श्रोतृ (श्रोता), नप्तृ (नप्ता), सवितृ (सविता), क्रेतृ (खरीदने वाला), पठितृ (पढ़ाने वाला), गन्तृ (जाने वाला), ज्ञातृ, भर्तृ, रचयितृ (रचना करने वाला), स्मर्तृ (स्मरण करने वाला), जेतृ (जीतने वाला), दातृ (देने वाला), भोक्तृ (भोग करने वाला), प्रशास्तृ (प्रशासक), वष्टृ (विश्वकर्मा) आदि।

## 5. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	रमा	लता	सीता	राधा	बालिका
प्रथमा	रमा	लता	सीता	राधा	बालिका
द्वितीया	रमाम्	लताम्	सीताम्	राधाम्	बालिकाम्
तृतीया	रमया	लतया	सीतया	राधया	बालिकया
चतुर्थी	रमायै	लतायै	सीतायै	राधायै	बालिकायै
पञ्चमी	रमायाः	लतायाः	सीतायाः	राधायाः	बालिकायाः
षष्ठी	रमायाः	लतायाः	सीतायाः	राधायाः	बालिकायाः
सप्तमी	रमायाम्	लतायाम्	सीतायाम्	राधायाम्	बालिकायाम्
सम्बोधन	हे रमे!	हे लते!	हे सीते!	हे राधे!	हे बालिके!

## आकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	रमे	लते	सीते	राधे	बालिके
द्वितीया	रमे	लते	सीते	राधे	बालिके
तृतीया	रमाभ्याम्	लताभ्याम्	सीताभ्याम्	राधाभ्याम्	बालिकाभ्याम्
चतुर्थी	रमाभ्याम्	लताभ्याम्	सीताभ्याम्	राधाभ्याम्	बालिकाभ्याम्
पञ्चमी	रमाभ्याम्	लताभ्याम्	सीताभ्याम्	राधाभ्याम्	बालिकाभ्याम्
षष्ठी	रमयोः	लतयोः	सीतयोः	राधयोः	बालिकयोः
सप्तमी	रमयोः	लतयोः	सीतयोः	राधयोः	बालिकयोः
सम्बोधन	हे रमे!	हे लते!	हे सीते!	हे राधे!	हे बालिके!

## आकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	रमाः	लताः	सीताः	राधाः	बालिकाः
द्वितीया	रमाः	लताः	सीताः	राधाः	बालिकाः
तृतीया	रमाभिः	लताभिः	सीताभिः	राधाभिः	बालिकाभिः
चतुर्थी	रमाभ्यः	लताभ्यः	सीताभ्यः	राधाभ्यः	बालिकाभ्यः
पञ्चमी	रमाभ्यः	लताभ्यः	सीताभ्यः	राधाभ्यः	बालिकाभ्यः
षष्ठी	रमाणाम्	लतानाम्	सीतानाम्	राधानाम्	बालिकानाम्
सप्तमी	रमासु	लतासु	सीतासु	राधासु	बालिकासु
सम्बोधन	हे रमाः!	हे लताः!	हे सीताः!	हे राधाः!	हे बालिकाः!

## अन्य आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

पाठशाला, प्रभा, क्रीडा, कान्ता, कथा, श्रद्धा, कन्या, निष्ठा, वसुधा, वाटिका, सुधा, शाटिका, अजा, वाटिका, मूषिका, नासिका, चटका, व्यथा, बाला, अचला (पृथ्वी), आशा, उमा, गङ्गा, ग्रीवा (गर्दन), जनता, तनया (बेटी), देवता, निशा, वनिता (स्त्री), शाखा, शिला (पत्थर), सञ्ज्ञा, अर्चा, अम्बिका (लक्ष्मी), क्षमा, जाया, तन्द्रा (ऊँघना), प्रतिभा, व्यथा, शारदा, सुरा (शराब), हरिद्रा (हल्दी), उपमा, क्षुधा, गोशाला, चेतना, तुला (तराजू), धारणा (विचार), प्रतिमा (मूर्ति), भाषा, यात्रा, रेखा, वामा (सुन्दरी), शर्करा, शिक्षा, सुता, सेना, स्पृहा, होरा (एक घण्टा), त्वरा (शीघ्र), घोषणा, नौका, पिपासा, अमावस्या आदि।

## 6. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	जननी	रजनी	नगरी	भवती	नदी
प्रथमा	जननी	रजनी	नगरी	भवती	नदी
द्वितीया	जननीम्	रजनीम्	नगरीम्	भवतीम्	नदीम्
तृतीया	जनन्या	रजन्या	नगर्या	भवत्या	नद्या
चतुर्थी	जनन्यै	रजन्यै	नगर्यै	भवत्यै	नद्यै
पञ्चमी	जनन्याः	रजन्याः	नगर्याः	भवत्याः	नद्याः
षष्ठी	जनन्याः	रजन्याः	नगर्याः	भवत्याः	नद्याः
सप्तमी	जनन्याम्	रजन्याम्	नगर्याम्	भवत्याम्	नद्याम्
सम्बोधन	हे जननि!	हे रजनि!	हे नगरि!	हे भवति!	हे नदि!

## ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	जनन्यौ	रजन्यौ	नगर्यौ	भवत्यौ	नद्यौ
द्वितीया	जनन्यौ	रजन्यौ	नगर्यौ	भवत्यौ	नद्यौ
तृतीया	जननीभ्याम्	रजनीभ्याम्	नगरीभ्याम्	भवतीभ्याम्	नदीभ्याम्
चतुर्थी	जननीभ्याम्	रजनीभ्याम्	नगरीभ्याम्	भवतीभ्याम्	नदीभ्याम्
पञ्चमी	जननीभ्याम्	रजनीभ्याम्	नगरीभ्याम्	भवतीभ्याम्	नदीभ्याम्
षष्ठी	जनन्योः	रजन्योः	नगर्योः	भवत्योः	नद्योः
सप्तमी	जनन्योः	रजन्योः	नगर्योः	भवत्योः	नद्योः
सम्बोधन	हे जनन्यौ!	हे रजन्यौ!	हे नगर्यौ!	हे भवत्यौ!	हे नद्यौ!

## ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	जनन्यः	रजन्यः	नगर्यः	भवत्यः	नद्यः
द्वितीया	जननीः	रजनीः	नगरीः	भवतीः	नदीः
तृतीया	जननीभिः	रजनीभिः	नगरीभिः	भवतीभिः	नदीभिः
चतुर्थी	जननीभ्यः	रजनीभ्यः	नगरीभ्यः	भवतीभ्यः	नदीभ्यः
पञ्चमी	जननीभ्यः	रजनीभ्यः	नगरीभ्यः	भवतीभ्यः	नदीभ्यः
षष्ठी	जननीनाम्	रजनीनाम्	नगरीणाम्	भवतीनाम्	नदीनाम्
सप्तमी	जननीषु	रजनीषु	नगरीषु	भवतीषु	नदीषु
सम्बोधन	हे जनन्यः!	हे रजन्यः!	हे नगर्यः!	हे भवत्यः!	हे नद्यः!

## अन्य ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

नलिनी, शालिनी, मालिनी, सूची, कूपी, कदली, कुमारी, गोष्ठी, गर्भिणी, देवी, नगरी, कुटी, गायत्री, कौमुदी, कामिनी, दामिनी, दासी, कावेरी, काशी, देवकी, द्रौपदी, नटी, पत्नी, पार्वती, पुरी, पृथ्वी, प्राची, बदरी, भागीरथी, भारती, मञ्जरी, मसी, मही, मातुलानी, मालती, मुरली, मोदिनी, यामिनी, रजनी, वाणी, विदुषी, वैदेही, सखी, सपत्नी, सुन्दरी, हिमानी, श्रेणी, राक्षसी, राजधानी, युवती, भवती आदि। इनका रूप 'जननी' के समान चलेगा।

## 7. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	मातृ	दुहितृ	ननान्दृ	स्वसृ
प्रथमा	माता	दुहिता	ननान्दा	स्वसा
द्वितीया	मातरम्	दुहितरम्	ननान्दरम्	स्वसारम्
तृतीया	मात्रा	दुहित्रा	ननान्द्रा	स्वस्त्रा
चतुर्थी	मात्रे	दुहित्रे	ननान्द्रे	स्वस्त्रे
पञ्चमी	मातुः	दुहितुः	ननान्दुः	स्वसुः
षष्ठी	मातुः	दुहितुः	ननान्दुः	स्वसुः
सप्तमी	मातरि	दुहितरि	ननान्दरि	स्वसारि
सम्बोधन	हे मातः !	हे दुहितः !	हे ननान्दः !	हे स्वसः !

## ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	मातरौ	दुहितरौ	ननान्दरौ	स्वसारौ
द्वितीया	मातरौ	दुहितरौ	ननान्दरौ	स्वसारौ
तृतीया	मातृभ्याम्	दुहितृभ्याम्	ननान्दृभ्याम्	स्वसृभ्याम्
चतुर्थी	मातृभ्याम्	दुहितृभ्याम्	ननान्दृभ्याम्	स्वसृभ्याम्
पञ्चमी	मातृभ्याम्	दुहितृभ्याम्	ननान्दृभ्याम्	स्वसृभ्याम्
षष्ठी	मात्रोः	दुहित्रोः	ननान्द्रोः	स्वस्त्रोः
सप्तमी	मात्रोः	दुहित्रोः	ननान्द्रोः	स्वस्त्रोः
सम्बोधन	हे मातरौ !	हे दुहितरौ !	हे ननान्दरौ !	हे स्वसारौ !

## ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	मातरः	दुहितरः	ननान्दरः	स्वसारः
द्वितीया	मातृः	दुहितृः	ननान्दृः	स्वसृः
तृतीया	मातृभिः	दुहितृभिः	ननान्दृभिः	स्वसृभिः
चतुर्थी	मातृभ्यः	दुहितृभ्यः	ननान्दृभ्यः	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	मातृभ्यः	दुहितृभ्यः	ननान्दृभ्यः	स्वसृभ्यः
षष्ठी	मातृणाम्	दुहितृणाम्	ननान्दृणाम्	स्वसृणाम्
सप्तमी	मातृषु	दुहितृषु	ननान्दृषु	स्वसृषु
सम्बोधन	हे मातरः !	हे दुहितरः !	हे ननान्दरः !	हे स्वसारः !

## अन्य ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

तिसृ (तीन संख्या), चतसृ (चार की संख्या), यातृ (देवरानी) आदि।

## 8. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग एकवचन

विभक्ति	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
प्रथमा	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
द्वितीया	फलम्	पुष्पम्	पत्रम्	नेत्रम्	वनम्
तृतीया	फलेन	पुष्पेण	पत्रेण	नेत्रेण	वनेन
चतुर्थी	फलाय	पुष्पाय	पत्राय	नेत्राय	वनाय
पञ्चमी	फलात्	पुष्पात्	पत्रात्	नेत्रात्	वनात्
षष्ठी	फलस्य	पुष्पस्य	पत्रस्य	नेत्रस्य	वनस्य
सप्तमी	फले	पुष्पे	पत्रे	नेत्रे	वने
सम्बोधन	हे फल!	हे पुष्प!	हे पत्र!	हे नेत्र!	हे वन!

## अकारान्त नपुंसकलिङ्ग द्विवचन

प्रथमा	फले	पुष्पे	पत्रे	नेत्रे	वने
द्वितीया	फले	पुष्पे	पत्रे	नेत्रे	वने
तृतीया	फलाभ्याम्	पुष्पाभ्याम्	पत्राभ्याम्	नेत्राभ्याम्	वनाभ्याम्
चतुर्थी	फलाभ्याम्	पुष्पाभ्याम्	पत्राभ्याम्	नेत्राभ्याम्	वनाभ्याम्
पञ्चमी	फलाभ्याम्	पुष्पाभ्याम्	पत्राभ्याम्	नेत्राभ्याम्	वनाभ्याम्
षष्ठी	फलयोः	पुष्पयोः	पत्रयोः	नेत्रयोः	वनयोः
सप्तमी	फलयोः	पुष्पयोः	पत्रयोः	नेत्रयोः	वनयोः
सम्बोधन	हे फल!	हे पुष्प!	हे पत्र!	हे नेत्र!	हे वन!

## अकारान्त नपुंसकलिङ्ग बहुवचन

प्रथमा	फलानि	पुष्पाणि	पत्राणि	नेत्राणि	वनानि
द्वितीया	फलानि	पुष्पाणि	पत्राणि	नेत्राणि	वनानि
तृतीया	फलैः	पुष्पैः	पत्रैः	नेत्रैः	वनैः
चतुर्थी	फलेभ्यः	पुष्पेभ्यः	पत्रेभ्यः	नेत्रेभ्यः	वनेभ्यः
पञ्चमी	फलेभ्यः	पुष्पेभ्यः	पत्रेभ्यः	नेत्रेभ्यः	वनेभ्यः
षष्ठी	फलानाम्	पुष्पाणाम्	पत्राणाम्	नेत्राणाम्	वनानाम्
सप्तमी	फलेषु	पुष्पेषु	पत्रेषु	नेत्रेषु	वनेषु
सम्बोधन	हे फलानि!	हे पुष्पाणि!	हे पत्राणि!	हे नेत्राणि!	हे वनानि!

## अन्य अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

(जिनका रूप 'फल' के समान चलेगा)

मित्रम्, पापम्, उपनेत्रम्, उद्यानम्, उदकम्, रत्नम्, मुखम्, सूत्रम्, क्रीडनकम्, कमलम्, जलजम्, वचनम्, पात्रम्, गृहम्, कार्यम्, कुसुमम्, मौनम्, द्वारम्, फलकम्, चरणम्, उदरम्, पुस्तकम्, सोपानम्, समाचारपत्रम्, तैलम्, पृष्ठम्, वस्त्रम्, मन्दिरम्, अक्षरम्, धनम्, नयनम्, कारयानम्, जलम्, अरण्यम्, ज्ञानम्, सुखम्, व्यजनम्, दुग्धम्, अमृतम्, दुःखम्, चित्रम्, तिलकम्, आसनम् आदि।

नोट- उपर्युक्त शब्दों का रूप 'फल' की तरह बनाइये।

## सर्वनाम रूप

### सर्वनाम रूप पुंलिङ्ग एकवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	सः	कः	एषः	यः	सर्वः
द्वितीया	तम्	कम्	एतम्	यम्	सर्वम्
तृतीया	तेन	केन	एतेन	येन	सर्वेण
चतुर्थी	तस्मै	कस्मै	एतस्मै	यस्मै	सर्वस्मै
पञ्चमी	तस्मात्	कस्मात्	एतस्मात्	यस्मात्	सर्वस्मात्
षष्ठी	तस्य	कस्य	एतस्य	यस्य	सर्वस्य
सप्तमी	तस्मिन्	कस्मिन्	एतस्मिन्	यस्मिन्	सर्वस्मिन्

### सर्वनामरूप पुंलिङ्ग द्विवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वौ
द्वितीया	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वौ
तृतीया	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
चतुर्थी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
पञ्चमी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
षष्ठी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः
सप्तमी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः

### सर्वनाम रूप पुंलिङ्ग बहुवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	ते	के	एते	ये	सर्वे
द्वितीया	तान्	कान्	एतान्	यान्	सर्वान्
तृतीया	तैः	कैः	एतैः	यैः	सर्वैः
चतुर्थी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
षष्ठी	तेषाम्	केषाम्	एतेषाम्	येषाम्	सर्वेषाम्
सप्तमी	तेषु	केषु	एतेषु	येषु	सर्वेषु

## सर्वनाम रूप पुंलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.
तद् ( वह )	सः	तौ	ते	तम्	तौ	तान्	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम् ( क्या )	कः	कौ	के	कम्	कौ	कान्	केन	काभ्याम्	कैः
एतद् ( यह )	एषः	एतौ	एते	एतम्	एतौ	एतान्	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
यत् ( जो )	यः	यौ	ये	यम्	यौ	यान्	येन	याभ्याम्	यैः
सर्व ( सब )	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
इदम् ( यह )	अयम्	इमौ	इमे	इमम्	इमौ	इमान्	अनेन	आभ्याम्	एभिः
अदस् ( वह )	असौ	अमू	अमी	अमुम्	अमू	अमून्	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
अस्मद् ( मैं )	अहम्	आवाम्	वयम्	माम्	आवाम्	अस्मान्	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
युष्मद् ( तुम )	त्वम्	युवाम्	यूयम्	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
भवत् ( आप )	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	भवन्तम्	भवन्तौ	भवन्तः	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः

चतुर्थी			पञ्चमी			षष्ठी			सप्तमी		
एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्य	कयोः	केषाम्	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्मिन्	अनयोः	एषु
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	मम	आवयोः	अस्माकम्	मयि	आवयोः	अस्मासु
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	तव	युवयोः	युष्माकम्	त्वयि	युवयोः	युष्मासु
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवतः	भवतोः	भवताम्	भवति	भवतोः	भवत्सु

सम्बोधन- हे भवन्

हे भवन्तौ

हे भवन्तः



## सर्वनाम रूप स्त्रीलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.
तद्	सा	ते	ताः	ताम्	ते	ताः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
किम्	का	के	काः	काम्	के	काः	कया	काभ्याम्	काभिः
एतद्	एषा	एते	एताः	एताम्	एते	एताः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
यत्	या	ये	याः	याम्	ये	याः	यया	याभ्याम्	याभिः
सर्व	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः

चतुर्थी			पञ्चमी			षष्ठी			सप्तमी		
एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	तस्याः	तयोः	तासाम्	तस्याम्	तयोः	तासु
कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः	कस्याः	कयोः	कासाम्	कस्याम्	कयोः	कासु
एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्	एतस्याम्	एतयोः	एतासु
यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः	यस्याः	ययोः	यासाम्	यस्याम्	ययोः	यासु
सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

## सर्वनाम रूप नपुंसलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.
तद्	तत्	ते	तानि	तत्	ते	तानि	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम्	किम्	के	कानि	किम्	के	कानि	केन	काभ्याम्	कैः
एतद्	एतत्	एते	एतानि	एतत्	एते	एतानि	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
यद्	यत्	ये	यानि	यत्	ये	यानि	येन	याभ्याम्	यैः
सर्व	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः

चतुर्थी			पञ्चमी			षष्ठी			सप्तमी		
एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.	एक.	द्विव.	बहु.
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्य	कयोः	केषाम्	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

## अस्मद् और युष्मद्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम् त्वम्	आवाम् युवाम्	वयम् यूयम्
माम् त्वाम्	आवाम् युवाम्	अस्मान् युष्मान्
मया त्वया	आवाभ्याम् युवाभ्याम्	अस्माभिः युष्माभिः
मह्यम् तुभ्यम्	आवाभ्याम् युवाभ्याम्	अस्मभ्यम् युष्मभ्यम्
मत् त्वत्	आवाभ्याम् युवाभ्याम्	अस्मत् युष्मत्
मम तव	आवयोः युवयोः	अस्माकम् युष्माकम्
मयि त्वयि	आवयोः युवयोः	अस्मासु युष्मासु

अस्मद् ( मैं )	युष्मद् ( तुम )
1. अहम् आवाम् वयम्	त्वम् युवाम् यूयम्
2. माम्, मा आवाम्, नौ अस्मान्, नः	त्वाम्, त्वा युवाम्, वाम् युष्मान्, वः
3. मया आवाभ्याम् अस्माभिः	त्वया युवाभ्याम् युष्माभिः
4. मह्यम्, मे आवाभ्याम्, नौ अस्मभ्यम्, नः	तुभ्यम्, ते युवाभ्याम्, वाम् युष्मभ्यम्, वः
5. मत् आवाभ्याम् अस्मत्	त्वत् युवाभ्याम् युष्मत्
6. मम, मे आवयोः, नौ अस्माकम्, नः	तव, ते युवयोः, वाम् युष्माकम्, वः
7. मयि आवयोः अस्मासु	त्वयि युवयोः युष्मासु

नोट- अस्मद् और युष्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में यही रूप चलेगा। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।

**UP-TET और M.P. वर्ग 1-2 ( संस्कृत ) हेतु**  
**YouTube पर संस्कृतगंगा चैनल को देखें।**

**UP-TET ( संस्कृत ) “विजयी भव” नोट्स हेतु संस्कृतगंगा, दारागंज,**  
**प्रयागराज से सम्पर्क करें - मो. 8004545096, 7800138404**

## धातुरूप

### 1. लट्लकार

धातु	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ् (पढ़ना)	पठति	पठतः	पठन्ति	पठसि	पठथः	पठथ	पठामि	पठावः	पठामः
गम् (जाना)	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
दृश् (देखना)	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
पा (पीना)	पिबति	पिबतः	पिबन्ति	पिबसि	पिबथः	पिबथ	पिबामि	पिबावः	पिबामः
लिख् (लिखना)	लिखति	लिखतः	लिखन्ति	लिखसि	लिखथः	लिखथ	लिखामि	लिखावः	लिखामः
प्रच्छ् (पूँछना)	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः
वद् (बोलना)	वदति	वदतः	वदन्ति	वदसि	वदथः	वदथ	वदामि	वदावः	वदामः
भू (होना)	भवति	भवतः	भवन्ति	भवसि	भवथः	भवथ	भवामि	भवावः	भवामः
नश् (नष्ट होना)	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः
नी (ले जाना)	नयति	नयतः	नयन्ति	नयसि	नयथः	नयथ	नयामि	नयावः	नयामः
इष् (चाहना)	इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ	इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः
कृष् (जोतना)	कृषति	कृषतः	कृषन्ति	कृषसि	कृषथः	कृषथ	कृषामि	कृषावः	कृषामः
श्रि (सेवा करना)	श्रयति	श्रयतः	श्रयन्ति	श्रयसि	श्रयथः	श्रयथ	श्रयामि	श्रयावः	श्रयामः
अस् (होना)	अस्ति	स्तः	सन्ति	असि	स्थः	स्थ	अस्मि	स्वः	स्मः
हन् (मारना)	हन्ति	हतः	घ्नन्ति	हन्ति	हथः	हथ	हन्मि	हन्वः	हन्मः
शक् (सकना)	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः
आप् (प्राप्त करना)	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
कथ् (बोलना)(परस्मै.)	कथयति	कथयतः	कथयन्ति	कथयसि	कथयथः	कथयथ	कथयामि	कथयावः	कथयामः
दा (देना) (परस्मै.)	ददाति	दत्तः	ददति	ददासि	दत्थः	दत्थ	ददामि	दद्वः	दद्वमः
ज्ञा (जानना) (परस्मै.)	जानाति	जानीतः	जानन्ति	जानासि	जानीथः	जानीथ	जानामि	जानीवः	जानीमः
कृ (करना) (परस्मै.)	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	करोमि	कुर्वः	कुर्मः
कथ् (आत्मने.)	कथयते	कथयेते	कथयन्ते	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे	कथये	कथयावहे	कथयामहे
दा (आत्मने.)	दत्ते	ददाते	ददते	दत्से	ददाथे	ददध्वे	ददे	दद्वहे	दद्वमहे
ज्ञा (आत्मने.)	जानीते	जानाते	जानते	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे	जाने	जानीवहे	जानीमहे
कृ (आत्मने)	कुरुते	कुर्वते	कुर्वते	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लभ् (पाना)(आत्मने)	लभते	लभेते	लभन्ते	लभसे	लभेथे	लभध्वे	लभे	लभावहे	लभामहे

## 2. लृटलकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः
गम्	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः
लिख्	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः
वद्	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः
भू	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
नश्	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः
इष्	एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति	एषिष्यसि	एषिष्यथः	एषिष्यथ	एषिष्यामि	एषिष्यावः	एषिष्यामः
श्रि	श्रयिष्यति	श्रयिष्यतः	श्रयिष्यन्ति	श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथः	श्रयिष्यथ	श्रयिष्यामि	श्रयिष्यावः	श्रयिष्यामः
अस्	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
हन्	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः
पा	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः
नी	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ	नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः
आप्	आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति	आप्स्यसि	आप्स्यथः	आप्स्यथ	आप्स्यामि	आप्स्यावः	आप्स्यामः
शक्	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्ष्यामः
कृष्	कृक्ष्यति	कृक्ष्यतः	कृक्ष्यन्ति	कृक्ष्यसि	कृक्ष्यथः	कृक्ष्यथ	कृक्ष्यामि	कृक्ष्यावः	कृक्ष्यामः
दृश्	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः
प्रच्छ्	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः
कथ् (पर.)	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः
दा (पर.)	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः
ज्ञा (पर.)	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः
कृ (पर.)	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः
कथ् (आ.)	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे
दा (आ.)	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे
ज्ञा (आत्म.)	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे
कृ (आत्म.)	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे
लभ् (आत्म.)	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

## 3. लोटलकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	पठतु	पठताम्	पठन्तु	पठ	पठतम्	पठत	पठानि	पठाव	पठाम
गम्	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम
दृश्	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु	पश्य	पश्यतम्	पश्यत	पश्यानि	पश्याव	पश्याम
पा	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु	पिब	पिबतम्	पिबत	पिबानि	पिबाव	पिबाम
लिख्	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु	लिख	लिखतम्	लिखत	लिखानि	लिखाव	लिखाम
प्रच्छ्	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम
वद्	वदतु	वदताम्	वदन्तु	वद	वदतम्	वदत	वदानि	वदाव	वदाम
भू	भवतु	भवताम्	भवन्तु	भव	भवतम्	भवत	भवानि	भवाव	भवाम
नश्	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु	नश्य	नश्यतम्	नश्यत	नश्यानि	नश्याव	नश्याम
नी	नयतु	नयताम्	नयन्तु	नय	नयतम्	नयत	नयानि	नयाव	नयाम
इष्	इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु	इच्छ	इच्छतम्	इच्छत	इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम
कृष्	कृषतु	कृषताम्	कृषन्तु	कृष	कृषतम्	कृषत	कृषाणि	कृषाव	कृषाम
श्रि	श्रयतु	श्रयताम्	श्रयन्तु	श्रय	श्रयतम्	श्रयत	श्रयाणि	श्रयाव	श्रयाम
अस्	अस्तु	स्ताम्	सन्तु	एधि	स्तम्	स्त	असानि	असाव	असाम
हन्	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु	जहि	हतम्	हत	हनानि	हनाव	हनाम
शक्	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
आप्	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम
कथ् (पर.)	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु	कथय	कथयतम्	कथयत	कथयानि	कथयाव	कथयाम
दा (पर.)	ददातु	ददाताम्	ददन्तु	देहि	दत्तम्	दत्त	ददानि	ददाव	ददाम
ज्ञा (पर.)	जानातु	जानीताम्	जानन्तु	जानीहि	जानीतम्	जानीत	जानानि	जानाव	जानाम
कृ (पर.)	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	कुरु	कुरुतम्	कुरुत	करवाणि	करवाव	करवाम
कथ् (आ.)	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्	कथयै	कथयावहै	कथयामहै
दा (आ.)	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्	ददै	ददावहै	ददामहै
ज्ञा (आ.)	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्	जानै	जानावहै	जानामहै
कृ (आ.)	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्	करवै	करवावहै	करवामहै
लभ (आ.)	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्	लभै	लभावहै	लभामहै

## 4. विधिलिङ्लकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः	पठेः	पठेतम्	पठेत	पठेयम्	पठेव	पठेम
लिख्	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम
पा	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम
भू	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	भवेः	भवेतम्	भवेत	भवेयम्	भवेव	भवेम
वद्	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः	वदेः	वदेतम्	वदेत	वदेयम्	वदेव	वदेम
नी	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः	नयेः	नयेतम्	नयेत	नयेयम्	नयेव	नयेम
श्रि	श्रयेत्	श्रयेताम्	श्रयेयुः	श्रयेः	श्रयेतम्	श्रयेत	श्रयेयम्	श्रयेव	श्रयेम
इष्	इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः	इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत	इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम
गम्	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम
प्रच्छ्	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम
दृश्	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम
नश्	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम
कृष्	कृषेत्	कृषेताम्	कृषेयुः	कृषेः	कृषेतम्	कृषेत	कृषेयम्	कृषेव	कृषेम
अस्	स्यात्	स्याताम्	स्युः	स्याः	स्यातम्	स्यात	स्याम्	स्याव	स्याम
हन्	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात	हन्याम्	हन्याव	हन्याम
शक्	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम
आप्	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम
दा (पर.)	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
ज्ञा (पर.)	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम
कृ (पर.)	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम
कथ् (पर.)	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम
कथ् (आ.)	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि
दा (आ.)	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्	ददीय	ददीवहि	ददीमहि
ज्ञा (आ.)	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्	जानीय	जानीवहि	जानीमहि
कृ (आ.)	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
लभ् (आ.)	लभेत्	लभेयाताम्	लभेरन्	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

## 5.लङ्लकार

	प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
पठ्	अपठत्	अपठताम्	अपठन्	अपठः	अपठतम्	अपठत	अपठम्	अपठाव	अपठाम
गम्	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम
दृश्	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम
पा	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम
लिख्	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम
प्रच्छ्	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम
वद्	अवदत्	अवदताम्	अवदन्	अवदः	अवदतम्	अवदत	अवदम्	अवदाव	अवदाम
भू	अभवत्	अभवताम्	अभवन्	अभवः	अभवतम्	अभवत	अभवम्	अभवाव	अभवाम
नश् -	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम
नी	अनयत्	अनयताम्	अनयन्	अनयः	अनयतम्	अनयत	अनयम्	अनयाव	अनयाम
कृष्	अकृषत्	अकृषताम्	अकृषन्	अकृषः	अकृषतम्	अकृषत	अकृषम्	अकृषाव	अकृषाम
श्रि	अश्रयत्	अश्रयताम्	अश्रयन्	अश्रयः	अश्रयतम्	अश्रयत	अश्रयम्	अश्रयाव	अश्रयाम
अस्	आसीत्	आस्ताम्	आसन्	आसीः	आस्तम्	आस्त	आसम्	आस्व	आस्म
हन्	अहन्	अहताम्	अघ्नन्	अहन्	अहतम्	अहत	अहनम्	अहन्व	अहन्म
इष्	ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्	ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत	ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम
शक्	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम
आप्	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम
कथ् (पर.)	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम
दा (पर.)	अददात्	अददाताम्	अददुः	अददाः	अददतम्	अददत	अददाम्	अदद्व	अददम्
ज्ञा (पर.)	अजानीत्	अजानीताम्	अजानन्	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	अजानाम्	अजानीव	अजानीम
कृ (पर.)	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म
कथ् (आ.)	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि
दा (आ.)	अदत्	अददाताम्	अददत	अदत्थाः	अददाथाम्	अददध्वम्	अददि	अदद्वहि	अददमहि
ज्ञा (आ.)	अजानीत	अजानाताम्	अजानत	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि
कृ (आ.)	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
लभ (आ.)	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

## धातुओं का पूर्ण परिचय

1. पठ् पठ व्यक्तायां वाचि (पढ़ना, सीखना) सकर्मक, सेट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
2. गम् गम्ल् गतौ (जाना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
3. दृश् दृशिर् प्रेक्षणे (देखना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
4. पा पा पाने (पीना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
5. लिख् लिख अक्षरविन्यासे (लिखना) सकर्मक, सेट् परस्मैपदी, तुदादिगण।
6. प्रच्छ् प्रच्छ-ज्ञीप्सायाम् (पूछना, जानने की इच्छा करना) सकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, तुदादिगण।



7.	वद्	वद- व्यक्तायां वाचि (कहना, स्पष्ट बोलना) सकर्मक, सेट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
8.	भू	भू-सत्तायाम् (होना) अकर्मक, अनिट्, परस्मैपदी, भ्वादिगण।
9.	अस्	अस भुवि (होना, रहना) अकर्मक, सेट्, परस्मैपदी अदादिगण।
10.	हन्	हन हिंसागत्योः (मार डालना, जाना) सकर्मक, अनिट्, सेट्, परस्मैपदी अदादिगण।
11.	कथ्	कथ-वाक्यप्रबन्धे (कहना, व्याख्यान करना) सकर्मक, सेट्, उभयपदी, चुरादिगण।
12.	दा	डुदाञ् दाने, (देना, सौंपना) सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, जुहोत्यादिगण।
13.	ज्ञा	ज्ञा अवबोधने (जानना, समझना) सकर्मक, अनिट्, उभयपदी, क्रयादिगण।
14.	कृ	डुकृञ् करणे (करना) सकर्मक, सेट्, उभयपदी, तनादिगण।
15.	लभ	डुलभष् प्राप्तौ (प्राप्त होना, मिलना) सकर्मक, अनिट्, आत्मनेपदी भ्वादिगण।

## संख्याशब्दरूप 'एक'

	प्रथमा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
पुं०	एकः	एकम्	एकेन	एकस्मै	एकस्मात्	एकस्य	एकस्मिन्
नपुं०	एकम्	एकम्	एकेन	एकस्मै	एकस्मात्	एकस्य	एकस्मिन्
स्त्री०	एका	एकाम्	एकया	एकस्यै	एकस्याः	एकस्याः	एकस्याम्

नोट- केवल 'एक' शब्द के एकवचन में रूप चलते हैं।

## द्वि (दो)

पुं०	द्वौ	द्वौ	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वयोः	द्वयोः
नपुं०	द्वे	द्वे	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वयोः	द्वयोः
स्त्री०	द्वे	द्वे	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वयोः	द्वयोः

नोट- 'द्वि' शब्द के केवल द्विवचन में रूप चलेंगे।

## त्रि (तीन)

पुं०	त्रयः	त्रीन्	त्रिभिः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रयाणाम्	त्रिषु
नपुं०	त्रीणि	त्रीणि	त्रिभिः	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	त्रयाणाम्	त्रिषु
स्त्री०	तिस्रः	तिस्रः	तिसृभिः	तिसृभ्यः	तिसृभ्यः	तिसृणाम्	तिसृषु

नोट- 3 से 18 तक की संख्याओं के रूप बहुवचन में ही चलते हैं।

## चतुर् (चार)

पुं०	चत्वारः	चतुरः	चतुर्भिः	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्णाम्	चतुर्षु
नपुं०	चत्वारि	चत्वारि	चतुर्भिः	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतुर्णाम्	चतुर्षु
स्त्री०	चतस्रः	चतस्रः	चतसृभिः	चतसृभ्यः	चतसृभ्यः	चतसृणाम्	चतसृषु

## पञ्चन् (पाँच) तीनों लिङ्गों में

पञ्च	पञ्च	पञ्चभिः	पञ्चभ्यः	पञ्चभ्यः	पञ्चानाम्	पञ्चसु
------	------	---------	----------	----------	-----------	--------

## षष् (छह) तीनों लिङ्गों में

षट्	षट्	षड्भिः	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षण्णाम्	षट्सु
-----	-----	--------	---------	---------	---------	-------

## सप्तन् (सात) तीनों लिङ्गों में

सप्त	सप्त	सप्तभिः	सप्तभ्यः	सप्तभ्यः	सप्तानाम्	सप्तसु
------	------	---------	----------	----------	-----------	--------

## अष्टन् (आठ) तीनों लिङ्गों में

अष्ट	अष्ट	अष्टभिः	अष्टभ्यः	अष्टभ्यः	अष्टानाम्	अष्टसु
अष्टौ	अष्टौ	अष्टाभिः	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः	अष्टानाम्	अष्टासु

## नवन् (नौ) तीनों लिङ्गों में

नव	नव	नवभिः	नवभ्यः	नवभ्यः	नवानाम्	नवसु
----	----	-------	--------	--------	---------	------

## दशन् (दस) तीनों लिङ्गों में

दश	दश	दशभिः	दशभ्यः	दशभ्यः	दशानाम्	दशसु
----	----	-------	--------	--------	---------	------

## संस्कृतसंख्यायें

1 एकः, एकम्, एका	41 एकचत्वारिंशत्	81 एकाशीतिः
2 द्वौ, द्वे, द्वे	42 द्विचत्वारिंशत्, द्वाचत्वारिंशत्	82 द्व्यशीतिः
3 त्रयः, त्रीणि, तिस्रः	43 त्रिचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्	83 त्र्यशीतिः
4 चत्वारः, चत्वारि, चतस्रः	44 चतुश्चत्वारिंशत्	84 चतुरशीतिः
5 पञ्च	45 पञ्चचत्वारिंशत्	85 पञ्चाशीतिः
6 षट्	46 षट्चत्वारिंशत्	86 षडशीतिः
7 सप्त	47 सप्तचत्वारिंशत्	87 सप्ताशीतिः
8 अष्ट/अष्टौ	48 अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्	88 अष्टाशीतिः
9 नव	49 नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्	89 नवाशीतिः, एकोननवतिः
10 दश	50 पञ्चाशत्	90 नवतिः
11 एकादश	51 एकपञ्चाशत्	91 एकनवतिः
12 द्वादश	52 द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्	92 द्विनवतिः, द्वानवतिः
13 त्रयोदश	53 त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्	93 त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
14 चतुर्दश	54 चतुःपञ्चाशत्	94 चतुर्नवतिः
15 पञ्चदश	55 पञ्चपञ्चाशत्	95 पञ्चनवतिः
16 षोडश	56 षट्पञ्चाशत्	96 षण्णवतिः
17 सप्तदश	57 सप्तपञ्चाशत्	97 सप्तनवतिः
18 अष्टादश	58 अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्	98 अष्टनवतिः, अष्टानवतिः
19 नवदश	59 नवपञ्चाशत्, एकोनषष्टिः	99 नवनवतिः, एकोनशतम्
20 विंशतिः	60 षष्टिः	100. शतम्
21 एकविंशतिः	61 एकषष्टिः	एक हजार - सहस्रम्
22 द्वाविंशतिः	62 द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः	दस हजार - अयुतम् (दशसहस्रम्)
23 त्रयोविंशतिः	63 त्रिषष्टिः, त्रयःषष्टिः	एक लाख - लक्षम्
24 चतुर्विंशतिः	64 चतुःषष्टिः	दस लाख - नियुतम्, प्रयुतम्, दशलक्षम्
25 पञ्चविंशतिः	65 पञ्चषष्टिः	एक करोड़ - कोटिः
26 षड्विंशतिः	66 षट्षष्टिः	दस करोड़ - दशकोटिः
27 सप्तविंशतिः	67 सप्तषष्टिः	एक अरब - अर्बुदम्
28 अष्टाविंशतिः	68 अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः	दस अरब - दशार्बुदम्
29 नवविंशतिः	69 नवषष्टिः, एकोनसप्ततिः	एक खरब - खर्वम्
30 त्रिंशत्	70 सप्ततिः	दस खरब - दशखर्वम्
31 एकत्रिंशत्	71 एकसप्ततिः	एक नील - नीलम्
32 द्वात्रिंशत्	72 द्विसप्ततिः, द्वासप्ततिः	दस नील - दशनीलम्
33 त्रयस्त्रिंशत्	73 त्रिसप्ततिः, त्रयःसप्ततिः	एक पद्म - पद्मम्
34 चतुस्त्रिंशत्	74 चतुःसप्ततिः	दस पद्म - दशपद्मम्
35 पञ्चत्रिंशत्	75 पञ्चसप्ततिः	एक शंख - शंखम्
36 षट्त्रिंशत्	76 षट्सप्ततिः	दस शंख - दशशंखम्
37 सप्तत्रिंशत्	77 सप्तसप्ततिः	महाशंख - महाशंखम्
38 अष्टात्रिंशत्	78 अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः	
39 नवत्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्	79 नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः	
40 चत्वारिंशत्	80 अशीतिः	

### संख्या सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

➤ 101 =	एकाधिकं शतम्	➤ त्रि (3) से लेकर अष्टादशन् (18) तक सभी शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं।
102 =	द्वयधिकं शतम्	➤ “विंशत्यादिरानवतेः” एकोनविंशतिः (19) से नवनवतिः (99) तक सभी शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं। इनके रूप हमेशा एकवचन में ही चलेंगे।
103 =	त्र्यधिकं शतम्	➤ इकारान्त विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति – जिन पदों के अन्त में ये पद आयें उनके रूप ‘मति’ के समान चलेंगे।
104 =	चतुरधिकं शतम्	➤ तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् आदि शब्दों के रूप ‘सरित्’ के समान चलेंगे।
105 =	पञ्चाधिकं शतम् आदि।	➤ शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम्, आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसकलिङ्ग में होते हैं। इनके रूप ‘फल’ की तरह चलेंगे।
➤ 200 =	द्विशती/शतद्वयम्/द्विशतम्	
300 =	त्रिशती/शतत्रयम् / त्रिशतम्	
400 =	चतुःशती / चतुरशतम्	
500 =	पञ्चशती / पञ्चशतम्	
600 =	षट्शती / षट्शतम्	
700 =	सप्तशती / सप्तशतम्।	

YouTube पर संस्कृतगंगा चैनल को देखें।

**UP-TET**  
( संस्कृत )



**M.P. वर्ग 1-2**  
( संस्कृत )

## संस्कृत कवियों एवं लेखकों की रचनायें

महाकाव्य			
1. रामायण (7 काण्ड)	- महर्षि वाल्मीकि	3. काव्यादर्श (3 परिच्छेद)	- दण्डी
2. महाभारत (18 पर्व)	- वेदव्यास	4. ध्वन्यालोक (4 उद्योत)	- आनन्दवर्धन
3. कुमारसम्भवम् (17 सर्ग)	- कालिदास	5. काव्यमीमांसा	- राजशेखर
4. रघुवंशम् (19 सर्ग)	- कालिदास	6. दशरूपक (4 प्रकाश)	- धनञ्जय और धनिक
5. बुद्धचरितम् (28 सर्ग)	- अश्वघोष	7. वक्रोक्तिजीवितम्	- कुन्तक
6. सौन्दरनन्द (18 सर्ग)	- अश्वघोष	8. व्यक्तिविवेक (3 विमर्श)	- महिमभट्ट
7. किरातार्जुनीयम् (18 सर्ग)	- भारवि	9. सरस्वतीकण्ठाभरण	- भोजराज
8. शिशुपालवधम् (20 सर्ग)	- माघ	10. शृङ्गारप्रकाश (36 प्रकाश)	- भोजराज
9. नैषधीयचरितम् (22 सर्ग)	- श्रीहर्ष	11. औचित्यविचारचर्चा	- क्षेमेन्द्र
10. जानकीहरणम्	- कुमारदास	12. कविकण्ठाभरण	- क्षेमेन्द्र
11. हरविजयम् (50 सर्ग)	- रत्नाकर	13. काव्यप्रकाश (10 उल्लास)	- मम्मट
12. धर्मशर्माभ्युदय	- हरिश्चन्द्र	14. काव्यानुशासन	- हेमचन्द्र
13. राघवपाण्डवीयम्	- कविराज (माधवभट्ट)	15. नाट्यदर्पण	- रामचन्द्र/गुणचन्द्र
14. जाम्बवती-विजयम्	- पाणिनि	16. भावप्रकाशन	- शारदातनय
	(पाताल-विजयम्)	17. चन्द्रालोक (10 मयूख)	- जयदेव
15. स्वर्गरोहणम्	- कात्यायन (वररुचि)	18. साहित्यदर्पण (10 परिच्छेद)	- विश्वनाथ
16. महानन्दकाव्य	- पतञ्जलि	19. कुवलयानन्द	- अप्पयदीक्षित
17. प्रयागप्रशस्ति	- हरिषेण	20. रसगंगाधर (4 आनन)	- पण्डितराज जगन्नाथ
18. सेतुबन्ध	- प्रवरसेन	<b>नाट्यग्रन्थ</b>	
19. हयग्रीववध	- भर्तृमेष्ठ		
20. गडडवहो	- वाक्पति	1. प्रतिज्ञायौगन्धरायण (4 अङ्क)	- भास
21. रामचरित	- अभिनन्द	2. स्वप्नवासवदत्तम् (6 अङ्क)	- भास
22. नवसाहसार्ङ्गचरित	- पद्मगुप्त	3. प्रतिमानाटकम् (7 अङ्क)	- भास
23. रघुनाथचरित	- वामनभट्टबाण	4. अभिषेकनाटकम् (6 अङ्क)	- भास
24. सेतुकाव्य	- मातृगुप्त	5. अविमारकम् (6 अङ्क)	- भास
25. कादम्बरीसार	- अभिनन्द	6. बालचरितम् (5 अङ्क)	- भास
26. रामायणमञ्जरी	- क्षेमेन्द्र	7. चारुदत्तम् (4 अङ्क)	- भास
27. भारतमञ्जरी	- क्षेमेन्द्र	8. पञ्चरात्रम् (3 अङ्क)	- भास
28. विक्रमाङ्कदेवचरित	- बिल्हण	9. दूतवाक्यम् (एकाङ्की)	- भास
29. श्रीकण्ठचरितम्	- मंखक	10. कर्णभारम् (एकाङ्की)	- भास
30. राजतरङ्गिणी (8 तरंग)	- कल्हण	11. ऊरुभङ्गम् (एकाङ्की)	- भास
<b>काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ</b>		12. दूतघटोत्कचम् (एकाङ्की)	- भास
		13. मध्यमव्यायोगः (एकाङ्की)	- भास
1. नाट्यशास्त्र (36 अध्याय)	- आचार्य भरत	14. मृच्छकटिकम् (10 अङ्क)	- शूद्रक
2. काव्यालङ्कार	- भामह	15. मालविकाग्निमित्रम् (5 अङ्क)	- कालिदास
		16. विक्रमोर्वशीयम् (5 अङ्क)	- कालिदास

17. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7 अङ्क)	- कालिदास
18. मुद्राराक्षसम् (7 अङ्क)	- विशाखदत्त
19. प्रियदर्शिका (नाटिका) (4 अङ्क)	- हर्षवर्धन
20. रत्नावली (नाटिका) (4 अङ्क)	- हर्षवर्धन
21. नागानन्द (5 अङ्क)	- हर्षवर्धन
22. वेणीसंहारम् (6 अङ्क)	- भट्टनारायण
23. मालतीमाधवम् (10 अङ्क)	- भवभूति
24. महावीरचरितम् (7 अङ्क)	- भवभूति
25. उत्तररामचरितम् (7 अङ्क)	- भवभूति
26. शारिपुत्रप्रकरण (9 अङ्क)	- अश्वघोष
27. कर्पूरमञ्जरी (सट्टक) (4 अङ्क)	- राजशेखर
28. बालरामायण (10 अङ्क)	- राजशेखर
29. कुन्दमाला (6 अङ्क)	- दिङ्नाग
30. प्रसन्नराघव (7 अङ्क)	- जयदेव
31. प्रबोधचन्द्रोदय (6 अङ्क)	- कृष्णमिश्र
32. हनुमन्नाटक	- दामोदरमिश्र
33. सामवतम्	- अम्बिकादत्त व्यास
34. पार्वतीपरिणय	- बाणभट्ट
35. मुकुटताडितक	- बाणभट्ट

## गद्यकाव्य

1. दशकुमारचरितम्	- दण्डी
2. अवन्तिसुन्दरी कथा	- दण्डी
3. वासवदत्ता (कथा)	- सुबन्धु
4. कादम्बरी (कथा)	- बाणभट्ट
5. हर्षचरितम् (आख्यायिका)	- बाणभट्ट
6. मन्दारमञ्जरी	- विश्वेश्वर पाण्डेय
7. शिवराजविजय (ऐतिहासिक उपन्यास)	- अम्बिकादत्त व्यास
8. कथामुक्तावलि:	- पण्डिता क्षमाराव
9. ग्रामज्योति:	- पण्डिता क्षमाराव
10. तिलकमञ्जरी	- धनपाल
11. वेमभूपालचरितम्	- वामनभट्ट बाण

## गीतिकाव्य/खण्डकाव्य

1. ऋतुसंहारम्	- कालिदास
2. मेघदूतम्	- कालिदास
3. नीतिशतकम्	- भर्तृहरि
4. शृङ्गारशतकम्	- भर्तृहरि
5. वैराग्यशतकम्	- भर्तृहरि
6. अमरुशतकम्	- अमरुक

7. गीतगोविन्दम्	- जयदेव
8. गङ्गालहरी	- पण्डित जगन्नाथ
9. सुधालहरी	- पण्डित जगन्नाथ
10. आसफ विलास	- पण्डित जगन्नाथ
11. जगदाभरण	- पण्डित जगन्नाथ
12. भामिनी विलास	- पण्डित जगन्नाथ
13. गाथासप्तशती	- हाल
14. चौरपञ्चाशिका	- बिल्हण
15. आर्यासप्तशती	- गोवर्धनाचार्य
16. चण्डीशतकम्	- बाणभट्ट
17. सूर्यशतकम्	- मयूरभट्ट
18. कुट्टिनीमतम्	- दामोदरगुप्त
19. पवनदूत	- धोयी
20. हंसदूत	- रूपगोस्वामी

## स्तोत्रकाव्य

1. शिवताण्डवस्तोत्रम्	- रावण
2. सौन्दर्यलहरी	- शङ्कराचार्य
3. आनन्दलहरी	- शङ्कराचार्य
4. शिवमहिम्नस्तोत्रम्	- पुष्पदन्त
5. गङ्गास्तव	- जयदेव

## सुभाषितग्रन्थ

1. सद्गुणिकर्णामृतम्	- श्रीधरदास
2. सूक्तिमुक्तावली	- सिद्धचन्द्रमणि
3. सूक्तिरत्नाकर	- सिद्धचन्द्रमणि
4. सुभाषित सुधानिधि	- सायण
5. सुभाषित रत्नभाण्डागार	- शिवदत्त एवं नारायण राम आचार्य

## कथासाहित्य

1. पञ्चतन्त्र	- विष्णुशर्मा
2. हितोपदेश	- नारायणपण्डित
3. बृहत्कथा	- गुणाढ्य
4. बृहत्कथामञ्जरी	- क्षेमेन्द्र
5. कथासरित्सागर	- सोमदेव
6. पुरुषपरीक्षा	- विद्यापति
7. भोजप्रबन्ध	- बल्लाल सेन
8. जातकमाला	- आर्यसूर
9. उदयसुन्दरी कथा	- सोड्डल

चम्पूकाव्य			
1. नलचम्पू (दमयन्तीकथा)	-	त्रिविक्रमभट्ट	
2. मदालसाचम्पू	-	त्रिविक्रमभट्ट	
3. जीवन्धरचम्पू	-	हरिश्चन्द्र	
4. रामायणचम्पू	-	भोजराज	
5. भारतचम्पू	-	अनन्तभट्ट	
दर्शनग्रन्थ			
1. सांख्यसूत्र	-	कपिल	
2. मीमांसासूत्र	-	जैमिनि	
3. वैशेषिकसूत्र	-	कणाद	
4. ब्रह्मसूत्र	-	बादरायण	
5. योगसूत्र	-	पतञ्जलि	
6. न्यायसूत्रभाष्य	-	वात्स्यायन	
7. सांख्यकारिका	-	ईश्वरकृष्ण	
8. भामतीटीका, तत्त्वकौमुदी	-	वाचस्पति मिश्र	
9. वेदान्तसार	-	सदानन्द	
11. तर्कभाषा	-	केशवमिश्र	
12. तत्त्वचिन्तामणि	-	गङ्गेशोपाध्याय	
अन्य महत्त्वपूर्णग्रन्थ			
1. वेदाङ्गज्योतिष	-	आचार्य लगध	
2. निरुक्त	-	यास्क	
3. छन्दःसूत्रम्	-	आचार्य पिङ्गल	
4. चरक संहिता	-	चरक	
5. सुश्रुत संहिता	-	सुश्रुत	
6. अर्थशास्त्र	-	कौटिल्य	
7. मनुस्मृति	-	मनु	
8. नामलिङ्गानुशासनम् (अमरकोश)	-	अमर सिंह	
9. कामसूत्रम्	-	वात्स्यायन	
10. रावणवध/भट्टिकाव्य	-	भट्टि	
11. छन्दोमञ्जरी	-	गङ्गादास	
12. लीलावती, बीजगणित	-	भास्कराचार्य	
13. अणुभाष्यम्	-	वल्लभाचार्य	
14. ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य	-	शङ्कराचार्य	
व्याकरणग्रन्थ			
1. अष्टाध्यायी	-	पाणिनि	
2. महाभाष्यम्	-	पतञ्जलि	
3. सिद्धान्तकौमुदी	-	भट्टोजिदीक्षित	
4. प्रौढमनोरमा	-	भट्टोजिदीक्षित	
5. लिङ्गानुशासनम्	-	व्याडि	
6. वाक्यपदीयम्	-	भर्तृहरि	
7. मनोरमाकुचमर्दनम्	-	पण्डितराज जगन्नाथ	
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी	-	वरदराज	
9. मध्यसिद्धान्तकौमुदी	-	वरदराज	
10. सारसिद्धान्तकौमुदी	-	वरदराज	
11. शब्देन्दुशेखर	-	नागेशभट्ट	
12. परिभाषेन्दुशेखर	-	नागेशभट्ट	
13. काशिकावृत्तिः	-	जयादित्य एवं वामन	
14. वैयाकरणभूषणसार	-	कौण्डभट्ट	
15. कातन्त्रव्याकरण	-	शर्ववर्मा	
16. रूपमाला	-	विमलसरस्वती	
17. शब्दानुशासनम्	-	हेमचन्द्र	
18. चान्द्रव्याकरणम्	-	चन्द्रगोमी	

**UP-TET और M.P. वर्ग 1-2 ( संस्कृत ) हेतु**  
**YouTube पर संस्कृतगंगा चैनल को देखें।**

## सूक्तियाँ

### 1. अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः

(वाल्मीकि रामायण 6.16.21)

अर्थ- अप्रिय किन्तु परिणाम में हितकर हो ऐसी बात कहने और सुनने वाले दुर्लभ होते हैं।

### 2. अप्रार्थितानुकूलः मन्मथः प्रकटीकरिष्यति।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- बिना प्रार्थना किये ही मेरे प्रति अनुकूल हो जाने वाला कामदेव शीघ्र ही उसे प्रकट कर देगा। ऐसा कादम्बरी के अनुराग के कारणों के विषय में चन्द्रापीड कहता है।

### 3. अनाथपरिपालनं हि धर्मः अस्मद्विधानाम्।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- पिंजड़े में स्थित वैशम्पायन तोते ने शूद्रक को बताया कि मुनिकुमार हारीत मुझे जाबालि के आश्रम में ले गया और आश्रम के मुनियों के पूँछने पर मेरे विषय में इसप्रकार बताया- 'हमारे जैसे लोगों का धर्म ही अनाथों (शुक) का पालन करना है।'

### 4. अपुत्राणां न सन्ति लोकाशुभाः।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- जिन दम्पतियों को पुत्र की प्राप्ति नहीं होती है उन्हें लोक शुभ नहीं होते।

### 5. अतिगर्हितेन अकृत्येनापि रक्षणीयान् सुहृदसून् मन्यते साधवः।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- साधु प्रकृति के लोग अत्यन्त निन्दनीय बुरे कर्मों के द्वारा भी मित्र के प्राणों की रक्षा करना उचित मानते हैं।

### 6. अशेषजनपूजनीया चेयं जातिः तस्मै प्रणामम् अकरवम्।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- महाश्वेता चन्द्रापीड से कहती है- ऋषि-मुनियों की जाति सभी के लिए पूजनीय होती है, इसलिए मैंने मुनिकुमार पुण्डरीक को प्रणाम किया।

### 7. अशान्तस्य कुतः सुखम्। (श्रीमद्भगवद्गीता- 2/26)

अर्थ- अशान्त (शान्ति रहित) व्यक्ति को सुख कैसे मिल सकता है?

### 8. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

(नीतिशतकम्)

अर्थ- आलस्य मनुष्य के शरीर में रहने वाला उसी का घोर शत्रु है।

### 9. अस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः।

(अभि0 शाकुन्तलम्)

अर्थ- कण्व कहते हैं- अब मैं इस वनज्योत्स्ना और तुम्हारे विषय में निश्चिन्त हो गया हूँ।

### 10. अनुमतगमनाशकुन्तला तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।

(अभि0 शाकुन्तलम्-4/10)

अर्थ- कण्व कहते हैं वृक्षों ने इस शकुन्तला को पतिगृह जाने की अनुमति दे दी है।

### 11. अवेहि तनयां ब्रह्मन्निगर्भा शमीमिव।

(अभि0 शाकुन्तलम्)

अर्थ- महर्षि कण्व को आकाशवाणी से शकुन्तला विषयक ज्ञान हुआ ऐसा प्रियंवदा ने अनसूया से बताया है ब्रह्मन् पृथ्वी के कल्याण हेतु दुष्यन्त द्वारा स्थापित वीर्य को धारण करती हुई 'पुत्री शकुन्तला को तुम अग्निधारण करने वाले शमी वृक्ष की भाँति समझो।'

### 12. अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः। (अभि0 शाकुन्तलम् अङ्क 4)

अर्थ- दोनों सखियाँ शकुन्तला को आभूषण धारण कराते हुए कहती हैं 'हम दोनों आभूषणों के उपयोग से अनभिज्ञ हैं' अतः चित्रावली को देखकर आभूषण पहनाती हैं।

### 13. आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः

प्रसाधनैर्विप्रकार्यते। (अभि0 शाकुन्तलम् अङ्क 4)

अर्थ- प्रियंवदा कहती है- आभूषण के योग्य रूप आश्रम में प्राप्त अलंकारों से विकृत किया जा रहा है।

### 14. आत्मकृतनां हि दोषाणां नियतम् अनुभवितव्यं फलम्

आत्मनैव (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- अपने किये गये दोषों का फल निश्चय ही स्वयं को भोगना पड़ता है।

### 15. 'अतिथिदेवो भव' (तैत्तिरीयोपनिषद् 1/11/2)

अर्थ- अतिथि देव स्वरूप होता है।

### 16. 'अतिस्नेहः पापशंकी।' (अभि0 शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- अत्यधिक प्रेम पाप की आशंका उत्पन्न करता है।

### 17. 'अत्यादरः शंकनीयः।' (मुद्राराक्षस अङ्क-1)

अर्थ- अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।

### 18. 'अनार्यः परदारव्यवहारः।' (अभि0 शाकुन्तलम् अङ्क-7)

अर्थ- परस्त्री के विषय में बात करना अशिष्टता है।



19. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव।' (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- कन्या वस्तुतः पराई वस्तु है।

20. अनुलङ्घनीयः सदाचारः (वेणीसंहार-अङ्क-5)

अर्थ- सदाचार का उल्लङ्घन नहीं करना चाहिए।

21. 'अनतिक्रमणीयो हि विधिः।' (स्वप्नवासवदत्तम् )

अर्थ- भाग्य का उल्लङ्घन नहीं किया जा सकता।

22. 'अहिंसा परमो धर्मः।' (महाभारत-अनुशासनपर्व)

अर्थ- अहिंसा परम धर्म है।

23. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।' (किरातार्जुनीयम् 1/23)

अर्थ- बलवान् के साथ किया गया वैर-विरोध होना अनिष्ट अन्त है।

24. 'आचारः परमो धर्मः।' (मनुस्मृति 01/108)

अर्थ- आचार ही परम धर्म है।

25. आज्ञा गुरुणामविचारणीया। (रघुवंशम् 14/46)

अर्थ- बड़ों की आज्ञा विचारणीय नहीं होती।

26. आचारपूतं पवनः सिषेवे। (रघुवंशम् 02/13)

अर्थ- आचारों से पवित्र राजा दिलीप की सेवा में झरनों के कणों से सिञ्चित हवायें संलग्न थीं।

27. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषधीयचरितम्)

अर्थ- कुटिल जनों के प्रति सरलता नीति नहीं होती।

28. अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्। (रघुवंशम् 02/47)

अर्थ- थोड़ी सी वस्तु के लिए शरीर का त्याग करने वाले राजा दिलीप मुझे मूढबुद्धि वाले प्रतीत हो रहे हैं ऐसा सिंह कुम्भोदर ने कहा।

29. अवेहि मां कामदुधां प्रसन्नाम्। (रघुवंशम् 02/63)

अर्थ- नन्दिनी गाय राजा से बोली- मैं प्रसन्न हूँ वरदान माँगो! मुझे केवल दूध देने वाली गाय न समझो बल्कि प्रसन्न होने पर मुझे अभिलाषाओं को पूरी करने वाली समझो।

30. अनतिक्रमणीया नियतिरिति। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- नियति अतिक्रमणीय होती है अर्थात् होनी नहीं टाला जा सकता।

31. अहो मे मन्दपुण्यस्य दारुणः कर्मणां विपाकः।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- संसार में प्रत्येक प्राणी को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। यह निश्चय ही मेरे दुष्कृत्यों का परिणाम है जो मुझे चाण्डाल युवक के हाथों जाना पड़ रहा है यह शुक-शिशु कहता है।

32. अकारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- केयूरक महाश्वेता का सन्देश चन्द्रापीड को देते हुए कहता है कि आपके प्रति मेरा स्नेह स्वार्थ रहित है फिर भी आपसे मिलने की उत्कण्ठा हो रही है।

33. अनाराधित प्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवत ते वरः

दत्तः। (चन्द्रापीडकथा/कादम्बरी)

अर्थ- कामपीडित कादम्बरी जब अपनी दयनीय दशा के लिए चन्द्रापीड को दोष देती है तो पत्रलेखा उसे समझाती है- कि कामदेव के दोषों के लिए राजकुमार को दोष देना उचित नहीं है। यह तो तुम्हारे ऊपर कामदेव की स्वतः प्रसन्नता का लक्षण है।

34. अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- कादम्बरी पत्रलेखा के सौन्दर्य को देखकर कहती है कि ब्रह्मा ने पत्रलेखा के प्रति पक्षपात किया है और उसे गन्धर्वों से भी अधिक सौन्दर्य प्रदान किया है।

35. अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।

(अभि0शाकुन्तलम् 4/12)

अर्थ- शकुन्तला के पतिगृह गमन के समय आश्रम में पशु-पक्षी और तरु लतायें भी वियोग पीड़ित हैं। लताओं से पीले पत्ते टूट कर गिर रहे हैं मानो वे आँसू बहा रहे हैं।

36. अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि।

(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क 04)

अर्थ- शकुन्तला वनज्योत्स्ना के पास जाकर तथा लता का आलिङ्गन करती हुई कहती है कि - आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी। मैं पतिगृह के लिए विदा हो रही हूँ। (मेरा पुनरागमन कब होगा, इसे मैं नहीं जानती हूँ।)

37. असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय।

(बृहदारण्यक - 1.3.28)

अर्थ- मुझे असत् से सत् की ओर ले जायें, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जायें।

38. आलाने गृह्यते हस्ती वाजी वल्गासु गृह्यते।

हृदये गृह्यते नारी यदीदं नास्ति गम्यताम्॥

(मृच्छकटिकम् 01/50)

अर्थ- हाथी खम्भे से रोका जाता है। घोड़ा लगाम से रोका जाता है, स्त्री हृदय से प्रेम करने से ही वश में की जाती है यदि ऐसा नहीं है तो सीधे अपनी राह नापिये।

39. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्र सुदुःसानि।

(अभि0शाकुन्तलम्-4/3)

अर्थ- कण्व का शिष्य कहता है वस्तुतः स्त्रियों को अपने इष्ट व्यक्ति के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य होते हैं।

40. “ईशावास्यमिदं सर्वम्” (ईशावास्योपनिषद्-मन्त्र1)

अर्थ- सम्पूर्ण जगत् के कण-कण में ईश्वर व्याप्त है।

41. उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत (कठोपनिषद्)

अर्थ- हे मनुष्य! उठो, जागो और श्रेष्ठ महापुरुषों को पाकर उनके द्वारा परब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

42. उत्सवप्रियाः खलुः मनुष्याः (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-6)

अर्थ- मनुष्य उत्सव प्रिय होते हैं।

43. उपस्थिता शोणितपारणा मे सुरद्विषश्चान्द्रमसी

सुधेव।

(रघुवंश-2/39)

अर्थ- सिंह दिलीप से कहता है कि यह गाय मेरी रक्तमयी पारणा है, उपवासोपरान्त का भोजन है वह मुझे भूख मिटाने के लिए उसी प्रकार पर्याप्त है, जिस प्रकार राहु के लिए चन्द्रमा का अमृत।

44. उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलम्।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- चन्द्रापीड मदलेखा से कहता है- तुम अपना मन्तव्य स्वीकार करने की कला जानती हो। तुमने उत्तर का अवसर दिये बिना ही अपनी वाणी की कुशलता प्रकट कर दी है।

45. एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्। (उत्तररामचरितम्)

अर्थ- एक करुण रस ही कारण भेद से भिन्न होकर अलग-अलग परिणामों को प्राप्त होता है।

46. एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्द्रोः

किरणेष्विवाङ्कः।

(कुमारसम्भवम् -01/03)

अर्थ- अनेक गुणों के होने पर एक दोष चन्द्रमा की किरणों में कलंक के समान छिप जाता है।

47. ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः। (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- शार्ङ्गरव कहता है- भगवन्! प्रिय व्यक्ति का जल के किनारे तक अनुगमन करना चाहिए, ऐसी श्रुति है।

48. ऋद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः। (रघुवंशम् सर्ग 2/50)

अर्थ- समृद्धशाली राज्य इन्द्र के पद स्वर्ग के समान होता है।

49. को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।

(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- प्रियंवदा कहती है नवमालिका को गर्म जल से कौन सींचना चाहेगा।

50. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति। (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- अनसूया कहती है अग्नि के सिवाय कौन जला सकता है? यहाँ अग्नि से अभिप्राय ‘दुर्वासा’ से है।

51. काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः।

(रघुवंशम् 12/69)

अर्थ- समय पर आरम्भ की गयी नीतियाँ सफल होती हैं।

52. कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले। (स्वप्नवासवदत्तम्)

अर्थ- मृत्यु समीप आ जाने पर कौन किसकी रक्षा कर सकता है।

53. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्

(अभि0शाकुन्तलम् 1/20)

अर्थ- सुन्दर आकृतियों के लिए क्या वस्तु अलंकार नहीं होती है।

54. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

(ईशावास्योपनिषद् मन्त्र-2)

अर्थ- शास्त्र नियत कर्तव्य कर्मों का आचरण करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।

55. क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति तदेवरूपं

रमणीयतायाः।

(शिशुपालवधम् 4/17)

अर्थ- जो प्रत्येक क्षण नवीनता को धारण करता है वही रमणीयता का स्वरूप है।

56. कर्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः॥

(स्वप्नवासवदत्तम् 4/9)

अर्थ- संसार में सत्कार करने वाले लोग बहुत मिल जाते हैं लेकिन उसके वास्तविक ज्ञाता बहुत कम मिलते हैं।

57. क्षणत्यागे कुतो विद्या कणत्यागे कुतो धनम्।

अर्थ- क्षण त्यागने से विद्या कहाँ और कण त्यागने से धन कहाँ।

58. क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।

(रघुवंशम् 2/53)

अर्थ- महर्षि वशिष्ठ के प्रभाव से मेरे ऊपर यमराज भी आक्रमण करने में समर्थ नहीं है तो सांसारिक हिंसक पशुओं का तो कहना ही क्या?

59. गरीयसी गुरोः आज्ञा।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- गुरुजनों (बड़ों) की आज्ञा महान् होती है अतः प्रत्येक मनुष्य को उसका पालन करना चाहिए।

60. गुर्वपि विरह दुःखमाशाबन्धः साहयति।

(अभि0शाकुन्तलम् 4/16)

अर्थ- अनसूया शकुन्तला से कहती है- आशा का बन्धन विरह के कठोर दुःख को भी सहन करा देता है।

61. गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया। (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- गुणवान् (सुयोग्य) व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए। यह माता-पिता का मुख्य विचार होता है।

62. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

अर्थ- सीता विषयक शोक से युक्त जनक तथा अरुन्धती की बातचीत-अरुन्धती का कथन- ‘गुणवानों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं, न कोई चिह्न विशेष, न आयु’

63. चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे।

(रघुवंशम्- 2/31)

अर्थ- चित्र में लिखे हुए बाण निकालने के उद्योग में लगे हुए की भाँति हो गया।

64. चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- आपके शत्रुओं की स्त्रियों के स्तनों का जोड़ा ऐसा लगता है, जैसे कोई तपस्वी भोजन का त्याग करके तप कर रहा हो।

65. चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः। (स्वप्नवासवदत्तम्)

अर्थ- समय के क्रम से बदलती हुई संसार में भाग्य पंक्ति पहिए के अरों की तरह चलती है।

66. चारित्र्येण विहीन आद्योपि च दुर्गतो भवति।

(मृच्छकटिकम् 1/43)

अर्थ- चरित्रहीन धनवान् भी दुर्दशा को प्राप्त होता है।

67. छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्। (रघुवंश-2/6)

अर्थ- राजा दिलीप ने नन्दिनी को छाया की भाँति अनुसरण किया।

68. छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्। (नीतिशतकम्)

अर्थ- छाया के समान दुर्जनों और सज्जनों की मित्रता होती है।

69. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अर्थ- माता-जन्मभूमि और स्वर्ग से भी बड़ी होती है।

70. जीवेम शरदः शतम्। (यजुर्वेद 36/24)

अर्थ- हम सौ वर्ष तक देखने वाले और जीवित रहने वाले हों।

71. तमसो मा ज्योतिर्गमय। (बृहदारण्यक 1.3.28)

अर्थ- अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमृत की ओर ले जायें।

72. तेजोद्वयस्य युगपदव्यसनोदयाभ्याम्।

लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु॥ (अभि0शाकुन्तलम्)

अर्थ- दो तेजों चन्द्रमा और सूर्य के एक साथ अस्त एवं उदित होने से अपनी दशाओं के परिवर्तित होने से मानों संसार को नियन्त्रित अर्थात् शिक्षित किया जा रहा है।

73. तीर्थोदकं च वह्निश्च नान्यतः शुद्धिमर्हतः।

(उत्तररामचरितम् 1/13)

अर्थ- तीर्थ जल और अग्नि से अन्य पदार्थ से शुद्धि के योग्य नहीं होते हैं।

74. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। (रघुवंशम् 11/1)

अर्थ- तेजस्वी पुरुषों की आयु नहीं देखी जाती है।

75. दुःखं न्यासस्य रक्षणम्। (स्वप्नवासवदत्तम् 1/10)

अर्थ- किसी के न्यास अर्थात् धरोहर की रक्षा करना दुःखपूर्ण (दुष्कर) है।

76. दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्?

(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- कष्ट सहन करने वाले तपस्वियों में से किससे प्रार्थना करें।

77. दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या। (रघुवंशम् 2/20)

अर्थ- वह नन्दिनी दिन और रात्रि के मध्य सन्ध्या के समान सुशोभित हुई।

78. दीर्घसूत्री विनश्यति। (महाभारत शान्तिपर्व 137/1)

अर्थ- प्रत्येक कार्य में अनावश्यक विलम्ब करने वाला नष्ट होता है।

79. दैवमविद्वांसः प्रमाणयन्ति। (मुद्राराक्षस अङ्क-3)

अर्थ- मूर्ख व्यक्ति भाग्य को ही प्रमाण मानते हैं।

80. धैर्यधना हि साधवः। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- सज्जन लोगों का धैर्य ही धन होता है।

81. धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावके एवाहुतिः

पतिता। (अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- सौभाग्य से धुएँ से व्याकुल दृष्टि वाले यजमान की भी आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ी।

82. न केवलानां पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुहां

प्रसन्नाम् (रघुवंशम् 2/63)

अर्थ- नन्दिनी राजा दिलीप से कहती है, वर माँगो, मैं केवल दूध देने वाली गाय मात्र नहीं हूँ बल्कि प्रसन्न होने पर अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली भी हूँ।

83. न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति

मारुतस्य। (रघुवंशम् -2/34)

अर्थ- सिंह ने राजा दिलीप से कहा- मुझ पर बाण चलाने का प्रयास व्यर्थ है, क्योंकि जो वायु का वेग वृक्षों को जड़ से उखाड़ने की शक्ति रखता है, वह पर्वत पर व्यर्थ हो जाता है।

84. न खलु धीमतां कश्चिद्विषयो नाम।

(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- शार्ङ्गरव कहता है- विद्वानों के लिए वस्तुतः कोई चीज अज्ञात नहीं होती है।

85. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।

(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

अर्थ- प्रियंवदा अनसूया से कहती है राजा दुष्यन्त की भाँति सुन्दर आकृति वाले लोग गुण विरोधी नहीं होते।

86. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। (कुमारसम्भवम् -5/16)

अर्थ- कम उम्र वाले व्यक्ति भी तप के कारण आदरणीय होते हैं।

87. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। (कठोपनिषद् 1/1/27)

अर्थ- मनुष्य कभी धन से तृप्त नहीं हो सकता।

88. न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।

(किरातार्जुनीयम् 1/2)

अर्थ- कल्याण चाहने वाले लोग झूठा प्रिय वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

89. न हि सर्वः सर्वं जानाति। (मुद्राराक्षस अङ्क-1)

अर्थ- सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।

90. नास्तिको वेदनिन्दकः। (मनुस्मृति 2/11)

अर्थ- वेदों की निन्दा करने वाला नास्तिक है।

91. नास्ति मातृसमो गुरुः। (महाभारत अनुशासनपर्व)

अर्थ- भीष्म कहते हैं- माता के समान कोई गुरु नहीं।

92. नास्ति विद्या समं चक्षुः। (महाभारत शान्तिपर्व)

अर्थ- संसार में ब्रह्मविद्या के समान कोई नेत्र नहीं है।

93. पयोधरीभूत चतुःसमुद्रां,

जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम। (रघुवंशम् -2/3)

अर्थ- राजा दिलीप ने समुद्र के समान चार थनों वाली नन्दिनी गाय की रक्षा इसप्रकार की जैसे चार थनों के समान चार समुद्रों वाली पृथ्वी ही गाय के रूप में हो।

94. प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा। (रघुवंशम् -2/53)

अर्थ- राजा दिलीप को जब लगा कि नन्दिनी को सिंह से नहीं छुड़ा पायेंगे तो उन्होंने कहा- तब तो मेरा क्षत्रियत्व ही नष्ट हो जायेगा क्योंकि क्षत्रियत्व से विपरीत वृत्ति वाले व्यक्ति का राज्य से या निन्दा युक्त मलिन प्राणों से क्या लाभ?

95. पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु। (रघुवंशम् -2/57)

अर्थ- विवेकी लोगों की आस्था नष्ट होने वाले इन भौतिक शरीरों से नहीं है, बल्कि यश रूपी शरीर की रक्षा करने में है।

96. प्रसादचिह्नानि पुरःफलानि। (रघुवंशम् 2/22)

अर्थ- पहले प्रसन्नतासूचक चिह्न दिखाई पड़ते हैं तदन्तर फल की प्राप्ति होती है।

97. परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- कादम्बरी चन्द्रापीड को अपना हृदय समर्पित करके कहती है- कुल कन्याओं की परम्परा रही है कि गुरुजनों की सहमति से ही वे योग्य वर का चुनाव करती हैं। मैंने यह परम्परा तोड़ दी है। यह लज्जा का विषय है।

98. पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः।

(अभि0शाकुन्तलम् 4/6)

अर्थ- काश्यप (कण्व) शकुन्तला की विदाई वेला में दुःखी होकर कहते हैं कि जब हम जैसे वनवासी तपस्वी भी अपनी पुत्री के वियोग में इस प्रकार दुःखी होते हैं तो गृहस्थ लोगों की बात ही क्या (वे तो और अधिक दुःखी होते होंगे।)

99. परोपकाराय सतां विभूतयः। (नीतिशतक)

अर्थ- सज्जनों की विभूति (ऐश्वर्य) परोपकार के लिए है।

100. प्रियं च नानृतं ब्रूयाद् एष धर्मः सनातनः।

अर्थ- प्रिय झूठ नहीं बोलना चाहिए यही सनातन धर्म है।

101. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते। (रघुवंशम् -3/62)

अर्थ- गुण ही सर्वत्र शत्रु-मित्रादिकों में पैर को स्थापित करते हैं।

102. पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।

(किरातार्जुनीयम् 1/41)

अर्थ- मनस्वी पुरुषों के लिए पराभव भी उत्सव के ही समान है।

103. प्रतिबद्धनाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः।

(रघुवंशम् 1/79)

अर्थ- वसिष्ठ कहते हैं- पूजनीय की पूजा का उल्लङ्घन कल्याण को रोकता है।

104. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः।

(मुद्राराक्षस/नीतिशतक 2/7)

अर्थ- नीच लोग विघ्नों के भय से कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते।

105. बलवता सह को विरोधः। (मृच्छकटिकम् 6/2)

अर्थ- बलशाली के साथ क्या विरोध?

106. बलवती हि भवितव्यता। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- होनहार बलवान् है, जो होना है वह होकर ही रहता है उसे टाला नहीं जा सकता।

107. बलवान् जननीस्नेहः। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- माता का स्नेह बलवान् होता है।

108. बहुभाषिणः न श्रद्दधाति लोकः।

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- अधिक बोलने वाले पर लोग श्रद्धा नहीं रखते।

109. भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधू-बन्धुभिः

(अभि0शाकुन्तलम् 4/17)

अर्थ- कण्व का कथन है- इसके आगे भाग्य के अधीन है, वह हम वधू के सम्बन्धियों को नहीं कहना चाहिये।

110. भोगीव मन्त्रोषधिरुद्धवीर्यः (रघुवंशम् 2/32)

अर्थ- हाथ के रुक जाने से बढ़े हुए क्रोध वाले, राजा दिलीप, मन्त्र और औषधि से बाँध दिया गया है पराक्रम जिसका, ऐसे साँप की भाँति समीप में (स्थित) अपराधी को नहीं स्पर्श करते हुए अपने तेज से भीतर जलने लगे।

111. मा गृधः कस्यस्विद् धनम् (ईशावास्योपनिषद्)

अर्थ- 'किसी के भी धन का लोभ मत करो।'

112. मा कश्चित् दुःखभागभवेत्

अर्थ- कोई दुःखी न हो।

113. मा ब्रूहि दीनं वचः (नीतिशतकम्)

अर्थ- दीन वचन मत बोलो।

114. मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्।

अर्थ- 'माता पिता की भली प्रकार से सेवा करनी चाहिये।'

115. मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति।

(अभिज्ञानशाकुन्तल 4/15)

**अर्थ-** काश्यप (कण्व) शकुन्तला से कहते हैं कि ऊँची-नीची भूमि को न देखने के कारण इस मार्ग में तेरे पैर वस्तुतः लड़खड़ा रहे हैं।

**116. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता (मनुस्मृति)**

**अर्थ-** मनु कहते हैं- जिस कुल में स्त्रियाँ सम्मानित होती हैं, उस कुल से देवगण प्रसन्न होते हैं।

**117. यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः**

(अभि0शाकुन्तलम् 4/18)

**अर्थ-** अच्छा आचरण करने वाली स्त्रियाँ गृहलक्ष्मी पद पर अधिष्ठित होती हैं और इसके विपरीत चलने वाली कुल के लिए अभिशाप होती है।

**118. योगः कर्मसु कौशलम् (गीता 2/50)**

**अर्थ-** समत्वरूप योग ही कर्मों में कुशलता है अर्थात् कर्मबन्धन से छूटने का उपाय है।

**119. रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी**

(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

**अर्थ-** अनसूया प्रियवंदा से कहती है- स्वभाव से ही कोमल प्रियसखी की रक्षा करनी चाहिए।

**120. रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय**

(मेघदूतम् 1/20)

**अर्थ-** वर्षा कर चुके खाली मेघ को यक्ष रेवा के जल की ग्रहण कर भारी होने को कहता है- 'क्योंकि सभी खाली (पदार्थ) हल्के होते हैं और भरा होना भारीपन का कारण होता है।'।

**121. लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु (अभि0शाकुन्तलम्)**

**अर्थ-** यह संसार दो तेजों के एक साथ अस्त और उदय के द्वारा मानों अपने दशा-विशेषों में नियन्त्रित हो रहा है।

**122. लोभः पापस्य कारणम्**

**अर्थ-** (लालच) लोभ पाप का कारण है।

**123. वचने का दरिद्रता**

**अर्थ-** बोलने में क्या दरिद्रता।

**124. वसुधैव कुटुम्बकम्**

**अर्थ-** सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है।

**125. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्**

(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

**अर्थ-** कण्व कहते हैं- 'वनवासी होते हुए भी हम लोग लौकिक व्यवहारों को जानने वाले हैं।'।

**126. वाग्भूषणं भूषणम्। (नीतिशतकम्)**

**अर्थ-** वाणी रूपी भूषण (अलङ्कार) ही सदा बना रहता है, कभी नष्ट नहीं होता।

**127. विद्याविहीनः पशुः (नीतिशतकम्)**

**अर्थ-** विद्याविहीन मनुष्य पशु के समान है।

**128. विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (नीतिशतकम्)**

**अर्थ-** मूर्खों का मौन रहना उनके लिए भूषण (अलङ्कार) है।

**129. वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येव अशोचनीया संवृता**  
(अभि0शाकुन्तलम् अङ्क-4)

**अर्थ-** कण्व शकुन्तला से कहते हैं- 'पुत्री, योग्य शिष्य को दी गई विद्या की तरह तुम अशोचनीय हो गई हो।'।

**130. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् (कुमारसम्भव 5.33)**

**अर्थ-** ब्रह्मचारी शास्त्रोक्तविधिपूर्वक की गई पूजा को स्वीकार करके पार्वती से बोले- 'शरीर धर्म का मुख्य साधन है।'।

**131. शस्त्रेण रक्ष्यं यदशक्यरक्षं, न तद्यशः शस्त्रभृतां**

क्षिणोति (सधुवंशम् 2/40)

**अर्थ-** जो रक्षा करने योग्य वस्तु शस्त्र से रक्षा करने के योग्य नहीं होती वह नष्ट होती हुई भी शस्त्रधारी की कीर्ति को नष्ट नहीं कर सकती है।

**132. शटे शाठ्यं समाचरेत्। (नीतिशतकम्)**

**अर्थ-** शट (धूर्त) के साथ शठता करनी चाहिये।

**133. शीलं परं भूषणम्। (नीतिशतकम्)**

**अर्थ-** यह शील बड़ा भारी आभूषण है।

**134. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः।**

(अभि0शाकुन्तलम् 4/11)

**अर्थ-** कण्व का कथन- यह मार्ग (शकुन्तला के विदाई के अवसर पर) 'शान्त और अनुकूल वायु से युक्त तथा कल्याणकारी हो।'।

**135. स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः (सधुवंशम् 2/4)**

**अर्थ-** मनु के वंश में उत्पन्न राजा लोग अपने ही पराक्रम से आत्मरक्षा कर लेते थे।

**136. स्वाधीनोऽयं जनः कुमारस्य कोऽत्रानुरोधः।**

(कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

**अर्थ-** राजकुमार चन्द्रापीड अपने स्थान को लौटने का अनुरोध कर रहे हैं।

**137. सर्वथा रक्षणीयाः सुहृदसवः (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)**

**अर्थ-** मित्र के प्राणों की रक्षा हर प्रकार से करनी चाहिए।

**138. सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते (अभि0शाकुन्तलम्)**

**अर्थ-** कण्व का कथन - पुत्रवत् पाला हुआ मृग तेरा मार्ग नहीं छोड़ रहा है।

**139. स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथा**

प्रमत्तः प्रथमं कृतमिव (अभि0शाकुन्तलम् 4/1)

**अर्थ-** दुर्वासा ऋषि शकुन्तला को शाप देते हुए कहते हैं- अनन्यहृदय से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए (भी) मुझ तपस्वी को नहीं देख रही है, 'वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण

नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता।

140. सहसा विदधीत न क्रियाम्। (किरातार्जुनीयम्)

अर्थ- शत्रुओं के प्रति क्रोध से व्याकुल भीम को शान्त करने के लिए युधिष्ठिर ने कहा- कार्य को एकाएक बिना विचार विमर्श किये नहीं प्रारम्भ करना चाहिए।

141. सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम् (अभि०शाकुन्तलम्)

अर्थ- ज्ञान- गरिष्ठ कवियों की वाणी का पूर्ण सत्कार हो।

142. सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।

(नीतिशतकम्)

अर्थ- सत्सङ्गति मनुष्यों की कौन सी भलाई नहीं करती।

143. साहसे श्रीः प्रतिवसति। (मृच्छकटिकम् अङ्क 4)

अर्थ- शर्विलक का कथन है- साहस में लक्ष्मी निवास करती हैं।

144. स्वभावो दुरतिक्रमः (वाल्मीकि रामायण 6.36.11)

अर्थ- माल्यवान् की कही हुई हितकर बातों को सुनकर कुपित रावण बोला- 'स्वभाव किसी के लिए भी दुर्लब्ध होता है।

145. सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते। (नीतिशतक)

अर्थ- सोने में ही सब गुण रहते हैं।

146. सकलभूतलरत्नभूतः वैशम्पायनो नाम

शुकोऽयम् आत्मीयः क्रियताम्। (कादम्बरी/चन्द्रापीडकथा)

अर्थ- वैशम्पायन नाम का यह शुक (तोता) समस्त भूतल का अद्वितीय रत्न है इसे आप स्वीकार करें।

147. सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः (रघुवंश 2/58)

अर्थ- सम्बन्ध (मैत्री) तो बातचीत से उत्पन्न हुआ करती है, ऐसा लोग कहते हैं।

148. श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् (रघुवंशम् 2/2)

अर्थ- नन्दिनी के पीछे-पीछे मार्ग में राजा की धर्मपत्नी सुदक्षिणा इस प्रकार चल रही थी जिस प्रकार वेदों के अर्थ के पीछे स्मृतियाँ चलती हैं।

149. श्रद्धेव साक्षाद्विधिनोपपन्ना (रघुवंशम् 2/6)

अर्थ- सज्जनों के द्वारा पूजित राजा से युक्त वह नन्दिनी भी उस समय वैसी ही सुशोभित थी, जैसे सज्जनों के किये गये अनुष्ठान से युक्त श्रद्धा शोभा पाती है।

□□

# संस्कृत वाङ्मय के विशाल पुस्तकालय

हेतु

अनुदान योजना

से जुड़ें

7800138404, 9839852033



## अपठित अनुच्छेद

### पद्यांश पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित पद्य के आधार पर प्रश्नों के सही विकल्प चुनें-

1. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।  
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

( i ) 'कुटुम्ब' शब्द का अर्थ है-

- (A) समाज (B) लड़ाई-झगड़ा  
(C) परिवार (D) व्यवसाय

( ii ) उपर्युक्त श्लोक में 'यह मेरा यह पराया' इस प्रकार की गणना करने वाले को क्या कहा गया है?

- (A) उदारचित्त वाला (B) लघुचित्त वाला  
(C) शक्तिशाली (D) महानात्मा

( iii ) जो सम्पूर्ण 'वसुधा' को अपना 'कुटुम्ब' मानता है वह किस प्रकार का व्यक्ति होता है-

- (A) उदारचरित्र वाला  
(B) लघुचित्त वाला  
(C) समाजसेवी  
(D) अपने पराये की गणना करने वाला

( iv ) निम्नलिखित में पृथ्वी का पर्यायवाची नहीं है-

- (A) वसुधा (B) अचला  
(C) उर्वी (D) जाया

( v ) प्रस्तुत पद्य से हमें किस प्रकार की शिक्षा मिलती है-

- (A) राष्ट्रीयता की (B) विश्वबन्धुत्व की  
(C) समाजसेवा की (D) अपने-पराये की

उत्तरमाला- ( i ).C ( ii ).B ( iii ).A ( iv ).D ( v ).B

2. न चौरहार्यं न च राज्यहार्यं  
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।  
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं  
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

( i ) 'चौरहार्यम्' पद का अर्थ है-

- (A) चोरों के द्वारा न चुराने योग्य  
(B) भाइयों के द्वारा बाँटने योग्य  
(C) राजा के द्वारा छीनने योग्य  
(D) चोरों के द्वारा चुराने योग्य

( ii ) सभी धनों में प्रधानधन माना गया है-

- (A) जमीन (B) सोना  
(C) विद्या (D) आभूषण

( iii ) भाइयों द्वारा बाँटने ( विभाजन ) योग्य नहीं है-

- (A) आभूषण (B) विद्या  
(C) घर (D) जमीन

( iv ) कौन सा धन है जो व्यय करने पर नित्य बढ़ता है-

- (A) विद्याधन (B) सोना-चाँदी  
(C) रुपया-पैसा (D) जमीन-जायदाद

( v ) उपर्युक्त श्लोक में किसकी प्रधानता बतायी गयी है-

- (A) परिवार की (B) चोर की  
(C) राजा की (D) ज्ञान की

उत्तरमाला- ( i ).D ( ii ).C ( iii ).B ( iv ).A ( v ).D

3. काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।  
व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥

( i ) 'गच्छति' पद में लकार है-

- (A) लोटलकार (B) लृटलकार  
(C) लटलकार (D) लङलकार

( ii ) मूर्खों का समय व्यतीत होता है-

- (A) निद्रा में  
(B) कलह में  
(C) बुरी आदत में (व्यसन में)  
(D) उपर्युक्त सभी

( iii ) काव्यशास्त्रादि के द्वारा विनोद में किसका समय व्यतीत होता है-

- (A) विद्वानों का (B) मूर्खों का  
(C) धनवानों का (D) उपर्युक्त सभी

( iv ) 'धीमताम्' पद में विभक्ति एवं वचन बताइए-

- (A) प्रथमा, बहुवचन (B) षष्ठी, बहुवचन  
(C) तृतीया, एकवचन (D) षष्ठी, एकवचन

( v ) उपर्युक्त श्लोक से हमें क्या शिक्षा प्राप्त होती है-

- (A) राष्ट्रभक्ति की  
(B) विद्या के प्रधानता की  
(C) समय के सदुपयोग की  
(D) राष्ट्र सेवा की

उत्तरमाला- ( i ).C ( ii ).D ( iii ).A ( iv ).B ( v ).C



4. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः  
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।  
विघ्नैर्मुहुर्मुहुरपि प्रतिहन्यमानाः  
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति॥
- (i) भय वश कार्य प्रारम्भ नहीं करते हैं-  
(A) नीच लोग (B) मध्यम श्रेणी के लोग  
(C) उत्तम लोग (D) उपर्युक्त सभी
- (ii) कार्य प्रारम्भ करके बीच में विघ्न आने पर कार्य छोड़ देते हैं-  
(A) उत्तम श्रेणी वाले (B) मध्यम श्रेणी वाले  
(C) निम्न श्रेणी वाले (D) उपर्युक्त सभी
- (iii) विघ्न के द्वारा बार-बार बाधित होने पर भी कार्य पूर्ण किये बिना नहीं छोड़ते-  
(A) विद्वान् पुरुष (B) मध्यम श्रेणी के पुरुष  
(C) उत्तम श्रेणी के पुरुष (D) निम्न श्रेणी के पुरुष
- (iv) 'परित्यजन्ति' पद में उपसर्ग बताइये-  
(A) प्र (B) परा  
(C) परि (D) निस्
- (v) इस श्लोक में कितने प्रकार के मनुष्य बताये गये हैं-  
(A) दो (B) तीन  
(C) पाँच (D) चार
- उत्तरमाला- (i).A (ii).B (iii).C (iv).C (v).B
5. आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण  
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।  
दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना  
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥
- (i) 'गुर्वी' पद का अर्थ है-  
(A) घटती हुई (B) हल्की  
(C) विस्तृत (D) लघु
- (ii) किसकी मित्रता प्रारम्भ में विस्तृत होती है?  
(A) सज्जनों की (B) खलों की  
(C) मूर्खों की (D) उपर्युक्त सभी की
- (iii) 'आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण' रेखांकित पद में विभक्ति है-  
(A) प्रथमा, बहुवचन (B) तृतीया, एकवचन  
(C) प्रथमा, एकवचन (D) चतुर्थी, एकवचन
- (iv) दिन के पूर्वभाग के समान किसकी मैत्री होती है-  
(A) सज्जनों की (B) दुर्जनों की  
(C) बलवानों की (D) निर्बलों की
- (v) किसकी मैत्री प्रारम्भ में लघु तथा क्रमशः विस्तृत होती चली जाती है?  
(A) बलवानों की (B) मूर्खों की  
(C) दुर्जनों की (D) सज्जनों की
- (vi) सज्जनों और दुर्जनों की मैत्री होती है-  
(A) छाया के समान  
(B) दोपहर के समान  
(C) प्रातःकाल के समान  
(D) सायंकाल के समान
- उत्तरमाला- (i).C (ii).B (iii).B (iv).B (v).D (vi).A
6. वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम्।  
वृथा दानं समर्थस्य वृथा दीपो दिवापि च॥
- (i) 'वृष्टिः' पद का अर्थ है-  
(A) बरसात (B) सर्दी (ठण्डी)  
(C) बुद्धि (D) ग्रीष्म
- (ii) वृथा तृप्तस्य.....। रिक्तस्थान की पूर्ति करें-  
(A) चन्दनम् (B) उपवनम्  
(C) उपदेशम् (D) भोजनम्
- (iii) किसके लिए 'दान' अनावश्यक है-  
(A) तृप्त के लिए (B) समुद्र के लिए  
(C) समर्थ के लिए (D) गरीब के लिए
- (iv) समुद्र के लिए आवश्यक नहीं है-  
(A) वृष्टि (B) लवणता  
(C) मन्थन (D) लहर
- (v) 'दिन' में किसकी आवश्यकता नहीं होती है-  
(A) वृष्टि की (B) दीपक की  
(C) दान की (D) भोजन की
- (vi) 'समुद्रेषु' पद में विभक्ति है-  
(A) सप्तमी, बहुवचन (B) प्रथमा, बहुवचन  
(C) पञ्चमी, बहुवचन (D) षष्ठी, एकवचन
- उत्तरमाला- (i).A (ii).D (iii).C (iv).A (v).B (vi).A
7. विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः।  
परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम्॥
- (i) 'व्यसनेषु' पद का अर्थ है-  
(A) उन्नति में (B) कष्टों में  
(C) परलोक में (D) विदेश में
- (ii) विदेश में 'धन' के रूप में काम आता है-  
(A) धर्म (B) मति  
(C) व्यवहार (D) विद्या

( iii ) स्वर्ग में धन की तरह काम आता है-

- (A) ज्ञान (B) बुद्धि  
(C) धर्म (D) उपर्युक्त सभी

( iv ) सब जगह धन की तरह कार्य करता है-

- (A) आचरण (B) ज्ञान  
(C) धर्म (D) उत्साह

( v ) विपत्ति अथवा कष्ट के समय धन है-

- (A) धर्म (B) विद्या  
(C) मति (D) शील

( vi ) प्रस्तुत श्लोक में किसकी सर्वत्र महत्ता बताई गयी है-

- (A) ज्ञान की (B) बुद्धि की  
(C) शील की (D) धर्म की

उत्तरमाला- (i).B (ii).D (iii).C (iv).A (v).C (vi).C

8. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।

लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हति॥

( i ) प्रस्तुत श्लोक में वज्र से भी कठोर हृदय वाला किसे कहा गया है-

- (A) महापुरुषों को (B) दुर्जनों को  
(C) मूर्खों को (D) इनमें से कोई नहीं

( ii ) महापुरुषों का हृदय होता है-

- (A) दुःख से व्याप्त (B) फूल से भी कोमल  
(C) वज्र से भी कठोर (D) B तथा C दोनों

( iii ) किसके चित्त ( हृदय ) को नहीं जाना जा सकता-

- (A) विवेकहीनों के (B) महापुरुषों के  
(C) मूर्खों के (D) दुर्जनों के

( iv ) 'लोकोत्तराणाम्' पद का अर्थ है-

- (A) महापुरुषों के  
(B) सत्यवादी  
(C) दुरात्माओं को  
(D) सांसारिक जनों के

( v ) 'लोकोत्तराणां' पद में विभक्ति तथा वचन बताइये-

- (A) सप्तमी, एकवचन (B) तृतीया, एकवचन  
(C) षष्ठी, बहुवचन (D) पञ्चमी, बहुवचन

उत्तरमाला- (i).A (ii).D (iii).B (iv).A (v).C

9. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

( i ) 'गच्छतु' पद में लकार है-

- (A) लट्लकार (B) लोट्लकार  
(C) लृट्लकार (D) लङ्लकार

( ii ) निन्दा और स्तुति की परवाह कौन नहीं करता-

- (A) अज्ञानी व्यक्ति (B) सज्जन पुरुष  
(C) धैर्यवान् व्यक्ति (D) मूर्ख व्यक्ति

( iii ) धन के आने अथवा इच्छानुसार चले जाने से कौन विचलित नहीं होता-

- (A) सज्जन लोग (B) धैर्यवान् लोग  
(C) विद्वान् लोग (D) उपर्युक्त कोई नहीं

( iv ) विपरीत परिस्थितियों में भी न्याय के पथ से विचलित नहीं होते-

- (A) धीर पुरुष (B) अज्ञानी पुरुष  
(C) बलवान् पुरुष (D) इनमें से कोई नहीं

( v ) 'अद्यैव' पद में कौन सी सन्धि है-

- (A) दीर्घ (B) गुण  
(C) वृद्धि (D) यण्

( vi ) किसमें लोट्लकार नहीं है-

- (A) समाविशतु (B) स्तुवन्तु  
(C) प्रविचलन्ति (D) अस्तु

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).B (iv).A (v).C (vi).C

10. विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा

सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।

यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ

प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

( i ) 'विपदि सदसि यशसि युधि' इत्यादि शब्दों में विभक्ति है-

- (A) सप्तमी, बहुवचन (B) पञ्चमी, बहुवचन  
(C) षष्ठी, बहुवचन (D) सप्तमी, एकवचन

( ii ) षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त है-

- (A) अभ्युदये (B) महात्मनाम्  
(C) श्रुतौ (D) विपदि

( iii ) 'व्यसनम्' पद का अर्थ है-

- (A) अत्यधिक रुचि (B) दुर्गुण कार्य  
(C) व्यवसाय (D) घृणा करना

( iv ) महात्माओं के स्वाभाविक गुण हैं-

- (A) वेदों में अत्यधिक रुचि  
(B) विपत्ति में धैर्य  
(C) युद्धक्षेत्र में पराक्रम  
(D) उपर्युक्त सभी

(v) यश प्राप्ति में कौन अनुराग रखता है-

- (A) महात्मा लोग (B) दुरात्मा लोग  
(C) लालची लोग (D) वाक्पटुलोग

(vi) महात्मा लोग उन्नति के समय बनें रहते हैं-

- (A) धैर्यवान् (B) क्षमावान्  
(C) वाक्पटु (D) पराक्रमी

उत्तरमाला- (i).D (ii).B (iii).A (iv).D (v).A (vi).B

11. अक्रोधेन जयेत्क्रोधम् असाधुं साधुना जयेत्।

जयेत्कदर्थं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम्॥

(i) 'कदर्थम्' पद का अर्थ है-

- (A) असत्य (B) कृपणता  
(C) कार्यकर्ता (D) क्रिया-कलाप

(ii) 'क्रोध' को किससे जीते-

- (A) अक्रोध से (B) असत्य से  
(C) सत्य से (D) साधुता से

(iii) सत्य से किसको जीता जा सकता है-

- (A) क्रोध को (B) असत्य को  
(C) साधुता को (D) कृपणता को

(iv) 'अनृतम्' पद में विभक्ति है-

- (A) प्रथमा, द्विवचन (B) द्वितीया, बहुवचन  
(C) प्रथमा, एकवचन (D) द्वितीया, एकवचन

(v) 'कृपणता' को जीता जा सकता है-

- (A) सत्य से (B) ज्ञान से  
(C) दान से (D) उपर्युक्त सभी

(vi) तृतीया विभक्ति प्रयुक्त नहीं है-

- (A) अक्रोधेन (B) साधुना  
(C) दानेन (D) क्रोधम्

उत्तरमाला- (i).B (ii).A (iii).B (iv).D (v).C (vi).D

### गद्यखण्ड

प्रस्तुत गद्यखण्ड के आधार पर प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए-

1. ग्राम्यजीवनं सुव्यवस्थितं भवति। ग्रामे प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवन्ति। वनेषु नगरेषु च तथा जीवनं न भवति। वस्तुतः ग्रामाः वननगरयोः मध्ये सन्ति। ग्रामीणाः जनाः प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति। ते च प्रातःकालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति। क्षेत्राणि परितः वारिणा पूर्णाः कुल्याः भवन्ति। कृषकाः क्षेत्राणि हलेन कर्षन्ति। कुल्याजलेन तानि सिञ्चन्ति, तत्र बीजानि वपन्ति च।

(i) ग्राम्यजीवनं कथं भवति?

- (A) दुष्करम् (B) व्ययसाध्यम्  
(C) सुव्यवस्थितम् (D) अव्यवस्थितम्

(ii) ग्रामीणाः जनाः प्रायेण कीदृशाः भवन्ति?

- (A) सर्वे स्वस्थाः (B) रुग्णाः  
(C) निष्कपटाः (D) कृषीवलाः

(iii) के प्रातःकालात् सायं यावत् क्षेत्रेषु कर्म कुर्वन्ति-

- (A) नागरिकाः (B) ग्रामीणाः  
(C) गोपालाः (D) व्यवसायिकाः

(iv) 'कृषीवलाः' इत्यस्य पर्यायपदम् -

- (A) गोपालाः (B) ग्रामीणाः  
(C) कृषकाः (D) पथिकाः

(v) एतस्य गद्यखण्डस्य समुचितं शीर्षकं किम्?

- (A) कृषीवलाः (B) ग्राम्यजीवनम्  
(C) नागरिकाः (D) आपणम्

उत्तरमाला- (i).C (ii).D (iii).B (iv).C (v).B

2. महाभारतस्य युद्धम् अष्टादश दिनानि यावत् प्राचलत्। आदौ कौरवपक्षे पितामहः भीष्मः सेनापतिः अभवत्। दश दिनानि स युद्धम् अकरोत्। ततः एकादशे दिवसे द्रोणाचार्यः सेनापतिः अभवत्। स पञ्च दिनानि सेनापतिः आसीत्। पञ्चदशे दिवसे सः वीरगतिं प्राप्तवान्। तदनन्तरं कर्णः दिनद्वयपर्यन्तं सेनापतिः अभवत्। तस्मिन् वीरगतिं प्राप्ते अर्धं दिनं शल्यः मातुलः युद्धं कृतवान्। शेषे दिवसार्धे भीमदुर्योधनयोः गदायुद्धम् अभवत्।

(i) महाभारतस्य युद्धे एकादशे दिवसे कः सेनापतिः आसीत्?

- (A) शल्यः (B) पितामहः भीष्मः  
(C) द्रोणाचार्यः (D) मातुलः

(ii) कौरवपक्षे प्रथमं कः सेनापतिः अभवत्?

- (A) कर्णः (B) द्रोणाचार्यः  
(C) शल्यः (D) भीष्मः

(iii) द्रोणाचार्यः कति दिनानि सैन्यपत्यम् अकरोत्?

- (A) दश दिनानि (B) पञ्चदिनानि  
(C) दिनद्वयम् (D) अष्टदिनानि

(iv) 'आदौ' पदे विभक्तिः अस्ति?

- (A) प्रथमा, बहुवचन (B) तृतीया, एकवचन  
(C) सप्तमी, एकवचन (D) तृतीया, बहुवचन

(v) द्रोणाचार्यानन्तरं कः सेनापतिः अभवत्?

- (A) कर्णः (B) शल्यः  
(C) भीष्मः (D) मातुलः

(vi) अस्मिन् अनुच्छेदे 'प्राप्तवान्' इति पदे प्रत्ययः अस्ति?

- (A) क्त (B) शानच्  
(C) क्तवतु (D) शतृ

उत्तरमाला- (i).C (ii).D (iii).B (iv).C (v).A (vi).C

3. संस्कृतभाषायाः व्याकरणशास्त्रे पाणिनिर्महान् वैयाकरणः अभवत्। अस्य पितुर्नाम पाणिनः, मातुश्च नाम दाक्षी आसीत्। तस्मादेव दाक्षीपुत्रः पाणिनिः कथ्यते। छन्दःशास्त्रस्य रचयिता पिङ्गलः पाणिने अनुजः आसीत्। अतः छन्दःशास्त्रं 'पिङ्गलशास्त्रम्' इत्युच्यते। पाणिनिः ख्रिष्टाब्दात् पञ्चशतवर्षपूर्वम् (500 ई.पू.) अजायत। तस्य जन्म शालातुरग्रामे अभवत्, तस्माद् अयं शालातुरीयः अपि उच्यते। शालातुरग्रामस्यैव नाम सम्प्रति लाहौर इति जातम्।

(i) कस्मिन् ग्रामे पाणिनिः अजायत?

- (A) शालापुरः (B) शालातुरः  
(C) शिवपुरः (D) कश्मीरः

(ii) पाणिनेर्मातुर्नाम किम्?

- (A) गोणिका (B) दाक्षायणी  
(C) दाक्षी (D) साक्षी

(iii) पाणिनेः जन्म कदा अभवत्?

- (A) 200 ई.पू. (B) 300 ई.पू.  
(C) 50 ई.पू. (D) 500 ई.पू.

(iv) पाणिनिः कस्य शास्त्रस्य ज्ञाता आसीत्?

- (A) छन्दशास्त्रस्य (B) पिङ्गलशास्त्रस्य  
(C) व्याकरणशास्त्रस्य (D) नाट्यशास्त्रस्य

(v) छन्दशास्त्रस्य रचयिता कः आसीत्?

- (A) पाणिनिः (B) पिङ्गलः  
(C) कात्यायनः (D) पतञ्जलिः

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).D (iv).C (v).B

4. दीपावली प्रकाशस्य महोत्सवः अस्ति। असौ महोत्सवः कार्तिक्याम् अमावस्यायां संघटते। अमुस्मिन् दिने भगवान् रामचन्द्रः चतुर्दशवर्षमितं स्वकीयं वनवासं परिसमाप्य रावणवधानन्तरम् अयोध्यां प्रत्यागच्छत्। ततः प्रभृत्ययम् उत्सवः प्रचलति। अमुस्मिन् महोत्सवे रात्रौ महालक्ष्मीपूजनं भवति। तत्र देवीं वयं सर्वे धनधान्यादिकं याचामहे। सर्वे जनाः स्वकीयान् गृहान् दीपमालया सज्जयन्ति। सायं वयं वीथीघ्रापणेषु मार्गेषु गृहेषु च सर्वत्र दीपकानां प्रकाशं पश्यामः। अहो, कियत् चाकचिक्यं प्रतिभवं विद्युद्दीपानाम्।

(i) रामः अयोध्यां कदा प्रत्यागच्छत्?

- (A) कार्तिक्याम् अमावस्यायाम्  
(B) कार्तिक्याम् पूर्णिमायाम्  
(C) त्रयोदश्याम्  
(D) चतुर्दश्याम्

(ii) कस्मिन् महोत्सवे रात्रौ महालक्ष्मीपूजनं भवति?

- (A) रक्षाबन्धने (B) विजयदशम्याम्  
(C) दीपावल्याम् (D) होलिकोत्सवे

(iii) 'गृहान्' इति पदे विभक्तिः अस्ति?

- (A) द्वितीया, बहुवचन (B) तृतीया, बहुवचन  
(C) प्रथमा, बहुवचन (D) तृतीया, एकवचन

(iv) 'आपणेषु' इति पदस्य कोऽर्थः?

- (A) मार्गं में (B) गलियों में  
(C) बाजारों में (D) नगरों में

(v) स्वकीयं-----परिसमाप्य रावणं वधानन्तरम् -

-----प्रत्यागच्छत्। क्रमेण रिक्तस्थानं पूरयतु।

- (A) वनवासं, काशीं (B) वनवासं, अयोध्यां  
(C) अयोध्यां, वनवासं (D) अयोध्यां, ग्रामवासं

उत्तरमाला- (i).A (ii).C (iii).A (iv).C (v).B

5. अस्माकं देशे बहूनि तीर्थस्थानानि सन्ति। तेषु वाराणसी अपि एकं प्रसिद्धं तीर्थस्थानम् अस्ति। इदं काशीनाम्नापि प्रसिद्धं वर्तते। एतत् पुण्यप्रदं प्राचीनतमं तीर्थस्थानं वर्तते।

अनेकेषु प्राचीनग्रन्थेषु अस्य महिमा वर्णितः। स्कन्दपुराणस्य काशीखण्डे अस्याः वाराणस्याः विस्तरेण वर्णनं विहितम्। इयं नगरी गङ्गायाः पवित्रे तटे विराजमाना अस्ति। अत्र विश्वनाथस्य प्रसिद्धं सुवर्णचूडं मन्दिरम् अस्ति। अन्यानि अपि बहूनि देवमन्दिराणि सन्ति।

(i) स्कन्दपुराणस्य कस्मिन् खण्डे वाराणस्याः वर्णनं विहितम्-

- (A) पुराणखण्डे (B) भारतखण्डे  
(C) उत्तरकाण्डे (D) काशीखण्डे

(ii) गङ्गायाः पवित्रे तटे विराजमाना नगरी अस्ति-

- (A) उज्जयिनी (B) काशी  
(C) देहली (D) नासिक

(iii) अस्मिन् गङ्गाशस्य समुचितं शीर्षकम् अस्ति-

- (A) प्राचीनतमं नगरम् (B) स्कन्दपुराणम्  
(C) विश्वनाथमन्दिरम् (D) वाराणसी नगरी

(iv) 'सुवर्णचूड' इत्यस्य पदस्य कोऽर्थः?

- (A) स्वर्णमण्डित शिखर वाला  
(B) स्वर्ण घण्टों वाला  
(C) स्वर्ण मूर्ति वाला  
(D) स्वर्ण के दरवाजों वाला

(v) अनेकेषु प्राचीनग्रन्थेषु अस्य महिमा वर्णितः।  
रेखांकितपदे विभक्तिः अस्ति-

- (A) सप्तमी, एकवचन (B) पञ्चमी, बहुवचन  
(C) सप्तमी, बहुवचन (D) सप्तमी, द्विवचन

उत्तरमाला- (i).D (ii).B (iii).D (iv).A (v).C

6. प्रजातन्त्रं लोकतन्त्रमपि कथ्यते। प्रजाभिः प्रजानां प्रजार्थं च शासनम् एव प्रजातन्त्रम्। आधुनिकयुगे प्रजातन्त्रस्य बहु विकसितं स्वरूपं दृश्यते। प्रजातन्त्रविधानस्य विकासः प्रधानतः इंग्लैण्डदेशवासिभिः मध्ययुगे सम्पादितः। प्रजातन्त्रे बहवः गुणाः सन्ति। तथा हि प्रत्येकं जनः सर्वोच्चपदं प्राप्तुमर्हति यदि स योग्यो भवेत्। अतएव स्वस्मिन् योग्यता आधेया इति विचारः सर्वेषामभ्युदयाय प्रवर्तते। अन्येषु शासनतन्त्रेषु शासनसत्ताधिकारिणो भयकारणं भवन्ति न तथा प्रजातन्त्रे।

(i) 'प्रजातन्त्रस्य' पर्यायः अस्ति-

- (A) राजतन्त्रः (B) जनतन्त्रः  
(C) लोकतन्त्रः (D) B, C द्वयमपि

(ii) प्रजातन्त्रविधानस्य विकासः प्रधानतः कैः सम्पादितः

- (A) अमेरिकादेशवासिभिः  
(B) भारतदेशवासिभिः  
(C) इंग्लैण्डदेशवासिभिः  
(D) जर्मनीदेशवासिभिः

(iii) शासनसत्ताधिकारिणः भयकारणं न भवन्ति-

- (A) राजतन्त्रे (B) प्रजातन्त्रे  
(C) A, B द्वयोऽपि (D) एकोऽपि न

(iv) 'बहवः' इति पदस्य विशेष्यपदं किम्?

- (A) गुणाः (B) जनः  
(C) विचारः (D) देशः

(v) प्रजाभिः प्रजानां प्रजार्थं च शासनम् एव प्रजातन्त्रम्।  
रेखांकित पदे विभक्तिः अस्ति-

- (A) तृतीया, एकवचन (B) द्वितीया, एकवचन  
(C) द्वितीया, बहुवचन (D) तृतीया, बहुवचन

उत्तरमाला- (i).D (ii).C (iii).B (iv).A (v).D

7. अस्माकं प्रदेशस्य राजधानी लखनऊनगरमस्ति। तद् नगरं निकषा नैमिषारण्यं प्राचीनं तीर्थस्थलम् अतीव प्रसिद्धम् अस्ति। तत्र पुरा एकस्मिन् आश्रमे ऋषयः, मुनयः, गुरवः, कवयः, छात्राश्च निवसन्ति स्म। आश्रमस्य विशाले परिसरे अश्वत्थ-वट-निम्बाशोकवृक्षाणां गहना छाया परिव्याप्तासीत्। तत्र फलशालिनः आम्राऽऽमलक-पनस-पेरुवृक्षाः अपि विपुलाः आसन्। एभिः वृक्षैः तत्र पर्यावरणम् अत्यन्तं शुद्धमासीत्, येन शीतलाः वायवः मन्दं मन्दं निरन्तरं वहन्ति स्म, काले काले च मेघः वर्षति स्म।

(i) 'अश्वत्थ' इति पदस्य कोऽर्थः?

- (A) अमरूद (B) पीपल  
(C) बरगद (D) आम

(ii) लखनऊनगरं कस्य प्रदेशस्य राजधानी अस्ति?

- (A) आन्ध्रप्रदेश (B) राजस्थान  
(C) उत्तरप्रदेश (D) उत्तराखण्ड

(iii) आश्रमस्य परिसरे कस्य वृक्षः नास्ति?

- (A) आँवला (B) खर्जूर  
(C) कटहल (D) अमरूद

(iv) आश्रमे के निवसन्ति स्म?

- (A) ऋषयः (B) मुनयः  
(C) गुरवः (D) उपर्युक्तं सर्वम्

(v) काले-काले मेघः कुत्र वर्षति स्म?

- (A) आश्रमे (B) वने  
(C) लखनऊ-नगरे (D) विद्यालये

(vi) 'निकषा' इति पदस्य कोऽर्थः -

- (A) चारों-ओर (B) समीप  
(C) पहले (D) निवास

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).B (iv).D (v).A (vi).B

8. संस्कृतस्य एव छात्रः, नाम्ना चन्द्रशेखरः तदानीं वाराणस्यां पठति स्म। एकादशवर्षदेशीयः अयं यदा जलियावाला-काण्डस्य नृशंसताम् अश्रूणोत् तदा एव प्रतिज्ञाम् अकरोत् 'येन केनापि प्रकारेण इदं क्रूरशासनम् उन्मूलनीयम्' इति। शीघ्रमेव सः कालः आगतः। भारते ब्रिटिशयुवराजः आगच्छत्। शासनेन तस्य सत्काराय आयोजनं कृतम्। तस्य बहिष्काराय भारतीयाः जनाः निश्चयम् अकुर्वन्।

(i) कस्य स्वागतस्य बहिष्काराय जनाः निश्चयम् अकुर्वन्?

- (A) ब्रिटिशमहाराजस्य (B) ब्रिटिशयुवराजस्य  
(C) सेनापतेः (D) आजादस्य

( ii ) संस्कृतस्य एव छात्रः कः वाराणस्यां पठति स्म।

- (A) चन्द्रशेखरः (B) लालालाजपतः  
(C) लालबहादुरः (D) मदनमोहनमालवीयः

( iii ) 'अभवत्' इति पदे लकारः अस्ति-

- (A) लोटलकारः (B) लङ्लकारः  
(C) लृटलकारः (D) विधिलिङ्लकारः

( iv ) 'शासनेन' इति पदे का विभक्तिः -

- (A) चतुर्थी (B) पञ्चमी  
(C) तृतीया (D) प्रथमा

( v ) 'उन्मूलनीयम्' इति पदे प्रत्ययः अस्ति-

- (A) तुमुन् (B) तव्यत्  
(C) क्तवत् (D) अनीयर्

उत्तरमाला- (i).B (ii).A (iii).B (iv).C (v).D

9. विश्वस्य सर्वान् जनान् प्रति बन्धुत्वस्य भावः एव विश्वबन्धुत्वम् इति कथ्यते। शान्तिमयाय जीवनाय विश्वबन्धुत्वस्य भावना नितरां महत्त्वं भजते। भावनैका अपरिहार्या आवश्यकता। सर्वजनहितं सर्वजनसुखं च बन्धुत्वं विना न सम्भवति। विश्वबन्धुत्वम् एव दृष्टौ निधाय केनापि मनीषिणा निर्दिष्टम् अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

संसारे सर्वेषु मानवेषु समानं रक्तं प्रवहति, सर्वेषां च नियन्तैकः एव अस्ति। एतत्सर्वं जानन्तः अपि जनाः स्वार्थपरायणतया परस्परं कलहं कुर्वन्ति। अस्य मूलकारणं विश्वबन्धुत्वस्य अभावः एव अस्ति। अतएव सर्वेषु विश्वबन्धुत्वस्य भावना नितान्तम् अपेक्षिता वर्तते।

( i ) बन्धुत्वं विना किं न सम्भवति?

- (A) सम्बन्धम् (B) उदारचरितम्  
(C) सर्वजनहितम् (D) परोपकारम्

( ii ) एका अपरिहार्या आवश्यकता अस्ति-

- (A) आशा (B) विश्वबन्धुत्व भावना  
(C) दया (D) शान्ति

( iii ) परस्परकलहस्य मूलकारणम् अस्ति-

- (A) विश्वबन्धुत्वस्य अभावः  
(B) स्वार्थपरायणता  
(C) ज्ञानस्य अभावः  
(D) सुखस्य अभावः

( iv ) 'अपरिहार्या' पदस्य कोऽर्थः -

- (A) कल्याणी (B) रोगरहिता  
(C) विद्वान् (D) अनिवार्या

( v ) 'कुर्वन्ति' इति पदे लकारः अस्ति-

- (A) लोटलकार, मध्यम पुरुष एकवचन  
(B) लटलकार प्रथमपुरुष एकवचन  
(C) लटलकार प्रथमपुरुष बहुवचन  
(D) लृटलकार प्रथमपुरुष एकवचन

उत्तरमाला- (i).C (ii).B (iii).A (iv).D (v).C

10. सतां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते। अस्मिन् संसारे यथा सज्जनाः तथा दुर्जनाः अपि सन्ति। यद्यपि पूर्व-जन्मनः गुणदोषौ अपि मनुष्ये जन्मना सह आगच्छतः तथापि नहि कोऽपि जनः जन्मतः एव सज्जनः दुर्जनो वा भवति, अपितु, मनुष्येषु संसर्गस्य विशेषरूपेण प्रभावः भवति। यः यादृशेन पुरुषेण सह सङ्गतिं करोति, यादृशेन पुरुषेण च सहतिष्ठति, उपविशति, खादति, पिबति, आलाप-संलापौ च कुरुते तस्य तादृशः एव स्वभावो भवति। यदि सज्जनैः सह सङ्गतिः भविष्यति तर्हि सज्जनता आगमिष्यति, दुर्जनैः सह सङ्गतिः भविष्यति तर्हि दुर्जनता आगमिष्यति। अतएव नीतिकाराः कथयन्ति- 'संसर्गजा दोषगुणाः भवन्ति।'

( i ) मनुष्येषु विशेषरूपेण कस्य प्रभावः -

- (A) दुर्जनस्य (B) संसर्गस्य  
(C) गुणस्य (D) दोषस्य

( ii ) 'उपविशति' अस्मिन् पदे उपसर्गः अस्ति-

- (A) वि (B) आङ्  
(C) उप (D) सु

( iii ) सतां सङ्गतिः किं कथ्यते-

- (A) सत्सङ्गतिः (B) दुर्गतिः  
(C) सुमतिः (D) सज्जनगतिः

( iv ) संसर्गजा भवन्ति-

- (A) दोषाः (B) गुणाः  
(C) उपर्युक्त द्वयमपि (D) द्वयोऽपि न

( v ) सज्जनैः सह सङ्गतिः भविष्यति तर्हि-

- (A) सज्जनता गमिष्यति (B) दुर्जनता आगमिष्यति  
(C) कटुता आगमिष्यति (D) सज्जनता आगमिष्यति

उत्तरमाला- (i).B (ii).C (iii).A (iv).C (v).D



संस्कृत

UP-TET

मॉडल पेपर

1. भट्टोजिदीक्षित के शिष्य कौन हैं?  
(A) पाणिनि (B) कात्यायन  
(C) पतञ्जलि (D) वरदराज
2. 'झश्' प्रत्याहार के अन्तर्गत वर्ण आते हैं-  
(A) झ भ घ ढ ध  
(B) झ भ ज् घ ढ ध ष ज ब ग ड द श्  
(C) झ भ घ ढ ध ज ब ड द ह य व र  
(D) झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द
3. 'ओ, औ' का उच्चारण स्थान है?  
(A) कण्ठतालु (B) कण्ठोष्ठम्  
(C) दन्तोष्ठम् (D) दन्त तालु
4. 'सुप् तिङन्तम् -----' रिक्त स्थान की पूर्ति करें  
(A) प्रत्ययः (B) पदम्  
(C) सुबन्तम् (D) वाक्यम्
5. 'गङ्गा + ऊर्मिः' सन्धि होने पर बनेगा-  
(A) गङ्गूर्मिः (B) गङ्गूर्मिः  
(C) गङ्गोर्मिः (D) गङ्गूर्मिः
6. यण् सन्धि का उदाहरण है-  
(A) ल + आकृतिः (B) इति + आदिः  
(C) सु + आगतम् (D) उपर्युक्त सभी
7. 'त्रिभुवन' किस समास का उदाहरण है?  
(A) द्वन्द्व (B) द्विगु  
(C) अव्ययीभाव (D) तत्पुरुष
8. 'स्थाल्यां तण्डुलान् पचति' यह किस सूत्र का उदाहरण है-  
(A) आधारोऽधिकरणम् (B) अधिशीङ्स्थानम्  
(C) चतुर्थी सम्प्रदाने (D) अकथितं च
9. 'अहं गृहं गच्छामि' इस वाक्य को कर्मवाच्य में बदलिये-  
(A) मया गृहं गमयति (B) मया गृहं गम्यते  
(C) मम गृहं गच्छामि (D) मह्यं गृहः गम्यते
10. विधिलिङ् लकार का प्रयोग किस अर्थ में होता है-  
(A) भूतकाल में (B) भविष्यकाल में  
(C) आशीर्वाद अर्थ में (D) चाहिये अर्थ में
11. 'युष्मद्' शब्द का प्रथमा विभक्ति बहुवचन में रूप बनेगा-  
(A) त्वं (B) यूयम्  
(C) युवाम् (D) त्वत्
12. दृ 'कुमारसम्भवम्' के लेखक कौन हैं?  
(A) व्यास (B) तुलसीदास  
(C) वाल्मीकि (D) कालिदास
13. 'विलोक्य' पद में कौन सा प्रकृति प्रत्यय है-  
(A) वि + लोक् + ल्यप्  
(B) वि + आङ् लुक् + ल्यप्  
(C) वि + लुक् + ल्यु  
(D) वि + लोक् + घञ्
14. निम्नलिखित में से अव्यय पद चुनिये-  
(A) अकस्मात् (B) अचिरम्  
(C) अद्यैव (D) उपर्युक्त सभी
15. 'छह' को संस्कृत में कहेंगे -  
(A) षट् (B) षष्ट  
(C) षट् (D) षड
16. अंगूर, और अनार को क्रमशः संस्कृत में कहा जाता है-  
(A) अंगूरम्, दाडिमम्  
(B) द्राक्षा, दाडिमम्  
(C) दाडिमम्, द्राक्षा  
(D) अनारम्, द्राक्षा
17. 'एक अरब' को संस्कृत में कहते हैं-  
(A) एककोटिः (B) एक लक्षम्  
(C) एक नियुतम् (D) अर्बुदम्



18. 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है?  
 (A) गीता (B) मनुस्मृति  
 (C) नीतिशतकम् (D) विदुसीति
19. 'कमलम्' का पर्यायवाची है?  
 (A) पुण्डरीकम् (B) कुवलयम्  
 (C) कुशेशयम् (D) उपर्युक्त सभी
20. 'विंशति' शब्द से लेकर 'नवति' पर्यन्त संख्यावाची शब्द किस लिङ्ग में होते हैं-  
 (A) पुल्लिङ्ग (B) नपुंसकलिङ्ग  
 (C) स्त्रीलिङ्ग (D) उभयलिङ्ग
21. 'गङ्गा' पद में स्त्री प्रत्यय है?  
 (A) चाप् (B) डीष्  
 (C) डीप् (D) टाप्
22. 'तीन लड़कियों का परिचय बोलो' - इस वाक्य का शुद्ध अनुवाद बताइये-  
 (A) त्रयाणां बालिकानां परिचयं वद  
 (B) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद  
 (C) तिसृणां बालिकानां परिचयं वद  
 (D) त्रीणि खालिकानां परिचयं वद
23. 'लक्ष्मीपदाङ्गमहाकाव्य' किसे कहा जाता है?  
 (A) शिशुपालवधम् (B) नैषधीयचरितम्  
 (C) शुकनासोपदेशम् (D) किरातार्जुनीयम्
24. गीता में 'गुडाकेश' किसे कहा गया है-  
 (A) कृष्ण को (B) भीम को  
 (C) अर्जुन को (D) कर्ण को
25. 'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' किस ग्रन्थ में उद्धृत है-  
 (A) नीतिशतकम् (B) कादम्बरी कथामुखम्  
 (C) पञ्चतन्त्रम् (D) सुभाषित रत्नावली
26. ऋग्वेद का अपर नाम है-  
 (A) ब्रह्मवेद (B) शब्दशास्त्र  
 (C) दशतयी (D) गानवेद
27. श्रुतलेख बोलते समय अध्यापक के लिए क्या आवश्यक है-  
 (A) उच्चारण की स्पष्टता।  
 (B) रुक-रुक कर बोलना।  
 (C) बीच में वाक्यों की पुनरावृत्ति।  
 (D) तीन-चार बार सम्पूर्ण अंश को पढ़ना।
28. निम्नलिखित में से कौन सी परीक्षा संस्कृत के लिए उपयुक्त है-  
 (A) केवल मौखिक  
 (B) केवल लिखित  
 (C) लिखित और मौखिक दोनों  
 (D) शास्त्रार्थ
29. निम्नलिखित में से कौन-सा क्रियात्मक अनुसन्धान का सोपान नहीं है-  
 (A) समस्या की पहचान  
 (B) सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण  
 (C) क्रियात्मक प्राक्कल्पना निर्माण  
 (D) प्राक्कल्पना का परीक्षण
30. निम्नलिखित में से कौन सी बात कथा शिक्षण में अनावश्यक है-  
 (A) कथा सुनाना  
 (B) पुस्तक का प्रयोग  
 (C) सरल भाषा  
 (D) कथा की मुख्य विशेषता का उल्लेख।

## उत्तरमाला

1.D 2.D 3.B 4.B 5.C 6.D 7.B 8.A 9.B 10.D 11.B 12.D 13.A 14.D 15.A 16.B 17.D 18.B 19.D  
 20.C 21.D 22.C 23.D 24.C 25.B 26.C 27.A 28.C 29.B 30.B

# संस्कृतगंगा पुस्तकालय योजना

में

आप अनुदान कर सकते हैं

खाता धारक का नाम - संस्कृत गंगा शिक्षा समिति

खाता संख्या - 35312212163

IFSC कोड - SBIN0003310

अथवा

PayTM करें - 7800138404

ध्यान रहे - अनुदान की न्यूनतम राशि 1.00 ( एक रुपये )

अधिकतम राशि - 100 ( सौ रुपये )

निवेदन - कृपया 100 ( सौ रुपये ) से अधिक न भेजें

निवेदक

सर्वज्ञभूषण

सचिव

सम्पर्क सूत्र

9839852033

संस्कृतगंगा, दारागञ्ज, प्रयागराज